श्री विजय लक्ष्मी सूरि विरचित

श्री

उपदेश प्रासाद भाषांतर.

भाग ३ जो.

स्थंभ १०-११-१२-१३-१४.

(व्याख्यान १३६ थी २१०)

चार गुणव्रतो तथा बीजी अनेक वात्रतोनुं

अनेक दृष्टांतो युक्त वर्णन.

श्रावकवर्गने खास उपयोगी होवाथी

संस्कृत गद्यपद्यात्मकनुं गुर्जरगिरामां भाषांतर करीने

प्रसिद्धकर्त्ता

श्रीजैनधर्म प्रसारक सभा.

भावनगर.

विक्रम संवत. १९६२. वीर संवत २४३२.

मुंबई, " जगदीश्वर " छापखानामां छपाव्युं.

किंमत रु. १-८-०.

प्रस्तावना.

कोईपण ग्रंथनी प्रस्तावना खास करीने ते ग्रंथमां शुं शुं कहेल छे ते (अभिधेय) कहेवा माटे लखवामां आवे छे. आ उपदेश प्रासाद ग्रंथ श्रीविजयलक्ष्मी सूरिए २४ स्थंभ प्रमाण बनाव्यो छे. तेना छपाववानी सगवडने माटे पांच भाग पाडेला छे. तेमांना पहेला विभागमां चार स्तंभनुं भाषांतर छपायेलुं छे. ते मुंबईनिवासी चिमनलाल सांकळचंद मारफतीआए छपाव्या बाद (बंधाया अगाऊ) अमारा हाथमां आवतां तेमां घणी भूलो जणावाथी केटलोक सुधारो अमे सूचव्यो हतो जेके तेमणे ते भागनी आद्यमां प्रगट करेल छे. परंतु आखुं भाषांतर मूळ ग्रंथ साथे सरखावी जोवाशिवाय तेनी खरी शुद्धि थई शकती नथी. अमारो विचार ते चारे स्थंभोनुं फरीने भाषांतर करावी शुद्ध प्रगट करवानो छे, परंतु एक वखत पांच विभागमां आखो ग्रंथ संपूर्ण छपाई गया पछी ते करवा धारेलुं छे.

आना बीजा विभागमां पांचमाथी नवमा सुधीना पांच स्तंभोनुं भाषांतर आपवामां आव्युं छे. तेमां श्रावकना बार व्रतोपैकी प्रथमना आठव्रतोनी व्याख्या समावेली छे. आ भाग अमे भाषांतर करावी सुधारीने तैयार करेलो पण ते चिमनलाल सांकळचंदना भागमां प्रसिद्ध करेलो छे.

आ त्रीजो विभाग खास अमाराज तरफथी भाषांतर शुद्ध करीने स्वतंत्र छपाववामां आव्यो छे. आ भागमां दशमाथी चौदमा सुधीना पांच स्थंभोनुं भाषांतर समाववामां आव्युं छे. एज प्रमाणे हवे पछीना बे विभागमां पण बाकी रहेला दश स्थंभोनुं भाषांतर छपावीने आखो ग्रंथ पूर्ण करवा धारेलुं छे.

आ ग्रंथमां ग्रंथकर्ताए अनेक बाबतोनो समावेश करेलो छे. बाळजीवोने तो आ ग्रंथ परम उपकारी छे एटलुंज नहीं पण मध्यम स्थितिना जीवोने पण उपकारक थाय तेवो छे. आ विभागमां आवेला ७५ व्याख्यानोमां अनेक बाबतो समावेली छे. प्रारंभमां आठमा व्रत संबंधी शेष हकीकतना बे व्याख्यान छे. पछी नवमा व्रत संबंधी ६ व्याख्यान छे. तेमां सम्यक्त्व सामायक, श्रुत सामायक अने देशविरती या सर्व विरति सामायकनुं स्वरूप सारू बतावेलुं छे. तेमज सामायिकमां राखवाना उपकरणोनुं वर्णन अने ते संबधी शास्त्राधार सारी रीते बताववामां आवेलो छे. त्यापछी दशमा व्रत आश्री बे व्याख्यान छे. पछी व्याख्यान १४७ मुं अट्ठाई संबंधी छे. अने व्याख्यान १४८ मुं वार्षिक कृत्यो संबंधी छे. त्यार पछी ४ व्याख्यान अग्यारमा व्रत संबंधी छे. अने ते पछी तेने अंगे करवानी जरूरीआतवाळा प्रतिक्रमण सम्बंधी ९ व्याख्यान छे. तेमां प्रतिक्रमणना आठ पर्याय उपर आठ कथाओ छे. पछी व्याख्यान १५८ मुं इर्यावही संबंधी छे; अने पाछा ३ व्याख्यान

पौषध व्रत संबंधी छे. एकंदर गणीए तो १३ व्याख्यान अग्यारमा व्रत संबंधी छे. त्यार पछी ४ व्याख्यान बारमा व्रत संबंधी छे.पछी १६६ मुं व्याख्यान गृहस्थनी भोजन विधि संबंधी छे. अने ते प्रसंगे मुनिराजने दान देवानी आवश्यकता होवाथी ३ व्याख्यान ते संबंधी छे. तेमज १७० मुं व्याख्यान साधर्मी वात्सल्य संबंधी छे. पछी १७१ मुं व्याख्यान पौषधशाला कराववा विषे छे, ते मुनिराजने वसती दान देवाने प्रसंगे कहेल छे. पाछा ४ व्याख्यान मुनिदानना संबंधनाज छे. एकंदर गणीए तो १४ व्याख्यान बारमा व्रतने अनुसरतांज छे. व्याख्यान १७६ मा मां बारे व्रत निश्चय व्यवहारथी समजाव्या छे ते बराबर लक्ष आपवा योग्य छे. मात्र निश्चयथी बार व्रतनुं स्वरूप तो कोईकज जाणे छे. १७७ मा व्याख्यानमां बलात्कारे पण व्रत आपवाथी लाभ थवानुं दृष्टांत सिद्ध करी आप्युं छे. त्यार पछीना ४ व्याख्यान प्रासंगिक महापुरुषोनी कथाओनां छे.

अहीं १८१ मुं व्याख्यान शरु करतां ग्रंथनो मध्य भाग आववाथी मध्य मंगळाचरण करवामां आव्युं छे. व्याख्यान १८२ मुं ने १८३ मुं तीर्थ यात्रा संबंधी छे. व्याख्यान १८४ मां बतावेलो स्नान विधि अने १८५ मां बतावेल पुष्प पूजा विधि खास ध्यान आपवा लायक छे. त्यार पछीनां बे व्याख्यान जिन चैत्य अने जिन मूर्ति संबंधी छे. व्याख्यान १८८ मुं यशोधर राजानी कथा वाळुं छे. मानसिक हिंसा पण केटली हानी करे छे ते आ कथामां बहु स्पष्ट रीते बतावी आपेल छे. त्यार पछीना बे व्याख्यान मूर्ति पूजानी सिद्धि करनारा अने जिन पूजानी विधि बतावनारा छे. व्याख्यान १९१ मुं कायर मनुष्योना 'अविधिए करवा करतां न करवुं सारुं' एवां वचनने निरस्त करनारुं छे. त्यार पछीना बे व्याख्यान देव द्रव्य संबंधी छे. १९४ मा व्याख्यानमां सावद्याचार्यनी वांचवा लायक कथा छे. अने १९५ मुं व्याख्यान नवकार मंत्रना जाप संबंधी छे.

चौदमा स्थंभना प्रारंभथी तीर्थंकरना पंचकल्याणकनुं वर्णन शरु थाय छे. एकंदर १० व्याख्यान ते संबंधी छे तेमां १९६ मा व्याख्यानमां वीश स्थानकनुं स्वरूप छे अने २०३ मा व्याख्यानमां सर्व जीवोने आश्रवो केवी रीते लागे छे तेनुं स्वरूप बहु सारी रीते समजावेलुं छे. छेवटना पांच व्याख्यान काळनुं स्वरूप बतावनारा अने दरेक काळ चक्रना बार आरानी स्पष्टताथी समजुती आपनारा छे, तेमां प्रसंगे आवती चोवीशी संबंधी बहु सविस्तर वर्णन आपेलुं छे जेवुं वर्णन बीजा कोइकज ग्रंथमां लभ्य थाय छे. आमां दिवाळी कल्पनो समावेश करी दीधेलो छे. एकंदर रीते दरेक हकीकतने शास्त्राधार साथे स्पष्ट करवामां कर्त्ताए बनतो प्रयास करवामां कसर राखी नथी.

आ विभागमां आवेला ७५ व्याख्यानमां मोटी कथाओ २५ उपरांत छे. बाकी नाना मोटा प्रबंधो गणीए तो कोइ पण व्याख्यान प्राये कथाविनानुं न होवाथी एकसो उपर थाय तेम छे. आ ग्रंथ मात्र कथाना रसीआओनेज वांचवा योग्य छे एम नथी, कारणके अनेक बाबतोनो एनी अंदर समावेश करेलो छे.

आवा ग्रंथो आद्यंत वांचवानी खास भलामण करवा योग्य छे. कारणके अनेक शास्त्रो वांचवाथी जे सार मेळवी शकीए ते आवा एक ग्रंथमांथी मेळवी शकाय तेम छे.

आ ग्रंथनी प्रतिओ छपावाळी अने प्राये बहुज अशुद्ध स्थितिमां दृष्टिए पडे छे. तेथी तेना भाषांतरमां बहु विशेष लक्ष आपवानी आवश्यकता छे. केवळ अन्यदर्शनी शास्त्रीओना विश्वासपर रहीने तेना करेला भाषांतरो जेओ प्रकट करे छे ते परिणामे लाभने स्थानके टोटो पण उठावे छे. तेनी साबीती तेवा भाषांतरो वांची जोवाथी मळी शके तेम छे. आ भाषांतरनी अंदर अमे अमारी अल्पमति प्रमाणे तेवी भूल न थवा माटे पूरतो प्रयास कर्यो छे तेनी परीक्षा करवानुं अमारा वांचक वर्गने सोंपवानुं दुरस्त धारीए छीए.

अमारा सांभळवा प्रमाणे आज ग्रंथनुं भाषांतर बीजी तरफथी पण प्रगट थयेलुं छे तो ते संबंधमां अत्रे वधारे लखवानी आवश्यकता नथी, परंतु बंन्ने बुकोनो साथे मुकाबलो करी जोवानी सुज्ञ वांचकोने भलामण करीए छीए.

आनी अंदर जरूर पडता प्रासंगिक श्लोको तथा भाषामां रचेला दुहा विगेरे पुष्कळ आपवामां आव्या छे. तेमज तेना अर्थ पण तेनी नीचे लखवामां आव्या छे तेथी ते भाषण कर्ताओने पण उपयोगी थई पडे तेम छे.

ग्रंथकर्त्ताना चरित्र संबंधी हजु शोध चाले छे ते मळी आवेथी छेल्ला विभागमां प्रगट करवा धारणा छे.

अभिधेय प्रयोजनादि संक्षेपमां बतावीने आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे, अने परमात्माने नमस्कार करवा रूप भाव मंगळ करीने आ विभाग वांचवानी शरुआत करवा जैन बंधुओने सूचवीए छीए.

फागण शुदि १
संवत् १९६२.

श्री जैनधर्म प्रसारक सभा
भावनगर.

श्रीउपदेशप्रासाद भाग ३ जो.

स्तंभ १० मा थी १४ मा सुधीनी

अनुक्रमणिका.

(व्याख्यान १३६ थी २१० सुधी.)

स्थंभ १० मो.

स्थंभ ११ मो.

व्याख्यान १५३ मुं.

व्याख्यान १५४ मुं.

व्याख्यान १५५ मुं.

व्याख्यान १५६ मुं.

व्याख्यान १५७ मुं.

व्याख्यान १५८ मुं.

व्याख्यान १५९ मुं.

व्याख्यान १६० मुं.

व्याख्यान १६१ मुं.

व्याख्यान १६२ मुं.

व्याख्यान १६३ मुं.

व्याख्यान १६४ मुं.

व्याख्यान १६५ मुं.

स्तंभ १२ मो.

व्याख्यान १६६ मुं.

व्याख्यान १६७ मुं.

व्याख्यान १६८ मुं.

व्याख्यान १६९ मुं.

व्याख्यान १७० मुं.

व्याख्यान १७१ मुं.

व्याख्यान १७२ मुं.

व्याख्यान १७३ मुं.

व्याख्यान १७४ मुं.

व्याख्यान १७५ मुं.

व्याख्यान १७६ मुं.

व्याख्यान १७७ मुं.

व्याख्यान १७८ मुं.

व्याख्यान १७९ मुं.

व्याख्यान १८० मुं.

स्थंभ १३ मो.

स्थंभ १४ मो.

व्याख्यान १५३ मुं.

व्याख्यान १५४ मुं.

व्याख्यान १५५ मुं.

व्याख्यान १५६ मुं.

व्याख्यान १५७ मुं.

व्याख्यान १५८ मुं.

व्याख्यान १५९ मुं.

व्याख्यान १६० मुं.

व्याख्यान १६१ मुं.

व्याख्यान १६२ मुं.

व्याख्यान १६३ मुं.

व्याख्यान १६४ मुं.

व्याख्यान १६५ मुं.

स्तंभ १२ मो.

व्याख्यान १६६ मुं.

व्याख्यान १६७ मुं.

व्याख्यान १६८ मुं.

व्याख्यान १६९ मुं.

व्याख्यान १७० मुं.

व्याख्यान १७१ मुं.

व्याख्यान १७२ मुं.

व्याख्यान १७३ मुं.

व्याख्यान १७४ मुं.

व्याख्यान १७५ मुं.

व्याख्यान १७६ मुं.

व्याख्यान १७७ मुं.

व्याख्यान १७८ मुं.

व्याख्यान १७९ मुं.

व्याख्यान १८० मुं.

स्थंभ १३ मो.

व्याख्यान १८१ मुं.

व्याख्यान १८२ मुं.

व्याख्यान १८३ मुं.

व्याख्यान १८४ मुं.

व्याख्यान १८५ मुं.

व्याख्यान १८६ मुं.

व्याख्यान १८७ मुं.

व्याख्यान १८८ मुं.

व्याख्यान १८९ मुं.

व्याख्यान १९० मुं.

व्याख्यान १९१ मुं.

व्याख्यान १९२ मुं.

व्याख्यान १९३ मुं.

व्याख्यान १९४ मुं.

व्याख्यान १९५ मुं.

स्थंभ १४ मो.

व्याख्यान १९६ मुं.

व्याख्यान १९७ मुं.

व्याख्यान १९८ मुं.

व्याख्यान १९९ मुं.

व्याख्यान २०० मुं.

व्याख्यान २०१ मुं.

व्याख्यान २०२ मुं.

व्याख्यान २०३ मुं.

व्याख्यान २०४ मुं.

व्याख्यान २०५ मुं.

व्याख्यान २०६ मुं.

व्याख्यान २०७ मुं.

व्याख्यान २०८ मुं.

व्याख्यान २०९ मुं.

व्याख्यान २१० मुं.



॥ श्री जिनाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री उपदेशप्रासाद भाषान्तर ॥

भाग ३ जो.

स्थंभ १० मो.

व्याख्यान १३६ मुं.

अनर्थदंड विरमण नामना आठमा व्रत संबंधी त्याग करवा योग्य पांच अतिचार कहे छे.

संयुक्ताधिकरणत्वमुपभोगातिरिक्तता ।
मौखर्यमथ कौकुच्यं कंदर्पोऽनर्थदंडगाः ॥ १ ॥

भावार्थः—

"निरंतर अधिकरणो जोडेलां तैयार राखवा, पोताना उपभोगमां जोइए ते करतां विशेष वस्तु तैयार राखवी, मुखरपणुं—अतिवाचालपणुं करवुं, कुचेष्टा करवी अने कामोत्पादक वाणी बोलवी—ए पांच आठमा व्रतना अतिचार छे."

विस्तरार्थ.

ए पांच अतिचारनुं स्वरुप आ प्रमाणे—जेनाथी आत्मा पृथ्वी विगेरेमां अधिकृत थाय ते अधिकरण—कहेवाय. तेने संयुक्त एटले बीजा अधिकरणो साथे जोडी राखवा. जेमके खांडणीआ साथे सांबेलुं, हळ साथे तेनुं फळुं, धनुष्यनी साथे बाण, गाडासाथे धोंसरुं, घंटीना एक पडसाथे बीजुं पड अने कुहाडासाथे हाथो—इत्यादि संयुक्त करी राखवाथी ते अनर्थक्रिया करवाने योग्य थायछे. तेने सज्ज—तैयार करी राखवापणुं ते संयुक्ताधिकरणत्व कहेवाय छे. ते विषे आवश्यक बृहद्वृत्तिमां कह्युं छे के "श्रावके गाडां विगेरे अधिकरणो जोडी राखवा नहीं."

आदि शब्दथी वांसलो, फरसी विगेरे पण तैयार राखवा नहीं. कारण के जो ए अधिकरणो जोडी राख्या न होय तो सुखे सुखे बीजाने प्रतिषेध करी शकाय छे. (ना पाडी शकायछे.) अग्नि पण बीजाए पोताने घेर सळगावी तैयार कर्यो होय तेमांथी लेवो. तथा घर दुकान विगेरेनो आरंभ अने परगाम प्रत्ये गमन पोते प्रथम करवुं नहीं. चौटामांथी वस्त्रने छेडे ढांक्या वगर सर्व लोकोनी दृष्टि पडे तेम शाकभाजी पण लाववा नहीं. कारण के तेम करवाथी परंपराए पापनी वृद्धि थायछे. कह्युं छे के,

कार्ये शुभेऽशुभे वापि, प्रवृत्तिर्यैःकृतादितः ॥
ज्ञेयास्ते तस्य कर्त्तारः पश्चादप्युपचारतः ॥ १ ॥

" शुभ के अशुभ कार्यमां जेओ प्रथम प्रवृत्ति करेछे, तेओ त्यार पछीना शुभाशुभ कार्यना पण कर्त्ता छे; एम उपचारथी जाणवुं." आ प्रमाणे हिंसाप्रदानरुप अनर्थदंडनो प्रथम अतिचार जाणवो.

उपभोगमां–उपलक्षणथी स्नान, भोजन अने वस्त्र विगेरे भोग्य वस्तुमां जे अधिक तैयार राखवुं ते प्रमादाचरणने लगतो बीजो अतिचार छे.

मुखर एटले बहु वाचाळ ते संबंधी भाव ते मौखर्य कहेवाय. अर्थात् असंबद्ध बहु प्रलाप करवापणुं ते पापोपदेशने लगतो त्रीजो अतिचार छे. तेवुं अत्यंत वाचाळपणुं होवाथी पापोपदेश थई जवानो संभव छे.

कुचेष्टा एटले भ्रगुटी, नेत्र, नासिका, हाथपग अने मुखना विकारवडे हास्य उत्पन्न थाय तेवी कुचेष्टाओ करवी के जेथी बीजो उपहास्य करे अने पोतानी लघुता थाय तेवी चेष्टा करवी के तेवुं बोलवुं कल्पे नहिं आ प्रमादाचरण संबंधी चोथो अतिचार छे.

कंदर्प एटले कामदेव तेनी उत्पत्तिना हेतुरूप वचनो बोलवा ते पांचमो अतिचार छे. उत्तम आचारवाळा श्रावके तेवुं वचन बोलवुं नहीं के जेथी पोताने वा बीजाने मोहनी जाग्रती थाय. आ छेल्ला बे अतिचार प्रमाद संबंधी छे. आ संबंधमां एक द्रष्टांत छे. ते नीचे प्रमाणेः—

शूरसेन ने महिसेननुं द्रष्टांत.

वंधुरा नामनी नगरीमां शूरसेन अने महीसेन नामे बे राजपुत्र हता. तेओ हंमेशा सदाचारवाळा अने परस्पर प्रीतिवाळा थई सुखे रहेता हता. एक वखते महीसेननी जिव्हा उपर असाध्य रोग उत्पन्न थयो. वैद्योए तेने असाध्य धारी छोडी दीधो. ए रोगथी तेनी जिव्हा एवी गंधावा लागी के जेथी कोई तेनी पासे रही शकतुं

नही. मात्र तेनो बंधु शूरसेनज स्नेहथी तेनी पासे रहेतो हतो. रोगनी तीव्र वेदनाथी ज्यारे महीसेन 'अरे! अरे!' एवो पोकार करतो त्यारे शूरसेन कहेतो के, "हे बंधु! शांत था, अने सर्व जगत्ने तारवा समर्थ, तेमज ज्ञान ध्यानरुप अग्निथी आ भवप्रपंच तथा कर्मजालने भस्म करनार श्री सर्वज्ञ प्रभुनुं स्मरण कर." बंधुना आवा उपदेशथी महीसेने पंचपरमेष्ठीनुं मनमां ध्यान करवा मांड्युं. शूरसेने पोताना बंधुना जीववानी आशा छोडी, पछी तेनी पासे पापना अनेक नियमो कराव्या अने प्रासुक जळथी तेनी जिव्हा ऊपर जलसिंचन करवा मांड्युं. दैवयोगे तेप्रमाणे मंदमंद जलसिंचन करवाथी तेनो रोग मूळमांथी गयो. तेणे जे जे पच्चखाण लीधा हता, ते ते पाळवा मांड्या.

एकदा त्यां श्री भद्रबाहुस्वामी पधार्या. तेमनुं आगमन सांभळी ते बंने भाई तेमने वंदन करवा गया. देशना सांभळ्या पछी शूरसेने महीसेनने रोग थवानुं कारण पुछ्युं एटले गुरु बोल्या-मणीपुर नगरमां मदन नामना कोई सुभटने वीर अने धीर नामे बे धर्मिष्ठ पुत्र हता. एक वखते ते बंने वनमां फरवा गया. त्यां पोताना मामा वसंत नामना मुनिने पृथ्वी ऊपर पडेला जोई लोकोने तेनुं कारण पुछ्युं, एटले तेओमांथी कोईए कह्युं के-एक सर्प, कायोत्सर्गे रहेला आ मुनिने डशीने राफडामां पेसी गयो छे. मामाना स्नेहथी लघुबंधु धीर बोल्यो के, 'अरे रांक लोको! तमे ते सर्पने नासतां मारी नाख्यो केम नहीं?' ते सांभळी वीर बोल्यो-'हे भ्राता! आम बोलीने वृथा कर्म शामाटे बांधे छे?' धीरे कह्युं के, 'मुनिने डसनारा सर्पने मारवाथी तो धर्मज थाय. कह्युं छे के,'

दुष्टस्य दंडः स्वजनस्यपूजा, न्यायेन कोशस्य च संप्रवृद्धिः॥
अपक्षपातो रिपुराष्ट्रचिंता, पंचैव यज्ञा नृपपुंगवानां ॥ १ ॥

"दुष्टनो दंड करवो, स्वजननी पूजा करवी, न्यायथी भंडार वधारवो, कोईनो पक्षपात करवो नही अने शत्रुना देशनी चिंता राखवी-ए पांच उत्तम राजाओने यज्ञ बराबर छे." माटे आपणने क्षत्रीयोने तेम करवाथी कांइ दोष लागे नहीं.' वीर बोल्यो-"हे बंधु! आपणने जैनने ते घटे नहीं. जैनोने तो लाकडी भांगे नहीं, दूधनुं पात्र फूटे नहीं, अने दूध पण ढोळाय नहीं; तेमज जीवनो वध पण थाय नहीं तेम करवुं जोइए. जीवानंदवैद्यनी जेम जैनोए तो वचन पण विचारीने बोलवुं जोइए." आ प्रमाणेनुं पोताना बंधुनुं वचन सत्य मानीने तेमणे मुनिने योग्य उपचारवडे सज्ज कर्या. अनुक्रमे ते बंने क्षत्रीपुत्र मृत्यु पामीने, तमे बे

थयाछो. धीरना जीवे ते भवमां बोलेला अनर्थदंडरुप वाक्यनी आलोचना करेली नही होवाथी आ महीसेन जीव्हाना रोगथी पीडित थयो. अने मुनिने उपचारवडे जीवाड्या तेथी प्राप्त थयेल लब्धिथी तारा प्रयासवडे ते निरोगी थयो.

आ प्रमाणेनो पूर्वभव सांभळी बंने भाईओने जातिस्मरण थवाथी अनर्थदंडने मूळमांथी निवारीने ते बंने जणे मुनिपणुं ग्रहण कर्युं.

आ शूरसेन अने महीसेनना दृष्टांतथी पापनुं मूळ जे अनर्थदंड तेनो मूळमांथी त्याग करवो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ षट्त्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३६ ॥

व्याख्यान १३७ मुं.

पुनः अनर्थदंडनुंज वर्णन करेछे.

अज्ञानमन्युदंभेभ्योऽनर्थदंडः प्रजायते ।
सचूर्ण्यो व्रतवज्रेण चित्रगुप्तकुमारवत् ॥ १ ॥

भावार्थः—

" अज्ञान, क्रोध अने दंभथी अनर्थदंड थायछे. तेने चित्रगुप्त कुमारनी जेम व्रतरुपी वज्रवडे चूर्ण करी नाखवो."

आ श्लोकनो भावार्थ श्लोकमां सूचवेला चित्रगुप्त कुमारना संबंधथी जाणी लेवो. ते कथा नीचे प्रमाणे छे.

चित्रगुप्तकुमारनी कथा.

कोशलदेशमां जयशेखर नामे राजा हतो. तेने पुरुषदत्त अने पुरुषसिंह नामे बे पुत्रो हता. समान गुण तथा शीलवाळा ते बंनेने परस्पर मैत्री हती. जाणे बे नेत्रो पासे शीखेलुं होय तेवुं तेमनुं सख्य ऐक्यता पाम्युं हतुं. ते विषे अर्थदीपिकामां लखे छे के,

पाण्योरुपकार्तिं सत्वं, स्त्रिया भग्नशुनो बलम् ॥
जिव्हायादक्षतामक्ष्णोः, सखितां शिक्षत्येसुधीः ॥ १ ॥

"सद्बुद्धिवाळा पुरुषे बे हाथ पासेथी उपकार शीखवो, स्त्री पासेथी सत्व शीखवु. भागता श्वान पासेथी बळ करतां शीखवुं, जिव्हा पासेथी डहापण शीखवुं अने बे नेत्र पासेथी मित्रपणुं शीखवुं." ते राजाने वसु नामे गुरु हता. तेने चित्रगुप्त नामे एक पुत्र हतो. तेने कौतुक जोवां बहु प्रिय हतां.

एकदा जयशेखर राजा अकस्मात् मृत्यु पामी गया. एटले अमात्योए ज्येष्ठ राजपुत्र पुरुषदत्तने राजा कर्यो अने कनिष्ठ राजपुत्र पुरुषसिंहने युवराजपद ऊपर बेसार्यो. एकवखते राजाए राजसभामां कह्युं के, "आ सर्व समृद्धि के जे मारा पिताने शरणदायक थई नहीं ते मने शरणभूत केम थशे ?" ते सांभळी तेना गुरु बोल्या के "हे कुमार, तमारा पिताना श्रेयने माटे सुवर्णना पुतळाना, गायोना, भूमिना, तेमज शय्या, उपानह, तिल, अने कन्या विगेरेना दान ब्राह्मणोने आपो. कारण के पुत्रे आपेला दाननुं फळ पिताने प्राप्त थाय छे, एम श्रुतिमां कह्युंछे. अने ते माटेज लोको पुत्रनी इच्छा करे छे" पछी राजाए सर्व दर्शनवाळाओने बोलावी बोलावीने ते दान आपवा मांड्यां. ज्यारे जैनमुनिओने बोलाव्या त्यारे तेओ बोल्या के "हे राजन् ! जीवघात करनारा दान मुनिओने योग्य नथी. ते विषे वृंदारुवृत्तिमां कह्युं छे केः–

तथाहि येन जायंते, क्रोधलोभादयो भृशं ।
स्वर्णं रूप्यं न तं देयं, चारित्रिभ्यश्चरित्रहृत् ॥ १ ॥

"जेनाथी क्रोध, लोभ विगेरे विशेषे उत्पन्न थाय तेवुं सुवर्ण अने रूपुं चारित्रधारीओने आपवुं नहीं. कारण के ते चारित्रने हरनारुं छे." वळी कह्युं छे केः–

विभवो वीतसंगानां, वैदग्ध्यं कुलयोषितां ।
दाक्षिण्यं वणिजां प्रेम, वेश्यानाममृतं विषं ॥

"निःसंग पुरुषोने वैभव विष समान छे, कुलीन स्त्रीओने अति चातुर्य विष समान छे, व्यापारीने दाक्षिण्यता विष समान छे अने वेश्याओने प्रेम विष समान छे. आ चारे अमृत समान छतां ते ते अधिकारीपरत्वे विष जेवां छे." वळी हे राजा ! जे अपवित्र वस्तु खाय अने शींगडा तथा खरीओथी जंतुओने मारे तेवा पशु विगेरेनुं दान श्रेयने माटे केम थाय ? माटे जो दान आपवुं होयतो एक अभयदान आपवुं तेज श्रेष्ठ छे. कह्युं छे के,

कपिलानां सहस्रं तु, यो द्विजेभ्यः प्रयच्छति ।
एकस्य जीवितं दद्यात्, कलां नार्हति षोडशीं ॥

" जे ब्राह्मणोने एक हजार कपिला गायो आपे अने एकने जीवितदान आपे तो ते गोदान जीवितदाननी सोळमी कळाने पण योग्य थतुं नथी. " तेमां पण बीजाए करेलुं जे धर्मकर्म, तेनुं फळ बीजाने मळतुंज नथी; जे करे तेनेज मळे छे. कह्युं छे के,

एकस्मिन् भुक्तवत्यन्यः, साक्षादपि न तृप्यते ।
मृतस्य कल्पते यत्तु, तद्भस्मनि हुतोपमं ॥ १ ॥

"एक माणस जमे अने बीजो तृप्ति पामे एवुं साक्षात् पण बनतुं नथी तो जे मरेलाने माटे कल्पे छे, ते तो भस्ममां (घी) होम्या बराबरज छे " करेलुं कर्म तेना कर्त्तानेज अनुसरे छे. जो एम न होयतो "कृतनाश (करेलानो नाश) अने अकृतागम (नहीं करेलानो आगम) ए दोष प्राप्त थाय " आ प्रमाणे सांभळी राजा बोल्यो–" महाराज ! त्यारे तमने शुं शुं आपीए ? " पछी मुनिओए एषणीय-प्रासुक आहार विगेरेनुं स्वरूप कही बताव्युं. ते सांभळी जैनमुनिना धर्ममां निर्दोषपणुं जाणी राजा पुरुषदत्ते पोताना कनिष्ठबंधुने राज्य ऊपर बेसाडीने सो राजपुत्र साथे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे अवधिज्ञान प्राप्त करी पोताना ज्ञातिजनने प्रतिबोधवा माटे त्यां आव्या.

राजा पुरुषसिंहनी साथे तेना पुरोहितनो पुत्र चित्रगुप्त तेमने वांदवा माटे आव्यो. त्यां देशना आपतां कोई एक कठीयारो प्रतिबोध पाम्यो. ते जोई जैनधर्मनो अज्ञात, मिथ्यात्वने लीधे जैनधर्म ऊपर द्वेष करनारो चित्रगुप्त राजाना भयथी दंभ वडे आप्रमाणे बोल्यो के– " अहो ! आ कठीआराने धन्य छे, जेमणे सर्वस्व छोडीने चारित्र ग्रहण कर्युं. जेथी हवे मेहेनत वगर तेने अन्नादिक मळशे. वळी राजा विगेरेनी वेठथी पण ए निश्चित थई गयो. अहो ! मुनिवेषनो महिमा केवो छे ! " आवा तेना व्यंग भरेला वचनो सांभळी गुरु बोल्या–अहो ! अद्यापी तने अनर्थदंड मारे छे. चित्रगुप्त बोल्यो–अनर्थदंड एटले शुं ? ज्ञानीए कह्युंके, अज्ञान, क्रोध अने दंभथी अनर्थदंड थाय छे अने तेनुं फळ भवे भव कुयोनिमां पडवारूप प्राप्त थाय छे. ए अनर्थदंडनी विडंबना सांभळ.

अनर्थदंड ऊपर कथा.

पूर्वे भद्दिलपुरमां जिनदत्त श्रेष्ठीनो पुत्र सेन नामे हतो. ते बालवयमां वैराग्यवान् थयो. पिताए तेने वैराग्यवृत्ति छोडाववाने जारपुरुषोनी गोष्ठिमां मूक्यो. त्यां तेने राजपुत्र साथे मैत्री थई. नीच लोकोना संगथी ते पाप करवामां परायण थयो.

एक वखते तेणे राजपुत्रने कह्युं के, हे मित्र, तारा वृद्ध पिताने मारीने सत्वर राज्य केम लेतो नथी ? आ विचार मंत्रीना जाणवामां आवतां तेणे राजाने वात करी. राजाए तेवणिक् पुत्रने कुमारने कुबुद्धि आपनारो जाणी 'आ वध करवा योग्य छे' एम सुभटोने जणाव्युं. सुभटोए तेने बांधीने मारी नाख्यो. ते मृत्यु पामीने नारकी थयो. त्यांथी नीकळी असंख्य काळसुधी भमीने तुं चित्रगुप्त नामे पुरोहितपुत्र थयोछे. आ प्रमाणे पोतानो पुर्वभव सांभळी जातिस्मरण थतां चित्रगुप्त प्रतिबोध पाम्यो अने तेणे पेला मुनिरूप कठीआराने नमन कर्युं. त्यारे गुरु बोल्या–हे चित्रगुप्त ! बीजी एक वार्त्ता सांभळः—

द्रुमकमुनिनो प्रबंध.

एकवखते श्री वीरप्रभु पासे कोई भीखारीए दीक्षा लीधी. तेणे श्री वीरप्रभुने विज्ञप्ति करी के, हे स्वामी ! ज्ञानरूपी सूर्यना उदय विना हुं चारित्र मार्गने केवी रीते जोई शकीश ? प्रभुए तेने चौदपूर्वनुं रहस्य कह्युं के, 'तुं सर्वत्र मनने वश कर.' तेणे ते वात स्वीकारी. त्यारथी मासक्षपण विगेरेने पारणे फरता कोई वखत तेने आहार मळे नहीं अने लोको तरफथी अपमान थाय तोपण ते भगवंतनुं वचन संभारीने शुभ ध्यान धरवा लाग्यो. एक वखते कोई अज्ञ लोकोए तेनुं हास्य कर्युं के, 'अहो ! आ पुरुषे केटलुं बधुं धनादिक छोडीने संयम लीधुं छे के जेथी ते पाखंड करीने लोकोने फोगट दबावे छे.' आ वाक्य अभयकुमारे चौटामां सांभळ्युं. पछी अभयकुमारे लोकोने एकठा करीने कह्युं के, 'जे कोई चक्षुइंद्रियनो विषय छोडी दे तेने हुं आ बहु मूल्यवाळु रत्न आपुंछुं.' ते वखते कोई बोल्युं नहीं. पुनः अभयकुमारे कह्युं के, 'जे कोई स्पर्शइंद्रियनो विषय छोडे तेने आ बीजुं रत्न आपुंछुं.' वळी कह्युं के 'जे पांचे इंद्रियोना विषयने छोडीने तेने वश करे तेने हुं आ पांच रत्नो आपुंछुं ' पण कोईए तेनो प्रत्युत्तर आप्यो नहीं. एवामां ते मुनि सन्मुख आवता हता तेमने नमन करीने अभयकुमारे कह्यु के, 'हे स्वामी ! तमे पांचे इंद्रियोने जितनारा छो माटे आ पांच रत्न तमेज ग्रहण करो.' मुनि बोल्या–'ए अर्थ (द्रव्य) अनर्थनेज आपनार छे, तेथी में श्री वीरप्रभुनी समक्ष यावज्जीव सुधी तेनुं प्रत्याख्यान कर्युं छे.' पछी अभयकुमारे लोकोने कह्युं के–'अरे लोको ! आ मुनिनुं निःस्पृहपणुं जुओ ! तमे शुं जोईने तेमनुं हास्य कर्युं ?' पछी सर्व लोकोए मुनिने प्रणाम करीने खमाव्या. ते मुनि वीरभगवंतना वचनमां तत्पर रही अंते केवळ ज्ञान मेळवीने मुक्तिने प्राप्त थया.

आ वृत्तांत सांभळी चित्रगुप्त गर्वरहित थइ गयो. पछी सर्व अनर्थदंडने निवारवाने माटे मुनिव्रत लई पूर्वकृत पापनो दुस्तप तपस्यावडे नाश करीने आ संसा-

रना प्रपंचने टाळी दीधो. अर्थात् सिद्धिपदने पाम्यो. तेथी प्रमाद, क्रोध, कपट अने अज्ञानथी तथा दुर्ध्यान विगेरेथी पोताना आत्मधर्मने हणनार अनर्थदंडनो त्याग करवो अने श्री जैनधर्मने भजवो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ सप्तत्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३७ ॥

व्याख्यान १३८ मुं.

हवे वारंवार सेववा योग्य चार शिक्षाव्रत कहेछे. तेमां पेहेलुं सामायिक नामे शिक्षाव्रत कहेछे.

मुहूर्त्तावधि सावद्यव्यापारपरिवर्जनम् ।
आद्यं शिक्षाव्रतं सामायिकं स्यात्समताजुषाम् ॥ १ ॥

भावार्थः-

"एक मुहूर्त्तसुधी सावद्य व्यापारने छोडी देवो ते पेहेलुं शिक्षाव्रत कहेवाय छे. ते समताने सेवनारा पुरुषोने प्राप्त थायछे."

विस्तरार्थ.

मुहूर्त्त एटले बे घडी सुधी सावद्य के० पापयुक्त मन वचन कायानी चेष्टारूप व्यापारने छोडवो ते पेहेलुं शिक्षाव्रत. जे शिखवा योग्य एटले वारंवार करवा योग्य ते शिक्षाव्रत कहेवाय छे. समता एटले रागद्वेषना हेतुमां मध्यस्थपणुं. ते विषे कह्युं छे के,

इतो रागमहांभोधि, इतो द्वेषदवानलः ॥
यस्तयोर्मध्यगः पंथाः तत्साम्यमितिगीयते ॥ १ ॥

"एक तरफ रागरूप मोटो समुद्र, अने एक तरफ द्वेषरूपी दावानळ-ते बंनेना मध्यनो जे मार्ग ते साम्य-समता कहेवायछे." तेवी समताने भजनारा जीवोने सामायिक थायछे. हवे सामायिकना बीजा अर्थ कहे छे-सम एटले रागद्वेष रहित होता सता आय एटले ज्ञानादिकनो जे लाभ ते सामायिक अथवा सम एटले प्रतिक्षणे ज्ञानादि अपूर्व पर्याय के जेओए चिंतामणि तथा कल्पद्रुम विगेरेना प्रभावनो पण ति

रस्कार करेलाछे अने जेओ निरुपम सुखना हेतुरूप छे, तेओनी साथे जे योजाय ते समाय कहेवाय अने ते समाय जेनुं प्रयोजन छे ते सामायिक कहेवाय छे. ते सामायिक सावद्य कर्मनो त्याग कर्या विना थतुं नथी, ते विषे परम ऋषिओए कह्युं छे के, "सावद्य योगने छोडीने करवा योग्य एवुं सामायिक केवळीओए प्रशस्त (श्रेष्ठ) कहेलुं छे. ' तेवुं सामायिक गृहस्थना श्रेष्ठ धर्मरूप जाणी आत्मानुं हित करनारा पुरुषोए परलोकने अर्थे करवुं जोइए. " ते सामायिकनुं फळ एटलुं मोटुं छे के, जे कोईथी गणी शकातुं नथी. कह्युं छे के,

दिवसे दिवसे लरकं, देइ सुवन्नस्स खंडियं एगो ।
इयरो पुण सामाइय, करेइ न पहूप्पए तस्स ॥

"एक पुरुष दिवसे दिवसे लाख सुवर्णनुं दान दे अने बीजो सामायिक करे तो सुवर्णनुं दान सामायिकनी बरोबर न थाय. " ते विषे एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणेः—

सामायिक ऊपर एक दृष्टांत.

कोई नगरमां एक धनाढ्य गृहस्थ रहेतो हतो. ते दातार होवाथी हंमेशा पात्र अपात्रनो विचार कर्या वगर लक्ष सुवर्णनुं दान आप्या पछी पोताना पलंग उपरथी नीचे उतरतो हतो. तेनी पाडोशमां एक वृद्ध श्राविका रहेती हती ते हंमेशा एक सामायिक करती हती. एक वखते कोई कारणने लईने ते गृहस्थने अने वृद्धाने बंनेने दान आपवामां अने सामायिक करवामां अंतराय आव्यो. तेथी बंनेने खेद थयो. ते वृद्धानो खेद सांभळी पेला गृहस्थे गर्वथी कह्युं के, "अरे डोशी, तुं शेनो खेद करेछे ? एक वस्त्रनो कडको लईने हाथ विगेरेनुं प्रमार्जन न कर्युं तो तेथी शुं जतुं रह्युं ? तेमां शुं पुण्य थवानुं हतुं ? ते काममां द्रव्यनो खर्च तो बीलकुल जोवामां आवतो नथी. तेथी जो एवीरीते धर्म थतो होय तो सर्वे हंमेशा तेज कर्या करे. पछी कोई लक्ष सुवर्णनुं दान करेज नहीं. " ते सांभळी वृद्धा बोली के, "एवुं कहो नहीं, सुवर्णमणिना पगथीआवाळुं देरासर करावे तेथी पण सामायिकमां घणुं पुण्य छे. " पछी ' कंचणमणिसोवाण० ' ए गाथा तेणे कही संभळावी.

अनुक्रमे ते गृहस्थ अंतकाळे आर्त्तध्यानथी मृत्यु पामी हस्ती थयो अने ते वृद्ध श्राविका सामायिकना ध्यानथी मृत्यु पामीने ते गामना राजानी पुत्री थई. अनुक्रमे ते हस्तीने अटवीमांथी राजाए पकड्यो अने तेने पोतानो पट्टहस्ती कर्यो. एकदा राजमार्गे चाल्याजतां ते हस्तीए पोतानुं घर विगेरे जोयुं. तेथी तेने जाति-

स्मरण थवाथी ते मूर्छा खाइ पृथ्वी ऊपर पडीगयो. तेने जोवाने राजपुत्री त्यां आवी. तेने पण पोतानुं घर विगेरे जोवाथी जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी पोताना ने हाथीना पूर्वभवनुं सर्व स्वरूप तेना जोवामां आव्युं. एटले तेणीए पोताना बे हाथे हाथीने उठाडवा मांड्यो तो पण ते उठ्यो नहीं; एटले राजपुत्री बोली–

उठ सिठि मम भ्रंत कर, करि हूओ दाणवसेण ।

हुं सामाइय रायधुअ, बहुगुण समहिय तेण ॥

" हे शेठ ! उठ, भ्रांति न कर, तुं दानना प्रभावथी हस्ती थयोछे अने हुं सामायिकना प्रभावथी राजपुत्री थइछुं; केमके दान करतां सामायिकनुं पुण्य अधिक छे. " आवुं राजपुत्रीनुं वचन सांभळी हस्ती सत्वर बेठो थयो. तेथी राजा विगेरेने मोटुं आश्चर्य थयुं. पछी राजाए पुछयुं एटले पुत्रीए बनेना पूर्वभवनुं वृत्तांत कही संभळाव्युं.

पेलो हस्ती राजपुत्रीना वचनथी प्रतिबोध पाम्यो. अने बे काळ सामायिक करवा माटे पृथ्वीनी तरफज नीची दृष्टि राखी पोतानी गुरूणीनी समीपे एक एक मुहूर्तसुधी समताथी रहेवा लाग्यो. ते भाव सामायिकधारी हाथी सामायिक लेवाने अने पूर्ण करवाने वखते पोतानी गुरूणी जे राजकन्या तेने नमस्कार करीने बेसवा तेमज उठवा लाग्यो. पछी जातिस्मरणवडे भक्ष्य अभक्ष्य तथा पेय अपेय विगेरेनुं ज्ञान प्राप्त करी समाधिवडे आयुष्य पूर्ण करीने सहस्रार देवलोकमां देवता थयो.

" कोई धनाढ्य हमेशा याचकोने सुवर्णनी भूमिना दान आपीने पछी पुण्य अने कोई भविप्राणी दररोज सामायिक करे तेमां सामायिक करनारने अधिक पुण्य थायछे, एम मुनिवरो कहे छे; तेथी सर्व भविप्राणीओए पुण्यरूप सामायिक अवश्य करवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टत्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३८ ॥

व्याख्यान १३९ मुं.

सामायिक व्रतमां त्यजवायोग्य पांच अतिचार कहेछे.

कायावाङ्मनसा दुष्ट, प्रणिधानमनादरः ।
स्मृत्यनुपस्थापनं च, स्मृताः सामायिकव्रते ॥ १ ॥

भावार्थः

"मन, वचन अने कायाथी दुष्ट आचरण करे ते त्रण, सामायिकमां आदर राखे नहीं, ते चार अने व्रतना काळ विगेरेनुं स्मरण करे नहीं, ते पांच—एम सामायिक व्रतमां पांच अतिचार कह्या छे."

विस्तरार्थः

काया, वाणी अने मन वडे दुष्ट प्रणिधान एटले अनाभोग विगेरेथी सावद्य-योगमां प्रवृत्ति करवी. तेमां शरीरना अवयव—हाथ पग विगेरेनुं वारंवार हलाववुं, प्रमार्ज्या वगर शरीर खंजवाळवुं, भिंत विगेरेनुं आलंबन लेवुं अने प्रमार्जन कर्या वगरनी भूमि ऊपर बेसवुं, इत्यादि कायानुं दुष्ट प्रणिधान कहेवाय छे. वचनथी कठोर भाषण करवुं, अथवा मार, रांध, जा, आव, बेस, उभो रहे, आ दुकान तथा घरनी कुंची ले इत्यादि वचनो बोलवा ते वचन संबंधी दुष्ट प्रणिधान कहेवाय छे. ते विषे कह्युं छे के, "जेणे सामायिक लीधुं होय, तेणे प्रथम बुद्धिए विचारीने सत्य अने निर्दोष वचन बोलवुं; अन्यथा सामायिक थयुं न कहेवाय." मनवडे घर तथा दुकान प्रमुखनुं सावद्य चिंतवन करवुं ते मन संबंधी दुःप्रणिधान कहेवाय छे. ते विषे कह्युं छे के, "जे श्रावक सामायिक करीने गृहकार्य चिंतवे ते आर्त्तध्यानवाळा श्रावकनुं सामायिक निरर्थक थायछे." एटले के जे श्रावक सामायिक लईने एवुं चिंतवे के, आजे घरमां घी, हिंग, मीठुं अने इंधणा नथी अने स्त्री आजकालनी तरुण छे, तो काले घरनो निर्वाह शी रीते थशे ? आ प्रमाणे चिंतवनारा श्रावकनुं सामायिक निरर्थक थायछे. आ मन संबंधी दुष्ट प्रणिधान समजवुं. एम त्रणयोग संबंधी त्रण अतिचार जाणवा.

चोथो अतिचार अनादर एटले सामायक करवामां उत्साह न राखवो ते; अर्थात् नियमित वखते सामायिक करवुं नहीं अथवा लईने तत्काल पारी देवुं. कह्युं छे के, "जे सामायिक लईने तत्काळ पारीदे अथवा यथेच्छ पणे करे तेनुं सामायिक अनवस्थित समजवुं. तेवा अनादरथी तेने शुद्ध समजवुं नहीं."

पांचमो अतिचार सामायिकनुं स्मरण न थाय ते, जेमके में सामायिक कर्युं छे के नहीं ? एवा प्रबळ प्रमादथी सामायिक सांभरे नहीं ते पांचमो अतिचार कहेवाय छे.

अहीं कोई शंका करे के, "सामायिकमां दुविहं तिविहेणं ए पाठ प्रमाणे द्वीविध त्रिविधे (मन वचन काया संबंधी) पच्चखाण कराय छे; पण मननो रोध करवो अशक्य होवाथी मन संबंधी दुष्ट प्रणिधान थवानो संभव छे. अने तेथी

लीधेला व्रतनो भंग थाय छे तेमज व्रतनो भंग थवाथी प्रायश्चित्त आवे छे माटे तेवुं सामायिक न करवुं तेज श्रेष्ठ जणाय छे." (गुरु कहे छे के) आवी शंका करवी नहीं. कारण के सामायिकमां मनवडे करुं नहीं, वचनवडे करुं नहीं, कायावडे करुं नहीं इत्यादि प्रत्याख्यानना छ भांगा छे. तेमां अनाभोग विगेरेथी तेमांथी एकनो भंग थतां पण बाकीना भांगा अखंड रहेछे तेथी ते व्रतनो सर्वथा भंग थतो नथी. वळी मनना दुःप्रणिधाननी मिथ्यादुष्कृत आपवा वडेज शुद्धि कहेली छे, तेथी सामायिक न करवुं ते श्रेष्ठ समजवुं नहीं. केमके जो सामायिक न करे तो परिणामे सर्वविरतिनो पण अनादर थवानो प्रसंग आवे.

वळी कोई 'अविधिए करेला धर्मानुष्ठानथी धर्मानुष्ठान न करवुं तेज सारुं' एम कहे छे. ते पण घटीत नथी; कारण के कह्युं छे के,

अविहिकया वरमकयं, उस्सुयसुअं भणंति गीयथ्था ।
पायछित्तं जम्हा, अकये गुरुअं कए लहुअं ॥ १ ॥

'अविधिए करवा करतां न करवुं सारुं' एम जे कहे छे ते 'उत्सूत्र वचन छे' एम गीतार्थ कहे छे. कारण के, धर्मानुष्ठान न करवाथी गुरू प्रायश्चित्त आवेछे अने करवाथी लघु प्रायश्चित्त आवे छे.' प्रथम कांईक अतिचार सहित क्रिया करतां करतां अभ्यासथी काळे करीने अतिचार रहित अनुष्ठान थई शके छे. धनुर्विद्या शीखनारा विगेरे प्रथमथी सर्व कळाना पारगामी थता नथी पण अभ्यास करवाथी तेओ प्राये कुशल थई शके छे. वळी एक वखत जलबिंदु पडवाथी कांई सरोवर पूर्ण भरातुं नथी; धीमे धीमे भराय छे. तेथी सम्यग् प्रकारे मननी शुद्धिवडे वारंवार कर्या करवुं. आगममां पण कह्युं छे के,

जीवो पमाय बहुलो, बहुसोवि बहुविहेसु अथ्थेसु ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥

"जीव घणा प्रकारना कार्योमां पडेलो होवाथी बहु प्रमादी होयछे, माटे तेणे बहुवार सामायिक करवुं." सामायिकमां रहेलो श्रावक पण यति जेवो गणाय छे. श्री आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमां कह्युं छे के, "श्रावक सामायिक करवाथी मुनिना जेवो थायछे, तेथी ते वारंवार कर्या करवुं." आ सामायिक व्रत महणसिंहनी जेम हंमेशा आराधवुं तेनी कथा आ प्रमाणे—

१ उपयोग भ्रंश.

महणसिंहनी कथा.

दिल्हीमां पिरोजशाह बादशाह राज्यगादीपर हतो त्यारे त्यां महणसिंह नामे एक साहुकार रहेतो हतो. एक वखते बादशाहे दिल्हीथी बीजे नगर जतां महणसिंहने पोतानी साथे लीधो. मार्गमां चालतां सूर्य अस्त थवानो समय आव्यो एटले महणसिंह घोडा उपरथी उतरी भूमिने प्रमार्जी प्रतिक्रमण करवाने रोकायो. ते हंमेशा प्रतिक्रमण करवाना उपकरणो साथे राखतो हतो. बादशाह आगळ चालतां बीजे गाम पहोंच्यो. त्यां महणसिंह श्रेष्ठीने साथे जोयो नहीं एटले तेने शोधवा एक माणसने मोकल्यो. श्रेष्ठी सामायिक पूरुं करी पारीने बादशाहनी पासे आव्यो. बादशाहे पाछळ रहेवानुं कारण पूछयुं. एटले महणसिंहे कह्युं के, "हे महाराजा, ज्यारे सूर्य उगे छे अने अस्त थायछे त्यारे ग्राम, अरण्य, नदी, स्थळ के पर्वत गमे ते स्थाने ते बंने काळे हुं अवश्य प्रतिक्रमण करुंछुं." बादशाहे कह्युं के, "हे श्रेष्ठी ! आपणे शत्रुओ घणा छे, तेथी कदि तेओ तमने ते काम करतां एकला देखीने मारी नांखे तो पछी शुं करो ?" महणसिंहे कह्युं के, "जहांपनाह, धर्म करतां जो मृत्यु थायतो स्वर्गज मळे. ते माटे में आजे ते स्थळेज प्रतिक्रमण कर्युं." महणसिंहनुं आ वचन सांभळी बादशाह घणो खुशी थयो अने एवो हुकम कर्यो के, अरण्यमां पर्वतमां के ज्यां आ महणसिंह प्रतिक्रमण करवा बेसे त्यां एक हजार सुभटोना सैन्ये तेनी रक्षा करवा रहेवुं.

एक वखत बादशाहे दिल्ही आव्या पछी कांईक दोष उभो करीने महणसिंहना हाथ पगमां बेडी नांखीने तेने कारागृहमां नाख्यो. त्यां तेने आखा दिवसनी लांघण थई तोपण सायंकाळे प्रतिक्रमण करवा माटे रक्षकोने बे सोनैया आपी बे घडीसुधी हाथमांथी बेडी कढावी अने तेणे प्रतिक्रमण कर्युं. एवी रीते एक माससुधीमां साठ सोनैया खर्चीने तेणे हंमेशा प्रतिक्रमण कर्युं. आ वृत्तांत जाणी दिल्हीपति तेना दृढ नियमथी खुशी थयो अने तेने बंदीखानामांथी मुक्त करी सिरपाव आपीने पूर्वेथी विशेष मानसाथे पोतानी पासे राख्यो.

"एवी रीते महणसिंह धर्म ऊपरनी दृढताथी दिल्हीपतिनो कोशाध्यक्ष थयो अने पिरोजशाह बादशाहनी पासे घणी प्रशंसा पाम्यो. ए सर्व तेज नवमा सामायिक व्रतनुं जाणवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१३९॥

व्याख्यान १४० मुं.

हवे सामायिकना भेद कहेछे.

सामायिकं स्यात्त्रैविध्यं, सम्यक्त्वं च श्रुतं तथा ॥
चारित्रं तृतीयं तच्च, गृहिकमनगारिकम् ॥ १ ॥

भावार्थः–

"सामायिक त्रण प्रकारनुं छे. समकित सामायिक, श्रुत सामायिक अने चारित्र सामायिक. तेमां त्रीजुं चारित्रसामायिक बे प्रकारनुं छे. एक गृहिक एटले श्रावकनुं अने बीजुं अनगारिक एटले साधुनुं."

विस्तरार्थः–

पेहेलुं समकित सामायिक उपशमादिक भेदथी पांच प्रकारनुं छे. बीजुं श्रुत सामायिक ते द्वादशांगी रूप छे. त्रीजुं चारित्र सामायिक बे प्रकारनुं छे. तेमां पेहेलुं गृहिक एटले देशविरति सामायिक द्वादशव्रतना आराधनरूप छे अने बीजुं जे अनगारिक सामायिक ते सर्व सावद्य वर्जन तथा पंचमहाव्रतरूप छे. ते सर्वविरति चारित्र सामायिक सर्वद्रव्य विषयसंबंधी छे. ते विषे कह्युं छे के,

पढमंमि सव्वजीवा, बीए चरमेय सव्वदव्वाइं ।
सेसा महव्वया खलु, तदिक्क देसेण दव्वाणं ॥ १ ॥

"पेहेला व्रतमां सर्व जीव द्रव्य आवेछे, बीजा अने पांचमा व्रतमां सर्व (षट्) द्रव्य आवे छे अने बाकीना एटले त्रीजा अने चोथा व्रतमां ते द्रव्यनो एक देश आवे छे." तेनो विस्तरार्थ एवो छे के, पेहेला महाव्रतमां सर्वसूक्ष्म–बादर जीवनुं पालन करवानुं होवाथी तेमां एक जीव द्रव्य आवे छे. बीजा अने पांचमा व्रतमां सर्व द्रव्य आवे छे ते आ प्रमाणे–'आ पंचास्तिकायात्मक लोक कोणे जोयो छे ? ते तो खोटी वात छे' एवां वचन बोलवाना त्यागथी बीजा महाव्रतमां छए द्रव्यनो संबंध आवे छे.' अने पांचमा व्रतमां अति मूर्छावडे एवुं चिंतवे के, 'हुं सर्वलोकनो स्वामी थाउं तो ठीक' एम सर्व द्रव्यविषयिक जे मूर्छा तेना त्यागरूप पांचमुं परिग्रह विरमणव्रत होवाथी तेमां छए द्रव्यनो समावेश थायछे. बाकीना बे महाव्रत द्रव्यना एक देशभूत छे. एटले के कांइपण द्रव्य वगरआप्युं राखवुं के लेवुं ते पुद्गल द्रव्यनो एक देश थयो. ते अदत्तादानना विरमणरूप त्रीजुं व्रत छे. अने स्त्रीनुं रूप तथा तेनी साथे रहेला द्रव्य संबंधी मोहनो त्याग करवो ते अब्रह्म विरति

रुपं चोथुं महाव्रत छे तेमां पण द्रव्यनो एक देश आवे छे. अने आहार द्रव्य विषय छट्ठुं रात्रीभोजन त्यागरुप व्रत छे. तेमां पण द्रव्यनो एक देशज छे. एवीरीते चारित्रसामायिक सर्वद्रव्य विषयी छे. तेम श्रुतसामायिक पण ज्ञानरूप होवाथी सर्व द्रव्य विषयी छे. एवीरीते समकितसामायिक पण सर्व द्रव्यनी श्रद्धामय होवाथी सर्वद्रव्य विषयी थाय छे. ए सामायिकने एक जीव आ संसारमां पर्यटन करतो सतो संख्यात असंख्यातवार प्राप्त करे छे. कह्युं छे के,

सम्मत्तदेसविरया, पलीयस्स असंखभागमित्ताउ ।
अठ्ठभवाउ चरित्ते, अणंतकालं सुअ समए ॥

" देशविरति अने समकित क्षेत्र पल्योपमना असंख्यातमा भागमां जेटला आकाश प्रदेश होय छे तेटला भवमां लाभे छे. सर्व विरति संयम आठ भवमां लाभे छे अने अक्षरात्मक श्रुत तो अनंतकाळपर्यंत पामे छे. " भावार्थ एवो छे के, समकित सामायिक अने देशविरति सामायिक ए बंने क्षेत्रपल्योपमना असंख्याता भागमां जेटला आकाश प्रदेश होय छे तेटला प्रमाणवाळा भवमां एक जीव उत्कृष्टथी प्राप्त करे अने जघन्यथी एक भवमां प्राप्त करे. चारित्र (सर्वविरति) सामायिक तो उत्कृष्ट आठ भवमां प्राप्त करे, त्यार पछी सिद्धिने पामे अने जघन्यथी मरुदेवा मातानी जेम एक भवमांज प्राप्त करीने सिद्धिने पामे. सामान्यथी श्रुतसामायिक अनंत भवमां प्राप्त थाय अने जघन्यथी मरुदेवानी जेम एकज भवमां थाय. स्वल्प श्रुतसामायिकनो लाभ तो अभव्यने पण थाय छे अने ते ग्रैवेयक देवताना स्थान सुधी रहेछे. अंतरद्वारमां कह्युं छे के कोई एक जीव अक्षर ज्ञान प्राप्त करी पतित थईने पाछो अनंतकाळ पछी प्राप्त करे ते उत्कृष्ट अंतर जाणवुं. समकितादि सामायिकमां जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त्तनुं जाणवुं. अने उत्कृष्ट देशे उणुं अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनुं जे अंतर छे ते बहु आशातना करनारा जीवने माटे समजवुं. कह्युं छे के, तीर्थंकर, प्रवचन, संघ, श्रुत—ज्ञान, आचार्य, गणधर अने लब्धिवाळा महर्द्धिक मुनिनी बहुवार आशातना करनार जीव अनंत संसारी थायछे. परंतु त्यार पछी पण समकित सामायिकना महिमाथी प्राणी जरूर सिद्धिपदने पामे छे. आ संबंधमां चार चोरनी कथा छे ते आ प्रमाणेः—

चार चोरनी कथा.

क्षितिप्रतिष्ठित नगरनो रहेवासी कोई श्रावक पोतानो निर्वाह करवाने माटे भिल्लोकोनी पाळमां आवीने वस्यो हतो. पुण्ययोगे त्यां रहेता सता ते कोटी धननो स्वामी थई गयो. एक वखते ते भिल्लोकोना कुळना चार वृद्ध पुरुषो ते श्रावकनी समृद्धि

जोईने विचार करवा लाग्या के, आ वणिके आपणने लोभमां नाखी छेतरीने घणुं द्रव्य एकठुं कर्युं छे, माटे रात्रे तेना घरमां खात्र पाडी तेनुं सर्व द्रव्य पाछुं लई लइए, नहीं तो ते कपटी वणिक हवे बधुं द्रव्य लईने पोताना नगरमां चाल्यो जशे. कह्युं छे के—

पासा वेश्या अग्नि जळ, ठग ठक्कुर सोनार,
ए दश नहोय आपणा, मंकरू वणिक बिलारू ॥ १ ॥

"पासा, वेश्या, अग्नि, जल, धूर्त्त, ठाकोर, सोनी, मर्कट, वणिक अने मार्जार—ए दश आपणा थता नथी." आवो विचार करी ते खात्र पाडवाने तत्पर थया. पेलो गृहस्थ श्रावक प्रतिदिन सात आठ सामायिक करतो हतो. ते दिवसे मध्यरात्री वित्या पछी ते पोतानी स्त्री साथे सामायिक लईने बेठो हतो. तेवामां पेला चोर खात्र पाडवाने आव्या. खात्र पाडीने अंदर जुएछे तो गृहपति जागतोछे, ते जोई तेओ विचारमां पड्या के तेनी जाग्रतावस्थामां चोरी शी रीते थशे ? माटे हमणा राह जोईए. अहिं पेला श्रावके तेमने जोईने विचार्युंके, " द्रव्यतो घणा भवमां मळशे, आ भवमां पण द्रव्य घणीवार आव्युं अने गयुं. पण जो ज्ञानादि भावद्रव्यने क्रोधादि चोर हरी लेशे तो पछी शुं करीश ? माटे ए भावद्रव्य बचाववुं तेज श्रेष्ठ छे. केमके जो भावधन होय तो बीजुं सर्व सुलभ छे." आ प्रमाणे विचारीने ते श्रावक उपराउपर सामायिक करवा लाग्यो. अने तेमां वारंवार नवकार मंत्र विगेरे भणवा लाग्यो. ते सांभळी चारे चोरने उहापोह करतां जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी पूर्वे असंख्य भव ऊपर जे धर्मानुष्ठान करेलुं अने जे भणेलुं ते सर्व सांभरी आव्युं. तेथी ते चारे विचार करवा लाग्या के, " पर धननी इच्छा करनारा आपणने धिक्कार छे. चोरी करवाथी बाह्य पुद्गलीक द्रव्य आवे छे पण भावात्मक आत्मधन—ज्ञानादिक तो चाल्युं जाय छे, ते आ जीव जोतो नथी. अहो ! आ श्रावकने धन्य छे के जे आपणने जोतां छतां पण पोतानुं लक्ष छोडतो नथी." आ प्रमाणे तेनी प्रशंसा करतां तेमणे समकित प्राप्त कर्युं अने चोरी विगेरेनुं प्रत्याख्यान कर्युं. तेथी तेमने देशविरतिपणुं प्राप्त थयुं. पछी वैराग्यनी वृद्धि थवाथी खड्ग तथा गणेशीओ विगेरे मुकी दई नवप्रकारना भावलोचना परिणामी थया, तेथी सर्वविरति सामायिक प्राप्त कर्युं. पछी अनुक्रमे शुक्ल ध्यान अने क्षपक श्रेणी पामीने सयोगी केवली नामे तेरमा गुणठाणाने तेओ प्राप्त थया. अर्थात् केवळ ज्ञान पाम्या.

सूर्यनो उदय थयो एटले तेओए द्रव्यलोच कर्यो. अने समिप रहेला देवताओए मुनि वेष आप्यो ते ग्रहण कर्यो. पेलो गृहस्थ श्रावक ते सर्वदर्शी चारे मुनिने

नमीने वारंवार तेमनी स्तुति करवा लाग्यो. चारे मुनिओए त्यांथी बीजे विहार कर्यो, अने अनुक्रमे तेओ मुक्तिने प्राप्त थया.

" एवीरीते एक गृहस्थना सामायिक चिन्हने जोईने चार चोर मुमुक्षु थया सता सामायिकना भावने प्राप्त थया अने छेवटे ज्ञान द्रव्यनी पोटली बांधी अव्ययपुर (मुक्तिपुर) मां पोहोंची गया."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १४० ॥

व्याख्यान १४१ मुं.

सामायिक सर्व गुणनुं पात्र छे अने ते अशुभ कर्मनी हानिथी प्राप्त थाय छे ते कहे छे.

तदेव सर्वगुणस्थानं पदार्थानां नज इव ।
दुष्ट कर्मविघातेन सुध्यानतस्तथा नवेत् ॥ १ ॥

नावार्थः

" सर्व पदार्थोनुं स्थान जेम आकाश छे तेम सर्व गुणोनुं स्थान सामायिक छे. ते दुष्ट कर्मना घातथी अने शुभ ध्यानथी प्राप्त थाय छे."

विस्तरार्थः

सामायिक ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादि सर्व गुणोनुं स्थान छे; कोनी जेम ते कहे छे. सर्व वस्तु, जेवी के घडो, वस्त्र, काष्ठ विगेरे, तेनुं आधार स्थान आकाश छे तेम. जेम सर्व आधेय वस्तु आकाशना आधारवडे स्थिति करे छे अने आकाश विना ते रही शकती नथी तेम ज्ञानदर्शनादि गुणो सामायिकने आधारे रहेला छे, तेओ सामायिक विना रही शकता नथी. तेवुं सामायिक शी रीते प्राप्त थाय? ते कहे छे. अशुभ कर्मना घातथी ते प्राप्त थायछे एम श्री जैन सिद्धांतमां कहेलुं छे. सामायिकने घात करनारा ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अने मिथ्यात्व मोहनीय कर्मना सर्वघाती स्पर्द्धक उघाडा थए सते देशघाती स्पर्द्धक अनंता उघडवाथी अनंत

गुणनी वृद्धिवडे समये समये विशुद्धमान थतां थतां शुभ शुभतर परिणामवालो प्राणी भावथी सामायिक सूत्र करेमिभंतेनो प्रथमाक्षर ककार प्राप्त करे छे. एवीरीते अनंत गुणनी वृद्धिवडे समये समये विशुद्धमान् थतां रेफादि अक्षरोनी पंक्तिने पामे छे, एवीरीते भावथी सामायिकनो लाभ भव्य प्राणीने थायछे. एम करतां करतां " करेमिभंते सामाइयं " इत्यादि समस्त सूत्रने मेळवे छे. ते विषे कह्युं छे के, " सामायिकनो घात करनारी सर्व घातिने देशघाति कर्मप्रकृतिनुं उद्घाटन थये सते अनंत गुणी वृद्धिवडे विशुद्ध एवा प्राणीने सामायिकनो लाभ थायछे " आ स्थाने घणुं कहेवानुं छे ते सर्व श्रीविशेषावश्यकथी जाणी लेवुं.

वळी सामायिक शुभ ध्यानथी थायछे. शुभ ध्यान ते धर्मध्यान अने शुक्ल ध्यान. तेमां सामायिकमां धर्मध्याननो विशेष प्रचार छे. ते धर्मध्यान चार प्रकारनुं छे. तेमां पेहेलुं आज्ञाविचय ते श्री वीतराग प्रभुना वचनने यथार्थपणे सर्दहवा. कारण के श्री वीतराग प्रभुना वचन, निश्चय अने व्यवहार, नित्य अने अनित्य एवा स्याद्वाद प्रकारथी सर्वोत्तम अने अमूल्य छे. ते विषे ध्यानशतकनी वृत्तिमां कह्युं छे के,

कल्पद्रुमः कल्पितमात्रदायी, चिंतामणिश्चिंतितमेवदत्ते ।
जिनेंद्रधर्मातिशयं विचिंत्य, द्वयेपि लोके लघुतामुपैति ॥

"कल्पवृक्ष मात्र कल्पित वस्तुने आपे छे, चिंतामणि मात्र चिंतवेली वस्तुनेज आपे छे, परंतु श्री जिनेंद्र धर्मनो अतिशय चिंतवतां ते बंने-कल्पवृक्ष अने चिंतामणि तेनी आगळ लघुताने पामे छे." वळी कह्युं छे के,

स्वरुपपररुपाभ्यां, सदसद्रुपशालिषु ।
यः स्थिरप्रत्ययो ध्यानं, तदाज्ञाविचयाह्वयं ॥

"स्वरुप अने पररुपवडे सत् असत् रुपवाळा वस्तुधर्मोमां जे स्थिर प्रतीतिवाळुं ध्यान ते आज्ञाविचय नामे पेहेलुं धर्मध्यान कहेवाय छे."

धर्मध्याननो बीजो भेद अपायविचय नामे छे ते आ प्रमाणे-आ जीवे संसारमां परिभ्रमण करतां घणा अपायो (कष्टो) प्राप्त कर्या छे. हे चेतन ! आत्माने स्वाधीन एवा मुक्तिमार्गने छोडी दइने तेंज तारा आत्माने हजारो अपायमां पाड्यो छे. पण आ आत्मा तत्वतः अज्ञानादिकथी रहित छे. वळी ते अनंतज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यवाळो एटले अनंत चतुष्टये युक्त छे; तेमज अनादि, अ-

नंत, अक्षर, अनक्षर, अमल, अरूपी, अकर्म, अबंध, अनुदीरक, अयोगी, अभेद्य, अछेद्य, अकषाय, अदेहात्मक, अनिंद्रिय, अनाश्रव, लोकालोकज्ञायक, सर्व प्रदेशे कर्म परमाणुओथी व्यतिरिक्त, शुद्धचिदानंद, चिन्मय, चिन्मूर्त्ति अने चित्पिंड छे. इत्यादि अनेक गुणे युक्त एवा आत्माने पण हे चेतन, मोहांधकारवडे परवश चेतनवाळो करीने तें कया कया अपाय नथी पमाड्या ? आ प्रमाणे आत्मानीं अने बीजानी अपाय परंपराने चिंतवता सता योगी पुरुषो अपायविचय नामे धर्मध्यानने प्राप्त करे छे.

हवे विपाकविचय नामे धर्मध्याननो त्रीजो भेद कहे छे. अनंतज्ञानादि गुणे युक्त एवो जीव पण विपाक एटले करेला कर्मना शुभाशुभ फळने द्रव्य क्षेत्रादिक सामग्रीवडे अनुभवे छे. तेमां द्रव्यथी स्त्री पुष्प विगेरेना सुखनो सुंदर जे उपभोग ते शुभ विपाक जाणवो; अने सर्प, शस्त्र, अग्नि, अने विष विगेरेथी थता अनिष्ट फळने अशुभ विपाक जाणवो. क्षेत्रथी मेहेलमां वसवाथी शुभ विपाक अने स्मशानमां वसवाथी अशुभ विपाक जाणवो. काळथी शीत विगेरेमां रति थवाथी शुभ अने अरति थवाथी अशुभ विपाक जाणवो. भावथी मननी प्रसन्नताथी शुभ अने रौद्र परिणाम विगेरेथी अशुभ विपाक जाणवो. भवथी देवतामां अने भोगभूमिमां शुभ अने नरकादि भूमिमां अशुभ विपाक जाणवो. एवीरीते द्रव्यादि सामग्रीना योगथी प्राणीओने पूर्वे बांधेला कर्म पोतपोतानुं फळ आपे छे; तेथी सुख दुःखने पामीने जीवे खेद के हर्ष धरवो नहीं. आ प्रमाणे सर्व कर्मनी प्रकृतिओना विपाकने विचारवा, ते विपाकविचय नामे त्रीजुं धर्मध्यान कहेवाय छे.

हवे संस्थानविचय नामे चोथुं धर्मध्यान कहे छे–चौदराजलोकना आकारनुं चिंतवन करवुं. जेमां उर्द्ध, अधो अने तिर्छालोकना स्वरुपनुं चिंतवन थायछे. तेनुं विशेष स्वरुप लोकभावनाथी जाणी लेवुं. ए सर्व लोकस्थानमां आ जीवे जन्मादिकथी नहीं स्पर्श करेलुं एवुं एके स्थान नथी. इत्यादि चिंतवन करवुं ते संस्थानविचय नामे चोथुं धर्मध्यान कहेवाय छे.

आ धर्मध्यान चोथा गुणस्थानथी मांडीने सातमा गुणस्थान सुधी जाणवुं. चंद्रावतंस राजानी जेम कष्ट प्राप्त थतां पण जे पुरुष आ धर्मध्यानने मुके नहीं, तेनेज सामायिक प्राप्त थायछे.

चंद्रावतंस राजानी कथा.

विशालापुरीमां चंद्रावतंस नामे राजा हतो. ते परम धर्मनिष्ठ थइ राज्य करतो हतो. एक वखते ते चतुर्दशीने दिवसे पोताना मेहेलमां कायोत्सर्ग करीने

रह्यो हतो. तेणे मनमां एवो अभिग्रह कर्यो हतो के ज्यांसुधी आ दीवो बळे त्यां सुधी मारे कायोत्सर्ग पारवो नहीं. राजानी भक्तिवंत एक दासी स्वामीने उभेला जोइ अंधारुं न थवा माटे वारंवार दीवामां तेल नांखवा लागी जेथी दीवो बुझायो नहीं. रात्रिना चारे पोहोर राजाए कायोत्सर्गमां रही धर्मध्यान ध्यायुं. ते धर्मध्याननुं स्वरुप आ प्रमाणे—

सूत्रार्थसाधनमहाव्रतधारणेश्च, बंधप्रमोक्षगमनागमहेतुचिंता ।
पंचिंद्रियव्यपगमश्च दयालुता च, ध्यानं तु धर्ममितितत्प्रवदंति तज्ज्ञा॥

" महाव्रतना धारण करवावडे सूत्रार्थसाधन संबंधी विचार, कर्मना बंध अने मोक्षनुं चिंतवन तथा गति आगतिना कारणोनुं चिंतवन, पंचेंद्रियपणाना विनाशनो विचार अने प्राणीमात्र उपर दयानी विचारणा तेने ध्यानना जाणवावाळा महात्माओ धर्मध्यान कहे छे. " आवा शुभ ध्यानमां तत्पर रही " जावनियमं पज्जुवासामि " ए पाठने अनुसारे चिंतवेला समयसुधी चंद्रावतंस राजाए कायोत्सर्ग पार्यो नहीं. ज्यारे सूर्य उग्यो अने दीवो बुझाइ गयो त्यारे कायोत्सर्ग पार्यो. ते वखते रुधिरथी बंने पग भराइ गयेला होवाथी पर्वतना शिखरनी जेम तुटीने भूमि उपर पड्या अने शुभ ध्यानथी मरण पामीने सद्गतिने प्राप्त थया.

"ए प्रमाणे बे घडिनुं सामायिक चिरकाळना कर्मने भेदे छे अने चंद्रावतंस राजानी जेम विशेष करवाथी तो विशेष फळ थायछे. जेम जळ मात्र स्पर्श करवाथी मलिनतानो नाश करेछे अने दीपक करवामात्रथी घोर अंधकारने हणे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकचत्वारिंशदधिकशततमः प्रबंधः ॥१४१॥

व्याख्यान १४२ मुं.

सामायिक दोष रहित करवुं जोइए ते विषे कहे छे.

द्वात्रिंशद्दोषनिर्मुक्तं, सामायिकमुपासकैः ।
विधिपूर्वमनुष्ठेयं, तेनैव फलमश्नुते ॥ १ ॥

भावार्थः–

" उपासको (श्रावको) ए सामायिक बत्रीश दोषथी रहित एवुं विधिपूर्वक करवुं, कारणके तेवी रीते करवाथीज तेनुं फळ प्राप्त थाय छे. "

विस्तरार्थः

सामायिक बत्रीश दोष टाळीने करवुं ते बत्रीश दोषमां बार कायाना दोष छे. ते आ प्रमाणे—१ वस्त्रे के हाथ विगेरेथी पग बांधीने बेसे. २ आसनने आम तेम हलावे. ३ कागडाना डोळानी जेम दृष्टिने फेरव्या करे. ४ कायाथी पापयुक्त कार्य आचरे. ५ पुंज्या वगर स्तंभ के भींत विगेरेनो टेको ले. ६ अंगोपांग संकोचे अथवा वारंवार लांबा प्रसारे. ७ आळस मरडे. ८ हाथ पगना आंगळाने वांका करी टाचका फोडे. ९ प्रमार्जन कर्या वगर शरीरने खणे. १० देहनो मेल उतारे. ११ शरीरने चंपाववानी इच्छा करे. १२ निद्रा विगेरेनुं सेवन करे. ए प्रमाणे बार काया संबंधी दोष जाणवा.

हवे दश वचन संबंधी दोष कहे छे,—१ सामायिकमां अपशब्द (गाळ) बोले. २ सहसात्कारे न बोलवानुं बोली जाय. ३ सावद्य कामनी आज्ञा आपे. ४ मरजीमां आवे तेम बोले. ५ सूत्रना आळावानो संक्षेप करीने बोले. ६ वचनथी कळह करे. ७ विकथा करे. ८ वचन द्वारा हास्य करे. ९ उघाडे मुखे बोले. १० अविरति लोकोने ' आवो, जाओ ' एम कहे. ए दश वचन संबंधी दोष छे.

हवे दश मन संबंधी दोष कहे छे—१ विवेक वगरना मनवडे सामायिक करे. २ यश–कीर्त्तिनी इच्छा राखे. ३ धन, भोजन अने वस्त्रादिकनी अभिलाषा करे. ४ मनमां गर्व धरे. ५ पराभव थतो जोइ नियाणुं चिंतवे. ६ आजीविकादिकना भयथी मनमां बीहे. ७ धर्मना फळनो संदेह राखे. ८ रौद्र चिंतवनथी अने मात्र लोक रीतिथी काळमान पूर्ण करे. ९ " आ सामायिकरुप कारागार (बंदीखानामां) थी क्यारे छुटीश " एवो विचार करे. १० स्थापनाजी के गुरुने अंधकार विगेरेमां राखी मनवडे लक्ष्य कर्या वगर उद्धतपणाथी वा शून्य मनथी सामायिक करे. आ दश मन संबंधी दोष छे.—ए प्रमाणे कुल बत्रीश दोषथी रहित एवुं सामायिक श्रावकोए विधिपूर्वक करवुं.

अनुष्ठान पांच प्रकारनुं छे—ते आ प्रमाणे–१ आलोकने अर्थे तपस्या के क्रिया विगेरे जे कांइ करे ते विषानुष्ठान जाणवुं. मागधीका वेश्याए कुळवालु-

आने भ्रष्ट करवा माटे कर्युं हतुं तेनी जेम. २ परलोकना सुखने अर्थे जे तपस्या क्रिया विगेरे करे ते गरलानुष्ठान जाणवुं, वसुदेवना जीव नंदीषेणनी जेम. ३ उपयोग वगर जे तप, सामायिक विगेरे करे अथवा बीजानी क्रिया जोइने समुर्छीमनी जेम करे ते अन्योन्यानुष्ठान जाणवुं. लौकिकशास्त्रमां पण कह्युं छे के " गुरुना उपदेश विना जे कोइ बीजानुं देखीने आचरे ते जटिलना मूर्ख शिष्यनी जेम हास्य करवा योग्य थायछे. "

जटिलना मूर्ख शिष्यनी कथा.

वर्द्धमाननगरमां कोइ भरडा–जटिलनो शिष्य हतो. ते एक वखते नगरमां भिक्षा मागवाने कोइ सुतारने घेर गयो. त्यां सुतार एक वांसने तेल चोपडी अग्निना तापथी पांशरो करतो हतो. ते जोइ पेला जडबुद्धि शिष्ये सुतारने पुछयुं के, आ शुं करोछो ? सुतारे कह्युं, वांका थइ गयेला वांसने पांशरो करीए छीए. मूर्ख शिष्ये विचार्युं के मारा गुरुपण वायुना विकारथी वांका थइ गयाछे. तेमने माटे आ उपाय सारो जणाय छे. सर्वने पांशरा करवानो आज प्रकार हशे पछी घेर आवी गुरुने तेल चोळी अग्निमां तपावा मांड्या, त्यां अग्निथी अत्यंत कष्ट पामी गुरु पोकार करवा लाग्या. तेमनो आक्रंद सांभळी घणा लोको एकठा थया, अने महा मेहनते गुरुने छोडाव्या. सर्व लोकोए मूर्ख शिष्यनो तिरस्कार कर्यो. आ उपनय पोतानी बुद्धिए विचारी बुद्धिमान् पुरुषोए अन्योन्यानुष्ठान न करवुं.

उपयोगीपणाथी अभ्यासने अनुकुल एवी क्रीया करवी ते तद्धेतुअनुष्ठान, ते आनंद श्रावक विगेरेनी जेम जाणवुं. अने मोक्षने अर्थे यथार्थ विधिपूर्वक जे तपक्रियादि करवुं ते अमृतानुष्ठान, वीतराग संयमी अर्जुनमाळी विगेरेनी जेम जाणवुं. आ पांच प्रकारना अनुष्ठानमां पेहेला त्रण त्याग करवा योग्य छे अने छेल्ला बे स्वीकारवा योग्य छे. तेवी रीते बीजा पण अनुष्ठानना चार प्रकार छे.–१ जे प्रीति रसवडे कराय अने अति रुचिथी वधे ते प्रीत्यनुष्ठान कहेवाय छे. ते सरल स्वभावी जीवोने हंमेशा क्रियामां थाय छे. २ बहुमानथी भव्यजीवो पूज्य उपरनी प्रीतीवडे जे करे ते भक्त्यनुष्ठान कहेवाय छे. प्रीत्यनुष्ठान ने भक्त्यनुष्ठानमां एटलो तफावत छे के स्त्रीनुं पालन प्रीतिथी थाय छे अने मातानी सेवा भक्तिथी थाय छे. ३ सूत्रना वचनथी जे क्रिया करवामां आवे ते वचनानुष्ठान कहेवाय छे. ते सर्वत्र आगमने अनुसारे प्रवृत्ति करवारुप होवाथी चारित्रधारी साधुने होय छे, पासथ्थादिकने होतुं नथी. जे अभ्यासना बळथी श्रुतनी अपेक्षा वगर अने

फळनी इच्छा वगर जीनकल्पिनी जेम यथार्थ करे ते असंगानुष्ठान कहेवाय छे. वचनानुष्ठानने असंगानुष्ठानमां एटलो तफावत छे के कुंभारना चक्रनुं भ्रमण प्रथम दंडना संबंधथी थायछे तेनी जेम वचनानुष्ठान अने पछी जे चक्रनुं भ्रमण दंडना संयोग विना केवळ संस्कारमात्रथी थाय छे, तेनी जेम असंगानुष्ठान एटले जे श्रुत संस्कारथी क्रियाकाळे वचननी अपेक्षा वगर थाय ते असंगानुष्ठान कहेवाय छे. आ युक्तिथी बंनेमां भेद समजवो. आ चारे भेद अनुक्रमे विशेष विशेष शुद्ध छे. ते विषे बृहद्भाष्यमां कह्युं छे के, " प्रथम भावनी स्वल्पताथी प्राये बाळादिकने संभवे छे पछी उत्तरोत्तर निश्चय शुद्ध यथार्थ क्रियानी प्राप्ति होयछे." आ प्रमाणे अनुष्ठाननुं स्वरुप सांभळीने तेने विधिपूर्वक आदरवुं. तेम करवाथीज आगळ कहेवाशे तेवुं फळ प्राप्त थायछे, अन्यथा थतुं नथी.

" मन, वचन अने कायाना दोषथी मुक्त एवुं जे अनुष्ठान अहीं प्रथम कहेलुं छे ते प्रमाणे विधिपूर्वक निर्दोष सामायिक करवुं, के जेथी हंमेशा तेनी सफळता थाय."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ द्विचत्वारिंशदधिकशततमः प्रबंधः ॥१४२॥

व्याख्यान १४३ मुं.

सामायिकमां धर्मना उपकरण केटलां जोइए ते कहेछे.

धर्मोपकरणान्यत्र, पंचोक्तानि श्रुतोदधौ ।
तदालंब्य विधातव्यं, सामायिकं शुभास्तिकैः ॥ १ ॥

भावार्थः

" शास्त्ररुपी समुद्रमां धर्मना उपकरण पांच कहेला छे, ते उपकरणो लइने उत्तम आस्तिक पुरुषोए सामायिक करवुं. "

विस्तरार्थः

समायिक करवामां धर्मना उपष्टंभ (टेका) ने आपनारा अर्थात् धर्मकार्यमां उपकार करनारा उपकरणो शास्त्ररुपी समुद्रमां पांच कहेला छे. श्री अनुयोग

द्वारनी चूर्णीमां कह्युं छे के "सामायिकने करनारा श्रमणोपासक (श्रावक) ने पांच धर्मोपकरण कह्या छे, ते आ प्रमाणे—पेहेलुं उपकरण स्थापनाचार्य, बीजुं मुहपत्ति, त्रीजुं जपमाळा (नवकारवाळी), चोथुं चरवळो अने पांचमुं कटासणुं."

प्रथम स्थापनाचार्यने स्थापीने सामायिक करवुं. ते स्थापना दश प्रकारनी थायछे—"१ अक्ष, २ वराटक, ३ काष्ठ, ४ पुस्तक, ने ५ चित्रामण; आ पांच प्रकारनी स्थापनाना सद्भाव ने असद्भाव एवा बे भेद छे. तेमज इत्वरा अने यावत्कथिता एवा पण बे भेद छे." एम आवश्यक निर्युक्तिना वंदनाध्ययनमां कहेलुं छे. आ गाथावडे एम जाणवुं के गुरुने अभावे स्थापनाचार्यनी आगळ वंदनादि करवुं तेमां मुख्यवृत्तिवडे कर्त्ता तरिके साधु कहेला छे. ते विषे कह्युं छे के "पंचमहाव्रतधारी, प्रमादरहित, माने करी वर्जित बुद्धिवाळा, मोक्षार्थी अने निर्जराना अर्थी एवा मुनिमहाराज कृतिकर्ममां वंदनाना दाता छे." परंतु साधुनी जेम श्रावके पण वंदना करवी. अहीं कोइ शंका करे के, शास्त्रमां कोइ ठेकाणे श्रावकने पण स्थापनाचार्यनी स्थापना कही छे ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के, श्री व्यवहारसूत्रनी चूलिकामां कह्युं छे के, "सिंह नामनो श्रावक द्रव्याधिकारे दिव्यऋद्धि अने पुष्पनो शेखर विगेरे छोडी दइ स्थापनाचार्य स्थापीने पोषधशाळामां स्थित थयो. पछी कर्यां छे आभूषणो दूर जेणे एवो ते श्रावक इरियावहि पडीकमी, मुखवस्त्रिका पहिलेहे अने त्यारपछी चार प्रकारनो पोषध करे." आवी रीते सिंह श्रावके स्थापना प्रगटपणे ग्रहण करेली छे. वळी श्री विशेषावश्यकमां पण कह्युं छे के "गुरुने विरहे स्थापना स्थापवी ते गुरुना वचनना उपदर्शनने माटे छे. ते जिनने विरहे जेम जिनबिंबनुं सेवन अने आमंत्रण कराय छे ते प्रमाणे समजवुं."

अहिं कोइने शंका थाय के "मुनिना सामायिक संबंधी प्रस्तावमां भंते ए शब्दनी व्याख्या करतां "गुरुविरहंमि" इत्यादि वाक्योवडे भाष्यकार महाराजे साधुने आश्रीने स्थापना करवानुं कहेलुं छे, श्रावकने आश्रीने कहेलुं नथी." तो ए शंका करनारने एटलुंज पुछवुं के, श्रावक ज्यारे सामायिक उच्चरे छे त्यारे भदंत (भंते) ए शब्द भणे छे के नहीं ? जो भणे छे तो साधुनी जेम साक्षात् गुरुने अभावे ते पण स्थापनानुं स्थापन करे. कारण के न्यायनुं तो बंने ठेकाणे समानपणुं छे. अने 'भंते' ए पद भणवुं नहीं ए पक्ष तो दीक्षा वखते श्री जिनेश्वर भगवंतनेज घटे छे. तेम वळी ज्यारे सर्व ज्ञान क्रियामां प्रवीण एवा साधु स्थापना स्थापे तो पछी गृह कार्यमां व्यग्र मनवाळो श्रावक तो विशेष प्रकारे एमां प्रवृत्ति करेज. आ प्रमाणे आगमप्रमाण दर्शावीने हवे युक्ति दर्शावीए छीए. जो स्थापनाचार्य विना अनुष्ठान करीए तो वंदनक निर्युक्तिमां कहेलुं छे के—

आयप्पमाणमित्तो, चउदिसिहोइ उग्गहो गुरुणो ।

" साडात्रण हाथ प्रमाण चारे दिशाए गुरुनो अवग्रह होय. " ते अवग्रह क्षेत्रमां गुरुनी आज्ञाविना पेसवुं नहीं, एम पण कहेलुं छे तो ए वाक्य शीरीते घटशे? कारण के गुरुने अभावे अवग्रह घटतो नथी, जेम गामने अभावे सीमनी व्यवस्था न होय तेम. वळी श्री **समवायांग सूत्रमां** वांदणाना पचवीश आवश्यक कह्यां छे. तेमां " **दुप्पवेसं एग निरकमणं** " इत्यादि जे कहेलुं छे ते पण गुरुविना केवी रीते करवुं? कोइ एम कहे के, 'अमे तो गुरुनुं स्थापन हृदयमां करशुं.' गुरु कहे छे के ' अरे ! आ तमारुं कहेवुं गधेडाना शींगडाना लावण्यनुं वर्णन करवा जेवुं (मिथ्या) छे, केमके गुरु हृदयमां रह्या होय तो वंदना करनारनी साथेज गुरुनो संचार थयो, एटले बे प्रवेशने एक निष्क्रमणमां गुरु साथेज संचर्या, तेथी कोइ पण प्रकारे गुरुना मुख आगळ निर्गम अने प्रवेश करवानुं घटमान थयुं नहीं, अने ते न थतां पचवीश आवश्यक पूरां थशे नहीं, अने ते ज्यारे पूरां नहीं थाय, त्यारे वंदननी शुद्धि थशे नहीं, माटे स्थापनागुरुने स्थापीनेज क्रिया करवी एम सिद्ध थाय छे.'

बीजुं उपकरण मुखवस्त्रिका ते राखीने सामायिक करवुं. ते विषे श्री **व्यवहार सूत्रमां** कह्युं छे के " हे गौतम, जे मुहपत्ति पडिलेह्या विना वांदणा आपे तेने गुरु प्रायश्चित्त आवे छे. " वळी श्री व्यवहार चूर्णीमां कह्युं छे के, " प्रावरणं आभूषण विगेरे मूकी, मुहपत्ति ग्रहण करीने वस्त्र तथा कायानुं प्रमार्जन करी पौषधादिक आचरवां. " वळी श्री **आवश्यक चूर्णीमां** कह्युं छे के, " जे सामायिक करे ते मुगट उतारे अने कुंडल, मुद्रिका, पुष्प, तांबूल अने प्रावरण विगेरे वोसिरावे. " श्री **निसिथसूत्रनी चूर्णिमां** १४ मा उद्देसामां ' प्रावरण 'नो अर्थ ' उत्तरीय वस्त्र ' कह्यो छे. अहीं उत्तरीय वस्त्र मूकवाथी श्रावकने मुख वस्त्रिकानुं ग्रहण करवुं एम अर्थापत्तिवडे सूचवे छे. श्री **उपासग दशांग सूत्रना** छठा अध्ययनमां कह्युं छे के " एकदा ते कुंडकोळिक श्रमणोपासक पूर्वे अपरान्ह काळे अशोक वनमां ज्यां पृथ्वीशिलापट्ट छे त्यां आवे, आवीने नामांकित मुद्रिका अने उत्तरीय वस्त्र शिलापट्ट उपर स्थापन करे, करीने श्रमण भगवंत श्रीवीरपरमात्मानी समीपे धर्मतत्वने आदरतो सतो विचरे. " तेज ठेकाणे देवनी परीक्षा पछी कह्युं छे के, " ते काळे ते समये प्रभु समोसर्या, ते वात श्रमणोपासक कुंडकोळिके सांभळी; तत्काळ ते पण कामदेव श्रावकनी जेम प्रभुने वांदवाने नीकळ्यो. यावत् पर्युपासना

---

1 ओढवानुं वस्त्र.

करवा लाग्यो. " कामदेव श्रावक पोषध लइनेज वांदवा नीकळेलो छे. ते विषे तेज सूत्रमां कह्युं छे के-"श्रीवीर प्रभुने वांदी त्यांथी पाछो वळीने पछीज मने पोषध पारवो घटे, एज निश्चे मने श्रेयकारी छे एम धारे. इत्यादि० " अहीं कुंडकोळिक श्रावके पण उत्तरीय वस्त्र मूकीने मुखवस्त्रिकादिवडे धर्मक्रिया करी छे एम समजवुं. जो एम न मानीए तो तेने कामदेवनी उपमा आपवाथी ते प्रमाणे पोसह पारवानो अभिप्राय न घटे. इति.

अहिं वळी कोइ वादी कहेशे के कृष्ण वासुदेवे करेली वंदणानो संबंध ज्यां कहेलो छे तेमां मुखवस्त्रिकाथी वंदन कह्युं नथी. तेम वस्त्रना छेडाथी पण कह्युं नथी. तेना उत्तरमां कहे छे के-श्री अनुयोगद्वारसूत्रमां कह्युं छे के " ते लोकोत्तर भावआवश्यक कहेवाय के जे साधु, साध्वी, श्रावक के श्राविका तेने विषे चित्त, मन, लेश्या अने अध्यवसाय राखे, तेना अर्थमां उपयुक्त थाय, तेने विषे अर्पित करण करे अने बीजे ठामे मन जतुं रोके; तेवी रीते बंनेकाळ आवश्यक करे. " अहिं " तदप्पिअकरणे " ए पदनी चूर्णीमां चूर्णिकार लखे छे के " जे तेना साधनो (उपकरणो) शरीर, रजोहरण, मुखवस्त्रिका विगेरे ते द्रव्य क्रिया करवाने स्थाने स्थापवा. " ते पदनी वृत्तिमां वृत्तिकार लखे छे के " तदर्पित करण ते उपकरणो जे रजोहरण-मुखवस्त्रिका विगेरे ते आवश्यकमां यथायोग्य व्यापारना नियोगमां जेणे अर्पण करेला छे एवो, अर्थात् द्रव्यथी स्वस्थाने उपकरणोने स्थापित करनार. " आप्रमाणे श्रीहरिभद्रसूरिए करेली अनुयोग द्वारनी वृत्तिमां कहेल छे. अने मल्लधारी श्री हेमचंद्रसूरिकृत वृत्तिमां पण ते प्रमाणेज कहेल छे. एटले चूर्णिमां अने बंने वृत्तिमां " तदर्पित करण " ए विशेषणनुं व्याख्यान साधु अने गृहस्थ बंनेना संबंधमां सरखी रीतेज लागु पडे तेम कहेलुं छे. कोइ पण ठेकाणे केवळ श्रावकने आश्रीने समस्त आवश्यक क्रियानो पाठ जोवामां आवतो नथी वळी आवश्यक चूर्णीमां सामायिकना अधिकारे लखे छे के " साधुनी समीपथी रजोहरण तथा कटासणुं मागे अथवा घेर उपधि-रजोहरण न होय तो तेने अभावे वस्त्रना खंडवडे क्रिया करे. " तथा वंदनक भाष्यमां पण कह्युं छे के " एवी रीते सुश्रावक पण द्वादशावर्त्त वंदन करतो सतो मुखवस्त्रिका मध्यभागे राखीने स्थापित पूज्यगुरुना चरणयुगलनी वंदना करे. " आप्रमाणे अनेक स्थानके श्रावकने रजोहरण, मुखवस्त्रिका विगेरेनुं ग्रहण करवुं कहेलुं छे. ते विषे विशेष युक्ति जाणवी होय तो श्रीकुलमंडनसूरिए रचेला विचारामृत संग्रह ग्रंथथी जाणी लेवी.

वळी श्रावके सामायिकमां जपमाळा (नोकारवाळी) पण राखवी. प्रतिक्रमणमां छ प्रकारना आवश्यक कर्या पछी अथवा सामायिकमां जप करवा माटे ते राखवी योग्य छे.

'दंड' ए शब्दवडे पदभूमिनुं[1] प्रमार्जन करवानेमाटे रजोहरण दंडासण लेवुं एवो अर्थ समजवो. अथवा बहुश्रुत जे अर्थ करे ते प्रमाण समजवो.

तथा पादप्रोंछनक ते कटासणुं कांबलनुं के सूकलातनुं राखवुं. उपर कहेला धर्मना उपकरणोने आलंबीने उत्तम आस्तिक श्रावकोए सामायिक करवुं. ते उपकरणोनुं दान करवाथी पण मोटुं पुण्य थाय छे. ते विषे सांभळवामां आव्युं छे के श्री कुमारपाळ राजा अढारसो साधर्मी व्यवहारीओने धर्मना उपकरणो आपता हता. एक वखते कोइ चारणे एक वर्णवाळा पांचसो घोडाने जोइ कोइने पूछयुं के 'आ कोना घोडा छे ?' ते पुरुषे कह्युं के " श्री कुमारपाळ राजानी पोषधशाळामां मुखवस्त्रिका विगेरे उपकरणो जे आपे छे अने जेओ साधर्मीओनी सार संभाळ करेछे, तेना आ घोडाओ छे. अने तेना निर्वाह माटे राजाए बार गाम आप्या छे. तेनी उपजमांथी जे द्रव्य आवे ते सर्व धर्मना उपकरणोनी वृद्धि माटे अने साधर्मीओनी सारसंभाळमां वापरवा माटे ठरावेलुं छे. " ते सांभळी चारणे आ प्रमाणे बिरुद कह्युं, " ते पार्श्वनाथ बहु रुडा छे के जेना शासनमां कुमारपाळ राजा जेवो राजा थयो छे, जेने जोवाथी मुनिओनो समूह सदा हर्ष पामे छे. " आ प्रमाणे धर्मनुं वर्णन (प्रशंसा) सांभळी कुमारपाळे तेने एक लक्ष द्रव्य आप्युं.

" ए प्रमाणे समतारुप अमृतना स्वादमां तत्पर एवा कुमारपाळ राजाए धर्मना उपकरणोनी वृद्धि माटे घणा ग्रामो अने अश्वो आप्या हता. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ त्रिचत्वारिंशदधिकशततमः प्रबंधः ॥१४३॥

---

1 पग मूकवानी भूमि.

व्याख्यान १४४ मुं.

सामायिकनुं फळ कहे छे.

देश सामायिकं श्राद्धो, वितन्वन् घटिका द्वयम् ।
द्रव्यादीनां व्ययाभावा–दहो पुण्यं महद्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ

" बे घडीनुं देशसामायिक आचरता श्रावकने द्रव्यादिकना खर्च विना पण अहो ! केवुं मोटुं पुण्य थाय छे. "

विस्तरार्थ

श्रावक बे घडी (एक मुहूर्त) नुं देशसामायिक करतो सतो मोटुं पुण्य उपार्जन करे. ते सामायिक केवी रीते करवुं ते कहे छे–पूर्वोक्त युक्तिवडे रजोहरण, मुखवस्त्रिका विगेरे उपकरणो लइने–इरिआवही पडिकमवा. ते विषे श्रीमहानिशीथसूत्रमां कह्युं छे के " इरियावही, पडिकम्या विना चैत्यवंदन, स्वाध्याय अने ध्यानादिक करवुं कल्पे नहीं. " वळी श्री हरिभद्रसूरिए रचेली श्री दशवैकालिकसूत्रनी वृत्तिमां कह्युं छे के " इर्यापथिकी पडिकम्या शिवाय बीजुं कांइ करवुं नहीं. कारण के ते प्रमाणे करेल कार्यमां अशुद्धपणानी आपत्ति छे. " तेथी प्रथम इर्यापथिकी पडिकमीने सामायिक करवुं. पंचाशकवृत्तिमां, नवपदप्रकरणमां, आवश्यक निर्युक्तिना बीजा खंडना शांत भागमां अने दिनकृत्यसूत्रमां प्रथम ' करेमिभंते ' इत्यादि सूत्र भणीने पछी इर्यापथिकी पडीकमे एम कहेलुं छे. ते देखीने श्री आर्हत्धर्ममां व्यामोह (संदेह) करवो नहीं, कारण के श्री गणधर महाराजाओनी समाचारीओ पण जुदी जुदी सांभळीए छीए. तत्व तो बहुश्रुतथी जाणवा योग्य छे, परंतु बुद्धिमान् पुरुषोए पूर्वाचार्येनी परंपराए चाल्यो आवेल न होय तेवो पक्ष पोतानी बुद्धिथी कल्पना करीने स्वीकारवो नहीं.

सामायिक ग्रहण करवानो विशेष विधि श्रीधर्मसंग्रहादि ग्रंथोथी जाणी लेवो. एवीरीते विधिपूर्वक सामायिक आचरतो श्रावक द्रव्य–वस्त्रादिकना खर्च वगर मोटुं पुण्य उपार्जन करे. तेविषे पूज्यपुरुषोए कह्युं छे के " बे घडी समभावे सामायिक करतो एवो श्रावक एटला पल्योपमनुं देवतानुं आयुष्य बांधे. केटला पल्योपमनुं ? ते कहे छे बाणुक्रोड ओगणसाठ लाख, पचवीश हजार, नवसो अने पचीश पल्योपम तथा $\frac{1}{3}$ ने ६ पल्योपम. " वळी कह्युं छे के " जे कोइ मोक्षे गया,

मोक्षे जाय छे अने मोक्षे जशे ते सर्व सामायिकना प्रभावथी जाणवा." तेमज वळी कह्युं छे के-" जेमां होम नहीं, तप नहीं अने दान नहीं एवी अमूल्य करणी ते सामायिक छे के जे मात्र समता वडेज सिद्ध थाय छे." तेविषे एक कथा छे ते आप्रमाणे-

सामायिकना महिमा उपर केशरीचोरनी कथा.

श्रीपुर नगरमां पद्मश्रेष्ठीने केशरी नामे एक पुत्र हतो. ते नट, विट अने अधर्मीओनी संगतथी चोरी करवा लाग्यो. लोकोनी राव सांभळी राजाए तेने पकडी मगावी शिखामण दइने छोडी मूक्यो. तथापि ते चोरीना व्यसनमां आसक्त रह्यो. एटले राजाए तेना पिताना वचनथी तेने पोताना देशमांथी काढी मूक्यो. मार्गे जतां तेणे विचार्युं के "आजे हुं कोने घेर चोरी करीश?" आवुं विचारी ते कोइ सरोवरनी पाल उपरना वृक्ष उपर चड्यो. त्यांथी सर्व दिशाओमां दृष्टि करी, एवामां कोइ सिद्धपुरुषने अकस्मात् आकाशमांथी उतरी सरोवरने कीनारे पादुका उतारी अंदर जइने स्नान करतो जोयो. आ लाग जोइ ते केशरी तेनी पादुका पेहेरी आकाशमां उडी गयो. पछी पोताना नगरमां आवी लोकोनुं सर्वस्व चोरवा लाग्यो. राजाना अंतःपुरमां पण जवा लाग्यो. तेथी राजा पोते बहु खेद पामी हाथमां खड्ग लइने सर्व ठेकाणे चोरने शोधवा लाग्यो. वनमां जतां जेनी दिव्य पूजा करेली छे एवी चंडिकानो प्रासाद जोयो. तेमां चोर आववानो संभव जाणी छानीरीते संताइ रह्यो. तेवामां पेलो चोर त्यां आवी बंने पादुका उतारी देवीने नमी बोल्यो-" हे देवी, आजे जो मने घणुं धन मळशे तो हुं तारी विशेषे पूजा करीश." एम कही जेवो ते पादुका पेहेरवा जाय छे तेवामां राजाए एक पादुका लइ लीधी. चोर राजाने उग्र शासन वाळो जोइ नासवा लाग्यो, नजीकमां गुप्त रहेला राजाना योद्धाओ पण तेनी पछवाडे दोड्या. चोर भयथी विह्वल थइने विचारवा लाग्यो के 'अहो! आजे मारुं पाप फळ्युं.' तेवामां समिप भागमां एक मुनि तेना जोवामां आव्या. एटले तेणे मुनिने पोताना भवपर्यंत करेला पापना त्यागनो उपाय पूछ्यो. मुनिए कह्युं के-

> तप्येद्वर्षशतैर्यश्च, एकपादस्थितो नरः।
> एकेन ध्यानयोगेन, कलां नार्हति षोडशीं॥

"कोइ मनुष्य सो वर्ष सुधी एक पगे उभो रहीने तप करे तोपण ते एक ध्यान योग (सामायिक) नी सोळमी कळाने योग्य पण थाय नहीं." पछी गुरुना मुखथी सामायिकनुं फल सांभळी, सामायिक लइने ते चोर पोते पूर्वे करेला

पापोनो पश्चात्ताप करवा लाग्यो. " अहो ! में नास्तिक बुद्धिथी मोटुं पाप कर्युं छे, मने धिक्कार छे. " आप्रमाणे शुभध्यानमां आरूढ थवाथी क्षपक श्रेणीवडे तेणे केवळ ज्ञान प्राप्त कर्युं. देवताए रजोहरणादि आपी मोटो उत्सव कर्यो. राजा ते चोरने तेवो समतावान् संयमी थयेलो जोइ आश्चर्य पामी अनिमेष दृष्टिथी जोइ रह्यो ते जोइ ज्ञानी महाराज बोल्या-" हे राजा, तुं एम विचार करे छे के आवा अन्याय करनारने केवळ ज्ञान क्यांथी होय ? पण ए बधुं सामायिकना तांडवनो आडंबर जाणवो. अर्थात् सामायिकनुं फळ जाणवुं. कह्युं छे के—

प्रणिहंति क्षणार्द्धेन, साम्यमालंब्य कर्म तत् ।
यन्नहन्यान्नरस्तीव्रतपसा जन्मकोटीभिः ॥ १ ॥

"पुरुष कोटी जन्मसुधी तीव्र तपस्या करवावडे जेटला कर्मने हणी शके नहीं, तेटला कर्मने समतामय सामायिकनुं आलंबन करनार पुरुष अर्द्धक्षणमां हणी शके छे " ते सांभळी राजा पण प्रतिदिन सात आठ सामायिक करवानो अभिग्रह लइ घेर आव्यो. केशरी मुनि ज्ञानवडे अनुक्रमे मुक्तिने प्राप्त थया

" सात व्यसनमां आसक्त अने सर्वेने संताप करनारा चोरने पण निर्वाण आपनारुं सामायिक हमेशा प्राज्ञ पुरुषोए सेववुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चतुश्चत्वारिंशदधिकशततमः प्रबंधः ॥१४४॥

व्याख्यान १४५ मुं.

नवमुं सामायिकव्रत कह्या पछी हवे दशमुं देशावकाशिक व्रत कहे छे.

दिग्व्रते परिमाणं यत्, तस्य संक्षेपणं पुनः ।
दिने रात्रौ च देशाव-काशिकव्रतमुच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ

"छठा दिग्विरमणव्रतमां जे दिशानुं परिमाण करेलुं होय तेनो दिवसे अथवा रात्रिए संक्षेप करवो ते दशमुं देशावकाशिक व्रत कहेवाय छे. "

विस्तरार्थ

पेहेला गुणव्रतमां दशेदिशाओमां जवानुं परिमाण जे बांधेलुं होय तेनो दिवसे अथवा रात्रे उपलक्षणथी पोहोर विगेरे माटे जे संक्षेप करवो ते देश अने तेमां अवकाश एटले अवस्थान ते देशावकाशिक व्रत कहेवाय. प्रथम दिग्व्रतमां यावज्जीवित सुधी अथवा वर्ष प्रमुखनी मर्यादाए सो योजन विगेरेनी जे मोकळ राखी होय तेमांथी आ देशावकाशिकव्रतमां मुहूर्त, दिवस, पोहोर विगेरे इच्छित काळसुधी घटाडवामां आवे छे; अने तेटला वखत सुधी घर, हाट, शय्या विगेरे विभागमां आरंभने तजीने एक देशनी मर्यादाए रहेवाय छे तेने देशावकाशिक व्रत कहे छे.

दृष्टिविष सर्पना विषनो विस्तार बार योजनसुधी होय छे तेने विद्याना बळथी उणो करीने एक योजनसुधी जेम लावी मूकेछे, अथवा बधा शरीरमां रहेलुं वींछीनुं विष मंत्रना बळथी जेम एक आंगळीमां (डंकमां) लावी मूके छे, एवीरीते विवेकी मनुष्ये दिग्व्रतमां राखेला दिशापरिमाणनो हमेशां संक्षेप करवो. आ व्रतथी बीजा सर्व व्रतोना नियमोनो पण प्रतिदिन संक्षेप कराय छे. एथीज पूर्वे कहेल " सच्चित्तदव्व० " ए गाथामां बतावेला १४ नियमोने श्रावक प्रातःकाळे ग्रहण करे छे; सान्जकाळे तेमनो संकोच करे छे. अने तेनुं पच्चख्खाण करतां ' देसावगासियं पच्चख्खामि ' ए पदथी गुरुनी समक्ष कबुल करे छे. ते विषे कह्युं छे के " दिशिपरिमाण व्रतनो नित्य संक्षेप करवो ते देशावगासिक अथवा सर्व व्रतनो संक्षेप प्रतिदिन जे व्रतमां थाय छे ते देशावगासिक व्रत जाणवुं. " तेमां पेहेला व्रतनो संक्षेप आ प्रमाणे समजवो—"पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु अने वनस्पति तथा त्रसजीवो संबंधी जे आरंभ अने उपभोग ते सर्वनो दशमा व्रतमां यथाशक्ति संक्षेप करवो. " तेवी रीते सर्व व्रतमां यथाशक्ति वर्जवुं. शयन वखते तो विशेषे करीने सर्व हिंसा तथा मृषावाद विगेरेनो संक्षेप करवो. आ व्रत पाळवाथी सुमित्रनी जेम उत्तम संपत्ति प्राप्त थाय छे; तेनी कथा आ प्रमाणे—

सुमित्रनी कथा.

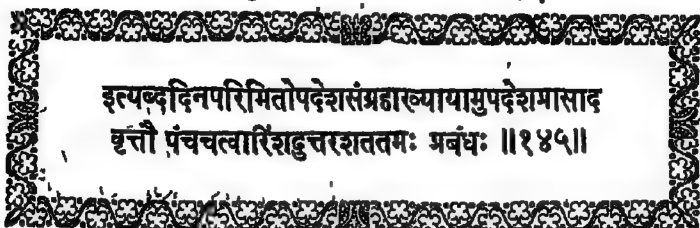
चंद्रिका नामनी नगरीमां प्रजापाल नामे राजा हतो. तेने सुमित्र नामे जैनमंत्री हतो. ते बंनेने हमेशां धर्मविषे वाद थतो हतो. राजाने धर्म उपर श्रद्धा न हती. एक वखते राजाए मंत्रीने कह्युं, ' अरे प्रधान ! तुं देवपूजा विगेरेमां वृथा मोह केम पाम्यो छे ?' मंत्री बोल्यो, ' हे राजन्, पूर्व भवमां सुकृत कर्याविना

तमे राजा केम थया अने अमे सेवक केम थया ? सर्वे एक सरखा केम नथी ?' राजा बोल्यो, 'एक पथ्थरनी शिलाना बे कटका करीए, पछी तेमांथी एक कटकानुं देवनुं प्रतिबिंब घडावीए अने बीजा कटकानुं पगथीउं करीए, ते बंनेमां कोणे धर्म अने पाप कर्युं छे ? मात्र स्थानक उपरथी न्यूनता अने विशेषता गणाय छे.' मंत्री बोल्यो-'आ तमारो पक्ष अयोग्य छे. केमके तेमां त्रसजीवनो अभाव होवाथी ते युक्ति वगरनो छे. जो तेमां त्रसजीव होय तो ते तो आत्मशक्तिथी पूज्य अने अपूज्य कर्म उपार्जे छे. वळी ते पथ्थरमां पण एकेंद्रीय जीव होय छे, तेमांना एक खंडमां रहेला जीवे पूर्वे मोटुं पुण्य करेलुं, तेथी ते देवनुं प्रतिबिंब थयो अने ते हजारो वर्ष सुधी कांइपण ताडन, घर्षण अने निभाडामां पाकवुं विगेरे तथा चूर्ण (चूनो) थवा प्रमुख दुःखने पामतो नथी; बीजा खंडमां रहेला जीवे पूर्वे पाप करेल तेथी ते मोटुं दुःख पामे छे. आप्रमाणे सर्वत्र जाणी लेवुं.' प्रधाननां आवां वचन सांभळी राजाए मंत्रीने कह्युं, 'प्रत्यक्ष फळ जोया विना पुण्य उपर मने श्रद्धा थती नथी.' आप्रमाणे तेमने हमेशां संवाद थया करतो हतो.

एक वखते मंत्रीए पाखीनी रात्रे घरमांथी बहार जवाना पच्चख्खाण कर्यां. तेज रात्रे राजाए कोइ कार्य आवी पडवाथी तेने बोलाववाने प्रतिहार मोकल्यो. मंत्रीए प्रतिहारने पोतानो नियम जणाव्यो. प्रतिहारे आवीने ते वात राजाने जणावी. राजाए अति रोष करी प्रतिहारने पाछो मोकली मंत्री पासेथी मोहोर छाप मगावी. मंत्रीए तत्काळ ते प्रतिहारने आपी दीधी. प्रतिहार कौतुकथी ते महोरछापनी मुद्रिका हाथमां पहेरी पोतानी साथेना पाळाओनी आगळ हसतो हसतो बोल्यो के—'अरे सेवको ! जुओ, राजाए मने मंत्रीपद आप्युं.' सेवको 'मंत्रीराजने खमा, पधारो' एम बोलवा लाग्या. पछी ते प्रतिहार थोडे आगळ चाल्यो त्यां दैवयोगे कोइ दुष्ट सुभटोए तेने मारी नांख्यो आ खबर राजाए जाणी एटले ते विचारमां पड्यो के 'जरुर ते प्रतिहारने मंत्रीएज मरावी नांख्यो हशे. माटे हुं जाते जइ ए मंत्रीनेज मारी नाखुं.' आवा विचारथी राजा त्यां आव्यो. तेवामां प्रतिहारने हणनारा पेला सुभटो जेने दीवीओना प्रकाशथी शोधीने पकडी लीधेला तेमज बांधेला तेओ मार्गमां मळ्या. राजाए तेमने पूछ्युं-'तमे क्यांथी आव्या हता ?' तेओ बोल्या, 'महाराज ! अमने पेटभराने शुं पूछो छो ? तमारा वैरी सूर राजाए मंत्रीनो वध करवाने अमने मोकल्या हता. अमे आ प्रतिहारने मुद्रिका उपरथी मंत्री जाणी मारी नांख्यो छे.' पछी राजाए मंत्रीने घेर आवी मिथ्या दुष्कृत्य आपी ते सर्व वृत्तांत जणाव्युं. मंत्रीए ते सुभटोने जीवता छोडी मूक्या. राजाए कह्युं, 'मन्त्रिराज, आजे पुण्यनुं फळ में प्रत्यक्ष जोयुं.' पछी पुण्यनी प्रशंसा

करी राजाए गृहस्थ धर्म अंगीकार कर्यो. अंते मंत्री अने राजा बंने पुण्य उपार्जन करी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपदने पाम्या.

" सुमित्रमंत्री दशमा व्रतमां उद्यमवंत थई आलोकमां धर्मनुं पूर्ण फळ पाम्यो, अने राजा तेने जोइ नास्तिकपणुं छोडी प्रतिबोध पामीने शुद्ध धर्मने प्राप्त थयो. "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पंचचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१४५॥

व्याख्यान १४६ मुं.

देशावकाशिक व्रतमां त्यागकरवा योग्य पांच अतिचार कहे छे

प्रेष्यप्रयोगानयनं, पुद्गलक्षेपणं तथा ।
शब्दरूपानुपातौ च, व्रते देशावकाशिके ॥ १ ॥

भावार्थ–

" चाकरने मोकलवो, अंदर कांई अणाववुं, पुद्गल फेंकवा (कांकरादि नांखवा) शब्द करवो अने रुप बतावबुं. ए पांच देशावकाशिक व्रतना अतिचार छे.

विस्तरार्थ–

दिग्व्रतमां जे कांइ विशेष ते देशावकाशिक व्रत कहेवाय छे. ते विशेषपणुं एवी रीते छे के, दिग्व्रत यावज्जीवित, वर्ष अने चातुर्मासना परिमाणवाळुं होय अने आ देशावकाशिकव्रत एकदिवस, रात्रि, पोहोर अने मुहूर्त्त (बे घडी) विगेरेना परिमाणवाळुं होय छे. ते व्रतमां पांच अतिचार लागे छे ते आ प्रमाणे– प्रेष्य एटले आदेश प्रमाणे करनारा नोकरनो प्रयोग करवो एटले धारेला क्षेत्रनी बहार कोइ प्रयोजनने माटे सेवक विगेरेने मोकलवा, (पोतानी जाते जवाथी तो व्रतनो भंग थाय) ते पेहेलो प्रेष्यप्रयोग नामे अतिचार. आनयन एटले कोइ सचेतनादि वस्तु नियमित क्षेत्रनी बहार होय तेने सेवक प्रमुखने मोकली मंगाववी ते आनयन प्रयोग नामे बीजो अतिचार. पुद्गल एटले पाषाण काष्ठ विगेरेना ककडाने नियमित करेला स्थानथी बाहेर नाखी पोतानुं कार्य जणाववुं ते पुद्गल प्रक्षेप नामे त्रीजो अतिचार. नियमित क्षेत्रनी बहार रहेलाने पोतानुं कार्य जणा-

ववा माटे व्रतभंगना भयथी साक्षात् जइ बोलावाय नहीं तेथी उंचे स्वरे खांसी खोंखारा विगेरेथी पोताना आत्माने जणाववो-ए शब्दानुपात नामे चोथो अतिचार. एवी रीतेज पोताना रुपने दर्शावे अथवा निःश्रेणी, अटारी, मेडी के अगाशी ऊपर चडी परतुं रुप जोवे ते रुपानुपात नामे पांचमो अतिचार. आ व्रत नियमित भूमिनी बहार गमनागमन वडे जीवनो वध न थाय एवी बुद्धिथी ग्रहण कराय छे. ते जीववध पोते कर्यो अथवा बीजा पासे कराव्यो-तेना फळमां कांइ विशेष नथी. पण उलटो पोते जाय तो तेमां इर्यापथिकीनी शुद्धि विगेरे गुण होय अने सेवकोने मोकलवाथी तो तेनुं निपुणपणुं न होवाथी, निःशुकपणुं होवाथी, तेमज इर्यासमितिनो अभाव होवाथी विशेष दोष रहेला छे माटे आनयन प्रयोग विगेरे अतिचार लगाडवा कल्पता नथी. अहीं पेहेला बे अतिचार " मारा व्रतनो भंग न थाओ " एम व्रतने जाळववानी सापेक्ष वृत्तिए अनाभोग विगेरेथी प्रवर्त्तेला छे अने छेला त्रण अतिचार मायावीपणाथी अतिचारपणाने पामे छे. आ दशमुं व्रत निरतिचारपणे पाळवा विषे राजाना भंडारी धनदनी कथा छे. ते श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रनी अर्थदीपिका नामनी वृत्तिमां आपेली छे त्यांथी जाणी लेवी. तेम बीजी पवनंजयनी कथा छे ते दिनकृत्य वृत्तिमांथी जाणी लेवी.

जे प्राणी आ व्रत ग्रहण करता नथी अने सर्व ठेकाणे जवानुं मोकळुं राखे छे ते मोटुं दुःख पामे छे. जे गुरुना वचनथी देशावकाशिक व्रतने जाणे छे ते पुण्यने प्राप्त करी लोहजंघनी जेम विपत्तिने तरी जाय छे. अने जे अश्व, वृषभ, उंट विगेरेना धणीओ ते प्राणीओने हमेशा अपरिमित गतिवडे चलावे छे-तेओ पोतानुं हित करी शकता नथी. लोहजंघनी कथा आ प्रमाणे—

लोहजंघनी कथा.

एक वखते उज्जयिनी नगरीमां चंडप्रद्योत राजाए एवो पटह वगडाव्यो के, 'जे अभयकुमार मंत्रीने बांधीने लावे तेने हुं जे मागे ते आपुं.' पटह कोइ वेश्याए स्वीकार्यो, अने पछी ते श्राविकानो कपटवेष लइ राजग्रही नगरीमां आवी. त्यां अभयकुमारने भोळवी चंद्रहास मदिरा पाइ दीधी अने तेना केफमां घूर्णित थयो एटले तेने अवंतीए लावी चंडप्रद्योत पासे हाजर कर्यो. राजाए तेने कारागृहमां रखाव्यो. पछी ज्यारे चंडप्रद्योते तेने लाववानो वृत्तांत वेश्याना मुखथी

सांभळ्यो त्यारे तेनापर नाखुश थईने बोल्यो 'तुं धर्मना छळथी एने पकडी लावी ते सारुं न कर्युं.'

राजा चंडप्रद्योतने अग्निभीरु रथ, शिवादेवी नामे पद्मिणी स्त्री, अनिलवेग नामे हस्ती अने लोहजंघ नामे दूत–ए चार रत्नो हता. तेमां जे लोहजंघ दूत हतो ते प्रतिदिन पचीश योजन जतो अने अनेक देशोना राजाओना गुह्य समाचार लावीने प्रकाश करतो हतो. आथी सर्व सामंत राजाओ उद्वेग पाम्या अने तेने मारवाने माटे एकदा विषमिश्रित पाथेय (भातुं) आप्युं. लोहजंघ ते पाथेय लइ अवंति तरफ पाछो वळ्यो–मार्गमां भोजन करवा बेठो एटले अपशुकनोए तेने वारंवार अटकाव्यो, तेथी खाधाविना अवंतिए आवी ते वृत्तांत तेणे प्रद्योत राजाने जणाव्यो. राजाए अभयकुमारने पूछयुं एटले अभयकुमार बोल्यो–आ पाथेयना गंध उपरथी एवो निश्चय थाय छे के, तेमां दृष्टिविष सर्प उत्पन्न थयेलो छे. विष जाणवानो प्रकार आप्रमाणे छे–" विषवाळुं अन्न जोईने चकोरपक्षीना नेत्र विराम पामे, कोकिल उन्मत्त थइ मरी जाय, अने क्रौंचपक्षी तत्काल मद पामे. तथा नोळीयाना रोम विकस्वर थइ जाय, अने मयूर खुशी थाय. कारण के नोळीआ तथा मोरनी दृष्टिए पडवाथी विष तत्काळ मंद थइ जाय छे. वळी विषवाळुं अन्न जोइ मार्जार उद्वेग पामे, वानर विष्टा करवा मांडे, हंसनी गति स्खलित थइ जाय, कुकडो रुदन करे, भमरो झेरी अन्न सुंघीने वधारे गुंजारव करे, अने मेना तथा पोपट आक्रोश करवा मांडे. " आ प्रमाणे सांभळी चंडप्रद्योत राजाए ते पाथेय पल्लवित वनमां मूकाव्युं. त्यां तेमांथी दृष्टिविष सर्प नीकळ्यो. तेनी विषमय दृष्टिथी बधुं वन सुकाइ गयुं. आप्रमाणे अनेक प्रसंगमां अभयकुमारनी बुद्धिथी राजाए प्रसन्न थइ वर आप्या. ते बधा वर एकठा मागवावडे अभयकुमार पुनः त्यांथी मुक्त थयो. चालती वखते अभयकुमारे विनयथी कह्युं " तमने धर्मना छळविना दिवसे तमारा नगरमांथी पोकार करतां लइ जउं तो हुं अभयकुमार खरो. " आ प्रमाणे कही अभयकुमार पोताना नगरमां आव्यो. केटलाक दिवस पछी बे वेश्यानी पुत्रीओने लइ वणिकने वेषे ते पाछो उज्जणमां आव्यो, अने राजा प्रद्योतना मेहेलनी समीपे एक दुकान भाडे लीधी. राजा ते वेश्यानी पुत्रीओने जोइने विव्हल थइ गयो. तेणे पोताना आप्तजननी मारफत तेना संगनी इच्छा दर्शावी. ते बंने स्त्रीओए जवाबमां कह्युं " अमारो वृद्ध बंधु, तेना लघु बंधुना शरीरमां भूत वळगेलुं छे तेथी तेना सुखने माटे कोइ मांत्रिकने घेर जाय छे, ते वखते जो राजा गुप्तरीते आवेतो अमारो संग थाय. "

अभयकुमारे पोताना एक माणसने गांडो बनाव्यो अने तेनुं प्रद्योत एवुं नाम पाड्युं. ते गांडो माणस 'हुं प्रद्योत छुं' एम कहेतो आम तेम भमवा लाग्यो. अभयकुमार लोकोनी आगळ 'आ गांडाने मारे शी रीते राखवो?' एम कही तेने पकडवा दोडतो; अने तेने मांत्रिकने घेर लइ जवाने बाने एक मांचा उपर बेसारी हमेशा बजार वच्चेथी लइ जतो. ते वखते चौटामां 'हुं प्रद्योत राजा छुं, मने आ बांधीने लइ जाय छे माटे छोडावो.' एम ते गांडो उंचे स्वरे बोल्या करतो. लोकोतेने गांडो जाणीने तेनी उपेक्षा करता.

हवे संकेत प्रमाणे प्रद्योत राजा एकलो गुप्तरीते अभयने घेर वेश्यानी पुत्रीओ पासे आव्यो. पछवाडेथी अभयकुमारे आवी पोताना माणसो पासे कामांध हस्तीनी जेम तेने पलंग साथे दृढ बंधाव्यो अने धोळे दिवसे 'हुं प्रद्योत राजा छुं, मने छोडावो' एम पोकारतां तेने लोकोनी समक्ष राजग्रही नगरीमां ते लइ गयो. त्यां मगधपतिए तेने छोडावी सन्मान करीने हर्षथी पाछो विदाय कर्यो पछी उज्जयिनीना राजाए पोताना राज्यमां आवी लोहजंघ दूतने एवी शिखामण आपी के, तारे स्वेच्छाथी सर्व दिशामां गमन करवुं नही के, जेथी शत्रु तरफथी तने दुःख थाय. लोहजंघे ते प्रमाणे स्वीकार्युं जेथी ते दुःखने पाम्यो नहीं. आ कथानो उपनय एवो छे के, जेम ते लोहजंघे दिशामां गमन करवामां संक्षेप कर्यो तो ते शत्रु तरफथी वधादिक दुःखने पाम्यो नहीं, तेम श्रावक पण ए व्रत लेवाथी कर्मे करेला उपद्रवने पामतो नथी.

" आ दशमा देशावकाशिक व्रतने आचरवाथी पूर्वे उपार्जन करेलां घणां पाप कर्मोनो पण संक्षेप थाय छे अने अनुक्रमे ते पुरुष थोडा काळमां सौभाग्य लक्ष्मी (मोक्षलक्ष्मी) ने भजे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ षट्चत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १४६ ॥

व्याख्यान १४७ मुं.

सामायिक प्रमुख शिक्षाव्रतने धारण करनारा भव्यजीवोए षट् अष्टान्हिक (छ अट्ठाइ) पर्व अवश्य सेववा जोइए ते कहे छे.

अष्टान्हिकाः षडेवोक्ताः, स्याद्वादाभयदोत्तमैः ।
तत्स्वरूपं समाकर्ण्य, आसेव्याः परमार्हतैः ॥ १ ॥

भावार्थ

" स्याद्वाद मतने कहेनारा उत्तम पुरुषोए छ अट्ठाइओ कहेली छे, तेनुं स्वरुप बराबर जाणीने परम श्रावकोए ते सेववा योग्य छे. "

विस्तरार्थ

अट्ठाइ छ कहेवाय छे, तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे–एक अट्ठाइ चैत्रमासमां (ओळीनी), बीजी आषाढ मासमां, त्रीजी पर्युषणपर्व संबंधी, चोथी आश्विनमासमां (ओळीनी), पांचमी कार्त्तिकमासमां अने छठ्ठी फाल्गुनमासमां–आ छ अट्ठाइमां बे अट्ठाइ शाश्वत छे, एम श्रीउत्तराध्ययननी ब्रहद्वृत्तिमां कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे–" बे अट्ठाइ शाश्वती छे, एक चैत्रमासमां अने बीजी आश्विनमासमां. ए बे शाश्वती अट्ठाइमां सर्व देवताओ नंदीश्वर द्वीपनी यात्रा करे छे, अने विद्याधरो तथा मनुष्यो पोतपोताने स्थानके यात्रा करे छे. तदुपरांत चोमासानी त्रण अट्ठाइ अने एक पर्युषणनी अट्ठाइ एम चार अट्ठाइ तथा प्रभुना जन्म, दिक्षा, केवळ अने निर्वाणादिक अशाश्वत पर्वो छे. " दुषमकाळ तथा युगळिआओना समयमां पण देवताओ चैत्र अने आसो मासनी अट्ठाइ हंमेशा साचवे छे; तेथी ते शाश्वत कहेवाय छे. श्रीजीवाभिगम सूत्रमां कह्युं छे के, " त्यां घणां भुवनपति, वाणव्यंतर, जोतिषी अने कल्पवासी देवताओ चोमासानी त्रण अट्ठाइए अने पर्युषणपर्वमां मोटो महिमा करे छे. "

चैत्र अने आसो मासनी अट्ठाइमां श्रीपाळ अने मयणासुंदरीनी जेम श्री सिद्धचक्रनुं आराधन करवुं. त्यारथी मंत्रनुं स्वरुप निर्धारी मनवडे ललाट विगेरे दश स्थानकोमां यंत्रनी आकृति स्थापीने भावथी तेनुं ध्यान करवुं. सामान्यथी सर्वे अट्ठाइओमां अमारी उद्घोषणा कराववी. जिनमंदिरोमां अट्ठाइ उत्सव मोटा विस्तारथी करवो; अने खांडवुं, दळवुं, पीसवुं, खोदवुं, वस्त्र धोवां अने स्त्रीसेवन करवुं, विगेरे कार्यो करवां नहीं, अने कराववां नहीं. तेमां पण पजोसणनी अट्ठाइ तो पांच साधनो वडे आराधवी. ते पांच साधन आप्रमाणे–पेहेलुं साधन अमारीघोषणा

कराववी, बीजुं साधर्मीवात्सल्य करवुं, त्रीजुं परस्पर खमाववुं, चोथुं अष्टम तप करवो अने पांचमुं चैत्य परिपाटी करवी. तेमां पहेला साधननुं वर्णन आगळ कहेवाशे.

बीजुं साधन साधर्मिवात्सल्य ते सर्व साधर्मीओनी भक्ति करवी अथवा यथाशक्ति बने तेटलानी करवी. प्राये करीने सरखा साधर्मीओ मळवा दुर्लभ छे. कह्युं छे के, " सर्व जीवो परस्पर पूर्वना संबंधी छे, तेथी ते तो वारंवार मळे छे. पण साधर्मी कोइकज ठामे मळे छे. " स्वामीवच्छळना फळ संबंधी कह्युं छे के–

एगथ्थ सव्वधम्मा, साहमिअवच्छलं तु एगथ्थ ।
बुद्धितुलाए तुलिया, दोवीअ तुलाइं भणियाइं ॥ १ ॥

" एक बाजु सर्व धर्म ने एक बाजु स्वामिवच्छळ मूकी बुद्धि रुपी त्राजवावडे तोळीए तो ते बंने समान थाय. " आ विषे भरतचक्री, दंडवीर्य, कुमारपाळ विगेरेना दृष्टांतो छे ते स्वयमेव जाणी लेवा.

त्रीजुं साधन परस्पर खमाववानुं छे. ते उपर एवी कथा छे के, एक वखते चंदनबाळा साध्वी तथा मृगावती साध्वी वीरप्रभुने वांदवा गया हता. ते दिवसे सूर्य चंद्र मूळविमाने प्रभुने वांदवा आव्या हता. तेथी अस्त समय थया छतां समवसरणमां दिवसवत् प्रकाश हतो; परंतु दक्षपणाथी–सूर्यास्त समय जाणी एकदम चंदनबाळा उपाश्रये आवी इर्यापथिकी पडीकमी निद्रावश थया. पछी सूर्य चंद्र स्वस्थाने गया एटले एकदम अंधकार थइ गयो. तेथी रात्री पडी जवाने लीधे भय पामीने मृगावती तत्काळ उपाश्रये आव्या, अने इरिआवही पडिकमतां चंदना साध्वीने कह्युं के, ' हे गुरणीजी ! मारो अपराध क्षमा करो. ' चंदनबाळाए कह्युं के ' हे मृगावती ! तारा जेवी कुलीनने आम करवुं घटे नहीं. ' मृगावती बोली के ' हवे फरीवार आवुं करीश नहीं ' एम कही ते चंदनबाळाना पगमां पड्या. चंदनबाळाने तो पाछी निद्रा आवी गइ. परंतु शुद्ध अंतःकरणवडे वारंवार खमाववाथी मृगावतीने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. तेवामां चंदनबाळा पासे सर्प आवतो हतो, एटले तेणे हाथ उंचो कर्यो, तेथी तेओ जागी गया. हाथ उंचो करवानुं कारण पूछतां तेमणे सर्पनो वृत्तांत जणाव्यो. चंदनबाळाए पूछयुं के ' आवा घाटा अंधकारमां तमे सर्पने शी रीते जाण्यो ? तेमणे कह्युं के ' आपने पसाये ' एम पूछतां तेने केवळज्ञान थयेलुं जाणी मृगावती साध्वीने खमावतां चंदनबाळाने पण केवळज्ञान प्राप्त थयुं. तेथी एवी रीते परस्पर खमावीने मिथ्या दुष्कृत आपवुं.

वळी चंडप्रद्योत राजा प्रत्ये जेम उदयन राजाए क्षमापन कर्युं हतुं, तेम पर्युषणपर्वमां अवश्य परस्पर क्षमापन करवुं. बेजणमां एक जण खमावे अने बीजो

न खमावे तो तेमां जे खमावे ते आराधक, बीजो नहीं. तेथी पोताने तो उपशमवुं. कोइ ठेकाणे बंने पण आराधक थाय छे, अने कोइ ठेकाणे वृथा मिच्छामिदुक्कड देवाथी बंने आराधक थता नथी, ते विषे कुंभकार अने क्षुल्लक मुनिनुं दृष्टांत छे. "कोइ लघुशिष्य कांकरा मारवावडे कुंभारना वासणो काणा करतो हतो, कुंभकारे तेने वार्यो एटले तेणे मिथ्या दुष्कृत आप्युं. पण तेनाथी न निवर्त्ततां पाछो तेवीज रीते भांड काणा करवा लाग्यो. पछी कुंभकारे कांकरावती तेना कान मरड्या. त्यारे क्षुल्लके कह्युं के, हुं पीडाउं छुं, एटले कुंभारे पण वृथा मिथ्यादुष्कृत आप्युं." आवा परस्परना मिच्छामीदुक्कड ते वृथा समजवा.

हवे चोथा साधन तरिके पर्युषण पर्वमां अष्टम तप अवश्य करवुं. पाक्षिक तपमां एक उपवास, चोमासी तपमां छठ्ठ, अने वार्षिक पर्वमां अठ्ठम करवो; एम जिनेश्वर भगवंते कहेलुं छे. जे अष्टम तप करवाने असमर्थ होय तेमणे ते तपनी पूर्त्ति करवाने छ आंबेल करवा, जे छ आंबेल करवा ने अशक्त होय तेणे नवनीवि करवी, अथवा तेने बदले बार एकासणा करवा, अथवा चोवीश बेसणा करवा, अथवा छ हजार स्वाध्याय करवो, अथवा साठ नोकारवाळी (बाधा परानी) गणवी. आ रीतिथी पण तपनी पूर्त्ति करवी. जो तेम न करेतो श्री जिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करवानो दोष लागे. आ प्रसंगे नोकारसी प्रमुख तपनुं फळ दर्शावे छे—

नारकीनो जीव एकसो वर्ष सुधी अकाम निर्जरावडे जेटलां कर्म खपावे तेटला पापकर्म एक नोकारसीना पच्चखाणथी खपे छे, पोरसीना पच्चखाणथी एक हजार वर्षना पाप दूर थाय छे, सार्द्धपोरसीना पच्चखाणथी दश हजार वर्षना पाप टळे छे, पूरिमार्द्ध (पुरीमड्ढ) एक लाख वर्षना पापकर्म नाश पामे छे, अचित्त जळयुक्त एकासणे दश लाख वर्षनुं पाप जाय छे, निवीना तपथी कोटी वर्षनुं पाप जाय छे, एकलठाणे दश कोटी वर्षनुं पाप टळे छे, एक दत्तीथी (एकवार अन्न आप्युं तेटलुंज खावाथी) सो कोटी वर्षनुं पाप जाय छे, आंबेलना तपथी एक हजार कोटी वर्षनुं पाप जाय छे, उपवासना तपथी दश हजार कोटी वर्षनुं पाप जाय छे, छठ्ठ तप करवाथी एक लाख कोटी वर्षनुं पाप प्रलय थाय छे, अने अष्टम तपथी दश लाख कोटी वर्षनुं पाप जाय छे. त्यांथी आगळ एक एक उपवासनो वधारो करी अनुक्रमे तेना फळमां दश गणो अंक वधारवो. अष्टम तप करवाथी नागकेतु तेज भवमां प्रत्यक्ष फळ पाम्यो हतो. ते सर्व तप शल्यरहित करवुं. शल्यवाळुं तप दुष्कर कर्युं होय तोपण निरर्थक जाणवुं. ते उपर एक कथा छे आ प्रमाणे—

आजथी ऐंशीमी चोविशीमां एक राजाने घणा पुत्रो थया पछी पुत्रीनी इच्छाथी सैकडो मानता करवावडे एक लक्ष्मणा नामे पुत्री थइ हती. ते राजाने बहु

मानीती हती. त्यारे ते वरवा योग्य थइ त्यारे राजाए स्वयंवर कर्यो! तेमां ते इच्छित वरने वरी. परंतु विवाहविधि करतां चोरीमां तेनो स्वामी मृत्यु पाम्यो. त्यारथी ते सुशील सतीओमां श्रेष्ठ गणाती सती श्रावक धर्मने सारी रीते पाळवा लागी. अन्यदा ते चोवीशीना छेल्ला तीर्थंकर पासे तेणे दीक्षा लीधी. एकदा ते लक्ष्मणा साध्वी चकवा चकवीनो संभोग जोइ कामातुर थइ सती विचारवा लागी "अरिहंत प्रभुए शुं जोइने आ कर्मनी मुनिने आज्ञा दीधी नहीं होय? अथवा भगवंत पोते अवेदी छे तेथी ते वेदधारीनुं दुःख क्यांथी जाणे?" आवुं चिंतवतां क्षणवारे पाछो तेने पश्चात्ताप थयो. तेणीए विचार्युं "में मारुं चिंतवन कर्युं, हवे हुं केवी रीते तेनी आलोयणा लइश? केमके आ वात माराथी कहेवाशे नहीं तो शल्य रही जशे, अने शल्य रहेशे तो तेनी शुद्धि थशे नहीं." आम विचारीने ते आलोयणा लेवा माटे गुरु पासे जवा उजमाळ थइ. जेवी चालवा लागी, तेवामां अणचिंतव्यो तेना पगमां कांटो वाग्यो; तेथी ते अपशुकनथी क्षोभ पामी. पछी तेणीए बीजानुं नाम दइने गुरुने पूछ्युं के, 'जे आवुं दुर्ध्यान चिंतवे तेने शुं प्रायश्चित्त आवे?' गुरुए स्पष्ट पूछवानुं कहेतां ते कही शकी नहीं. परंतु गुरुपासेथी तेनुं प्रायश्चित्त जाणीने पचास वर्ष सुधी तीव्र तप कर्युं. ते आ प्रमाणे–" छट्ठ, अट्ठम, चार उपवास अने पांच उपवास करी पारणे निवी करे एम दशवर्ष सुधी तप कर्युं, बे वर्ष सुधी मात्र निर्लेप चणानो आहार लीधो, बे वर्ष भुंजेला चणानो आहार लीधो, सोळवर्ष मासखमण कर्या अने वीश वर्ष आंबेल तप कर्युं. ए प्रमाणे लक्ष्मणा साध्वीए पचास वर्ष तप कर्युं." आवी रीते क्रियाथी आकरुं तप कर्युं तोपण दंभ राखवाथी तेनी शुद्धि न थइ, अने आर्त्तध्यानथी मृत्यु पामी. त्यार पछी दासी प्रमुखना असंख्य भवमां महा दुःख भोगवी श्रीपद्मनाथ प्रभुना तीर्थमां सिद्धिपदने पामशे. ते विषे कह्युं छे के, "पराक्रमवडे घोर एवुं तीव्र तप एक सहस्र दिव्यवर्ष सुधी आचरे पण जो सशल्य होयतो ते निष्फळ थाय छे."

वार्षिक प्रतिक्रमणमां एक हजार अने आठ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग जाणवो. प्रत्येक चतुर्विंशति स्तवे " चंदेसुनिम्मलयरा " सुधी पचवीश श्वासोच्छ्वास गणवा. एवा चाळीश लोगस्स एक नवकारे अधिक गणवाथी १००८ श्वासोच्छ्वास थाय छे. अहींआ पदसमान श्वासोच्छ्वास समजवो. चातुर्मासिक प्रतिक्रमणमां पांचसो श्वासोच्छ्वासनो एटले २० लोगस्सनो अने पाक्षिक प्रतिक्रम-

१ आवती चोवीशीना प्रथम तीर्थंकर.

णमां त्रणसो श्वासोच्छ्वासनो एटले १२ लोगस्सनो काउसग्ग जाणवो.

हवे कायोत्सर्गमां एक श्वासोच्छ्वासमां केटलुं देवतानुं आयुष्य बांधे ते कहे छे. बे लाख, पीस्तालीश हजार, चारसो अने आठ पल्योपम अने एक पल्योपमना नव भाग करीए तेवा चार भाग जेटलुं एक श्वासोश्वासमां देवगतिनुं आयुष्य बांधे. ते विषे लखे छे के,

लरकदुग सहस्स पणचत्त, चउसया अठ्ठचेव पलियाइं ।
किंचुणा चउभागा, सुराउ बंधो इगुसासो ॥ १ ॥

(अर्थ उपर कहेलो छे.) आखा नवकारना आठ श्वासोश्वासमां ओगणीश लाख, त्रेसठ हजार, बसो ने सडसठ पल्योपमनुं देवतानुं आयुष्य बांधे. अने एक लोगस्सना पचवीश श्वासोश्वासमां एकसठ लाख, पांत्रीश हजार, बसो अने दश पल्योपमनुं देवगतिनुं आयुष्य बांधे. आयुष्य बांधवानो अर्थ एवो छे के, जे देवलोकमां देवताओनुं आयुष्य एटला पल्योपमनुं होय, ते देवलोकमां ते उत्पन्न थाय.

पर्युषण पर्वमां पांचमा साधन तरीके चैत्य परिपाटी करवी; अने चैत्यपूजा विगेरेथी शासननी उन्नति करवी. जेम एकदा वज्रस्वामी मोटो दुकाळ पडवाथी बधा संघने पट्ट उपर बेसारी सुभिक्षापुरीमां लइ गया हता. त्यांनो राजा बौद्ध हतो. तेणे जिनचैत्यमां पूजा माटे पुष्प आपवानी अटकायत करी हती. तेवामां पर्युषण पर्व आव्या एटले श्रावकोए पुष्पने माटे गुरुने विनंति करी. गुरु आकाशगामिनी विद्या वडे माहेश्वरीनगरीए जइ पोताना पिताना मित्र कोइ माळीने पुष्प तैयार करवानी आज्ञा करीने पोते हेमवंत पर्वत उपर श्रीदेवीना भुवनमां गया. त्यां श्रीदेवीए एक महापद्म आप्युं ते अने हुताशन वनमांथी विश लाख पुष्पो लइ जृंभक देवताए विकुर्वेला विमानमां बेसी महोत्सव सहित सुभिक्षापुरीए आवी श्रीजैन शासननी प्रभावना करी. ते जोइ बौद्धराजा आश्चर्य पाम्यो अने ते श्रावक थयो.

अठ्ठाइ पर्वमां अमारी प्रवर्त्तन करवुं. जेम श्रीकुमारपाळ अने संप्रति राजा विगेरेए कर्युं हतुं. आधुनिक काळे पण श्रीहीर गुरुना उपदेशथी अकबर बादशाहे पोताना बधा देशमां छ माससुधी अमारी प्रवर्त्तावी हती.[1] तेनी कथा संक्षेपमां आ प्रमाणे छे–

एक वखते अकबर बादशाहे पोताना प्रधानो विगेरेनी पासेथी श्रीहीरसूरिनुं वर्णन सांभळी पोताना नामनुं फरमान मोकलीने बहुमान साथे सूरिने बोलाव्या.

---

1 पांच साधनो पैकी आ साधन पहेलुं कह्युं छे तेनुं वीवरण हवे करे छे.

संवत् १६३९ ना वर्षमां ज्येष्ठमासनी कृष्ण त्रयोदशीए सूरिराज मोटा मान साथे गंधार नगरथी त्यां आव्या. बादशाहने मळ्या एटले तेमणे आदरथी बोलाव्या. पछी योग्य अवसरे सूरिए एवो धर्मोपदेश आप्यो के जेथी पूर्वे आग्राथी ते अजमेर सुधीना रस्तामां प्रत्येक कोशे कुवासहित मनारा करी, ते प्रत्येक मनारे पोतानुं शीकार करवानुं कळाकौशल्य प्रगट करवाने माटे हरिणना सैकडो शींगडा जेणे आरोपण करेला तेवो हिंसक बादशाह पण दयाळु थइ गयो. अन्यदा बादशाहे सूरिवर्यने कह्युं, 'महाराज, दर्शननी उत्कंठाथी में आपने दूर देशथी अहीं बोलाव्या छे. परंतु आप तो मारुं कांइपण लेता नथी तो मारी पासेथी जे कांइ आपने योग्य लागे ते मागी ल्यो.' सूरिए विचार करीने तेना बधा देशमां पर्युषण पर्वनी अठ्ठाइना आठे दिवस अमारी प्रवर्त्तन अने बंदीवानने छोडी मुकवानुं मागी लीधुं. सूरिराजना गुणथी मनमां चमत्कार पामेला बादशाहे 'मारी तरफथी तेमां चार दिवस अधिक थाओ' एम कही पोताना ताबाना सर्व देशमां श्रावणमासनी कृष्ण दशमीथी आरंभीने भाद्रपदनी शुक्ल छठ सुधी बार दिवस अमारी प्रवर्त्ताववाने सुवर्ण रत्नमय, पोताना नामनी मोरछापवाळा छ फरमान सत्वर गुरुने अर्पण कर्यां. तेमां एक गुजरात देशनुं, बीजुं माळव देशनुं, त्रीजुं अजमेर प्रांतनुं, चोथुं दील्ही तथा फत्तेहपुरनुं, पांचमुं लाहोर तथा मुलताननुं अने छठ्ठुं पांचे देश संबंधी साधारण गुरुनी पासे राखवानुं–एम छ फरमान करी आप्यां. अने ते देशमां तेणे अमारी पटह वगडाव्यो. पछी श्रीगुरु पासेथी उठी अनेक गाउना प्रमाणवाळा भायर नामना सरोवरने कीनारे जइने साधुओनी समक्ष देशांतरना लोकोए भेट करेला विविध जातिना संख्याबंध पक्षीओने छोडी मुक्या. तेमज कारागृहमां पूरेला घणा लोकोना बंधन पण तोडावी नांख्यां.

पछी हीरसूरिए बादशाहनी प्रार्थनाथी जंबूद्वीप प्रज्ञप्तिनी टीकाना करनारा, स्वशास्त्र अने परशास्त्रना जाण अने पश्चिम दिशाओना लोकपाळ वरुणनुं वरदान मेळवनार उपाध्यायजी श्री शांतिचंद्रने धर्म संभळाववा माटे त्यां राख्या अने पोते विहार कर्यो. श्रीशांतिचंद्रगणीए स्वोपज्ञ एवा कृपारस कोश नामना शास्त्र संबंधी जळथी सिंचन करेली दयारुप वेल बादशाहना हृदयमां वृद्धि पामी.

एकदा कोइ व्यवहारीए बादशाहनी आगळ आमळाना फळ जेवडा बे मुक्ताफळ भेट धर्यां. तेनुं सन्मान करीने राजाए पोताना कोशाध्यक्ष अने चामर वींजनार एवा बारहजारी नामना मनसबदारने ते बे मुक्ताफळ मुकवा आप्यां. हजारीए घेर आवीने ते मुक्ताफळ पोतानी स्त्रीने आप्यां. ते वखते ते स्त्री स्नान करवा

बेसती हती, तेथी तेणीए वस्त्रने छेडे बांधीने स्नान कर्युं. पछी ते बादशाहनां छे एम जाणी तेणीए पोताना इष्ट स्थलमां तेने साचवीने मुक्यां. त्यार पछी केटलेक दिवसे दैवयोगे ते स्त्री व्याधिग्रस्त थइने मृत्यु पामी.

अन्यदा बादशाहे हजारी पासे ते मोती माग्या एटले तेणे कह्युं के, स्वामी, मारे घेरथी लइ आवुं. राजाए आज्ञा आपी एटले तेणे घेर आवी सर्व ठेकाणे शोध करी पण कोइ ठेकाणेथी ते मळ्या नहीं. एटले ते अत्यंत चिंतातुर थइ बादशाह पासे जवा चाल्यो. ते अति निस्तेजपणे चाल्यो जतो हतो, तेवामां तेना पुण्यना उदयथी मार्गमां शांतिचंद्र उपाध्याय मळ्या. तेओए तेने चिंतानुं कारण पुछ्युं, एटले जेणे जीववानी पण आशा मुकी छे एवा तेणे जे हकीकत बनी हती ते गुरु-पासे जणावी. वाचकेंद्रे कह्युं के, 'तुं पाछो घेर जा अने प्रथम जे ठेकाणे जेने तें आप्यां हतां तेनी पासेथी ते मागी ले, तने मळशे.' हजारी आश्चर्य पामी तत्काल घेर गयो. त्यां स्नान करवानी तैयारी करती पोतानी स्त्रीने तेणे जोइ. एटले तेनी पासेथी तेणे बे मुक्ताफळ माग्यां. तेणीए पोताना वस्त्रना छेडानी गांठेथी छोडीने ते आप्यां. हजारी आश्चर्य पामी बादशाहनी पासे आव्यो अने मुक्ताफळ बादशाहनी आगळ मुकी पोते चामर वींजवा लाग्यो. पण ते अत्यंत आश्चर्यमां मग्न थयेलो होवाथी जडजेवो बनी गयो हतो. बादशाहे तेनी तेवी स्थिति जोइने पुछ्युं के, 'आजे तुं चित्रमां आलेख्यो होय तेवो केम देखाय छे?' बहु आग्रह करीने पुछवाथी तेणे मोतीना संबंधमां बनेली सर्व वात कही संभळावी; ते सांभळी बादशाहे कह्युं के, 'तेमां शुं आश्चर्य छे! ते तो बीजा परवरदिगार छे.'

बीजे दिवसे प्रातःकाले उपाध्यायजी बादशाहने धर्म संभळाववा माटे बादशाहे कचेरीमां ढळावेली सुवर्णनी पाट उपर आवीने बेठा. एटले बादशाहे उपाध्यायने प्रणाम करीने विज्ञप्ति करी के, हे पूज्य! मने पण कांइक आश्चर्य बतावो. गुरु बोल्या के—काले सवारे गुलाबवाडीमां आवजो. बीजे दिवसे प्रातःकाले बादशाह त्यां गयो. उपाध्यायजी पण त्यां आव्या. बंने परस्पर धर्मगोष्ठी करवा लाग्या. तेवामां अकस्मात बादशाही नोबतनो डंको थयो. ते सांभळी बादशाहे संभ्रांत थइने पोताना सेवकोने पुछ्युं के मारा हुकम विना बारगाउ सुधीमां कोइनी पण नोबत वागती नथी तो आ शुं थयुं? तपास करो. सेवकोए तपास करी बादशाहने जणाव्युं के, ज्हांपनाह, आपना पिता हुमायु बादशाह मोटी सेनासहित आपने मळवा आवे छे. सेवको वात कहेता हता, तेवामां तो हुमायु बादशाह त्यां आवी पोताना पुत्र—अकबरने भेटी उभा रह्या अने अकबरना सर्व माणसोने मेवा, तथा मीठाइए

भरेला रुपाना थाळ आप्या. पछी अकबरने पण शिरपाव साथे मोटुं सन्मान आपी हुमायु जेम आव्या हता तेम चाल्या गया अने क्षणवारमां तो अदृश्य थइ गया. अकबर आश्चर्य पामीने विचारवा लाग्यो के-आ इंद्रजाळ तो जणाती नथी, कारण के अमने आपेली आ सर्व वस्तु प्रत्यक्ष देखाय छे. माटे जरुर आ सर्व चेष्टीत गुरुए करेलुं जणाय छे. एम विचारी गुरुने नमस्कार करीने स्तुति करी.

एक वखते अकबर बादशाहे अटकदेशना राजाने जितवा जतां एक दिवसे बत्रीश कोशनी मजल करी. पछी पोताना खास माणसो जे साथे आवेला तेमनी नाम साथे हाजरी लेवा मांडी. तेमां शांतिचंद्र उपाध्यायनुं नाम पण आव्युं. ते सांभळी बादशाहे विचार्युं के, अहो, वाहन अने उपानहादि विना आ उपाध्यायजी घणुं कष्ट पाम्या हशे. आवुं विचारी तेमने तेडवाने माणसो मोकल्या. माणसोए आवी गुरुने कह्युं के, आपने बादशाह बोलावे छे. ते वखते राजसेवकोए उपाध्यायजीने एवी स्थितिमां जोया के, तेमना पग सुजी गया हता, तेथी आगळ एक पगलु पण चालवाने अशक्त हता; उलखामां रहेला प्रासुक जळवडे वस्त्रनो छेडो भीनो करी छाती उपर मुक्यो हतो अने बे शिष्यो तेमनी वैयावच्च करता हता. सेवकोए बादशाह पासे जइने गुरुनी एवी स्थिति जणावी. ते सांभळी बादशाहे गुरुने तेडवाने सुखपाल मोकल्युं. त्यारे गुरु एक काष्ठनी वळी मंगावी तेनी उपर बेठा अने वळीना बे छेडा बे शिष्यो कांध उपर मुकीने चाल्या. तेवी अवस्थाए आवता उपाध्यायजीने जोइ बादशाह विचारमां पड्यो के, 'अहो, आ गुरुना भक्तने धन्य छे के जेओ तेमनी आज्ञा होवाथी महा कष्ट वेठीने मने अनुसरे छे. नहिंतो तेओने मारी पासेथी कांइ प्राप्ति के अभिलाषा नथी. अहो! आवा महा समर्थनी आ अद्भुत क्षमा छे.' पछी बादशाह अकबरे पोतानी जाते सन्मुख जइ गुरुना चरणने चक्षुथी स्पर्श कर्यो अने हाथ जोडीने कह्युं के, 'हे स्वामी, आजथी आपे मारी साथे मोटी मजल करवी नहीं; पछवाडे हळवे हळवे आववुं.'

त्यांथी आगळ चाली अनुक्रमे बादशाहे अटक देशना राजाना नगर उपर घेरो घाल्यो. त्यां बारवर्ष सुधी लश्करनो पडाव राख्यो, तोपण तेनो किल्लो अकबरने ताबे थयो नही. एक वखते मुसलमानो, काझीओ, मुल्लांओए मळी बादशाहने कह्युं के, "हे अकबर बादशाह! तुं हंमेशा काफर एवा श्वेतांबरीनो संग करे छे तेथी आ किल्लो लेवातो नथी, एम जणाय छे." बादशाहे आ वृत्तांत गुरुने जणाव्यो. गुरु बोल्या-" जे दिवसे किल्लो लेवानी तमारी इच्छा थाय ते दिवस किल्लो लइए. पण तमारे बधुं सैन्य छावणीमां राखवुं अने आपणे बंनेज त्यां जइए;

तेमज ते दिवसे नगरनी बहारके अंदर कोइए बीलकुल हिंसा करवी नहीं. " गुरुना आवां वचन सांभळी बादशाहे पटहनी घोषणाथी सर्व स्थाने हिंसा करवानो प्रतिषेध कर्यो अने प्रातःकाळे तेओ बंने एकला किल्ला पासे जवा चाल्या. ते जोइ केटला एक निंदक म्लेच्छो कहेवा लाग्या के, आ काफर हिंदु अकबरने शत्रुना हाथमां सोंपी देशे.

अहिं वाचकेंद्र गुरुए किल्ला पासे आवी एक फुंक मारवावडे बधी खाइ रजथी पूरी दीधी, बीजी फुंके शत्रुना सैन्यने स्तंभित करी दीधुं अने त्रीजी फुंके धाणीनी जेम दरवाजा फुटीने उघडी गया. अकबर बादशाहे आश्चर्य पामीने ते नगरमां पोतानी अखंड आज्ञा प्रवर्त्तावी. पछी गुरु पासे आवीने कह्युं के, हे पूज्य मने कांइक पण कार्य बतावयानो अनुग्रह करो. ते वखते सूरिए बादशाहना राजभंडारमां प्रतिवर्ष जजीयावेराना करतुं चौद क्रोड़ी द्रव्य आवतुं हतुं ते माफ करवानी मागणी करी अने कह्युं के, " तमे हंमेशा सवाशेर चकलानी जीभ खाओ छो, ते हवेथी खावी बंध करो; अने शत्रुंजयगिरिपर मनुष्य दीठ एक सोनैयानो कर छे ते माफ करो, तेमज छ मास सुधी अमारी प्रवर्त्तावो. ते छ मास आ प्रमाणे—आपनो जन्म मास, पर्युषण पर्वना बार दिवस, बधा रविवार, १२ संक्रांतिओनी १२ तिथिओ, नवरोजनो (रोजा) महीनो, इदना दिवसो, मोहरमना दिवसो अने सोफिआनना दिवसो. " बादशाहे ए चारे वात कबुल करी अने तेना फरमानो मोरछाप साथे तरत करावीने वाचकेंद्रने अर्पण कर्यां. वाचकेंद्रे गुरु महाराज श्री हीरविजयसूरिने तेनुं भेटणुं कर्युं.

" एवी रीते सौभाग्यलक्ष्मी विगेरेना सुखनी इच्छावाळा भाविक पुरुषोए अट्ठाइ पर्वोमां धर्मनी वृद्धिने माटे विविध प्रकारे शासननी उन्नति करवी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१४७॥

व्याख्यान १४८ मुं.

अठ्ठाइ पर्वना आराधकोए वार्षिक कृत्यो पण अवश्य करवां ते कहे छे.

संघार्चादिसुकृत्यानि, प्रतिवर्षं विवेकिना ।
यथाविधि विधेयानि, एकादशमितानि च ॥ १ ॥

भावार्थ

" विवेकी श्रावके प्रत्येक वर्षे संघपूजा विगेरे अगीयार प्रकारनां सुकृत्य विधियुक्त जरूर करवां. "

विस्तरार्थ

ते अगीयार कृत्य पूर्व सूरिओए कहेली गाथाओ अनुसार दर्शावीए छीए. " १ संघपूजा, २ साधर्मि भक्ति, ३ यात्रात्रिक, ४ जिनमंदिरमां स्नात्रोत्सव, ५ देवद्रव्यनी वृद्धि, ६ महापूजा, ७ रात्रिजागरण, ८ सिद्धांतपूजा, ९ उद्यापन (उजमणुं), १० तीर्थप्रभावना अने ११ शोधि. आ अगियार वार्षिक कृत्य छे. "

१ प्रतिवर्ष जघन्यपणे एकवार पण संघपूजा करवी संघपूजा एटले साधु साध्वीने निर्दोष आहार तथा पुस्तकादिनुं दान आपवुं अने श्रावक श्राविकाने यथाशक्ति भक्तिपूर्वक पेहेरामणी विगेरे करवुं संघपूजा उत्कृष्ट, मध्यम अने जघन्य एम त्रण प्रकारनी छे. सर्व दर्शन तथा सर्व संघने पेहेरामणी करवी ते उत्कृष्ट संघपूजा, सूत्रनी नोकारवाळीओ आपवी ते जघन्य संघपूजा अने बाकीनी सर्व प्रकारनी मध्यम संघपूजा जाणवी. जो अधिक खर्च करवाने अशक्त होयतो छेवटे तेणे साधु साध्वीने सूत्रनी आंटी, मुहपत्ति विगेरे अने बे त्रण श्रावक श्राविकाने सोपारी प्रमुख आपीने पण प्रतिवर्षे संघपूजा रुप कृत्य भक्तिवडे सफळ करवुं. अति निर्धन होय तेने पुणियाश्रावकनी जेम तेवीरीते भक्ति करवाथी पण संघपूजानुं मोटुं फळ थायछे. ते विषे कह्युं छे के,

संपत्तौ नियमः शक्तौ, सहनं यौवने व्रतं ।
दारिद्रे दानमप्यल्पं, महालाभाय जायते ॥ १ ॥

" संपत्तिमां नियम, शक्ति छतां सहनता, यौवनावस्थामां व्रत अने दारिद्रावस्थामां अल्प पण दान—ए महालाभने अर्थे थायछे. "

२ प्रतिवर्षे साधर्मीओने निमंत्रण करी विशिष्ट आसने बेसारी वस्त्रादिकनुं दान करवुं अने जो कोइ सहधर्मी आपत्तिमां आवी पडयो होय तो तेनो पोतानुं धन खर्चीने उद्धार करवो. कह्युं छे के,

न कयं दीणुद्धरणं, न कयं साहमिआण वच्छलं ।
हिअयंमि वियराउ, न धारिउ हारिउ जम्मो ॥

" जे प्राणीए दीनजनोनो उद्धार कर्यो नहीं, साधर्मिनुं वात्सल्य कर्युं नहीं अने हृदयमां श्रीवीतरागप्रभुने धार्या नहीं, ते पोतानो जन्म हारी गयो छे एम समजवुं. "

श्रावकना जेवी श्राविकानी पण भक्ति करवी, न्यूनाधिक करवी नहीं. श्राविका पण ज्ञान, दर्शन, चारित्रवाळी सुशीला होयतो ते सधवा होय के विधवा होय तेने साधर्मी तरीके मानवी.

अहीं शिष्य प्रश्न करे छे के, "हे गुरुमहाराज ! लोकिकमां ने लोकोत्तरमां स्त्रीओने तो दोषवाळी कहेली छे, कह्युं छे के,

अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोभता ।
अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥ १ ॥

" असत्य, साहस, कपट, मूर्खता, अतिलोभ, अपवित्रपणुं अने निर्दयपणुं— एटला तो स्त्रीओमां स्वाभाविक दोष होयछे. " ए विषे सुकुमालिका, सुरीकांता, कपिला, अभया, नुपूरपंडिता अने नागश्री प्रमुखना दृष्टांतो पोतानी मेळे जाणी लेवा. सिद्धांतमां पण कह्युं छेके,

अणंताउ पावरासीउ, जया उदयमागया ।
तया इत्थितणं पत्तं, सम्मं जाणाहि गोयमा ॥ १ ॥

" हे गौतम ! ज्यारे अनंती पापनी राशीओ उदयमां आवे त्यारे स्त्रीपणुं प्राप्त थाय छे, ते सम्यक् प्रकारे जाणवुं " ते विषे रज्जासाध्वीनो संबंध जाणवो. आ प्रमाणे सर्वत्र स्त्रीओनी निंदा दृष्टिए पडे छे. तो तेवी स्त्रीओनुं दान, मान अने वात्सल्य करवुं केम घटे ? "

गुरु महाराज तेनो उत्तर आपे छे के–" हे शिष्य ! तारे एकांते एम जाणवुं नहीं के स्त्रीओज दोषनी भरेली छे. केटला एक पुरुषो पण तेवा होय छे. अखाइराठोड जेवा महाक्रूर आशयवाळा, नास्तिक अने देवगुरुने पण ठगनारा, घणा पुरुषो जोवामां आवे छे. तेवी रीते केटलीएक स्त्रीओमां पण घणा दोष जोवामां आवे छे. तथापि केटलीएक स्त्रीओमां घणा गुण पण होय छे. जेवी के सुलसा,

रेवती, कलावती अने मदनरेखा विगेरे. केटलीक श्राविकाओ एवी उत्तम हती के जेमनी श्रीतीर्थंकरोए पण प्रशंसा करेली छे, तेथी तेवी श्राविकाओनुं मातानी जेम, बेननी जेम अने पोतानी पुत्रीनी जेम वात्सल्य करवुं ते युक्त छे. वधारे कहेवाथी सर्युं, आटलुं बस छे."

३. प्रत्येक वर्षे जघन्यथी एकेक पण यात्रा करवी. यात्रा त्रण प्रकारनी कही छे.

अष्टान्हिकाभिधामेकां, रथयात्रामथापरां ।
तृतिया तीर्थयात्राचे,–त्याहुर्यात्रा त्रिधा बुधाः ॥ १ ॥

"एक अठ्ठाइउत्सव यात्रा, बीजी रथयात्रा अने त्रीजी तीर्थयात्रा. एम त्रण प्रकारनी यात्रा पंडितजनो कहे छे." सर्वे अठ्ठाइ पर्वोमां सर्व चैत्यपूजा विगेरे महान् उत्सव करवो ते प्रथमयात्रा. बीजी रथयात्रा ते कुमारपाळ राजाए आ प्रमाणे करेली हती.

"चैत्रमासनी शुक्ल अष्टमीए चोथे पोहोरे महा संपत्तियुक्त तेमज हर्षसहित मळेला लोकोए करेला जय जय शब्द साथे श्रीजिनेश्वरनो सुवर्णरथ तैयार करवामां आव्यो. ते रथ चालतो त्यारे मेरुपर्वत जेवो शोभतो हतो. ते रथनी उपर सुवर्णना मोटा दंडवाळी ध्वजा हती, अंदर छत्र हतुं अने बाजुमां रहेली चामरनी श्रेणीओथी ते दीपतो हतो. तेवा रथमां स्नान विलेपन करी पुष्प चडावीने श्रीपार्श्वनाथ प्रभुनी प्रतिमा स्थापन करी. पछी ते रथ समस्त महाजने कुमारपाळना राजद्वार पासे मोटी ऋद्धिसहित लावीने स्थापित कर्यो.

ते वखते वाजित्रोना शब्दो दशदिशाओने पूरी रह्या हता अने मनोहर तानमानथी स्त्रीओनो समूह नृत्य करतो हतो. पछी ते रथने वाजते गाजते सामंत तथा प्रधानो राजमंदिरमां लइ गया त्यां राजा कुमारपाळे रथमां रहेली प्रतिमानी पट्टवस्त्र तथा सुवर्णना अलंकारादिकवडे पोतानी जाते पूजा करी अने विविध प्रकारनां नृत्य कराव्यां. पछी ते रात्रि त्यां निर्गमन करी राजा रथसहित नगरनी बहार नीकळ्या. त्यां ध्वजासहित वस्त्रनो मनोहर तंबू रचेलो हतो तेना मंडपमां रथ राख्यो. प्रभात थतां राजाए रथमां रहेली जिनप्रतिमानी पूजा रची अने चतुर्विध संघनी समक्ष पोतेज आरति उतारी. पछी हाथी जोडेला ते रथने आखा नगरमां फेरवी ठामे ठामे पटमंडपमां विस्तारवाळी रचना करावी ते उत्सवने दीपाव्यो." आ प्रमाणे रथयात्रा जाणवी.

हवे त्रीजी तीर्थयात्रा ते तीर्थोनी यात्रा करवी. श्री शत्रुंजय, रैवताचल अने संमेतशिखर विगेरे तीर्थो छे. तेमज श्री तीर्थंकरनी जन्म, दीक्षा, ज्ञान, निर्वाण अने विहारनी भूमिओ पण तीर्थ गणाय छे. घणा भव्य प्राणीओने शुभ

भावना संपादक थईने भवसागरथी तारे छे, तेथी ते तीर्थ कहेवाय छे. तेवा तीर्थोमां दर्शनादिनी शुद्धिने माटे विधिपूर्वक यात्रा करवी. जेम श्री सिद्धसेनदिवाकरे प्रतिबोध पमाडेला विक्रमादित्ये श्री शत्रुंजयनी यात्रार्थे संघ काढ्यो हतो. ते संघमां एकसो ने ओगणोतेर सुवर्णनां अने पांचसो चंदन तथा हाथीदांत विगेरेनां देवालयो हतां. श्री सिद्धसेन विगेरे पांच हजार आचार्यो हता, तेमज चौद मुगटबंध राजाओ, सीत्तेर लाख श्रावकोनां कुटुंब, एक कोटी दश लाख अने नव हजार गाडांओ, अढार लाख घोडाओ, छोंतेरशें हाथीओ अने तेना प्रमाणमां ऊंट अने बळदो विगेरे पण हतां.

कुमारपाळ राजाना संघमां सुवर्ण रत्नमय अढारसो ने चंमोतेर देवालयो हतां. आभू संघपतिना संघमां सातसो जिनमंदिर हतां, अने तेनी यात्रामां बार करोड सोनैयानो खर्च थयो हतो. साहुकार पेथडने तीर्थनुं दर्शन थतां अगियार लाख रूपीआनो खर्च थयो हतो. तेना संघमां बावन देवालय अने सात लाख मनुष्यो हतां. मंत्री वस्तुपाळनी साडाबार यात्रा प्रसिद्ध छे.

४. चैत्यमां पर्व दिवसे स्नात्रमहोत्सव पण विस्तारथी करवो जोईए. जो प्रत्येक पर्व दिवसे तेवो महोत्सव करवाने अशक्त होय तो तेणे प्रत्येक वर्षे तो एक एक महोत्सव जरूर करवो. एम संभळाय छे के शाह पेथड श्रावके श्रीरैवतगिरि (गिरनार) उपर स्नात्रमहोत्सवमां छप्पन धडी प्रमाण सुवर्ण वडे इंद्रमाळा पहेरी हती, अने शत्रुंजयथी गिरनार पर्यंत एक सुवर्णनो ध्वज चडाव्यो हतो. ते पछी तेना पुत्र शाह झांजणे रेशमी वस्त्रनो तेवडो ध्वज चडाव्यो हतो.

५ देवद्रव्यनी वृद्धि माटे प्रतिवर्षे माळा पहेरवी योग्य छे; तेमां इंद्रमाळा अथवा बीजीमाळा पण ग्रहण करवी. एक वखते रैवतगिरि उपर श्वेतांबरी अने दिगंबरी संघ वच्चे विवाद थतां वृद्ध पुरुषोए एवो ठराव कर्यो के 'जे इंद्रमाळा पहेरे तेनुं आ तीर्थ.' ते समये साहुकार पेथडे छप्पन धडी सुवर्ण वडे इंद्रमाळा पहेरी, अने चार धडी सुवर्ण याचकोने आपी तीर्थने पोतानुं कर्युं. एवी रीते शुभविधिवडे दरवर्षे देवद्रव्यनी वृद्धि करवी.

६. प्रत्येक वर्षे वा प्रतिपर्वे चैत्यमां महापूजा करवी.

७. प्रतिवर्षे रात्रिजागरण करवुं. ते तीर्थदर्शन समये, कल्याणकना दिवसोए अने गुरुना निर्वाणादि प्रसंगे करवुं. तेमां श्री वीतरागनां गुणगान अने नृत्य विगेरे उत्सवो करवा.

८. प्रतिदिवसे श्रुतज्ञाननी भक्ति करवी. जो प्रतिदिवस करवा अशक्ति होय तो प्रतिमासे के प्रतिवर्षे करवी.

९ नवपद संबंधी एटले सिद्धचक्र संबंधी तथा एकादशी, पंचमी अने रोहणी विगेरे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिना आराधनभूत विविध तप संबंधी उद्यापन (उजमणा) करवा. जघन्यथीं दरवर्षे एक एक उद्यापन विधि प्रमाणे करवुं. कह्युं छे के—

उद्यापनं यत्तपसः समर्थने, तच्चैत्यमौलौ कलशाधिरोपणं ।
फलोपरोपोऽक्षयपात्रमस्तके, तांबूलदानं कृतभोजनोपरि ॥ १ ॥

" तपस्यानुं जे उद्यापन करवुं ते जिन मंदिर उपर कळश चडाववो, अक्षयपात्र उपर फळ आरोपवुं अने भोजन करावीने तांबूल आपवा जेवुं छे. "

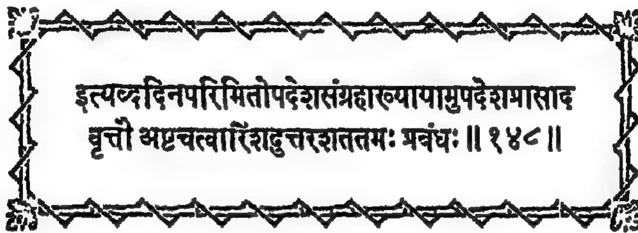
सर्वत्र शुक्ल पंचमी विगेरे विधि तपना उजमणामां उपवासनी संख्याना प्रमाणमां नाणावाटिका, नाळीएर अने मोदक विगेरे विविध वस्तु मूकी शास्त्रसंप्रदाय प्रमाणे उद्यापन करवां.

१० तीर्थनी प्रभावना निमित्ते श्री गुरुमहाराजनो प्रवेशोत्सव तथा प्रभावना विगेरे जघन्यपणे पण प्रतिवर्षे एक एक वार करवा. तेमां श्रीगुरुना प्रवेशोत्सवमां सर्व प्रकारना मोटा आडंबर साथे चतुर्विध संघे सन्मुख जवुं, अने श्रीगुरुनो तथा संघनो सत्कार यथाशक्ति करवो. ते प्रसंगे श्री ऊववाई सूत्रमां श्री वीरप्रभुने वांदवा जतां कौणिक राजाए करेलो महोत्सव जेवो वर्णव्यो छे तेवो महोत्सव करवो; अथवा परदेशी राजा, उदायी राजा अने दशार्णभद्र राजानी जेवो महोत्सव करवो. साहुकार पेथडे श्री धर्मघोष सूरिना प्रवेशोत्सवमां सत्यावीश हजार टंकद्रव्यनो खर्च कर्यो हतो. आ संबंधमां संवेगी साधुनो प्रवेशोत्सव करवो अनुचित छे एम न कहेवुं. कारण के व्यवहारभाष्यमां साधुने प्रतिमा वहनना अधिकारमां कह्युं छे के "साधु संपूर्ण पडिमा वही रह्या पछी एकाएक नगरमां प्रवेश न करे, पण नजीकमा आवीने कोई साधु के श्रावकने पोताना दर्शन आपे वा संदेशो पहोंचाडे, जेथीं नगरनो राजा, मंत्री के ग्रामाधिकारी महोत्सवपूर्वक प्रवेश करावे; तेने अभावे श्रावकनो संघ प्रवेशोत्सवादि बहुमान करे. " कारण के शासननी उन्नति करवाथी तीर्थंकरपणानी प्राप्तिरूप फळ थाय छे.

११. गुरुनो योग होय तो जघन्यपणे प्रतिवर्षे तो जरूर गुरुपासे आलोचना करवी. कह्युं छे के " जंबूद्वीपमां जेटलां वेळुओनां रजकण छे ते बधां रत्न थई थाय, अने तेटलां रत्न कोई प्राणी सात क्षेत्रमां आपे तो पण आलोयणा कर्या विना एक दिवसना पापथी पण छुटातुं नथी. " वळी कह्युं छे के " जंबूद्वीपमां जेटला पर्वतो छे ते बधा सुवर्णना थई जाय, अने तेने कोई सातक्षेत्रमां आपे तो पण आलोयणा कर्या

विना एक दिवसना पापथी पण छुटातुं नथी." त्यारे आलोयणा विना घणा दिवसोना उपार्जित पापनी हानि तो केवी रीते थाय? तेथी विधिप्रमाणे आलोचना करीने गुरु जे प्रायश्चित्त आपे ते प्रमाणे जो करे तो तेज भवे पण प्राणी शुद्ध थाय छे. जो एम न होय तो दृढप्रहारी प्रमुखनी तेज भवे सिद्धि केम थाय?

" विवेकी श्रावको प्रतिवर्षे उपर कहेली अगियार करणी करे छे, अने ते वडे थयेली पुण्यनी पुष्टिथी तेओ कृतार्थ थईने जिनधर्ममां तत्परपणे आत्मकल्याणने प्राप्त करे छे."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १४८ ॥

व्याख्यान १४९ मुं.

पर्वदिवसे पौषध मूकवो नहि.

ये पौषधोपवासेन, तिष्ठंति पर्ववासरे ।
अंतिम इव राजर्षिर्धन्यास्ते गृहिणोऽपिहि ॥ १ ॥

भावार्थः–

" जे पर्वदिवसे पोसह पूर्वक उपवास करीने रहे छे ते गृहस्थ छतां पण छेल्ला राजर्षिनी जेम धन्य छे."

छेल्ला राजर्षिनी कथा.

सिंधुसौवीर देशमां वितभयादि ३६३ नगरनो अधिपति उदायी नामे राजा छे. तेने प्रभावती नामे पटराणी छे, अने तेमने अभिचि नामे पुत्र अने केशी नामे भाणेज छे.

चंपानगरीमां जन्मथी स्त्रीलंपट एवो कुमारनंदी नामे एक सोनी रहेतो हतो. ते जे कोई स्वरूपवती कन्या सांभळे तेने पांचसो सोनामहोर आपीने परणतो हतो. एवी रीते तेने पांचसो स्त्रीओ थई हती. ते स्त्रीओनी साथे ते एक स्तंभवाळा महेलमां क्रीडा करतो हतो. ते सोनीने नागिल नामे एक श्रावक मित्र हतो.

एकदा पंचशैल द्वीपनी अधिष्ठात्री बे व्यंतर देवीओ इंद्रनी आज्ञाथी नंदीश्वर द्वीपे जती हती. त्यां मार्गमां तेमनो स्वामी विद्युन्माळी देव चवी गयो; एटले हासा अने प्रहासा नामनी ते देवीओ ऊंचा महेल उपर रहेला कुमारनंदी सोनीने अत्यंत कामी जोई त्यां उतरी. ते सुंदर देवीओने जोई कुमारनंदी तत्काळ मोह पाम्यो. तेमने आलिंगन करवानी इच्छाथी ते बोल्यो के 'तमे बंने कोण छो? अने अहीं शा माटे आव्या छो?' तेओ बोली-'अमे तमारे माटेज आवेली छीए.' आवो उत्तर सांभळी हर्षित थईने सोनीए प्रार्थना करी, एटले तेओ बोली के 'तमे पंचशैल द्वीपे आवजो, त्यां आपणो संयोग थशे.' एम कही तेओ उडीने आकाशमार्गे चाली गई.

कुमारनंदीए राजाने सुवर्ण आपीने एवो पटह वगडाव्यो के "जे मने पंचशैल द्वीपे लई जशे तेने एक कोटी द्रव्य मळशे." एवो पटह सांभळी कोई वृद्ध खलासीए पटह छब्यो, अने कोटी द्रव्य लीधुं. पछी तेणे वहाण तैयार कर्युं, एटले सोनी तेनी साथे वहाणमां बेसीने चाल्यो. वृद्ध खलासीए समुद्रमां घणे दूर गया पछी कह्युं के "जुओ, समुद्रने कांठे आ वड जणाय छे ते पंचशैल पर्वतमां उगेलो छे, तेथी ज्यारे आ वहाण तेनी नीचे थईने चाले ते वखते तुं तेनी शाखाने वळगी रहेजे. रात्रे त्यां भारंड पक्षीओ आवशे. तेओ ज्यारे सुई रहे त्यारे तेमांथी कोईना पग साथे वस्त्र वडे तारुं शरीर बांधी दृढ मुष्टिथी तेने वळगी रहेजे, एटले प्रातःकाले ते पक्षी उडीने तने पंचशैल उपर लई जशे. पण जो तुं वडनी साथे वळगीश नहि तो आ वहाणनी जेम तुं पण महा आवर्त्तमां पडी विनाश पामीश." सोनीए तेना कह्या प्रमाणे कर्युं, अने भारंडपक्षी तेने पंचशैल उपर लई गयु. अनुक्रमे ते हासा अने प्रहासाना जोवामां आव्यो एटले सोनीए भोग माटे प्रार्थना करी. देवीओ बोली के 'भद्र! आ अंगथी अमारो संग थाय नहि, तेथी तुं अग्निमां प्रवेश करीने अथवा बीजी रीते नियाणुं बांधीने मरण पामे, अने आ पंचशैल द्वीपनो स्वामी थाय तो अमे तारो संग करीए.' कुमारनंदी विचारमां पड्यो के अरे! हुं तो उभय भ्रष्ट थयो. आम चिंता करता एवा ते सोनीने देवीओए तेना नगरमां मूकी दीधो. देवांगनाना अंगथी मोह पामेला कुमारनंदीए त्यां पहोंच्या पछी तरतज अग्निमां पडीने मरण पामवानी तैयारी करी. ते वखते तेना मित्र नागिल श्रावके कह्युं-'मित्र! आम बाळमरण करवुं तने योग्य नथी.' ए प्रमाणे वारतां छतां पण ते नियाणुं बांधीने अग्निशरण थयो, अने पंचशैल द्वीपनो स्वामी बन्यो. ते जोईने वैराग्य पामवाथी नागिल श्रावक दीक्षा लई मृत्यु पामीने अच्युत देवलोकमां देवता थयो.

अन्यदा नंदीश्वर द्वीपनी यात्रा माटे देवताओ जता हता; तेमनी आगळ गायन

करवानी आज्ञा थतां हासा प्रहासा चाली. तेमणे पोताना स्वामीने कह्युं के ' तमे ढोल वगाडो. ' तेणे अभिमानथी वगाड्यो नहि; एटले पूर्वना दुष्कर्मथी ढोल तेना कंठमां आवीने वळग्यो. त्यारे देवीओ बोली–' प्राणेश ! शरमाओ नहि, आपणा कुळने उचित काम करो. ' पछी विद्युन्माळी देवे ढोल वगाडवा मांड्यो, अने देवीओ गायन करवा लागी. ए प्रमाणे देवताओनी आगळ चाल्या. ते समये ते विद्युन्माळीनो पूर्व भवनो मित्र नागिल देवता पण यात्रार्थे जतो हतो; तेणे अवधि ज्ञानथी पोताना पूर्व भवना मित्र विद्युन्माळीने जोईने ओळख्यो; एटले तेणे तेने बोलाव्यो के' भद्र ! तुं मने ओळखे छे ? ' ते बोल्यो–' हे तेजस्वी देव ! हुं तमने ओळखतो नथी के तमे कोण छो ? ' पछी तेणे पोतानुं पूर्वभवनुं श्रावकनुं रुप बतावीने पोतानुं तथा तेना पूर्व भवनुं स्वरूप अने जे धर्मथी पोताने देवपणुं प्राप्त थयुं ते सर्व वृत्तांत जणाव्युं. ते सांभळी कुमारनंदी बोल्यो–' हे मित्र ! हवे हुं शुं करूं ? ' अच्युत देवे कह्युं–'मित्र ! गृहस्थपणे चित्रशाळामां कायोत्सर्गे रहेला भावसाधु श्री वीर भगवंतनी प्रतिमा तुं कराव, तेथी तने बोधिबीज उत्पन्न थशे. ' तेनुं कहेवुं अंगीकार करी तेणे गृहमां कायोत्सर्ग करीने रहेला श्री वीरप्रभुने जोया. पछी हिमवंत गिरिए जई गोशीर्ष चंदन लावी, ते वडे जेवी जोई हती तेवी वीरप्रभुनी काष्ठमय मूर्ति अलंकार सहित तेणे करावी. पछी जातवंत चंदननी एक पेटी करावी, कपिल केवली पासे प्रतिमानी प्रतिष्ठा करावीने ते पेटीमां मूकी. ते समये कोई मुसाफरनुं वहाण समुद्रमां उत्पात योगे छ मासथी भम्या करतुं हतुं. कुमारनंदी देवे ते जोई तेनी पीडा दूर करीने प्रतिमानी पेटी तेने आपी कह्युं के अहींथी वीतभय पाटण जई, आ पेटी बतावीने एवी आघोषणा करजे के " आमां परमात्मानी प्रतिमा छे तेने ग्रहण करो. " देव आ प्रमाणे कहीने गया पछी ते प्रतिमाना प्रभावथी पेलो शेठ वीतभय पाटणे निर्विघ्ने पहोंच्यो. त्यां जईने तेणे देवना कह्या प्रमाणे उद्घोषणा करी; एटले नगरनो राजा, ब्राह्मणो तापसो विगेरे अनेक एकठा थया. तेओए पोतपोताना इष्टदेवनुं स्मरण करीने ते पेटी उघाडवा मांडी पण उघडी नहि; तेम करतां मध्यान्ह काळ थयो, एटले राणीए भोजन माटे राजाने बोलाववा दासीने मोकली. राजाए बधो वृत्तांत कहेवराव्यो, एटले राणी प्रभावती त्यां आवी. तेणीए विचार्युं के आमां परमात्मा जे देवाधिदेव तेनी प्रतिमा छे, एम कहेवामां आवे छे तो देवाधिदेव तो अरिहंत छे, बीजा ब्रह्मादिक देवता नथी; तेथी तेना स्मरणथी पेटी उघडवी जोईए. आम विचारी ते संपुटनी चदंनादिकथी पूजा करीने ते आ प्रमाणे बोली—

प्रातिहार्याष्टकोपेतः प्रास्तरागादिदूषणः ।
देयान्मे दर्शनं देवाधिदेवोऽर्हन् त्रिकालवित् ॥ १ ॥

भावार्थः

" अष्ट प्रातिहार्येयुक्त, रागादिदूषणने अत्यंतपणे दूर करनार अने त्रिकालज्ञ एवा देवाधिदेव श्री अरिहंत भगवान् मने दर्शन आपो. "

एटलुं कहेतांज ते संपुट उघडी जई जिनप्रतिमा स्वतः प्रकट थई. पछी प्रभावती प्रतिमाने पोताना चैत्यगृहमां स्थापीने तेनी त्रिकाल पूजा करवा लागी.

एक वखते द्रव्यपूजा कर्या पछी राणी प्रसन्नचित्ते भगवंतनी आगळ नृत्य करती हती, अने राजा वीणा वगाडतो हतो. ते वखते राजाए मस्तक वगरनुं राणीनुं धड नाचतुं जोयुं. ते अनिष्ट जोई राजा क्षोभ पामतां तेना हाथमांथी वीणा पडी गई. ते समये राणी क्रोध करीने बोली-'प्राणेश! आ शुं थयुं?' राजाए तेना आग्रहथी यथार्थ वात कही बतावी, एटले ते बोली के 'आ अनिष्ट दर्शनथी मारुं आयुष्य अल्प जणाय छे.' वळी एक वखते राणीए देवपूजाने योग्य श्वेत वस्त्र दासी पासे मंगाव्यां. भावी विघ्नने लीधे राणीए ते वस्त्र रातां दीठां. ते पूजाने अयोग्य जाणी क्रोधथी राणीए दर्पण वडे दासी उपर प्रहार कर्यो. दासी मरण पामी. पछी तेज वस्त्रने श्वेत जोई राणीए चिंतव्युं के 'मने धिक्कार छे, मारुं प्रथम व्रत खंडित थयुं. आ पापनो क्षय करवा माटे हुं दीक्षा लउं. पूजानां वस्त्रनो वर्ण विपर्यय जोवाथी जरूर हवे मारुं आयुष्य अल्पज छे.' पछी स्वामीनी आज्ञाथी ते व्रत लेवामां उत्सुक थई. ते समये राजाए कह्युं-'देवी तमे देवपणुं पामो तो मने आवीने बोध करजो.' प्रभावती राणी चारित्र लई सारीरीते पाळी छेवटे अनशन करीने सौधर्म देवलोके देवता थई. अहीं राणीए दीक्षा लीधा पछी देवदत्ता नामे कुब्जादासी पेली मूर्तिनी पूजा दररोज करवा लागी.

हवे पेलो देवता तापसनुं रुप धारण करी राजानी सभामां आवी दररोज एक दिव्य अमृतफळनी राजाने भेट धरवा लाग्यो. राजा ते फळना स्वादथी मोह पामी गयो, तेथी एक दिवस तेणे तापसने कह्युं के 'हे मुनि! आवां फळ कया स्थानमां उत्पन्न थाय छे? ते स्थान मने बतावो.' तापसे कह्युं के 'मारे आश्रमे आवो तो बतावुं.' राजा वेगथी ते तापसनी साथे चाल्यो. देवताए आगळ जई तेवां दिव्य फळथी भरपूर एक आराम विकुर्व्यो. राजाए ते जोईने विचार्युं के 'हुं आ तापसनो भक्त छुं. तेथी तेओ मारी फळ खावानी इच्छा पूरी थवा देशे मने रोकशे नही.' आवुं विचारी राजा वानरनी जेम फळो लेवा दोडयो, एटले अनेक तापसो दोडी आवी क्रोधथी

लाकडीओ वडे तेने मारवा लाग्या. तेथी राजा तस्करनी जेम त्यांथी भाग्यो. नासतां नासतां मार्गमां साधुओने जोया; एटले राजाए तेमनुं शरण लीधुं. साधुओए तेने आश्वासन आप्युं, अेटले राजा विचार करवा लाग्यो के अहो! क्रूर तापसोए मने छेतर्यो. तेवामां तेने बोध करवा माटे आवेला प्रभावती देवे प्रत्यक्ष थई पोते विकुर्वेलुं स्वरूप कही बताव्युं, अने स्वस्थाने गयो. राजा जैनधर्ममां एक चित्तवाळो थई पोताना नगर तरफ जवा चाल्यो, त्यां तो तेणे पोताने राजसभामां बेठेलो जोयो.

हवे ते अरसामां **गांधार** नामे एक श्रावक शाश्वत प्रतिमाने वांदवानी इच्छाए वैताढ्य गिरिना मूळमां जई तप करतो हतो. तेनी उपर शासन देवी संतुष्ट थई, एटले तेनुं वांछित तेणे पूर्ण कर्युं. उपरांत तेणे प्रसन्न थईने एकसो आठ वांछित दायक गुटिका तेने आपी. तेमांथी एक गुटिका मुखमां नांखी तेणे चिंतव्युंके 'हुं वीतभय नगरमां देवाधिदेवनी मूर्तिने वांदवा जाऊं.' एम चिंतवतांज ते मूर्तिनी नजीक देवताए तेने पहोंचाड्यो. तेनी पूजा करीने ते त्यां सुखे रह्यो.

अन्यदा ते बुद्धिमान् गांधार श्रावके पोतानुं मृत्यु नजीक जाणी पोतानी साधर्मी देवदत्ता नामनी कुब्जा दासीने ते गुटिकाओ आपी, अने पोते दीक्षा लीधी. देवदत्ता सुंदर रूपनी इच्छा राखती हती, तेथी तेणीए एक गुटिका मुखमां राखीने दीव्य रूपनुं चिंतवन कर्युं; एटले ते तत्काळ दीव्य आकृतिवाळी थई गई, तेथी राजाए तेनुं नाम **सुवर्णांगुलि** एवुं पाड्युं. पुनः तेणीए एक गुटिका मुखमां राखीने चिंतव्युं के 'योग्य वर मळ्या शिवाय आ रूप वृथा छे, अने आ राजा तो मारा पिता तुल्य छे, तेथी चंडप्रद्योत राजा मारा पति थाओ.' आवुं चिंतवतांज पेली देवीए चंडप्रद्योत राजा पासे जईने तेनी आगळ देवदत्ताना रूपनुं वर्णन कर्युं; एटले तेणे तेनी मागणी करवा माटे पोताना दूतने तेनी पासे मोकल्यो. दूते त्यां जईने देवदत्तानी प्रार्थना करी, एटले देवदत्ताए कह्युं के 'राजा अहीं आवशे त्यारे अमारा बंनेनुं वांछित पूर्ण थशे.' दूते ते वात चंडप्रद्योत राजाने जणावी, एटले चंडप्रद्योत राजा अनिल वेग नामना हाथी उपर बेसी तेज रात्रे त्यां आव्यो. उद्यानमां तेओ बंने एकठा थया. राजा बोल्यो के 'हे प्रिया! तमे अवंतीनगरीमां चालो.' कुब्जा बोली के 'आ जिन प्रतिमा विना हुं जीवी शकुं नहि; तेथी आ प्रतिमा जेवीज बीजी प्रतिमा करावीने तमे अहीं लावो, एटले ते प्रतिमा अहीं राखीने आ प्रतिमा आपणे साथे लई जईशुं.' अवंतीपतिए ते वात कबुल करी, अने पोताना नगरमां जई जातिवंत चंदन काष्ठनी श्री वीरप्रभुनी तेवीज मूर्ति करावी; तेमज पांचसो मुनिओना परिवारवाळा कपिल मुनिनी प्रार्थना करीने ते मूर्तिनी वासक्षेप पूर्वक प्रतिष्ठा करावी. पछी विधि पूर्वक ते

मूर्ति साथे लई हाथी उपर चडीने चंडप्रद्योत वितभय पुरे गयो, अने ते सुंदर मूर्ति देवदत्ता दासीने आपी. तेणी चैत्यगृहमां ते नवीन मूर्ति स्थापी मूलमूर्ति त्यांथी लईने चंडप्रद्योतनी साथे अवंतीए आनंदथी आवी.

अहीं उदायी राजा प्रातःकाले देवालयमां दर्शन करवा गयो. जिनेश्वरने नमीने सन्मुख जोयुं तो तेमना पर चडावेली पुष्पमाळा म्लान थयेली जोई. ते जोतांज राजा चिंतववा लाग्यो के आ प्रतिमा जरूर बीजी लागे छे;जो असल मूर्ति होय तो तेनी माळा म्लानी पामे नहीं. वळी स्थंभ उपर रहेली देवतानी पुतळी जेवी दासी पण अहीं जोवामां आवती नथी. वळी ग्रीष्म ऋतुमां दुर्लभ एवो मरु देशना जळनी जेवो हाथीनो मद आ स्थाने पडेलो जोवामां आवे छे; तेथी जरूर अहीं चंडप्रद्योत राजा अनिलवेग हाथी उपर चडी आव्यो हशे एम जणाय छे, अने प्रतिमा अने दासीने लई गयो संभवे छे. आम चिंतवतां उदायी राजाने घणो कोप चडयो. तेथी तत्काळ दश मुगटबंध राजाओने साथे लई मोटा सैन्य साथे तेणे अवंती उपर चडाई करी. बंनेनी वच्चे परस्पर मोटो संग्राम थयो. छेवटे उदायने बाणोवडे चंडप्रद्योत राजाने हाथी उपरथी नीचे पाडी दई हाथ वडे पकडीने बांधी लीधो, अने तेना ललाट उपर तपावेला लोढानी शलाकाथी 'आ मारी दासीनो पति छे,' एवा अक्षरो लख्या. पछी तेने बंदीखाने नखावीने उदायन राजा प्रद्योतना दरबारमां ज्यां जिनालय हतुं त्यां गयो. त्यां मूळ प्रतिमाजीने जोई नमी स्तुति करीने त्यांथी उपाडवा उपक्रम कर्यो, पण प्रतिमा ते स्थानथी चलित थइ नहि. त्यारे राजाए कह्युं के "हे नाथ! में शो अपराध कर्यो छे के जेथी तमे मारी साथे आवता नथी?" ते समये तेनो अधिष्ठायक देव बोल्यो–"हे राजा! तारुं नगर रजनी वृष्टिथी स्थल रुप थइ जवानुं छे, तेथी हुं त्यां आवीश नहि, माटे तुं शोक न करीश." ते सांभळी उदायन राजा अवंतीथी पाछो फर्यो. मार्गे चालतां अंतराले चातुर्मास आव्यो, एटले राजाए ते स्थाने छावणी नाखी. दश राजाओना जुदा जुदा पडाव होवाथी ते स्थाने दशपुर नगर वस्युं.

अन्यदा पर्युषण पर्व आवतां उदायन राजाए पोसह लीधो हतो. तेथी ते दिवसे रसोये चंडप्रद्योतने पूछयुं के 'आजे तमे शुं जमशो?' ते सांभळी अवंतीपति क्षोभ पामी विचारमां पडयो के कोई दिवस नहि ने आजे रसोयो जमवानुं पूछे छे तेथी तेनुं कांइक कारण हशे! आवुं विचारी तेणे कह्युं–'हे पाचक! आजे पूछवानो शो हेतु छे?' पाचक बोल्यो–'स्वामी! आजे पर्युषण पर्व छे, तेथी मारा स्वामी उदायन राजाए उपवास कर्यो छे, एटले तमारे माटेज आजे रसोइ करवानी छे.' चंडप्रद्योत बोल्यो–'हे पाचक! तें पर्व दिवसनी वात याद आपी ते सारुं कर्युं, मारे पण आजे

उपवास छे.' रसोये ते वात उदायन राजाने करी; एटले राजाए विचार्युं के 'चंडप्रद्योत उपवासी होवाथी मारो साधर्मी थयो, तेथी ते जो बंदीखाने होय तो मारुं पर्युषणपर्व शुद्ध न गणाय.' आवुं विचारी तेणे चंडप्रद्योतने बंदीखानामांथी बहार कढावी खमाव्यो; अने तेना ललाटमां करेला अक्षरोने ढांकवा माटे सुवर्ण रत्नमय पट्ट बंधावी तेने अवंतीदेश पाछो आप्यो. ते पोताने स्थाने गयो.

वर्षाकाळ वीत्या पछी उदायन राजा पोतानी नगरीमां आव्यो. तेणे मूळप्रतिमानी पूजाना निर्वाह माटे बार हजार गाम आप्यां; अने प्रभावती देवनी आज्ञाथी ते नवी मूर्तिनी पूजा करवा लाग्यो.

एक वखते राजा पोताना पौषधागारमां पोसह लइने रह्यो. मध्य रात्रे शुभ ध्यान ध्यातां तेना मनमां आवो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के "जे राजा विगेरेए श्री वीर प्रभुनी पासे दीक्षा अने बीजा व्रत सम्यक्त्वादि लीधेलां छे तेओने धन्य छे, तेओ वंदन करवा योग्य छे. जो प्रभु अहीं पधारीने मने पवित्र करे तो हुं पण तेमना चरणमूळमां दीक्षा लइने कृतार्थ थाउं." भगवंत तेना आवा अध्यवसाय जाणीने त्यां पधार्या. उदायन राजा कोणिक राजानी जेम मोटा उत्सव साथे तेमने वंदना करवा नीकळ्यो. विधिपूर्वक प्रभुनी देशना सांभळी घेर आव्यो. घेर आवीने विचार्युं के 'अहो! आ राज्य अंते नरक आपनारुं छे, तेथी ते मारा पुत्र अभिचिने तो न आपवुं.' आवुं विचारी पोताना भाणेज केशीने राज्य आप्युं. पछी केशी राजाए जेनो निष्क्रमण महोत्सव करेलो छे एवा उदायन राजाए भगवंत पासे दीक्षा लीधी. व्रत लेवाना दिवसथीज तीव्र तपस्या करीने उदायन राजर्षिए पोताना देहने शोषवी नाख्यो.

निरंतर नीरस आहार करवाथी अन्यदा ते राजर्षिने व्याधि उत्पन्न थयो. ते कोई वैद्यना जोवामां आवतां वैद्ये कह्युं के 'तमे दधिनुं भक्षण करी तमारा देहनी रक्षा करो.' मुनि स्वदेहमां निस्पृह छे, ते छतां दधि लेवा माटे गवेषणा करवा लाग्या. अन्यदा वीहार करतां करतां वीतभय नगरे आवी चड्या. त्यां मंत्रीए मुनिपरना द्वेषथी केशी राजाने जणाव्युं के 'हे राजन्! आ तमारा मामा तपस्याथी कंटाळी तमारुं राज्य लेवाने आव्या छे, माटे तेमनो विश्वास करशो नहि.' केशीए कह्युं के 'आ राज्य तेमनुंज छे, भले सुखेथी ले.' मंत्री बोल्यो–'राज्य कोइनुं आप्युं मळतुं नथी, पुण्यथी मळे छे, तो मळेलुं राज्य शा माटे पाछुं आपवुं! तेथी हे राजा! ए मुनिने कोई प्रकारे विष आपो.' मंत्रीनी प्रेरणाथी केशीए पोताना उपकारी मामाने कोई पशुपालिका पासे विषसंयुक्त दधि अपाव्युं. ते विष संहरी लई कोई देवताए मुनिने जणाव्युं के 'तमने दधि विषसंयुक्त मळशे, माटे तमे दधि खाशो नहि; अने

दधिनी स्पृहा पण करशो नहि.' मुनिए ते दिवसथी दधि खावुं छोडी दीधुं, एटले रोग वधवा लाग्यो; तेथी पुनः रोग दूर करवा दधि लीधुं, पेला देवताए पाछुं विष हरी लीधुं. एम त्रण वखत देवताए विष हरण कर्युं. एक वखते देवता प्रमादथी विष हरी शक्यो नहि, एटले मुनिए विष सहित दधिनुं भोजन कर्युं; तेथी विषनी लहरीओथी शरीर व्यापी गयुं. ते जाणी मुनिए अनशन अंगीकार कर्युं. त्रीश दिवस अनशन पाळी केवलज्ञान उत्पन्न करी मृत्यु पामीने उदायन राजर्षि मोक्षे गया. ते पछी पेला देवताए क्रोध करीने केशी राजाना वीतभय नगरने रजनी वृष्टि वडे पूरी दीधुं.

अहीं पिताए व्रत लीधा पछी तेना पुत्र अभिचिए चिंतव्युं के 'अहो! मारा पिताए मने छोडी पोताना भाणेजने राज्य आप्युं, तेथी पिताना एवा विवेकने धिक्कार छे!' आम विचारी केशीनी सेवा करवी तजी दइने पिताए करेला अपमानथी कंटाळी अभिचि कोणिक राजा पासे आव्यो. त्यां श्री वीर भगवंतनी वाणीथी प्रतिबोध पामी श्रावकधर्म पाळवा लाग्यो; परंतु पोताना पिता उदायन साथेनुं वैर तजी दीधुं नहि. अंतकाले पाक्षिक अनशन लइ पूर्वोक्त पाप आलोव्या वगर मृत्यु पामीने भुवनपति देवता थयो. त्यां एक पल्योपमनुं आयुष्य भोगवी त्यांथी चवीने अभिचिनो जीव महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ मोक्षे जशे.

श्री वीर प्रभुना निर्वाणथी सोळसो ने ओगणोतेर वर्षे ज्यारे जशे त्यारे कुमारपाळ राजा ते प्रतिमाने धूळना दट्टणमांथी बहार काढशे, अने पूर्वेनी जेम तेनी पूजा करशे. " जेम उदायन राजाए पर्वना दिवसोए सर्व सावद्य कर्म छोडी निष्काम भक्ति वडे शुभ योग संयुक्त धर्म ग्रहण कर्यो हतो, तेवी रीते व्रतधारी गृहस्थोए पण निरिच्छ धर्म ग्रहण करवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकोनपंचाशदधिकशततमः प्रबंधः

व्याख्यान १५० मुं.

त्रीजा शिक्षाव्रतनुं स्वरूप.

पोषं धर्मस्य धत्ते यत्तद्भवेत्पौषधव्रतम् ।
तच्चतुर्धा समाख्यातं, आहारपौषधादिकम् ॥ १ ॥

भावार्थ.

जेथी धर्मनी पुष्टि थाय ते पौषधव्रत कहेवाय छे. ते आहारपौषध विगेरे चार भेदवाळुं छे.

" पुष् पुष्टौ " पुष् धातुनो पुष्टि अर्थ थाय छे. " धर्मस्य पोषं पुष्टिं धारयतीति पोषधम् " धर्मनी पुष्टिने धारण करे ते पौषध कहेवाय छे. ते अष्टमी विगेरे पर्व दिवसोनुं नियमित अनुष्ठान छे. तेना चार प्रकार कहेला छे. ते प्रत्येकना पण बे बे प्रकार छे. ते विषे श्री आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमां तथा तेनी चूर्णिकामां पण आ प्रमाणे पाठ छेः–" आहारपोसह बे प्रकारे छे, देशथी अने सर्वथी. अमुक विगइनो त्याग करवो अथवा आंबेल के एकासणुं करवुं ते देशथी आहारपोसह कहेवाय छे; अने रात्रिदिवसना मळीने आठे पहोर चारे प्रकारना आहारनो त्याग करवो ते सर्वथी आहारपोसह कहेवाय छे. शरीरसत्कार पोसह पण देशथी अने सर्वथी एम बे प्रकारे छे. अमुक स्नानविलेपन न करवुं ते देशथी अने स्नान मर्दन विलेपन तथा पुष्पादिकनो तद्दन त्याग करवो ते सर्वथी शरीरसत्कार पोसह जाणवो. ब्रह्मचर्य पोसह पण देशथी अने सर्वथी एम बे प्रकारे छे. दिवसनो अथवा रात्रिनो त्याग करवो, अथवा एकवार बेवार विगेरे परिमाण बांधवुं ते देशथी, अने दिवसे अने रात्रिए आठे पहोर ब्रह्मचर्य पाळवुं ते सर्वथी ब्रह्मचर्य पोसह जाणवो. अव्यापार पोसह पण देशथी अने सर्वथी एम बे प्रकारे छे. ' अमुक व्यापार हुं नहिं करुं ' एम धारवुं ते देशथी, अने हळ, गाडां, घर विगेरे सर्व प्रकारनो व्यापार छोडी देवो ते सर्वथी अव्यापार पोसह जाणवो.

अहीं जो देशथी पोषध करे तो सामायिक करे वा न करे, पण जो सर्वथी पोसह करे तो सामायिक अवश्य करे; जो न करे तो तेनुं फळ न मळे. सर्वथी पोसह चैत्यगृहमां, साधुनी समीपे, वा घरे के पौषधशाळामां जईने करवो. त्यां जई आभूषणादि दूर करी पोसह अंगीकार करीने पुस्तक वांचवा अथवा शुभ ध्यान ध्यावुं. श्रावक प्रज्ञप्तिनी वृत्तिमां पण ए सर्व कहेलुं छे. तेमज पौषधसूत्रमां पण—

" करेमि भंते पोसहं आहार पोसहं देसओ सव्वओ "

इत्यादि चारे भेदथी पोसह कहेल छे. अहीं पौषध शब्दनो अर्थ नियम करीए तोज तेनो अर्थ बराबर बंदबेस्तो थाय छे. ते आहार विगेरे चारे प्रकारना पोसहना देशथी तथा सर्वथी मळी आठ भांगाना एक बे विगेरे संयोगी भांगा गणतां एंशी भांगा थाय छे. तेमां हाल आहार पोसहज बे प्रकारे करवामां आवे छे. कारण के निर्दोष आहार लेवामां सामायिकनी साथे विरोध जोवामां आवतो नथी; तेमज साधु अने उपधान वहन करनार श्रावको पण आहार ग्रहण करे छे. बाकीना त्रण पोसह तो सर्वथीज ग्रहण करवा; केम के जो सर्वथी न ले तो " सावज्जजोगं पच्चक्खामि " एवो पाठ संभवे नहि.

अहीं कोई शंका करे के निर्दोष देहसत्कार अने निर्दोष व्यापार करवामां शो दोष छे? तेना उत्तरमां कहेवानुं के ते बंने क्रिया देहनी शोभाना तथा लोभादिकना हेतु-भूत छे, अने सामायिकमां ते बंने (देहविभूषा अने लोभ)नो निषेध करेलो छे; अने समर्थपणाने अभावे धर्मक्रियानो निर्वाह करवाने माटे साधुनी जेम आहार तो स्वीकारवा योग्य छे. ते विषे श्री महानिशीथ सूत्रमां कहेलुं छे के " जो देशथी आहार पोसह कर्यो होय तो गुरुनी समक्ष पच्चक्खाण पारी आवस्सही कहीने उपाश्रय-मांथी नीकळे, अने ईर्यासमिति वडे घरे जई ईरियावही पडीकमी, गमणागमणे आलोवी, चैत्यवंदन करे. पछी सडासा प्रमार्जी कटासणा उपर बेसे. पात्रने प्रमार्जी योग्य भोजन पीरसावे; पीरस्या पछी नवकार भणी, पच्चक्खाण संभारी वदन प्रमार्जी, सबडका के बचरका बोलाव्या शिवाय, विलंब कर्या वगर, छांड्या शिवाय, मन वचन अने काय गुप्तिए युक्त थई साधुनी पेठे भोजन करे. भोजन कर्या पछी प्रासुक जळ वडे मुखशुद्धि करी नवकार संभारीने उठे. पछी चैत्यवंदन करी पच्चक्खाण धारी पुनः पोषधशाळामां आवे, अने स्वाध्याय ध्यान करे. "

श्राद्धप्रतिक्रमणनी चूर्णीमां पण आ प्रमाणे कह्युं छे; पण आ सामायिक अने पौषधनी एकत्रतानी अपेक्षाए छे. कारण के मुहूर्त मात्रना सामायिकमां तो अशन करवुं सर्वथा निषिद्ध छे. पौषधने आश्रीने श्री निशीथ भाष्यमां एम पण कहेलुं छे के " उद्दिट्ठकडंपि सो भुंजे " " तेने उद्देशीने कर्युं होय तोपण पौषधवाळो श्रावक खाय. " निशीथ चूर्णीमां पण कह्युं छे के " जेने उद्देशीने करेलुं होय ते सामायिक कर्या छतां पण खाय " निर्विवाद वृत्तिए तो सर्व आहार विगेरेनो त्याग करवो एज सर्वोत्कृष्ट पोषध छे. ते शंख श्रावकनी जेम करवो.

शंख श्रावकनी कथा.

श्रावस्ती नगरीमां शंख अने पुखलि नामे बे श्रावक रहेता हता. तेओ श्री वीर भगवंतने नमी पाछा वळ्या, त्यारे शंखे पुखलिने कह्युं के 'तमे सारुं भोजन विगेरे तैयार करावो, ते जमीने पछी आपणे पाक्षिक पोसह लइने रहेशुं. पुखलिने आम कह्या पछी शंखे घेर आवीने विचार्युं के आजे तो जम्या वगरज पौषधव्रत करवुं ठीक छे, कारणके तेनुं फळ मोटुं छे. आम विचारी पोतानी भार्याने कही पौषधशाळामां जईने एकाकीपणे शरीर उपरथी अलंकारादि उतारी शरीरसत्कारनो त्याग करी पौषध लइ दर्भना संस्थारा उपर बेसी शुभ ध्यान ध्यावा लाग्यो. अहीं पुखलि श्रावके भोजनादि सर्व तैयार कराव्युं. भोजन तैयार थयुं एटले ते शंखने आमंत्रण करवा गयो. शंखनी स्त्री उत्पला पुखलि श्रावकने आवतां जोई उभी थई अने तेनुं सन्मान कर्युं. पछी ते स्त्रीना कहेवा प्रमाणे शंख श्रावक पौषधशाळामां छे एम जाणी पुखलि त्यां आव्यो; अने इर्यापथिकी पडीकमीने भोजन माटे शंखने निमंत्रण कर्युं. शंखे कह्युं-' मारे तेमांथी कांई कल्पतुं नथी, तमे तमारी इच्छाथी जेम गमे तेम करो. ते भोजनादि क्रिया मारी आज्ञाथी कांई करवानी नथी. ' ते सांभळी पुखलि श्रावक पाछो फर्यो, अने ते वृत्तांत बीजाओने जणाव्युं.

अहीं शंख श्रावक रात्रे धर्मजागरणामां चिंतववा लाग्यो के 'हुं प्रभाते श्री वीरप्रभुने नमीने पछी पौषध पूर्ण करीश अर्थात् पछी पारीश.' प्रभात थतां ते श्री वीरप्रभु पासे जई नमीने बेठो, एटलामां त्यां पुखलि श्रावक पण आव्यो. ते प्रभुने नमीने शंखने ठपको आपवा लाग्यो के ' हे शंख ! तमे गई काले सारुं काम कर्युं नहि. ' ते समये भगवंते कह्युं-' हे पुखलि ! तमे शंखनी निंदा करो नहि. ए गई रात्रे सुदक्ष जागरिकाथी जागेलो छे'. ' ते अवसरे श्री गौतम स्वामीए प्रश्न कर्यो के ' स्वामी ! जागरिका केटला प्रकारनी छे ? ' प्रभु बोल्या-" गौतम ! जागरिका त्रण प्रकारनी छे. पहेली बुद्ध जागरिका; ते केवळि भगवंतने होय छे. बीजी अबुद्ध जागरिका; ते छद्मस्थ अनगारी (मुनि)ने होय छे, अने त्रीजी सुदक्ष जागरिका; ते श्रमणोपासक (श्रावको)ने होय छे. " पछी शंखे क्रोधादिकनुं फळ पूछ्युं, एटले प्रभु बोल्या- " हे शंख ! क्रोध मान विगेरे कषायो आयुष्य कर्म शिवायना सात कर्मनी शिथिल बंधनवाळी प्रकृतिओने दृढ बंधनवाळी करे छे. " ते सांभळी पुखलि विगेरे श्रावको शंखने वारंवार खमाववा लाग्या. शंख श्रावक पौषध विगेरे व्रतो पाळी सौधर्म देवलोके

१ भले प्रकारे धर्मध्यानमा प्रवर्तेलो छे.

अरुणाभ विमानमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां चार पल्योपमनुं आयुष्य भोगवी महाविदेह क्षेत्रने विषे मोक्षे जशे. आ सर्व कथा श्री विवाह प्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्रना बारमा शतकमांथी लखेल छे.

" पांचमा अंगमां श्री जिनेश्वर भगवंते पण शंख श्रावकनुं चार प्रकारवाळुं उत्कृष्ट पौषध व्रत वखाणेलुं छे; तेथी ते व्रत पर्वना दिवसोए हर्षपूर्वक विशेषे धारण करवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पंचाशदुत्तरशततमः प्रबंधः

इत्युपदेशप्रासादवृत्तौ व्याख्यान हेतवे ।
पंचदशभिरस्त्राभिः स्थंभोऽयं दशमो मतः ॥ १ ॥

दशमस्तंभः समाप्तः



॥ श्री उपदेशप्रासाद ग्रंथे ॥

स्थंभ ११ मो.

पर्वाराधननो विधि.

व्याख्यान १५१ मुं.

चतुर्दश्यष्टमी राकोदिष्टा पर्वसु पौषधः ।
विधेयः सौधस्थेनेत्थं पर्वाण्याराधयेद्गृही ॥ १ ॥

भावार्थः

चौदश, आठम, पूर्णिमा अने अमावास्यादि पर्वमां गृहस्थे पौषधव्रत करवुं अने तेम करीने पर्वनुं आराधन करवुं. १

विशेषार्थ.

चौदश, आठम, पूर्णिमा अने अमावास्या ए पर्व कहेवाय छे, तेओमां गृहस्थे पोसह करवो. ते विषे कह्युं छे के, "जो सर्व दिवसोमां धर्मक्रिया करी शकाय तो तेथी विशेष लाभ थाय छे; पण कदि जो सर्व दिवसोमां क्रिया करी न शकाय तो पर्वने दिवसे तो अवश्य धर्मक्रिया करवी." वळी कह्युं छे के, "आठम, चौदश विगेरे पर्व तिथिओए तो सर्व चैत्य तथा साधुओने अवश्य वांदवा. बीजी तिथिओए यथाशक्ति वांदवा." वादिवैताल श्री शांतिसूरिए रचेली श्री उत्तराध्ययन सूत्रनी वृत्तिमां कह्युं छे के:—

सर्वेष्वपि तपो योगः, प्रशस्तः कालपर्वसु ।
अष्टम्यां पंचदश्यां च, नियतः पौषधं वसेत् ॥ १ ॥

" सर्व काळपर्वमां तपनो योग श्रेष्ठ छे, पण आठम अने पुनमे तो अवश्य करीने पोसह ग्रहण करवो."

जेम विजयादशमी (दशेरा) दीपोत्सवी (दिवाळी) विगेरे लौकिक पर्वमां माणसो पोशाक तथा खानपान विशेष रीते करेछे तेवीरीते श्रावके धर्मना (पर्वना) दिवसो जरूर पाळवा. एक मासमां आठम, चौदश विगेरे पर्वना दिवस छ आवे छे, अने एक पखवाडीआमां त्रण आवे छे, ते अवश्य करीने पाळवा. पर्वणीना संबंधमां कह्युं छे के " बीज पाळवाथी अणुव्रत अने महाव्रत रूप बे प्रकारनो धर्म आराधाय छे, पांचम

पाळवाथी पांच ज्ञान प्रमाय छे, आठमथी आठ कर्म खपे छे, एकादशीथी एकादश अंग प्राप्त थाय छे, अने चौदश आराध्ये चौद पूर्वनो लाभ थाय छे." ए पांच पर्व छे तेमां पूर्णिमा तथा अमावास्या मेळववाथी ७ पर्व थाय छे.

श्री गौतम स्वामीए प्रभुने पुछयुं हतुं के, भगवंत! बीज विगेरे पांच पर्वणीए करेल धर्मानुष्ठाननुं शुं फल थाय? प्रभुए कह्युं, हे गौतम! प्राये आजीव पर्वणीओने दिवसे परभवनुं आयुःकर्म उपार्जे छे. एटले एक भवमां आयुष्य बांधवानो काळ एकज होय छे. दरेक जीव पोतपोताना आयुष्यने त्रीजे भागे आगामी भवनुं आयुष्य बांधे छे अने ते कदि पण चलायमान थतुं नथी. जेम श्रेणिक राजाए पूर्वे गर्भिणी मृगलीने मारतां गर्भ जुदो पड्यो एथी पोताना बळनुं वर्णन करतां नारकीनुं आयुष्य बांध्युं हतुं, ते कोइपण रीते छुटी शक्युं नहीं; ए प्रमाणे समजवुं.

अन्यमतिना शास्त्रमां पण पर्वना दिवसोमां स्नान मैथुनादिनो निषेध करेलो छे. विष्णुपुराणमां कह्युं छे के.

चतुर्दश्यष्टमीचैव, अमावास्या च पूर्णिमा ।
पर्वाण्येतानि राजेंद्र, रविसंक्रांति पर्व च ॥ १॥
तैलस्त्रीमांससंभोगी, पर्वस्वेतेषु वै पुमान् ।
विण्मूत्र भोजनं नाम, प्रयाति नरकं मृतः ॥ २ ॥

हे राजेंद्र! चौदश, आठम, अमावास्या, पूर्णिमा अने सूर्यनी संक्रांतिना दिवसो ए पर्वणीओ छे ते दिवसे तैल चोळीने स्नान, स्त्रीसेवा अने मांसनो भोग करे तो ते पुरुष मृत्यु पाम्या पछी विण्मुत्र भोजनं[1] नामना नरकमां जाय छे."

अवसरे करेलुं धर्मकार्य मोटा फळने आपे छे; तेथी मुख्यरीते पर्वना दिवसोमां अहोरात्रनो पोसह करवो. जो ते करवा अशक्त होय तो रात्रीपोषध करवो.

आप्रमाणे पर्वनी आराधना श्रावके करवी जोइए. ते उपर पृथ्वीपाल राजानुं दृष्टांत छे, ते आ प्रमाणे—

पृथ्वीपाल राजानी कथा.

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां अनुपम रुपवालो पृथ्वीपाल राजा हतो. ते एक वखते वनमां मृगया रमवाने गयो. त्यां कोइ एक वृक्ष उपर मयूर पक्षीने जोइ धनुष्य उपर बाण चढाव्युं. अने तेना प्राण लेवा माटे बाण छोड्युं. बाण लागवाथी मयूर पक्षी

१ जे नरकमा विष्ठाने मुत्रनुज भोजन करवुं पडेछे.

तत्काळ पृथ्वी उपर पड्यो. तेने पृथ्वी पर तरफडतो अने आक्रंद करतो जोइ राजाने विचार आव्यो के "अरे आ जीवने में तेना क्रीडारसमांथी अकस्मात् विरस कर्यो. तेनी जेम माराथी अधिक बळवाळो कोइ नर के व्याघ्र आवी मने घणा प्रहार करीने वेदना उपजावे तो ते वखते तेने कोण निवारे? माटे मारा जेवा पापीने धिक्कार छे."

आम विचारी पृथ्वीपर तरफडता मयूर पक्षी तरफ जोइने वारंवार नमवा लाग्यो. वेदनामां पण राजाए नम्र वचन कह्यां, तेथी कांइक शुभध्यानमां तत्पर थयेलो ते मयूर क्षणवारमां मृत्यु पाम्यो, अने विशालपुर नगरमां मनुष्यपणे अवतर्यो.

पृथ्वीपाल राजाए त्यांथी आगळ चालतां मार्गमां द्रव्यथी एक शिलापट्ट उपर बेठेला अने भावथी अध्यात्मरूप शिलापट्ट उपर बेठेला कोइ मुनिराजने दीठा, एटले ते तेमनी पासे मुगटसहित जइने बेठो. ते समये मुनि बोल्या—

धर्मस्य जननी जीवदया मान्या सुरैरपि ।
तस्मात्तद्वैरिणीं हिंसां नाद्रियते सुधीर्नरः ॥ १ ॥

"धर्मनी माता जीव दया छे जे देवताने पण मानवा योग्य छे, तेथी उत्तम बुद्धिमान् पुरुषो जीव दयानी वैरिणी हिंसानो आदर करता नथी." आ श्लोक सांभळी राजाए विचार्युं के, 'में जे दुष्कृत्य कर्युं छे ते आ मुनिए दीठुं नथी तो पण तेणे कही दीधुं. वळी एमणे कहेलो धर्म पण श्रेष्ठ छे.' आवी बुद्धि राजाने उत्पन्न थई. तेथी मुनिराजे विशेष धर्मदेशना आपी, तेथी ते पूज्यपाद मुनिनी पासे श्रावक व्रत अंगीकार करीने ते पोताना नगरमां आव्यो अने पोताना घरमां रहेला मच्छजाल विगेरे हिंसाना तमाम अधिकरणो बाळी नखाव्यां. वळी पर्वने दिवसे तेली(घांची)तेल पीले नहीं अने धोबी वस्त्र धोवे नहीं, तेवी सर्वत्र प्रवृत्ति करावी. ए प्रकारे पर्वनो महिमा करवाथी अनेक जीवो धर्मने प्राप्त थया. घणा काळपर्यंत ए प्रमाणे धर्म आचरी पृथ्वीपाळ राजा मृत्यु पामीने विशाळपुर नगरमां शालिभद्र शेठनी जेवो सुनंद नामे व्यापारी थयो. ते जन्ममां पण पूर्वना अभ्यासथी नानी वयमांज ते जैनधर्म पाम्यो अने सर्व पर्वदिवसोमां पोषधव्रत करवा लाग्यो.

पेलो मयूरनो जीव जे विशालनगरमां उत्पन्न थयो छे, ते त्यांना राजानो सेवक थयो हतो. एकदा आ सुनंद व्यापारी तेना जोवामां आव्यो. तेने जोतांज तेना अंतःकरणमां कोप उत्पन्न थयो, तेथी ते तेने मारी नाखवानी इच्छा करवा लाग्यो. एक समये राजानी राणीना वक्षस्थलनो अमूल्य हार छानीरीते चोरी लई पर्वदिवसे पोसह करीने एकला बेठेला सुनंद श्रावकनुं छळ पामीने तेना

कंठमां तेणे पेरावी दीधो अने पछी ते राजानी पासे आवीने बेठो. अहीं राणी पोतानो हार गुम थयेलो जाणी शोक करवा लागी अने खानपानादि पण तजी दीधां. राजाए पोताना हजारो सेवकोने पुरमां लोकोना घरमां शोध करवा मोकल्या. ए वखते पेलो मयूरनो जीव राजाना बीजा सेवकोने साथे लई पोषधशाळामां गयो अने त्यां पोसह लईने बेठेला सुनंदना कंठमां ते हार बताव्यो. राजसेवको सुनंदने पकडी राजानी पासे लाव्या. राजाए तेने पुछ्युं; पण तेणे सावद्य उत्तर आप्यो नहीं. राजाए तेने मारी नाखवा माटे वधस्थाने मोकल्यो. राजानी आज्ञा लईने पेलो मयूरनो जीव हाथमां खड्ग लई तेने मारवा आव्यो. परंतु तेना शरीर ऊपर विकराळ खड्गनो घा करतां तेना हजारो कटका थई गया. सुनंदे पूर्वभवे हिंसाना अधिकरणो भांगी नाख्या हता अने बाळी नाख्या हता, ते पुण्यथी आ भवमां ते खड्गना सहस्र कटका स्वयमेव थई गया. बीजा सेवकोना शस्त्रो पण नष्ट थई गया. तेथी सर्व राजसेवको शस्त्र रहित थई मनमां भय पामता सता राजानी पासे आव्या, अने ए वृत्तांत राजाने जणाव्यो. राजा विस्मय पामी द्वेष रहित थई त्यां आव्यो. एटले पेला सेवके राजाने कह्युं के—स्वामी, आ धूर्त वणिके मंत्रना प्रयोगथी तमारा सेवकोने बहु दुःखी कर्या छे तेथी ते अवश्य वध करवाने लायक छे. ते सांभळी राजा बोल्यो—आवती काले ते सर्व करवामां आवशे. अत्यारे तो तेने छोडी द्यो अने तेने ठेकाणे मुकी आवो. बीजे दिवसे सुनंद पोषध पारी राजानी पासे गयो, अने कह्युं के 'हे स्वामी, अमे श्रावक छीए, तेथी चोरी करीए नहीं. बाकी धर्मना पसायथी आवा हार मारे घेर घणा छे. ते जोवाने आप पधारो.' राजा तरतज तेने घेर गयो. त्यां तेना घरनी संपत्ति जोई चकित थई गयो. पछी ते श्रावकने राजाए पुछ्युं के, 'त्यारे आ केम बन्युं?' श्रावक बोल्यो—'हुं श्रावक (जैन) छुं, तेथी बीजानी हिंसा करूं नहीं ने करावुं पण नहीं.' राजाए कह्युं के 'तमे काले केम कांई बोल्या नहीं?' सुनंदे कह्युं के—'आठम विगेरे पर्वना दिवसे पोसह लईने अमारे सावद्य बोलवुं कल्पे नहीं.' आ प्रमाणेनो तेनो नियम अने तेमां दृढता जाणी राजाए तेनी बहु प्रशंसा करी अने प्रसन्न थईने पोताना महेलमां आव्यो.

अन्यदा सुनंद श्रावके गृहनो भार पोताना पुत्र ऊपर नाखी दीक्षा लीधी; अने शुभ-ध्यान वडे केवल ज्ञान पामी तेज नगरमां आव्यो. राजा परिवारसहित तेने वांदवा गयो. वांदीने पासे बेठो. त्यां पेलो मयूरनो जीव राजसेवक तेनी उपर कोप करी दुष्ट ध्यान धरवा लाग्यो. ते समये ज्ञानी मुनि तेने उद्देशीने नीचेनो श्लोक बोल्या—

मयूरः प्राग्भवेऽभूस्त्वं मन्मुक्तबाणतो हतः ।
सांप्रतं मानुजं लब्ध्वा, मुंच दौष्ट्यं भवप्रदम् ॥ १ ॥

" तुं पूर्वभवे मयूर हतो अने मारा मुकेला बाणथी मरण पाम्यो हतो, हवे तुं मानुष्यजन्म पाम्यो छे तो संसारने आपनारी दुष्टता छोडी दे."

आ श्लोक सांभळी तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं तेथी प्रतिबोध पामीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी, अने पोते पूर्वे करेलो सर्व दंभ जणावी दीधो.

विशालनगरनो राजा पण केवलज्ञानीना उपदेशथी पोषधव्रत वडे पर्वना दिवसोनी आराधना करवा लाग्यो. केवली भगवंते अन्यत्र विहार कर्यो; अनुक्रमे मोक्षने प्राप्त थया.

जे प्राणी हर्षपूर्वक पौषधव्रत वडे सर्व पर्वोनी आराधना करे छे अने चित्तमांथी धर्मपर्वोने तजतो नथी ते सर्व संपत्तिओ वडे युक्त थाय छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौएकशताधिकैकपंचाशत्तमःप्रबंधः

व्याख्यान १५२ मुं.

हजु पर्वनी आराधना विषेज कहे छे.

सर्वारंभपरित्यागात्पाक्षिकादिषु पर्वसु ।
विधेयः पौषधोऽजस्रमिव सूर्ययशा नृपः ॥ १ ॥

भावार्थ

" पाक्षिक (चतुर्दशी) पर्व विगेरेमां सर्व आरंभनो त्याग करी सूर्ययशा राजानी जेम हमेशा पौषधव्रत अंगीकार करवुं."

उपर कहेला श्लोकनो संबंध श्री ऋषभदेव प्रभुना राज्यनी स्थितिना समयनो छे. पूर्वे इंद्रनी आज्ञाथी भगवंतनी राज्य स्थितिने अर्थे कुबेरे एक रात्री अने दिवसमां

विनीता नामे बार योजन लांबी अने नव योजन विस्तारवाळी नगरी बनावी हती. तेनी फरतो सुवर्णनो किल्लो रच्यो हतो. तेनी मध्ये भगवंतने माटे एकवीश अटारी (माळ) नुं एक मंदिर कर्युं हतुं. ते नगरमां भरतचक्रीनी पछी तेना सवा करोड पुत्रोमां मोटो सुर्ययशा नामे पुत्र राज्य करतो हतो; तेने सवालक्ष पुत्रो हता, अने दश हजार मुगटबद्ध राजाओनो ते अधिपति हतो. ते पोतानुं विशाल राज्य नीतिथी पाळतो हतो; अने दररोज प्रातःकाळमां पोतानी सेनासहित शक्रावतार नामना श्री ऋषभदेव प्रभुना प्रासादे स्तव स्तुति मंगल करतो हतो. तेमज पाक्षिक विगेरे पर्वने दिवसे दश हजार राजाओ अने बीजा स्वजनोथी परवर्यो सतो ते परिपूर्ण पोषध करतो हतो. ते दिवसे पोते कांई आरंभ करतो नहीं तेम बीजानी पासे करावतो पण नहीं.

एक वखते सौधर्मेंद्रे पोतानी सभामां बेठाबेठा अवधिज्ञानवडे सूर्ययशानुं पर्व संबंधी धर्माराधनमां स्थिरपणुं जाणी वारंवार मनवडेज तेनी प्रशंसा करी मस्तक धुणाव्युं. ते जोई इंद्रनी आगळ रंभा, ऊर्वशी विगेरे गंधर्वीओ मधुर गान तान अने हावभावपूर्वक नृत्य करती हती, तेमणे इंद्रने पुछ्युं—" हे स्वामी ! मर्त्यलोकना जराथी जर्जरित एवा मनुष्यना मस्तकनी जेम तमे मस्तक केम धुणाव्युं ? अमारी कळाकौशल्यमां के वाजित्रना तालमां भूल पडवाथी तो तेम नथी थयुं ? हे देव, आखी सभाने थयेलो आ संदेह इष्टवाक्य वडे दूर करी अमारा मनने शल्यरहित करो. " इंद्र बोल्यो–मर्त्यलोकमां भरतचक्रीना ज्येष्ठ पुत्र सूर्ययशानी एवी धर्म दृढता छे के तेवी बीजा कोईमां जणाती नथी; परंतु तेवा गुणीजनने ते घटे छे. कह्युं छे के " दिग्गज, कूर्म, कुलपर्वत अने शेषनागे धारण करी राखेली आ पृथ्वी कदि चलायमान थाय पण निर्मळ अने दृढ हृदयवाळा पुरुषो जे अंगीकार करे ते युगांते पण चलायमान थतुं नथी. " वळी ए सूर्ययशाना परिचयथी बीजा पण घणा लोको पर्वना आराधनमां तत्पर थया छे. कह्युं छे के—

सुंदरजण संसग्गी, सीलदरिद्दं पि कुणइ सिलड्ढं ।
जह मेरुगिरि विलग्गं, तणंपि कणगत्तणमुवेइ ॥ १ ॥

"शील रहित एवो माणस होय पण जो उत्तम जननो संसर्ग करे तो ते शीलवाळो थाय छे. जेम मेरुपर्वत ऊपर ऊगेलुं घास पण सुवर्णपणाने पामे छे तेम. "

आप्रमाणे सौधर्म इंद्रे करेलुं तेनुं वर्णन सांभळीने रंभा अने उर्वशी बोली–'हे स्वामी, धान्यना कीडा अने मात्र अन्न उपर जीवनारा मनुष्यनी आटली बधी प्रशंसा

शुं करो छो ? ज्यांसुधी तेमणे अमारुं मुख जोयुं नथी त्यांसुधीज तेमनी धर्मविषे दृढता छे.' आप्रमाणे कही ते बंने प्रतिज्ञा लईने मर्त्यलोकमां आवी अने शक्रावतार नामना जिनमंदिरमां जईने हाथमां वीणा लई मधुर स्वरे जिनेश्वर भगवंतना गुणोनुं गान करवा लागी. तेमणे सप्तस्वरमय एवुं संगीत गायुं के जे सांभळी पोतानी जातिना स्वरनी भ्रांतिथी पक्षीओ पण त्यां सांभळवा आव्या. कह्युं छे के– "मयूर षड्ज स्वर बोले छे, कुकडो ऋषभ स्वर वदे छे, हंस गांधार स्वर उच्चारे छे, गवेलक मध्यम स्वर बोले छे, वसंतऋतुमां पुष्प विकस्वर थवाने समये कोकिला पंचम स्वर बोले छे, सारस धैवत बोले छे अने हाथी सातमो निषाद स्वर बोले छे." एवी रीते जुदी जुदी पक्षीओनी जातिमां रहेला स्वरो तेमना कलाकौशल्यथी एकी साथे प्रगट थई गया. ते केम बन्युं ? तेना उत्तरमां स्वरोनी उत्पत्तिना स्थान बतावे छे. "कंठमांथी षड्ज स्वर उत्पन्न थाय छे, हृदयमांथी ऋषभ उद्भवे छे, नासिकामांथी गांधार प्रगटे छे, नाभिमांथी मध्यम थाय छे, ऊरस्थळ अने कंठमांथी पंचम थाय छे, ललाटमांथी धैवत थाय छे अने सर्व संधिमांथी निषाद उद्भवे छे. आप्रमाणे साते स्वरोनी उत्पत्ति छे."

श्री आदीश्वरनो पौत्र सूर्ययशा राजा पाक्षिक पोषध पूर्ण करीने प्रातःकाले परिवारसहित प्रभुने नमवा माटे शक्रावतार चैत्ये आव्यो. दूरथी तीर्थने जोई वाहनमांथी उतर्यो अने छत्र, चामर अने मुगट दूर मुकी उपानरहित चरण वडे चालवा-लाग्यो. ते वखते दूर चैत्यमां थता संगीतने सांभळतांज अश्व, हस्ती, पेदल अने बीजा राजा प्रमुख सर्वे सूर्ययशा राजाने छोडी सत्वर त्यां दोडी गया. कह्युं छे के "जे सुखी जनने सुखनुं कारण छे, दुःखी जनने विनोदरूप छे, श्रवण अने हृदयने हरनार छे, कामदेवनो अग्र दूत छे, नवनवा रसनो करनार छे अने नायिकाने वल्लभ छे, एवो पांचमो उपवेद 'नाद' आ जगत्मां जय पामे छे." पछी राजा पण अनुक्रमे त्यां आव्यो अने जिनेश्वर भगवंतने नमीने बहार आव्यो. ते समये आ बंने अप्सरानुं संगीत, स्मित, नृत्य, वेष, लावण्य अने अनुपम रूप तेना जोवामां आव्युं. पोतानी कांतिथी सूर्यना बिंबने पण तिरस्कार करती ते बालानुं विशेष वर्णन शुं करवुं ! इंद्र पण तेना रूप गुणने जोइने असंख्यकाले पण तृप्ति पामतो नथी. आवुं उत्तम तेमनुं सौंदर्य जोई राजा मंडळनी बहार द्रव्यथी भूमिपर अने भावथी तेमना गुणोनी स्तुतिमां स्थित थयो. पछी ते सुंदरीओनां अवसरोचित करेलां नृत्य गीत रूप अमृत रसनुं कर्णपुटवडे पान करी, पोताना मंत्रीने मुखे तेमना जाति कुळ पुछाव्यां. ते अप्सराओ बोली–"अमे बंने विद्याधरोनी पुत्रीओ छीए. अद्यापि कुमारिका छीए. अमारी सदृश अने अमारा वचन प्रमाणे वर्तनार

विनीता नामे बार योजन लांबी अने नव योजन विस्तारवाळी नगरी बनावी हती. तेनी फरतो सुवर्णनो किल्लो रच्यो हतो. तेनी मध्ये भगवंतने माटे एकवीश अटारी (माळ) नुं एक मंदिर कर्युं हतुं. ते नगरमां भरतचक्रीनी पछी तेना सवा करोड पुत्रोमां मोटो सुर्ययशा नामे पुत्र राज्य करतो हतो; तेने सवालक्ष पुत्रो हता, अने दश हजार मुगटबद्ध राजाओनो ते अधिपति हतो. ते पोतानुं विशाल राज्य नीतिथी पाळतो हतो; अने दररोज प्रातःकाळमां पोतानी सेनासहित शक्रावतार नामना श्री ऋषभदेव प्रभुना प्रासादे स्तव स्तुति मंगल करतो हतो. तेमज पाक्षिक विगेरे पर्वने दिवसे दश हजार राजाओ अने बीजा स्वजनोथी परवर्यो सतो ते परिपूर्ण पोषध करतो हतो. ते दिवसे पोते कांई आरंभ करतो नहीं तेम बीजानी पासे करावतो पण नहीं.

एक वखते सौधर्मेंद्रे पोतानी सभामां बेठाबेठा अवधिज्ञानवडे सूर्ययशानुं पर्व संबंधी धर्माराधनमां स्थिरपणुं जाणी वारवार मनवडेज तेनी प्रशंसा करी मस्तक धुणाव्युं. ते जोई इंद्रनी आगळ रंभा, उर्वशी विगेरे गंधर्वीओ मधुर गान तान अने हावभावपूर्वक नृत्य करती हती, तेमणे इंद्रने पुछ्युं—" हे स्वामी ! मर्त्यलोकना जराथी जर्जरित एवा मनुष्यना मस्तकनी जेम तमे मस्तक केम धुणाव्युं ? अमारी कळाकौशल्यमां के वाजित्रना तालमां भूल पडवाथी तो तेम नथी थयुं ? हे देव, आखी सभाने थयेलो आ संदेह इष्टवाक्य वडे दूर करी अमारा मनने शल्यरहित करो. " इंद्र बोल्यो–मर्त्यलोकमां भरतचक्रीना ज्येष्ठ पुत्र सूर्ययशानी एवी धर्म दृढता छे के तेवी बीजा कोईमां जणाती नथी; परंतु तेवा गुणीजनने ते घटे छे. कह्युं छे के " दिग्गज, कूर्म, कुलपर्वत अने शेषनागे धारण करी राखेली आ पृथ्वी कदि चलायमान थाय पण निर्मळ अने दृढ हृदयवाळा पुरुषो जे अंगीकार करे ते युगांते पण चलायमान थतुं नथी. " वळी ए सूर्ययशाना परिचयथी बीजा पण घणा लोको पर्वना आराधनमां तत्पर थया छे. कह्युं छे के—

सुंदरजण संसग्गी, सीलदरिद्दं पि कुणइ सिलड्ढं ।
जह मेरुगिरि विलग्गं, तणंपि कणगत्तणमुवेइ ॥ १ ॥

"शील रहित एवो माणस होय पण जो उत्तम जननो संसर्ग करे तो ते शीलवाळो थाय छे. जेम मेरुपर्वत उपर ऊगेलुं घास पण सुवर्णपणाने पामे छे तेम."

आप्रमाणे सौधर्म इंद्रे करेलुं तेनुं वर्णन सांभळीने रंभा अने उर्वशी बोली–'हे स्वामी, धान्यना कीडा अने मात्र अन्न उपर जीवनारा मनुष्यनी आटली बधी प्रशंसा

शुं करो छो ? ज्यांसुधी तेमणे अमारुं मुख जोयुं नथी त्यांसुधीज तेमनी धर्मविषे दृढता छे.' आप्रमाणे कही ते बंने प्रतिज्ञा लईने मर्त्यलोकमां आवी अने शक्रावतार नामना जिनमंदिरमां जईने हाथमां वीणा लई मधुर स्वरे जिनेश्वर भगवंतना गुणोनुं गान करवा लागी. तेमणे सप्तस्वरमय एवुं संगीत गायुं के जे सांभळी पोतानी जातिना स्वरनी भ्रांतिथी पक्षीओ पण त्यां सांभळवा आव्या. कह्युं छे के—"मयूर षड्ज स्वर बोले छे, कुकडो ऋषभ स्वर वदे छे, हंस गांधार स्वर उच्चारे छे, गवेलक मध्यम स्वर बोले छे, वसंतऋतुमां पुष्प विकस्वर थवाने समये कोकिला पंचम स्वर बोले छे, सारस धैवत बोले छे अने हाथी सातमो निषाद स्वर बोले छे." एवी रीते जुदी जुदी पक्षीओनी जातिमां रहेला स्वरो तेमना कळाकौशल्यथी एकी साथे प्रगट थई गया. ते केम बन्युं? तेना उत्तरमां स्वरोनी उत्पत्तिना स्थान बतावे छे. "कंठमांथी षड्ज स्वर उत्पन्न थाय छे, हृदयमांथी ऋषभ उद्भवे छे, नासिकामांथी गांधार प्रगटे छे, नाभिमांथी मध्यम थाय छे, उरस्थळ अने कंठमांथी पंचम थाय छे, ललाटमांथी धैवत थाय छे अने सर्व संधिमांथी निषाद उद्भवे छे. आप्रमाणे साते स्वरोनी उत्पत्ति छे."

श्री आदीश्वरनो पौत्र सूर्ययशा राजा पाक्षिक पोषध पूर्ण करीने प्रातःकाले परिवारसहित प्रभुने नमवा माटे शक्रावतार चैत्ये आव्यो. दूरथी तीर्थने जोई वाहनमांथी उतर्यो अने छत्र, चामर अने मुगट दूर मुकी उपानरहित चरण वडे चालवा-लाग्यो. ते वखते दूर चैत्यमां थता संगीतने सांभळतांज अश्व, हस्ती, पेदल अने बीजा राजा प्रमुख सर्वे सूर्ययशा राजाने छोडी सत्वर त्यां दोडी गया. कह्युं छे के "जे सुखी जनने सुखनुं कारण छे, दुःखी जनने विनोदरूप छे, श्रवण अने हृदयने हरनार छे, कामदेवनो अग्र दूत छे, नवनवा रसनो करनार छे अने नायिकाने वल्लभ छे, एवो पांचमो उपवेद 'नाद' आ जगत्मां जय पामे छे." पछी राजा पण अनुक्रमे त्यां आव्यो अने जिनेश्वर भगवंतने नमीने बहार आव्यो. ते समये आ बंने अप्सरानुं संगीत, स्मित, नृत्य, वेष, लावण्य अने अनुपम रूप तेना जोवामां आव्युं. पोतानी कांतिथी सूर्यना बिंबने पण तिरस्कार करती ते बालानुं विशेष वर्णन शुं करवुं ! इंद्र पण तेना रूप गुणने जोइने असंख्यकाले पण तृप्ति पामतो नथी. आवुं उत्तम तेमनुं सौंदर्य जोई राजा मंडळनी बहार द्रव्यथी भूमिपर अने भावथी तेमना गुणोनी स्तुतिमां स्थित थयो. पछी ते सुंदरीओनां अवसरोचित करेलां नृत्य गीत रूप अमृत रसनुं कर्णपुटवडे पान करी, पोताना मंत्रीने मुखे तेमना जाति कुळ पुछाव्यां. ते अप्सराओ बोली—"अमे बंने विद्याधरोनी पुत्रीओ छीए. अद्यापि कुमारिका छीए. अमारी सदृश अने अमारा वचन प्रमाणे वर्तनार

पतिने शोधवा अमे बंने तीर्थे तीर्थे अने नगरे नगरे पर्यटन करीए छीए, पण अमने हजु सुधी तेवो योग्य पति जोवामां आव्यो नथी; तेथी हवे अमे स्वस्थाने जइशुं." त्यारे मंत्री बोल्यो-"आ अमारा स्वामी सूर्ययशा के जे मरुदेवीना पुत्र ऋषभदेव प्रभुना पौत्र थाय छे तेना जेवो कोई त्रिभुवनमां नथी. तेनी साथेज तमे विवाह करो, अने तमारा विरहना दाहने शांत करो. अमारा स्वामी सत्य प्रतिज्ञावाळा अने सुज्ञ छे. ते युवान कदिपण तमारा बंनेना वाक्यनुं उल्लंघन करशे नहीं." मंत्रीनां आवां वचन सांभळी ते बोली'-'ते अमारुं वाक्य उल्लंघन करशे नहीं तेनुं कोण साक्षी ?' मंत्री बोल्यो-'ते विषे हुं जामीन छुं.' त्यारे ते बोली के 'वचन आपो.' पछी राजाए वचन आप्युं अने श्री युगादीश प्रभुनी समक्ष ते बंनेनुं पाणिग्रहण करी ते बंनेने लईने राजा घरे आव्यो. ते विद्याधरीओ सुंदरावासमां सुखे रहेवा लागी अने राजा पण हंमेशां अभिनव कलाना अवलोकन वडे प्रसन्न थवा लाग्यो.

एकदा तेमनी साथे राजा पोताना सुंदरावासमां बेठो हतो तेवामां मार्गे थती पटहनी घोषणा तेमना सांभळवामां आवी. ते सांभळी विद्याधरीओए राजाने पुछ्युं-'स्वामी, आ शेनो ध्वनि संभळाय छे?' राजा बोल्यो "सुंदरीओ, आवती काले अष्टमीनो पर्व दिवस छे; तेथी ते दिवसे अनेक प्रकारना दळण, खंडन, पेषण, रंधन, अब्रह्म सेवन, ज्ञातिभोजन, तिल तथा एरंडी विगेरेनुं पीलन, रात्रि भोजन, वृक्षछेदन, भूमिविदारण, इंट तथा चुनो पकाववा माटे अग्निप्रज्वालन, वस्त्र क्षालन, वासी भोजननुं राखवुं, शाळी तथा चणा सेकवा अने शाकपत्र खरीदवा विगेरे कोई जातना पाप व्यापार कोई करशे नहीं तेम करावशे पण नहीं. बालक शिवाय सर्व लोको प्राये उपवास करशे. तेओ तेमज दश हजार राजाओ जेओ काले पौषध लेनारा छे तेओ हंमेशा सुखमग्न होवाथी पर्व दिवसने शी रीते जाणी शके? तेथी पर्वने आगले दिवसे एटले सातम, तेरश विगेरे तिथिए मारी आज्ञाथी हंमेशा पटहनी उद्घोषणा थाय छे, अने हुं पण पर्व दिवसे पौषध ग्रहण करुं छुं."

कर्णमां सीसा रेडवा जेवा राजानां वचनो सांभळी ते बंने विद्याधरीओ मूर्छा पामी गई. पछी राजाए शीतल जल तथा चंदनना सिंचनथी तेमने सज्ज करी एटले तेओ बोली-" हे स्वामी! एक क्षणमात्र पण तमारो विरह अमने कोटीकल्प जेवो थाय छे, तेथी तमे पोषध ल्यो त्यारे आठ पोहोर सुधीनो तमारो विरह अमे सहन करी शकशुं नही. माटे जो अमारा अंगना सुखनी अभिलाषा होयतो पर्वे पोषध करवानुं छोडी द्यो."राजा बोल्यो-"प्राणांते पण हुं छोडीश नहीं. संसारिक सुखमांशुं महत्तत्व छे? इंद्रादिकनुं पद मळवुं सुलभ छे पण धर्म प्राप्त थवो ए अत्यंत दुर्लभ छे."

ते बंने बोली–" हे स्वामी ! त्यारे तमे अमने पाणिग्रहण वखते जे वचन आप्युं हतुं ते वचन गयुं." राजा बोल्यो–"प्रियाओ ! धन तथा राज्यादि सर्व तमारा वचनथी छोडी दऊं पण धर्म तो छोडीश नहीं, केम के तेतो आत्मानो खजानो छे." ते बोली– " प्रिय! तमारुं वचन जवाथी तमारा वचननीसाथे अमे अमारुं अंग चितामां भस्म करीशुं. " राजा क्रोध करी बोल्यो–" अरे ! जरूर तमे चंडाळ कुळमां उत्पन्न थयेली लागो छो; केमके जे कुळवान होय ते धर्मने विषे अंतराय करे नहीं. तमे चितामां प्रवेश करवानुं शामाटे स्वीकारो छो ? बीजुं जे गमे ते मागी ल्यो, हुं आपवा तैयार छुं." ते बंने बोली–" प्राणनाथ ! अमे अत्यंत स्नेहथी अमारा स्वामीने तपस्याथी कायक्लेश न थाओ एवा इरादाथी आप्रमाणे कह्युं हतुं, तेमां तमारे क्रोध करवानो अवसर नथी. बाकी तो पितानां वचननुं उल्लंघन करीने नीकळेली अमो बंनेना पूर्वकर्मना संबंधथी तमे पति थयाछो अने तमे श्रीजिनेश्वर भगवंतनी समक्ष अमारुं वाक्य अन्यथा करवुं नहीं एवी प्रतिज्ञा लीधेली छे, तेथी अमे हंमेशा अभंगसुख मागीए छीए. अन्यथा तो अमे बाल्यावस्थाथी पाळेला शीळथी ने पिताना राज्यथी बंनेथी भ्रष्ट थई; तो हवे तमारा राज्यादिकने अमे शुं करीए? हवे जो अमारां वचनथी तमे पर्वनो भंग करी शको तेम न होय तो आ जिनगृह पाडी नाखो. " आ वचन सांभळतांज राजा मूर्छा वडे पृथ्वीपर पडी गयो, सेवकोए शीतळ उपचारथी सचेत कर्यो, त्यारे ते बोल्यो– " अरे अधम स्त्रीओ, में मोहने वश थई मणिनी शंकाए काचनो कडको लीधो. हवे जे थयुं ते खरुं, पण तमे एक धर्मना लोप शिवाय बीजुं जे जोइए ते यथेच्छ रीते मागी ल्यो, के जे आपीने हुं मारा वाक्यदानथी अनृणी थाऊं. " ते विद्याधरीओ बोली–"जो तमारे वाक्य पाळवानुं प्रयोजन होय तो तमारा पुत्रनुं मस्तक छेदीने आपो. " राजा बोल्यो–" भद्रे, पारका जीवने केम मागो छो ? ए पुत्र तो मारा देहथी उत्पन्न थयो छे, तो मारुंज मस्तक ग्रहण करो. आप्रमाणे कही राजाए वेगथी पोताना मस्तक ऊपर खड्गनो प्रहार कर्यो. एटले तेणीए खड्गनी धारा स्तंभित करी दीधी. राजा नवुं नवुं खड्ग लई कंठ ऊपर प्रहार करवा लाग्यो. तेवामां ते बंने अंतर्धान थई गई. राजा विस्मय पामी विचार करवा लाग्यो के, अहो ! आ शुं थयुं ! तेवामां ते बंनेए प्रगट थई पुष्पवृष्टि करीने पूर्वेनुं सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं; अने कह्युं के, 'तमारा महिमाथी अमारुं मिथ्यात्व नाश पाम्युं छे.' इत्यादि प्रशंसा करी स्वर्गमां जईने इंद्रनी सभामां पण तेमणे सूर्ययशानी प्रशंसा करी.

अन्यदा सूर्ययशा अरिसा भुवनमां पोताना पितानी जेम केवल ज्ञान पामी मोक्षे गया. एमनी विशेष हकीकत जाणवी होय तो शत्रुंजय माहात्म्यमांथी जाणी लेवी. अमे तो जेवुं सांभळ्युं तेवुं अहीं लखेलुं छे.

"पाक्षिक विगेरे तिथिमां करेलो पोषधधर्म सूर्ययशा राजानी जेम आ लोक अने परलोकमां सुख आपे छे अने तेथी प्राणी निष्कलंक कांतिनो संचय करे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकशताधिकद्विपंचाशत्तमः प्रबंधः॥ १५२॥

व्याख्यान १५३ मुं.

पौषधमां प्रतिक्रमण करवुं जोइये ते विषे कहेछे.

पर्यायाः सन्ति ये चाष्टौ, निर्धार्य सुरिभिः कृताः।
प्रतिक्रमण शब्दस्य, कार्यं तत्पौषधे मुदा ॥ १ ॥

भावार्थ

"सूरि महाराजाओए विचारीने करेला एवा जे प्रतिक्रमणशब्दना आठ पर्याय छे, ते प्रतिक्रमण श्रावके पौषधव्रतमां हर्षथी करवुं."

विस्तरार्थ

प्रतीप एटले पाछुं, क्रमण एटले चालवुं, अर्थात् पापथी पाछा ओसरवुं तेनुं नाम प्रतिक्रमण' कहेवाय छे. कह्युं छे के—

स्वस्थानाद्यत्परस्थानं, प्रमादस्य वशाद्गतः।
तत्रैव क्रमणं भूयः, प्रतिक्रमणमुच्यते ॥ ॥ १ ॥

भावार्थ

"प्रमादने वश थया थका जे पोताना स्थानथी परस्थान प्रत्ये जवायुं होय, त्यांथी पाछा फरीवार त्यांज (पोताना स्थानमांज) क्रमण-गमन करवुं ते प्रतिक्रमण कहेवाय छे."

अथवा प्रतिकूल एवुं क्रमण एटले रागादिकथी विरुद्ध गमन करवुं ते 'प्रतिक्रमण' कहेवाय छे. ते विषे कह्युं छे के—

क्षायोपशमिकाद्भावादौदयिकस्य वशं गतः ।
तत्रापि च स एवार्थे प्रतिकूलगमात् स्मृतः ॥

"क्षायोपशमिक भावथी औदयिक भावमां गयेलानुं जे पाछुं प्रतिकूल गमन थवुं, अर्थात् क्षयोपशम भावमां आववुं; तेथी पण तेज अर्थ सिद्ध थाय छे."

अहीं कोई शंका करे के "प्रतिक्रमण तो अतीत–पूर्वकाळना पापने पडिकमवा रुप छे. कारण के–कह्युं छे के 'अतीत काळ संबंधी हुं प्रतिक्रमुं छुं, वर्तमान काळे संवरुं छुं, अने अनागत काळे पाप न करवानुं पच्चख्खाण करुं छुं, एटले नवुं पाप न करवानुं प्रत्याख्यान करुं छुं. तो अहीं त्रणे काळनुं प्रतिक्रमण केम कह्युं?" तेना समाधानमां कहे छे के "अहीं प्रतिक्रमण शब्द सामान्यथी मात्र अशुभ योगनी निवृत्ति अर्थमां छे; तेथी अतीत काळ संबंधी पापनी निंदा द्वाराए अशुभ योगनी निवृत्ति, वर्तमान काळे संवरद्वाराये अशुभ योगनी निवृत्ति अने अनागत काळसंबंधी प्रत्याख्यानद्वाराए अशुभ योगनी निवृत्ति समजवी."

प्रतिक्रमण दैवसिक विगेरे पांच प्रकारनुं प्रसिद्ध छे. तेमां उत्सर्गे दैवसिक प्रतिक्रमणनो काळ आप्रमाणे कहेलो छे.–ज्यारे सूर्य अडधो आथमतो होय ते वखते गीतार्थ प्रतिक्रमणसूत्र (श्रमणसूत्र[1]) कहे. आ वचन प्रमाणे देवसी प्रतिक्रमणनो काळ समजवो. प्रतिक्रमण संपूर्ण थाय ते वखते बे त्रण तारा आकाशमां उगेला देखाय, एम पण कहेलुं छे.

रात्रिप्रतिक्रमणनो काळ आप्रमाणे कहेलो छे–"आवश्यक करवाने समये आचार्यो निद्रानो मोक्ष करे छे, अर्थात् निद्रा तजी दे छे. पछी प्रतिक्रमणनी क्रिया एवे वखते शरु करे छे के प्रभाते प्रतिलेखना कर्या पछी तरतज सूर्य उगे." उत्सर्गथी बतावेला उक्तकाळे प्रतिक्रमणक्रिया करवाथी योग्य समये कृषि करनारा खेडुतनी जेम मोटुं फळ प्राप्त थाय छे. अपवादथी तो योगशास्त्रनी वृत्तिमां लखे छे के "देवसी प्रतिक्रमण मध्यान्ह पछी अर्ध रात्रि सुधी थई शके छे, अने राई प्रतिक्रमण अर्ध रात्रिथी मांडी मध्यान्ह सुधी थई शके छे."

आ प्रमाणेना प्रतिक्रमण शब्दना भद्रबाहु विगेरे सूरिओए आठ पर्याय करेला छे. तेनां नाम आगळ कहेवामां आवशे. ते आठ पर्याय निश्चयपूर्वक धारी राखीने तेवुं प्रतिक्रमण पौषधव्रतमां श्रावके हर्षथी करवुं. ते विषे चूलनीपिता श्रावकनी कथा

---

1 श्रावक आश्री वंदिता सूत्र समजवुं.

सातमा अंग श्री उपासक दशांग सूत्रथी जाणी लेवी. ते विषे कह्युं छे के " जे प्रतिक्रमण युक्त पोसह करे छे ते गृहस्थने धन्य छे, अने चूलनीपितानी जेम जे पाळे छे तेने विशेष धन्य छे. "

प्रतिक्रमणना आठ पर्यायनाम कहेछे.

पहेलुं नाम प्रतिक्रमण, बीजुं प्रतिचरणा, त्रीजुं परिहरणा, चोथुं वारणा, पांचमुं निवृत्ति, छठुं निंदा, सातमुं गर्हा अने आठमुं शोधि. एक प्रतिक्रमण वस्तुना ए आठ पर्याय नाम छे.

प्रतिक्रमण ए पहेलुं पर्यायनाम आ प्रमाणे सिद्ध थाय छे. प्रतिक्रमण ए शब्दमां प्रति ए उपसर्ग प्रतीप (उलटुं) विगेरे अर्थमां प्रवर्ते छे. क्रमण ए शब्दमां क्रम् ए धातु पादविक्षेप एटले डगलां भरवां ए अर्थमां छे; तेने अनट् प्रत्यय आववाथी प्रतिक्रमण ए शब्द सिद्ध थाय छे. तेनो अर्थ एवो थाय के प्रति एटले पाछुं क्रमण एटले पगलुं भरवुं ते प्रतिक्रमण. तेनो आशय एवो छे के शुभ योगमांथी अशुभ योगमां गयेलाने पाछुं शुभयोगमां आववुं ते प्रतिक्रमण. तेनो भावार्थ दृष्टांत उपरथी जाणी शकाय तेम छे. ते दृष्टांत आ प्रमाणे—

कोई राजाए पोताना शहेरनी बहार महेल बांधवानी इच्छाथी कोइ एक क्षेत्रनी भूमिने अस्थि प्रमुख शल्य काढी शुद्ध करावीने ते उपर महेल माटे दोरी छंटावी. पछी त्यां रक्षकोने राखीने तेमने राजाए एवी आज्ञा करी के ' जो कोई पण माणस आ भूमिमां प्रवेश करे तो तेने तमारे मारी नाखवो, पण जो ते तरत तेज पगले पाछो फरे तो तेने छोडी मूकवो. ' आवी आज्ञा करी राजा शहेरमां आव्यो. अन्यदा कोई बे गामडीआ माणस ते भूमिमां पेसी गया. तरतज पेला रक्षकोए तेमने जोईने पूछ्युं- ' अरे ! तमे अहीं केम पेठा ? ' एटले तेमांथी एक माणस जे धृष्ट हतो ते बोल्यो-' एमां शो दोष छे ? ' तेम बोलतांज तेने राजसेवके मारी नाख्यो. ते जोई बीजो माणस भय पाम्यो; एटले ते तत्काळ रक्षकनी आज्ञा प्रमाणे तेज पगले पाछो वळ्यो, तेथी ते सुखी थयो. आ प्रमाणेना दृष्टांतथी द्रव्य प्रतिक्रमण समजवुं.

हवे भाव प्रतिक्रमण उपर ते दृष्टांतनो उपनय घटावे छे-जे राजा ते श्री तीर्थंकर समजवा. महेल करवानुं स्थळ ते संयम समजवुं. जे बे गामडीआ माणस ते कुसाधु समजवा के जेओ रागद्वेषने आधीन थयेला हता. ते बंनेमां जे प्रमादना दोषथी असंयमने प्राप्त थया छतां तेथी पाछो वळ्यो ते शुभ फळने पाम्यो, अने यावत् ते

मुनिवर निर्वाण सुखनो भागी थयो; अने जे पाछो न वळ्यो ते दुःखनो भागी थयो. आ प्रमाणे उपनय रुप दृष्टांतथी प्रतिक्रमण शब्दनो अर्थ जाणी लेवो.

बीजुं पर्यायनाम जे 'प्रतिचरणा' छे तेनो शब्दार्थ एवो छे के प्रति एटले वारंवार ते ते भावमां चरणं गमनं सेवनं एटले गमन करवुं वा सेवन करवुं ते प्रतिचरणा कहेवाय छे. ते प्रतिचरणा अप्रशस्त अने प्रशस्त एवा बे भेदवाळी छे. तेमां मिथ्यात्वादिकनुं सेवन ते अप्रशस्त प्रतिचरणा, अने त्रण रत्न–ज्ञान दर्शन ने चारित्रनुं सेवन ते प्रशस्त प्रतिचरणा. ते विषे एक दृष्टांत छे, ते नीचे प्रमाणे— .

कोई वणिक पोतानी स्त्रीने 'तुं आ रत्नादिकथी भरेला महेलनी संभाळ राखजे' एम कही देशांतर गयो. ते स्त्री पोताना शरीरनी विभूषा विगेरेमांज तल्लीन रही, तेथी तेणे महेलनी बिलकुल संभाळ राखी नहि. दैवयोगे महेलनी एक दिवालमां पीपलानो अंकुर फुट्यो, अने ते एटलो बधो वृद्धि पाम्यो के जेथी ते दीवाल तुटी जवाथी बधो महेल विशीर्ण थई गयो; तो पण ते स्त्रीए तेनी सारवार करी नहि. केटलेक दहाडे पेलो वणिक घेर आव्यो; एटले महेलनी तेवी स्थिति जोईने तेणे पेली स्त्रीने घरमांथी काढी मूकी. पछी महेल फरीने, नवो कराव्यो, अने बीजी स्त्री परण्यो. केटलेक दिवसे पाछो अगाउ प्रमाणे ते नवी स्त्रीने ते महेलनी भलामण करीने ते विदेश गयो. ते स्त्री त्रिकाळ महेलनी संभाळ राखवा लागी. पेलो वणिक विदेशथी आवी महेलने सारो राखेलो जोई खुशी थयो, अने ते स्त्रीने पोताना सर्वस्वनी मालेक करी.

आ द्रव्य प्रतिचरणा जाणवी. भावथी तेनो उपनय एवो छे के वणिकने स्थाने गुरु महाराज समजवा. जे महेल ते संयम समजवुं के जे नित्य संभाळ लेवा योग्य छे. वणिक रुप गुरुनी आज्ञा प्रमाणे जे साधु सातादि गारवमां लीन थयो थको कुंडरीकनी जेम ते संयमरुप महेलनी बराबर संभाळ राखतो नथी ते वणिकनी प्रथमनी स्त्रीनी जेम दुःखी थाय छे, अने जे साधु ते संयम रुप प्रासादने बराबर जाळवी राखे छे ते बीजी स्त्रीनी जेम निर्वाणसुखनो भागी थाय छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ शतोत्तरत्रिपंचाशत्तमः प्रबंधः ॥ १५३ ॥

व्याख्यान १५४ मुं.

प्रतिक्रमणना पर्याय.

परिहरणं एटले सर्व प्रकारे वर्जवुं ते. वर्जन अप्रशस्त अने प्रशस्त एम बे प्रकारे छे. ज्ञानादिकनुं त्यजवुं ते अप्रशस्त अने क्रोधादिकनुं त्यजवुं ते प्रशस्त. आ प्रतिक्रमणनुं त्रीजुं पर्याय नाम छे, ते विषे दूधनी कावडनुं दृष्टांत छे, ते नीचे प्रमाणे–

कोइ एक कुलपुत्र हतो. तेने बे बहेनो हती. ते बंने बहेनोने एक एक युवान पुत्र हतो. ते बंने मामानी पुत्रीने परणवा माटे एक साथे आव्या. मामाए तेमने कह्युं 'तमारा बंनेमां जे दक्ष हशे तेने हुं मारी पुत्री आपीश.' पछी तेणे तेओने गोकुल (नेहडा) मांथी दूध लाववाने माटे बे कावड आपीने मोकल्या. तेओ त्यांथी दूध वडे बे बे घडा भरीने पाछा वळ्या. पाछा आववाना बे मार्ग हता, तेमां एक सरल मार्ग हतो ते घणो लांबो हतो, अने बीजो विषम हतो ते टुंको हतो. बंनेमांथी एक जण लांबा अने पर्वतादिक विनाना सरल मार्गे चाल्यो; ते दूधना कुंभ भांग्या वगर क्षेमकुशल आव्यो, अने बीजो लाभ लेवाने उत्सुक थई नजीकना विकट मार्गे चाल्यो, ते दूधना घडा भांगीने आव्यो. मामाए कुशल क्षेमे आवेला भाणेजने पोतानी पुत्री आपी.

आ द्रव्यपरिहरणा समजवी. भावथी तेनो उपनय आ प्रमाणे छे–कुलपुत्रने स्थाने जिनेश्वर भगवंत समजवा दूध ते चरित्र, कन्या ते मुक्ति अने गोकुलने स्थाने मानुष्य जन्म समजवो. समविषम बे मार्ग ते स्थविरकल्पी अने जिनकल्पीना मार्ग जाणवा, जे सरल अने वक्र छे; तेमां अगीतार्थ छतां जिनकल्पी थवा इच्छनार साधु सहस्रमल्ल दिगंबरनी जेम चारित्ररुप दुधने राखी शकता नथी, अने तेथी ते पोतानुं वांछित मेळवी शकता नथी; तेमने मुक्ति दुष्प्राप्य छे. जे स्थविरकल्पी छे ते हळवे हळवे सुगम मार्गे चाली चारित्ररुप दुधनुं रक्षण करी अंते सिद्धिने प्राप्त करे छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ शताधिकचतुःपंचाशत्तमः प्रबंधः ॥१५४॥

व्याख्यान १५५ मुं.

प्रतिक्रमणना पर्याय.

प्रतिक्रमणनुं चोथुं पर्यायीनाम वारणा छे. जेमां निवारवामां आवे ते वारणा कहेवाय छे. ते उपर एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कोइ एक राजाए शत्रुराजानुं सैन्य पोतापर चडी आवतु जाणीने तलाव विगेरे जळाशयो तथा पुष्प फळ विगेरे सर्व वस्तुओमां झेर योजावी दीधुं. आ खबर शत्रु राजाने पडी, एटले तेणे घोषणा करावीने बधा सैन्यने ते राज्यनी सर्व वस्तुनो उपभोग करतां निवार्युं. तथापि जेमणे पोताना राजानुं वाक्य मान्युं नहि तेओ विष प्रयोगथी मृत्यु पाम्या, अने जेओए तेनुं वाक्य मान्युं तेओ सुखी थया.

उपरना दृष्टांतनो उपनय आ प्रमाणे छे के विषसमान विषयो जाणवा. निवारनार राजाने गुरुसमान जाणवो. तेना सैनिको ते भव्य प्राणीओ समजवा. जेओ गुरुवाक्यथी विषयथी विमुख रह्या तेओ तरी गया, अने जेओए गुरुवाक्यनो अनादर कर्यो तेओ दुःखी थया.

प्रतिक्रमणनुं पांचमुं पर्यायनाम निवृत्ति छे. ते प्रशस्त अने अप्रशस्त एवा बे प्रकारे छे. समिति अने गुप्ति विगेरेथी निवृत्ति ते अप्रशस्त अने प्रमाद विगेरेथी निवृत्ति ते प्रशस्त जाणवी. ते उपर एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कोई एक नगरमां त्यांना राजानी पुत्री अने कोई चित्रकारनी पुत्री बंने सखीओ हती. ते बंनेए एवो संकेत कर्यो के, आपणे एकज पतिने वरवुं. एकदा कोई पुरुष मधुर गायन करतो हतो, ते सांभळी ते बंने सखीओ तेनी उपर मोह पामी तेनी साथे चाली. मार्गे जतां राजपुत्रीए एक गाथा सांभळी; तेनो भावार्थ एवो हतो के "हे आम्रवृक्ष ! आ करेणना वृक्ष तो आजे भले प्रफुल्लित थाय, पण तारे आ अधिक मासमां प्रफुल्लित थवुं घटे नहि. कारण के जे नीच होय ते तो आडंबर करेज छे, उत्तम होय ते अकाळे आडंबर करता नथी." ते सांभळी राजपुत्रीए विचार्युं के "आ गाथामां वसंते आम्रवृक्षने उपालंभ आपेलो छे के करेणना वृक्षो अधम छे ते तो प्रफुल्लित थाय, पण हे आम्र ! तारे आ अधिक मासमां प्रफुल्लित थवुं न घटे; कारण के तुं उत्तम वृक्ष छे. तें शुं अधिक मासनी घोषणा सांभळी नथी? आ उपरथी मारे विचारवा योग्य छे के आ चितारानी पुत्री तो आम जेवा तेवा पुरुषनी संगाते चाली जाय, पण तने राजपुत्रीने तेम करवुं घटे छे ? नथी घटतुं." आम विचारीनेज 'हुं मारां आभूषणनो डाबलो भूली गई छुं ते लई आवुं' एम कही पाछी वळी, अने पोताना पिताना प्रसादथी कोई राजपुत्रने परणीने सुखी थई; अने चित्रकारनी पुत्री पेला धूर्त गायकने वरीने परिणामे दुःखी थई.

आनो उपनय एवो छे के ते कन्याओने स्थाने मुनिओ जाणवा. जे धूर्त गायक ते विषयो समजवा. गाथा संभळावनार ते उपाध्याय समजवा. ते सांभळीने उपदेशनुं तत्व समजी असंयमथी निवृत्त थनारा मुनि राजपुत्रीनी जेम सुगतिनुं भाजन थाय छे, अने बीजा तेथी विपरीत वर्तनारा दुर्गतिनुं भाजन थाय छे.

प्रतिक्रमणनुं छठ्ठुं पर्यायनाम निंदा छे; एटले आत्मानी साक्षीए आत्मानी निंदा करवी ते. तेना प्रशस्त अने अप्रशस्त एवा बे प्रकार छे. असंयमादिकनी निंदा ते प्रशस्त छे, अने संयमादिकनी निंदा ते अप्रशस्त छे. ते उपर एक दृष्टांत छे, ते नीचे प्रमाणे—

कोई राजाए पोतानुं सभास्थान चित्रवगरनुं होवाथी तेने चित्रित करवा माटे केटलाक चित्रकारोने बोलावीने तेनी दीवालो सरखे भागे वहेंची आपी. ते चित्रकारोमां एक वृद्ध चित्रकार हतो. तेनी पुत्री तेने माटे हमेशां त्यां भात लावती हती. एक वखते ते मार्गे आवती हती त्यां राजा तोफानी घोडा उपर बेसीने राजमार्गे चाल्यो जतो हतो, तेथी भय पामीने ते मुश्केलीए पोताना पितानी पासे आवी. तेने आवेली दीठी एटले तेनो पिता देहचिंता माटे गयो, तेवामां राजा त्यांज चित्रो जोवा आव्यो. ते चित्रमां मयूरनुं पीछुं चितरेल तेने भ्रांतिथी सत्य जाणी लेवा गयो, एटले तेना हाथनो नख भांगी गयो. ते जोई ते चित्रकारनी पुत्री बोली–' मूर्ख रुप मांचानो चोथो पायो हवे मळ्यो. ' ते सांभळी राजाए तेणीने पूछ्युं–' ते शी रीते ? ' चित्रकारपुत्री बोली–'' प्रथम पायो चहुटामां तोफानी घोडो दोडावनार, बीजो पायो मारो पिता के जे भोजन जोईने देहचिंताए गयो, त्रीजो पायो आ मयूरपींछीने भ्रमथी पकडनार तमे अने चोथो पायो आ गामनो राजा के जेणे युवान, वृद्ध अने बाळक सर्वे चित्रकारोने दीवालना सरखा भाग वहेंची आप्या छे.'' ते सांभळी राजा तेणीनी बुद्धि जोई हर्ष पाम्यो, अने ते चित्रकारनी पुत्रीने परण्यो.

एकदा राजा तेणीना वासगृहमां रात्रे सुतो हतो. ते वखते राजानी आज्ञाथी दासीए राणीने कोई वार्ता कहेवा जणाव्युं. राजा कांईक निद्रित थया, एटले राणीए आ प्रमाणे वार्ता शरु करी—

कोई गृहस्थने एक पुत्री हती. तेणीने वरवा माटे तेणीना माता, पिता अने भाईए वचन आपेला जुदा जुदा त्रण वरो एक साथे आव्या. दैवयोगे ते पुत्री रात्रे सर्पना दंशथी मृत्यु पामी. त्यारे पेला त्रण वर मांहेथी एक वर तो तेणीनी साथे बळी मुओ, बीजो वर तेणीनी पछवाडे सदा उपवास करी स्मशानमांज बेठो, अने त्रीजाए कोई देवतानुं आराधन करी संजीवीनी विद्या मेळवीने तेने पाछी संजीवन करी. आटली कथा कहीने राणीए पूछ्युं–' हे दासी ! कहे, ते कन्या कोने आपवी योग्य ?'

दासी बोली–' ते तमेज कहो. ' राणीए कह्युं– ' आजे तो मने निद्रा आवे छे, तेथी हुं सुई जईश, आवती काले कहीश. ' राजा जागतो हतो ते तेनी वार्त्ताना उत्तरमां आसक्त थई गयो, तेथी बीजे दिवसे पण तेज राणीने वारो आप्यो. योग्य अवसरे दासीए कालनो उत्तर पूछयो; एटले राणी बोली–' जे साथे बळी मुवो ते पाछो साथे जीवतो थयो ते तो तेनो भाई थाय, जेणे तेने जीवाडी ते तेनो पिता थाय, अने जे उपवास करीने त्यांज रह्यो हतो ते तेणीनो पति थाय. '

दासीए बीजी वार्त्ता कहेवाने कह्युं, एटले राणी बोली–' एक हाथना प्रमाणवाळा प्रासादमां चार हाथना देव रहेला छे. ' दासी बोली–' ते केवी रीते संभवे ? ' राणीए कह्युं–' ते काले कहीश. ' ते जाणवाना कौतुकथी राजाए तेने त्रीजे दिवसे पण वारो आप्यो. रात्रे राणीए उत्तर आप्यो के " एक हाथना देवालयमां चार हाथना देव रहे ते चतुर्भुज देव समजवा. चार हाथ ऊंचा समजवा नहि. '

आप्रमाणे नवी नवी वार्त्ताओ कहीने ते चतुर राणीए राजाने छ मास सुधी पोताना वासगृहमां बोलाव्या. आथी तेनी सपत्नीओ ईर्षा वडे तेणीनां छिद्रो जोवा लागी. नवी राणी हमेशां संध्याकाळे पोताना ओरडामां पेसी पोतानी पूर्वावस्थामां पोताना पिता तरफथी मळेलां लुगडां पोते पहेरती ते वस्त्राभूषण आगळ मूकी पोताना आत्मानी निंदा करती के " हे जीव ! आ तारी मूळ संपत्ति छे, तुं एक कारीगरनी पुत्री छे, तने राजाए स्वीकारी तेथी तुं गर्व करीश नहि. " आप्रमाणे करती तेनी सपत्नीओना जोवामां आवतां तेणीओए राजाने कह्युं–' तमारी नवी राणी हमेशां कांईक कामण करे छे. ' राजाए एकांते रही ते सर्व जोयुं अने सांभळ्युं तेथी ते घणो खुशी थयो, अने तेने पोतानी पट्टराणी करी.

आ वार्त्तानो भावार्थ एवो छे के मुनिए आत्मनिंदा करवी. सागराचार्य विगेरेनी जेम गर्व करवो नहि. एवो गर्व करतां कालिकाचार्ये ते सागरचंद्र मुनिने घणे कष्टे प्रतिबोध्या हता.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ पंचपंचाशदधिकशततमः प्रबंधः ॥ १५५ ॥

व्याख्यान १५६ मुं.

प्रतिक्रमणना पर्याय.

प्रतिक्रमणनुं सातमुं पर्यायनाम गर्हा छे, ते पण पूर्वनी जेम प्रशस्त अने अप्रशस्त एवा बे भेदवाळुं छे. तेमां द्रव्यगर्हा विषे एक दृष्टांत छे. ते नीचे प्रमाणे—

कोई वृद्ध उपाध्यायने तरुण स्त्री हती. ते नर्मदा नदीनी सामेना तट उपर रहेनारा कोई गोवाळीआनी साथे आसक्त थई हती. तेथी हमेशां रात्रे घडावडे नर्मदा उतरीने ते गोपनी पासे जती हती. ते कुलटा एवी मायावी हती के दिवसे 'हुं कागडाना शब्दथी भय पामुं छुं' एम पोताना वृद्ध पतिने जणावती हती; तेथी वृद्ध उपाध्याय ज्यारे ते स्त्री दिवसे कागडाने बलि आपती त्यारे तेनी रक्षा माटे पोताना छात्रोने (विद्यार्थीओने) मोकलता हता. कोई वार पाठकजी तेणीने कहेता के अमुक पुरुषने बोलाव, त्यारे ते कहेती के हुं अन्य पुरुष साथे बोली जाणती नथी; एटले पाठकजी पोते ते पुरुषने बोलावता. ते स्त्रीनी आवी चेष्टा जोई कोई एक चतुर विद्यार्थीए विचार्युं के सरलतानुं लक्षण आटलुं बधुं होय नहि आ स्त्री वधारा पडतो डोळ करे छे. कह्युं छे के—

> अत्याचारमनाचारमत्यार्जवमनार्जवम् ॥
> अतिशौचमशौचं च, षड्विधं कूटलक्षणम् ॥ १ ॥

"ज्यां अतिआचार बताववामां आवतो होय त्यां अनाचार होय छे, ज्यां अतिसरलता बताववामां आवती होय छे त्यां सरलता होती नथी; अने ज्यां अतिपवित्रता बताववामां आवे छे त्यां पवित्रता होती नथी; एटले अतिआचार, अनाचार, अतिसरलता, असरलता, अतिपवित्रता अने अपवित्रता ए छए कूट (माठां अथवा खोटां) लक्षण छे." आप्रमाणे विचारी ते विद्यार्थी तेनी चर्चा जोवा लाग्यो. एक वखते ते स्त्री रात्रे नर्मदा उतरती हती, तेवामां नठारे आरे उतरता चोर लोकोने मगरे पकड्या. ते जोई ते स्त्रीए कह्युं-'अरे पुरुषो ! तमे एवे नठारे आरे शा माटे उतर्या ? हजु पण ते मगरनी आंखो ढांकी द्यो एटले ते तमने छोडी देशे. तेनां आवां वचन सांभळी पेला छात्रे विचार्युं के अहो ! आ स्त्रीनी हिंमत तो जुओ !

आ बधी चेष्टा प्रत्यक्ष जोईने ते विद्यार्थी घेर आव्यो. बीजे दिवसे ज्यारे ते कागडाने बलि आपतां भय पामवानो डोळ करवा लागी त्यारे ते विद्यार्थी बोल्यो—

दिवा बिभेति काकेभ्यो, रात्रौ तरति नर्मदाम् ॥
कुतीर्थान्यपि जानासि, जलजंत्वक्षिरोधनम् ॥ १ ॥

" दिवसे कागडाथी बीए छे ने रात्रे नर्मदा तरे छे, सारा अने नठारा आरा-जाणे छे अने जळजंतुनी आंखो मींचवानो उपाय पण जाणे छे. "

आप्रमाणे सांभळी ते स्त्री बोली—' शुं करीए, अहीं तारा जेवा युवान पुरुष मारी ईच्छा करता नथी, तेथी त्यां जवुं पडे छे. ' विद्यार्थी बोल्यो—' हुं शुं करुं, तारा पतिनो मने भय लागे छे. ' पछी ते स्त्री पोताना पाठक पतिने मारी एक पेटीमां नांखी तेने मूकी देवा वनमां गई. त्यां वनमां कोई व्यंतरीए ते पेटी तेना मस्तक साथे स्तंभित करी दीधी. पछी ते वनमां भमवा लागी, अने उपरथी मांस तेनी उपर गळवा लाग्युं. आवी असह्य पीडाथी पीडित अने क्षुधातुर थई सती ते घेरघेर आत्म-निंदा करती कहेवा लागी के " पतिने हणनारी आ नीच स्त्रीने भिक्षा आपो. " एवी रीते तेणीए घणो काळ निर्गमन कर्यो. एक वखते कोई साध्वीने पगे लागवा जतां तेणीना मस्तक उपरथी पेटी पडी गई, एटले तेणीए तत्काळ चारित्र ग्रहण कर्युं.

आ दृष्टांत उपरथी उत्तम प्राणीओए निरंतर दुष्टकृत्यनी गर्हा करवी.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ षट्पंचाशदधिकशततमः प्रबंधः ॥ १५६ ॥

व्याख्यान १५७ मुं.

प्रतिक्रमणना पर्याय.

प्रतिक्रमणनुं आठमुं पर्यायनाम शुद्धि छे. शुद्धिनो अर्थ निर्मळ करवुं एवो थाय छे. तेना पण प्रशस्त ने अप्रशस्त एवा बे भेद छे. ज्ञानादिकनी शुद्धि ते प्रशस्त, अने-

अज्ञान अथवा क्रोधादिकनी स्पष्टता ते अप्रशस्त. तेमां पण क्रोधादि रुप मळने दूर करी आत्माने निर्मळ करवो ए प्रशस्त शुद्धि छे. शुद्धिविषे वस्त्रनुं ने वैद्यनुं एम वे दृष्टांत छे, ते नीचे प्रमाणे-

श्रेणिक राजाए वे वस्त्र कोई रजकने धोवा माटे आप्यां हतां. तेवामां कौमुदी महोत्सव आवतां ते रजके पोतानी बे स्त्रीओने ते पहेराव्यां. श्रेणिक राजाए महोत्सवमां ते वस्त्रो जोवाथी ओळख्यां, एटले एंधाणी राखवा माटे ते वस्त्र उपर तांबूल छांट्युं. रजके ते तांबूलना डाघने खारा विगेरेथी दूर करी प्रातःकाळे ते वस्त्र राजा पासे जईने आप्यां. राजाए रजकने पूछयुं-' आ वस्त्रनी शुद्धि विषे जे बन्युं होय ते यथार्थ कहे. ' एटले रजके यथार्थ कही दीधुं; तेथी राजाए तेनो सत्कार कर्यो. आ द्रव्यशुद्धि जाणवी.

ए प्रमाणे साधु अने श्रावके जे अतिचार लाग्या होय तेनी उपासकदशांगसूत्रमां कहेला सुरदेव तथा चुल्लशतक श्रावकनी जेम तत्काळ शुद्धि करवी.

सुरदेव श्रावकना संबंधमां एवी वार्ता छे के वाराणसी नगरीनो निवासी सुरदेव श्रावक एक वखते पोषधशाळामां पोसह लईने रहेलो हतो. त्यां कोई देवताए आवीने कह्युं के ' जो तुं जैनधर्मनो त्याग करीश नहि तो तारा शरीरमां एक साथे महारोग उत्पन्न करीश. ' देवतानां आवां भयकारी वचनथी ते पोतानी प्रतिज्ञाथी चलित थई गयो. पछी श्री वीरप्रभुनी पासे जई तेनी आलोचना करी, अने प्रतिक्रमण करी निर्मळ थई सुधर्म देवलोके गयो. त्यां चार पल्योपमनुं आयुष्य पूरुं करी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपदने पामशे. आ भावशुद्धि जाणवी.

शुद्धि विषे बीजुं वैद्यनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे-

कोई राजाए पोतानी उपर शत्रुनुं सैन्य चडी आववाथी तेनो नाश करवाने माटे कोई वैद्य पासेथी विष मंगाव्युं. वैद्य जवना दाणा जेटलुं विष लईने राजा पासे आव्यो. राजा तेटलुंज विष जोई तेना उपर कोपायमान थयो. वैद्य बोल्यो-' महाराजा ! कोप करो नहि, आ सहस्रघाति विष छे. ' पछी तेनी परीक्षा करवाने माटे एक मरेला हाथीनुं रुवांडुं उपाडी तेमां ते मूक्युं; एटले ते हाथीनुं सर्व शरीर विषमय थई गयुं. वैद्ये जणाव्युं के जे आ हाथीनुं भक्षण करशे अथवा स्पर्श करशे ते सर्व विषमय थई जशे. राजाए पूछयुं-' आ विष उतारवानुं औषध पण छे ? ' वैद्य कह्युं-' हा छे. ' पछी तेवा औषधनो एक जवमात्र भाग मूकवाथी ते हस्ती निर्विष थई गयो. आ प्रमाणे वैद्यनी जेम साधुए पण आलोचना रुप औषध वडे अतिचार रुप विषने उतारी शुद्धि करवी.

आ प्रतिक्रमणना आठ पर्याय श्री हरिभद्रसूरिए करेली श्री आवश्यकसूत्रनी टीकाने आधारे (कर्ता कहे छे) भे लख्या छे; तेथी तेने यथार्थ रीते जाणीने क्रिया करवी.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्तपंचाशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१५७॥

व्याख्यान १५८ मुं.

पौषध ईर्यावही पडिकमीने थाय.

प्रतिक्रमणश्रुतस्कंधमिर्यापथिकं तथा ॥
प्रतिक्रम्य क्रिया सर्वा, विधेया पौषधादिकाः ॥ १ ॥

" प्रतिक्रमणश्रुतस्कंध जे ईर्यापथिक ते पडिकमीने पौषध विगेरे सर्व क्रियाओ करवी. "

इर्यापथिकनुं बीजुं नाम प्रतिक्रमणश्रुतस्कंध एवुं छे. ते पडिकमीने सर्व क्रियाओ करवी. ते विषे श्रीविवाहचूलिकामां कह्युं छे के " वस्त्र तथा आभूषण विगेरे मूकी दइ ईर्यावही पडिकमवा पूर्वक मुहपत्ति पडीलेहीने पछी चार प्रकारनो पौषध करे. "

श्री आवश्यकचूर्णिमां पण कह्युं छे के " त्यां ढड्ढर नामे श्रावक देहचिंता करीने उपाश्रये आवे. आवीने दूरथीज त्रण निसिहि कही गृहव्यापारनो त्रिविध निषेध करी मोटे स्वरे इर्यापथिकी पडिकमे. " तथा श्रीभगवती सूत्रमां पण पुष्कलि श्रावकना अधिकारमां कहेलुं छे, तेथी पोसह लेतां प्रथम ईर्यापथिकी पडिकमवी जोइए.

ईरियावहीमां पांचशें ने त्रेसठ प्रकारना जीवोने मिथ्या दुष्कृत अपाय छे. ते जीवोनी संख्या आ प्रमाणे छे—सात प्रकारना नारकीना जीवना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ने बे भेद गणतां चौद प्रकार थाय छे. पांच प्रकारना स्थावर जीवना पर्याप्ता, अपर्याप्ता, सूक्ष्म अने बादर एम चार भेद वडे वीश प्रकार थाय छे. प्रत्येक वनस्पति कायना पर्याप्त ने अपर्याप्त एम बे भेद छे. विकलेंद्रिय ते बेइंद्री, तेइंद्री ने चौरेंद्री जीवना

पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे बे भेद होवाथी छ भेद थाय छे. जलचर, स्थलचर, खेचर, उरःपरिसर्प अने भुजपरिसर्प-ए पांच प्रकारना तिर्यंच पंचेंद्रीना संज्ञी ने असंज्ञी तथा पर्याप्ता ने अपर्याप्ता एम चार चार भेद होवाथी वीश भेद थाय छे. एकंदर थावरथी मांडीने अडताळीश भेद तिर्यंचना थाय छे. पंदर कर्मभूमिना अने त्रीश अकर्मभूमिना तथा छप्पन अंतरद्वीपना, एवी रीते बधा मळीने एकसो ने एक भेद मनुष्यना थाय छे. तेमां गर्भजना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एवा बे भेद होवाथी बसो ने बे भेद थाय छे. तेमां क्षेत्रज संमूर्छिम अपर्याप्तानो एकसो ने एक भेद मेळववाथी मनुष्यना त्रणसो ने त्रण भेद थाय छे. भुवनपतिना दश, व्यंतरना सोळ, चर अने स्थिर भेदे ज्योतिषीना दश, वैमानिकना बार, ग्रैवेयकना नव, अनुत्तरना पांच, लोकांतिकना नव, किल्बिषीकना त्रण, पांच भरत अने पांच ऐरवतना मळी दश वैताढ्यपर रहेनारा तिर्यक् जृंभकना दश अने परमाधार्मिकना पंदर, एम कुल मळीने देवताना नवाणु भेद छे; तेना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे बे भेद गणतां एकसो ने अठाणु भेद थाय छे. एकंदर चारे गतिना गणतां बधा मळीने पांचसो ने त्रेसठ भेद थाय छे.

५६३ जीवभेदने अभिहया विगेरे दश पदे गुणतां ५६३०, तेने रागद्वेषे गुणतां ११२६०, तेने त्रण योग वडे गुणतां ३३७८०, तेने त्रण करण वडे गुणतां १०१३४०, तेने त्रण काळ आश्री गुणतां ३०४०२० भेद थाय छे. तेमने अरिहंत, सिद्ध, साधु, देव, गुरु अने आत्मानी साक्षीए गुणतां अढार लाख, चोवीश हजार, एकसो ने वीश थाय छे. ते विषे कह्युं छे के " अढार लाख, चोवीश हजार, एकसो ने वीश एटलुं ईर्यावहीना मिच्छादुक्कडनुं प्रमाण सूत्रमां कह्युं छे."

ईर्यापथिकी पडिकमतां त्रणवार पग मूकवानी भूमि प्रमार्जीने सम्यक् प्रकारना मन वडे अतिमुक्त मुनिनी जेम ईर्यावही पडिकमवा. अतिमुक्त मुनिनी कथा आप्रमाणे—

पोलासपुर नामना नगरमां विजय राजा अने श्रीदेवी राणीने अतिमुक्त नामे पुत्र हतो. ते छ वर्षनो थयो तेवामां एक वखते श्रीगौतमस्वामी छठने पारणे गोचरीए जता हता. तेमने जोईने ते पुत्रे पूछ्युं—' तमे कोण छो ? अने केम फरो छो ? ' गणधरे कह्युं—' वत्स ! अमे साधु छीए, अने भिक्षा माटे फरीए छीए. ' अतिमुक्ते कह्युं—' भगवन् ! चालो पधारो, हुं तमने भिक्षा अपावुं. ' आप्रमाणे कही भगवंतने आंगळिए पकडी राजकुमार पोताने घेर तेडी लाव्यो. मुनिने आवेला जोई श्रीदेवी राणी बहु खुशी थया, अने तेमने प्रतिलाभित कर्या. बाळ छतां बुद्धिथी अबाळ

१ संमूर्छिम मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्तपणामाज मरण पामे छे, तेथी तेनो एकज भेद छे.

एवा ते कुमारे फरीथी गौतमस्वामीने पूछ्युं–' भगवन् ! आप क्यां रहो छो? ' गणधर बोल्या–' भद्र ! अमे श्रीवीरपरमात्मा जे अमारा गुरु छे तेनी पासे रहीए छीए.' कुमार बोल्यो–' शुं तमारे पण बीजा गुरु छे ? चालो, तमारी साथे हुं तेमनी पासे आवुं. ' गणधर बोल्या–' यथासुखं देवानुप्रिय (हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो). ' पछी ते अतिमुक्त कुमार भगवंतनी पासे आव्यो. भगवंतने नमस्कार करी धर्म सांभळी पाछो घेर आवी मातापिताने कहेवा लाग्यो–" हे मातापिता ! हुं आ संसारथी निर्वेद (खेद) पाम्यो छुं, माटे मने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपो." माता पिता बोल्या–" वत्स ! तुं बाळक छे, दीक्षा केवी होय ते तुं शुं जाणे ? " कुमार बोल्यो–" माता पिता ! जे हुं जाणुं छुं ते नथी जाणतो, जे नथी जाणतो ते जाणुं छुं. " मातापिताए कह्युं–' ते केवी रीते ? ' कुमार बोल्यो–" जे हुं जाणुं छुं ते एके जे जन्म्यो ते अवश्य मरवानो; " पण हुं नथी जाणतो के ' ते क्यां अने केवी रीते मरवानो ? ' तेमज हुं नथी जाणतो के ' केवां कर्मथी जीव नरकादिकमां उत्पन्न थाय छे ? ' पण हुं जाणुं छुं के " जीव पोतानां करेलां कर्म वडेज गतिने पामनारो छे. " आ प्रमाणे अनेक युक्तिथी कुमारे मातापिताने समजाव्या. पछी मातापिताए करेला महोत्सव वडे अतिमुक्त कुमारे श्रीवीरप्रभु पासे दीक्षा लीधी. प्रभुए तेने शिक्षण आपवा माटे स्थविरोने भळावी दीधो.

एक वखते अतिमुक्त मुनि स्थविर साथे स्थंडिल गया हता. मार्गमां प्रथम मेघवृष्टि थवाथी बाळको खाडामां भरायेला जळ उपर खाखरानां पांदडानां नावडां करी तरावतां हतां, अने मारुं नाव तरे छे एम बोलतां हतां. ते जोई अतिमुक्त मुनिए पण पोतानुं पात्र पाणीमां मूकी तरावता सता कह्युं के ' जुओ, आ मारुं नाव पण तरे छे. ' ते जोई स्थविरे तेने तेम करतां वार्या. पछी केटलाक साधुओए श्रीवीरप्रभुने कह्युं के " भगवन् ! आ छ वर्षनो बाळक जीवरक्षा करवानुं शी रीते जाणी शके ? हमणा तो ते षट्कायजीवनुं उपमर्दन करे छे. " श्रीवीरप्रभु बोल्या–" हे मुनिओ ! तमे ते बाळकनी हीलना करशो नहि, तेने समजावीने भणावो. ते तमारी पहेलां केवळी थशे. " आप्रमाणे सांभळीने सर्व मुनिओए ते बाळसाधुने खमाव्या.

पठन करता एवा ते बाळमुनि थोडा समयमां एकादशांगी भणी गया. एक वखते मार्गमां पूर्वेनी जेम बाळकोने नावनी क्रीडा करतां जोई पोतानी पूर्वे करेली क्रीडाने निंदता थका समोसरणमां आव्या. त्यां ईर्यापथिकी पडिकमतां तेना अर्थनी भावना करता दगमट्टी ए पद वडे पोते करेल सचित्त पाणि अने मृत्तिकानी विराधनाने संभारी संभारी महीं करवा लाग्या. ते वखते शुक्ल ध्यानना वशपणाथी तत्काळ

घातिकर्मने खपावीने केवली थया. देवताओ तेमनो महोत्सव करवाने आव्या. ते समये श्रीवीरप्रभुए कह्युं-' अहो स्थविरो ! जुओ, आ नव वर्षनो बाळक केवली थयो. ' पछी सर्वेए मळी तेमने वंदना करी.

श्री अंतगडसूत्रमां अने भगवतीजीमां जेनुं वर्णन करेल छे ते आ मुनि संभळाय छे, अने अनुत्तरोपपातिकसूत्रमां जे अतिमुक्तमुनि कहेल छे ते यादव चरित्रमां वर्णवेल छे ते अतिमुक्त हशे एम लागे छे.

" अतिमुक्त मुनिए छ वर्षनी वये श्रीवीरप्रभु पासे दीक्षा लीधी, अने नव वर्षनी वय थतां ईर्यापथिकीनो अर्थ विचारतां तेमने केवळ ज्ञान थयुं, तेमज सिद्धिसुखने पाम्या."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टपंचाशदधिकशततमः प्रबंधः ॥ १५८ ॥

व्याख्यान १५९ मुं.

पौषधव्रतना अतिचार.

उत्सर्गादानसंस्ताराः अनवेक्ष्याप्रमार्ज्य च ।
अनादरः स्मृत्यनुपस्थापनं चेति पौषधे ॥ १ ॥

भावार्थ

" १ त्यजवुं, २ लेवुं, ३ संथारो करवो-तेमां बराबर जुए नहि अने प्रमार्जे नहि, ४ क्रियामां आदर न राखे अने ५ क्रियाना समयने संभारे नहि-ए पौषधव्रतना पांच अतिचार छे. "

विस्तरार्थ

उत्सर्ग एटले लघुनित वडिनित विगेरेनो त्याग करवामां जुए नहि एटले जीव जंतुथी आकुल एवी भूमिने तपासे नहि, तेमज रजोहरण विगेरेथी प्रमार्जे नहि, एटले विशुद्धिने माटे प्रतिलेखना करे नहि; ते समये ते कार्यमां प्रतिलेखना प्रमार्जना करवी जोईए. ते न करवाथी अतिचार लागे ते प्रथम अतिचार जाणवो.

आदान एटले लेवुं-उपलक्षणथी मूकवुं अर्थात् दंड, पाट, पाटला विगेरे लेवा तथा मूकवामां बराबर जोवुं अने पुंजवुं जोईए; जो तेम न करे तो अतिचार लागे ते बीजो अतिचार जाणवो.

पौषधव्रत लेनाराए रात्रिए डाभ, घास, कांबल के वस्त्र विगेरेथी संथारो करवो जोईए; ते करवामां जुए नहि के पुंजे नहि तो तेथी अतिचार लागे ते त्रीजो अतिचार जाणवो.

पौषधव्रत लेवामां अनादर करे अने ते व्रत संबंधी क्रियाने योग्य अवसरे संभारे नहि तेथी अतिचार लागे ते चोथो अने पांचमो अतिचार जाणवो.

बीजा ग्रंथमां पांचमो अतिचार जुदी रीते कहेलो छे, ते आप्रमाणे-पौषधव्रतमां विधिविपरीत वर्तवुं-एटले पौषधव्रत लईने तेने बराबर न पाळवुं, अर्थात् आहार पौषध कर्ये सते क्षुधातापादिकनी पीडाथी एवुं विचारे के "आ पोसह पूरो थशे एटले हुं मारे माटे अमुक अमुक आहारादिक करावीने खाईश." आ प्रमाणे विचारवाथी जे अतिचार लागे ते पांचमो अतिचार जाणवो.

सातिचार पौषधव्रत उपर नंदमणिकार श्रेष्ठीनी कथा श्रीज्ञाता सूत्रना तेरमा अध्ययन उपरथी अहीं किंचित् मात्र लखीए छीए.

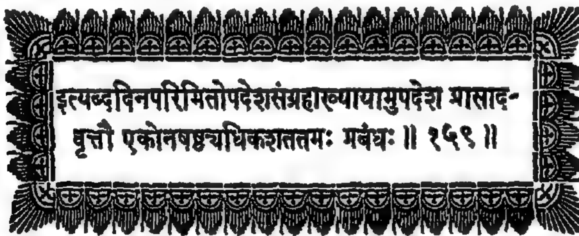
नंदमणिकारनी कथा.

राजगृही नगरीमां श्री वीरप्रभुना समवसरणमां प्रथम देवलोकनो निवासी दर्दुरांक नामे देव सूर्याभ देवनी जेम प्रभुनी भक्ति करीने स्वर्गे गयो, ते वखते श्री गौतम स्वामीए प्रभुने पूछयुं के 'आ देवताए कया पुण्यथी आवी समृद्धि प्राप्त करी?' प्रभु बोल्या-" राजगृही नगरीमां नंदमणिकार नामे श्रेष्ठी हतो. तेणे अमारी पासे श्रावकधर्म ग्रहण कर्यो. एक वखते ग्रीष्म ऋतुमां तेणे अष्टम तपयुक्त पौषधव्रत ग्रहण कर्युं. जळरहित करेला ते त्रण उपवासमां ते श्रेष्ठीने तृषा लागी, एटले तेणे चिंतव्युं के "जेओ पोताना नामथी वावो के कूवाओ करावे छे तेओने धन्य छे." पोसह पार्या पछी ते श्रेष्ठीए अन्यदा श्रेणिकराजानी आज्ञा लईने नगरनी बहार नंदवापिका नामनी चार मुखवाळी एक वाव करावी. तेनी चारे दिशाओमां चार उपवन कराव्या. घणा लोको तेना सौंदर्यनी प्रशंसा करवा लाग्या. ते सांभळीने श्रेष्ठीने सहज हर्ष थई आव्यो. अनुक्रमे भावथी मिथ्यात्व रूप रोग अने द्रव्यथी सोळ प्रकारना रोग ते श्रेष्ठीने लागु पड्या. अनेक वैद्योए व्याधिना प्रतिकार माटे उपचारो कर्या, पण ते बधा निष्फळ गया. छेवटे ते नंदश्रेष्ठी मृत्यु पाम्यो, अने ते नंदवापिकामांज गर्भज देडको थयो. तेमां क्रीडा करतां ते दर्दुरने घणा लोकोनां मुखथी ते वापिकानुं वर्णन

सांभळतां जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी ते आत्मनिंदा करवा लाग्यो-' अरे! मने धिक्कार छे! में सर्व व्रतोनी विराधना करी; हवे ते व्रत पाछां आ भवमां स्वीकारुं.' आवो विचार करी तेणे पोतानी बुद्धिथी अभिग्रह लीधो के 'आजथी निरंतर छठ्ठ छठ्ठनी तपस्या करी पारणुं करवुं, अने पाणी पण नंदापुष्करणीमां नहावाथी घणा लोकोना पसीना विगेरे मेल पडवाने लीधे कलुषित थईने प्रासुक थयेलुं होय तेज वापरवुं.' आ प्रमाणे वर्तवानो निश्चय कर्यो, तेवामां लोकोनां मुखथी श्री वीरप्रभुनुं आगमन सांभळी पोते वंदना करवा माटे चाल्यो. मार्गमां श्रेणिक राजाना अश्वना डाबा पग नीचे दबायो; तेथी तरतज एकांते जई नमुथ्थुणं इत्यादि स्तुति वडे धर्माचार्यने नमी सर्व पापने आलोवी मृत्यु पामी सौधर्म देवलोकमां दर्दुरांक नामे देवता थयो. ते देव अहीं आव्यो हतो. हे गौतम! तेणे पूर्वभवमां करेला शुभध्यानादिथी आवी संपत्ति प्राप्त करी छे. हवे ते चार पल्योपमनुं आयुष्य पूर्ण करी महाविदेहक्षेत्रमां मनुष्य थई भवनो क्षय करीने मोक्षे जशे."

पूर्वे आ ग्रंथमां दर्दुरांक देवनुं जे वृत्तांत लखेलुं छे ते चरित्र ग्रंथने अनुसारे जाणवुं.

"नंदमणिकार श्रेष्ठी देडकानो अवतार व्रतभंगवडे पामी तेमां जातिस्मरण प्राप्त करी पूर्वपापनी आलोचना करीने दर्दुरांक नामे देवता थयो."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेश प्रासाद-
वृत्तौ एकोनषष्ट्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १५९ ॥

व्याख्यान १६० मुं.

पौषधव्रत करनारनी स्तुति.

धर्मपौषधमाराध्य, सम्यक् सागरचंद्रमाः ॥
समाधिना विपन्नोऽभूत्, त्रिदिवे त्रिदिवोत्तमः ॥ १ ॥

भावार्थ

" सागरचंद्र सम्यक् प्रकारे पौषधव्रतनी आराधना करी समाधिथी मृत्यु पामीने स्वर्गमां उत्तम देवता थया हता."

सागरचंद्रनी कथा.

द्वारावतीमां बळदेवना पुत्र निषधने सागरचंद्र नामे पुत्र थयो हतो. ते नगरमां रहेनारा धनसेन राजानी कमलामेला नामे पुत्री उग्रसेनना पुत्र नभसेनने आपी हती. एक वखते नारद नभसेनने घेर जई चड्या. ते वखते नभसेननुं चित्त विवाहकार्यमां व्यग्र हतुं, तेथी तेणे नारदनुं सन्मानादि कांई कर्युं नहि; आथी नारदने क्रोध थयो. एटले त्यांथी सागरचंद्रनी पासे आवीने कह्युं के ' धनसेननी पुत्री कमलामेलाना जेवुं स्वरुप त्रिभुवनमां कोई कन्यानुं नथी. ' ते सांभळी सागरचंद्र बोल्यो-' ते कन्या कोईने अपाई चुकी छे ? ' नारदे कह्युं-' अपाई चूकी छे, पण हजु सुधी परणावी नथी. ' ते सांभळी ते दिवसथी सागरचंद्र कमलामेलानुं नामज जपवा लाग्यो. त्यांथी नारदऋषि कमलानी पासे आव्या. कमलाए पूछयुं-' कांई पण आश्चर्य जोवामां आव्युं होय तो कहो. ' नारदे कह्युं-' में सागरचंद्रमां सुरुप जोयुं, अने नभसेनमां कुरुप जोयुं. ' ते सांभळतांज कमलामेला सागरचंद्रनी रागी थई, अने हमेशां तेनुंज ध्यान करवा लागी.

एक वखते सांबकुमार सागरचंद्रने चिंतासागरमां मग्न थयेल जोई तेनी पछवाडे आवी बे हाथवडे तेनी आंखो बंध करी उभो रह्यो. सागरचंद्रे कह्युं-' कोण कमलामेला?' सांबे कह्युं-' हुं तो कमलामेळक छुं, अर्थात् कमलाने मेळवी आपनार छुं. ' स्वर उपरथी सांबने ओळखी सागरचंद्रे कह्युं-' भद्र ! ए वात सत्य छे; कमळपत्र समान दीर्घ लोचनवाळी ए कमलामेलाने तुंज मेळवी आपीश. ए कार्यमां तारा शिवाय बीजो कोई समर्थ नथी. ' पछी सांबकुमार तेम करवा वचनथी बंधाई गयेल होवाथी तेणे प्रद्युम्न पासेथी वचनना छळ वडे प्रज्ञप्ति विद्या मागी लीधी. पछी ज्यारे कमलामेलाना लग्ननो दिवस आव्यो त्यारे सांबे तेनुं प्रज्ञप्ति विद्यावडे आकर्षण कर्युं, अने घणा यादवो सहित ते कन्याने उद्यानमां लई गयो. त्यां सागरचंद्रनी साथे तेनुं पाणिग्रहण कराव्युं. कन्याना पिताना अने श्वसुरना पक्षवाळाओ तेनी शोध करवा लाग्या. शोध करतां तेमणे ' तेने कोई विद्याधर हरी गयो छे अने उद्यानमां छे ' एम जाण्युं; एटले तेओए कृष्णनी पासे आवी फरियाद करी. कृष्ण क्रोधायमान थईने सैन्य सहित उद्यानमां आव्या. त्यां सांबे वैक्रियलब्धिथी अनेक रूप करीने कृष्णनी साथे मोटुं युद्ध कर्युं. छेवटे सांब मूळरुप करीने कृष्णने चरणे पडयो. कृष्णे ए कन्या सागरचंद्रने आपी. त्यारथी नभसेन सागरचंद्र उपर द्वेष राखी तेना छळ शोधवा लाग्यो.

अन्यदा सागरचंद्रे श्रीनेमिप्रभुनी पासे श्रावक व्रत अंगीकार कर्यां अने वैराग्यवंत थयो. एकदा पर्वदिवसे पौषधव्रत लई स्मशानमां कायोत्सर्गे रह्यो; तेवामां दैवयोगे

नभसेन फरतो फरतो त्यां आवी चड्यो. तेणे सागरचंद्रने दीठो. एटले तत्काळ ते पापीए अंगारानी भरेली एक ठीब तेना माथा उपर मूकी. आ उपसर्ग सहन करतां सागरचंद्रनी काया बळी गई. ते मृत्यु पामीने आठमा देवलोकमां देवता थयो.

" भावना रुप जळथी सिंचन थयेला तेना हृदयमां दुष्कृत रुप अग्नि पेसी शक्यो नहिं; तेथी धर्मरुप समुद्रना कल्लोल वडे वृद्धि पामतो सागरचंद्र आठमा देवलोकमां देव संबंधी सुख प्रत्ये पाम्यो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ पष्ठ्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६० ॥

व्याख्यान १६१ मुं.

पौषधव्रतनुं फळ.

विधेयः सर्वपापानां, मथनायैव पौषधः ॥
सद्यः फलत्यसौ शुद्ध्या, महाशतकश्रेष्ठिवत् ॥ १ ॥

भावार्थ

" सर्व पापनुं मथन करवाने माटे पौषध व्रत अवश्य करवुं योग्य छे. ए व्रत शुद्धि वडे करवाथी महाशतक श्रेष्ठीनी जेम तत्काळ फळे छे. "

विशेषार्थ

पौषध सर्व पापाश्रवनो निरोध करवाना हेतुभूत छे. ते व्रत बराबर पाळवाथी अगियार व्रत सारी रीते पाळेला गणाय छे. ते पौषध जो शुद्धि सहित एटले योगशुद्धि, क्रियाशुद्धि अने ध्यानशुद्धि विगेरे युक्त करवामां आवे तो तत्काळ फळ आपे छे.

ध्यानशुद्धिनुं लक्षण आप्रमाणे छे—

नेत्रद्वंद्वे श्रवणयुगले नासिकाग्रे ललाटे ।
वक्त्रे नाभौ शिरसि हृदये तालवे भ्रूयुगांते ॥
ध्यानस्थानान्यमलमतिभिः कीर्तितान्यत्र देहे ।
तेष्वेकस्मिन् विगतविषयं चित्तमालंबनीयम् ॥ १ ॥

" बे नेत्रमां, बे कानमां, नासिकाना अग्र भागे, ललाटमां, मुख उपर, नाभि उपर, मस्तक उपर, हृदय उपर, ताळवे अने बे भ्रगुटीमां–एटलां स्थानो आ देहमां ध्यान करवानां विद्वानोए कहेलां छे. तेमांथी एकनी अंदर बीजा विषयथी दूर करेलां चित्तने जोडी देवुं, अर्थात् चित्तवडे तेमांना एक स्थाननुं आलंबन करवुं."

आप्रमाणे ध्यानना स्थानमां चित्तने स्थापन करी एकासने पौषधव्रत करीने बेसवुं. पौषधव्रतना फळ विषे कहेलुं छे के " कंचनमणिनां पगथीआंवाळुं हजारो स्तंभ वडे उन्नत अने सुवर्णना तळीआवाळुं देरासर करावे, तेनाथी पण तपसंयम अधिक छे. " एक मुहूर्त मात्र सामायिकमां " बाणवइकोडिओ " ए गाथामां कह्यो छे तेटलो लाभ प्राप्त थाय छे. ते गाथा अगाउ सामायिकना संबंधमां कही गया छीए. तेथी त्रीश मुहूर्तना प्रमाणवाळा अहोरात्रना पौषधथी त्रीश गणो लाभ बाह्यवृत्तिथी थाय छे. ते आ प्रमाणे—सत्यावीशशें ने सत्योतेर क्रोड, सत्योतेर लाख, सत्योतेर हजार, सातसो ने सत्योतेर अने $\frac{7}{9}$ (२७७७७७७७७७$\frac{7}{9}$) एटला पल्योपमना देवगतिना आयुष्यनो बंध एक पौषधथी थाय छे. सूक्ष्म रीते जोतां तेथी अधिक पण थाय छे. आवुं पौषधव्रत पौषध करनारने महाशतक श्रेष्ठीनी जेम सद्य फळ आपे छे. तेनी कथा आप्रमाणे—

महाशतक श्रेष्ठीनी कथा.

राजगृह नगरमां महाशतक नामे एक गृहस्थ हतो. तेने तेर स्त्रीओ हती. तेमां रेवती नामे एक स्त्री बहु कनिष्ट हती. ते बार गोकुलनी मालेक हती. बीजी स्त्रीओ एक एक गोकुलनी मालेक हती. रेवती बार कोटि सुवर्णनी स्वामिनी हती, अने बीजी बार स्त्रीओ एक एक कोटि सुवर्णनी स्वामिनी हती. महाशतक शेठ पण अनेक कोटि सुवर्ण अने अनेक गोकुलनो अधिपति हतो.

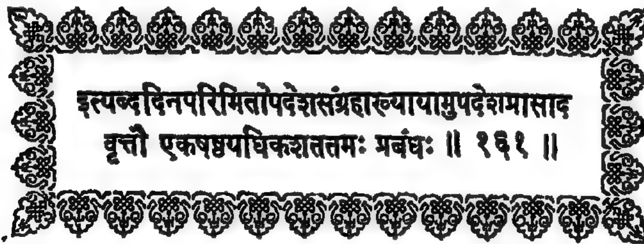
एकदा महाशतक शेठे श्रीवीरप्रभुनी देशना सांभळी प्रतिबोध पामी बार व्रत अंगीकार कर्यां. चौद वर्ष श्रावक धर्मनुं आराधन कर्या पछी उपासक प्रतिमाने वहन करतां ते शेठने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं.

रेवती हमेशां पोतानी सपत्नीओ उपर द्वेष राखती हती. अनुक्रमे पोतानी सर्व शोक्योने झेर विगेरे प्रयोगथी मारी नांखीने पोते सर्वस्व मालेक थई, अने नित्य मद्यमांसनुं सेवन करवा लागी. एक वखते पोताना शरीरमां तीव्र कामोत्पत्ति करवा माटे सेवकनी पासे कोई तरतना जन्मेला बाळकने मंगावी तेनी हिंसा करावीने तेना मांसने संस्कार करावी तेणे भक्षण कर्युं, अने ते उपर मदिरानुं पान कर्युं; आथी ते अतिशय

कामपीडित थई. पछी पौषध शालामां ज्यां पोतानो स्वामी पौषध व्रत लईने रहेलो छे त्यां गई, अने पोतानो केशपाश छूटो मूकी स्तन, साथळ, उदर, जघन अने दांत विगेरे अंगने कांईक दर्शावती सती निर्लज्ज थईने कामक्रीडातुरपणे कहेवा लागी— ' हे स्वामी ! आ पौषधव्रत छोडी दो; मारी साथे कामक्रीडा करो. धर्मनुं फळ भोगनो संयोग अने तेनो अवियोगज छे ' आप्रमाणे अनुकूळ उपसर्ग थतां पण जेनुं मन अचळ छे एवा श्रेष्ठीए कह्युं—" हे पापिणी ! धर्मना फळने अधर्ममां केम जोडे छे? अहींथी दूर जा. वळी सांभळ, तुं आजथी सातमे दिवसे मृत्यु पामी पहेली नारकीमां चोराशी हजार वर्षने आउखे उत्पन्न थईश. " आप्रमाणे सांभळी ते विलखी थईने पोताने स्थाने चाली गई; अने सात दिवस पछी मरण पामीने पहेली नारकीमां उत्पन्न थई.

महाशतक श्रेष्ठी वीश वर्ष सुधी श्रावकधर्म पाळी अंते संलेखना करी मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोके देवता थयो. विस्तारथी आ कथा वर्द्धमानदेशनामांथी जाणी लेवी.

" महाशतक श्रेष्ठीए पौषधादि व्रत करवा वडे त्रीजुं ज्ञान प्राप्त करी आ जन्ममांज तेनुं शुभ फळ प्राप्त कर्युं, अने बीजा जन्ममां प्रथम देवलोकने प्राप्त करी अनुक्रमे केवळ ज्ञान मेळवी महाविदेह क्षेत्रमां मोक्षरुप फळने पामशे. "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ एकषष्ठ्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६१ ॥

व्याख्यान १६२ मुं.

चोथा शिक्षाव्रत अतिथिसंविभागनुं स्वरुप.

सदा चान्नादि संप्राप्ते, साधूनां दानपूर्वकम् ॥
भुज्यते यत्तदतिथि-संविभागाभिधं व्रतम् ॥ १ ॥

भावार्थ.

हमेशां अन्नादिकनी सामग्री प्राप्त थतां जे गृहस्थ साधुओने दान देवा पूर्वक तेनो उपभोग करे ते अतिथिसंविभाग नामे चोथुं शिक्षाव्रत छे. "

अतिथिनुं स्वरुप आप्रमाणे—

तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना ॥
अतिथिं तं विजानीयाच्छेपमभ्यागतं विदुः ॥ १ ॥

" जे महात्माए तिथि, पर्व, उत्सव विगेरे सर्वनो त्याग करेलो होय ते अतिथि कहेवाय छे; बाकीना अभ्यागत कहेवाय छे. " एवा अतिथिने ' सम् ' एटले आधाकर्मादि बेंतालीश दोषथी रहित, ' वि ' एटले विशिष्ट एवो ' भाग ' एटले पश्चात्कर्म (पाछुं फरी करवुं न पडे) विगेरे दोष टाळीने अन्ननो अंश जे आपवो ते संविभाग कहेवाय छे; ते नामनुं व्रत ते अतिथिसंविभाग नामे व्रत कहेवाय छे. तेनो विधि श्री आवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्तिमां आप्रमाणे कहेल छे के " सामाचारी श्रावके तो नियमा पोसह पारी साधुने अन्नदान आपीने पछी पच्चख्खाण पारवुं बीजाओने माटे एवो नियम नथी, तेथी ते दान आपीने पच्चख्खाण पारे अथवा पच्चख्खाण पारीने दान आपे. "

श्रावक ज्यारे भोजननी वेळा थाय त्यारे भक्तिपूर्वक साधुने निमंत्रण करी तेमने लईने घेर आवे; अने जो मुनि स्वेच्छाए घेर आव्या होय तो तेमने जोतांज तेमनी सामे जवा विगेरे विनय करे. पछी बाळ,वृद्ध, तपस्वी के ग्लान विगेरेने विनय सहित अने स्पर्धा, महत्ता, मत्सर, स्नेह, लज्जा, भय, दाक्षिण्य, प्रत्युपकारनी इच्छा, माया, विलंब, अनादर अने पश्चात्ताप विगेरे दानदोषोथी वर्जित एवुं दान, एकांत आत्माने तारवानी बुद्धिथी पोते पोताने हाथे पात्र लईने आपे, अथवा पडखे उभा रही पोतानी स्त्री प्रमुख द्वारा दान अपे. (गृहस्थने वर्जवा योग्य जे दोषो छे ते पिंडविशुद्धि विगेरे ग्रंथोथी जाणी लेवा.) ते प्रमाणे दान आप्या पछी वंदना करीने पोताना घरना द्वार सुधी अथवा छेटे सुधी पाछळ जईने पाछो वळे. जो साधुनो अभाव होय तो वादळ विना वृष्टिनी जेम कदि अकस्मात् साधुनुं आववुं थाय त्यारे हर्ष भर अंबिका श्राविका विगेरेनी जेम दान आपवुं. तेनी कथा नीचे प्रमाणे—

अंबिका श्राविकानी कथा.

गिरनार पर्वतनी नजीक आवेला एक शेहेरमां देवभट्ट नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने देविला नामे स्त्री थकी सोमभट्ट नामे पुत्र थयो हतो. तेने अंबिका नामे स्त्री हती. ते श्रावककुळमां उत्पन्न थई हती. तेने स्वभावेज दान धर्म उपर विशेष प्रीति हती. ते दंपतीने सिद्ध अने बुद्ध नामे बे पुत्र थया हता.

एक वखते श्राद्धना दिवसे अंबिकाए कोई मासक्षपणी साधुने भक्तिशुद्ध आनंदथी अन्न वहोराव्युं. तेने दान आपती जोई तेनी कोई पाडोशण गाढ स्वरथी कहेवा लागी-'अरे! आजे श्राद्धने दिवसे अंबिकाए मलिन साधुने पहेलुं दान आप्युं; तेथी श्राद्धनुं अन्न तथा घर बंने अपवित्र कर्यां.' आ प्रमाणे ते नठारी पाडोशण वधारे बडबडवा लागी. तेज कारणथी शास्त्रमां कह्युं छे के "सारा पाडोशमां निवास करवो." यतः

स्वामिवंचकलुब्धानामृषिस्त्रीबालघातिनाम्॥
इच्छन्नात्महितं धीमान्, प्रातिवेश्मकतां त्यजेत्॥ १ ॥

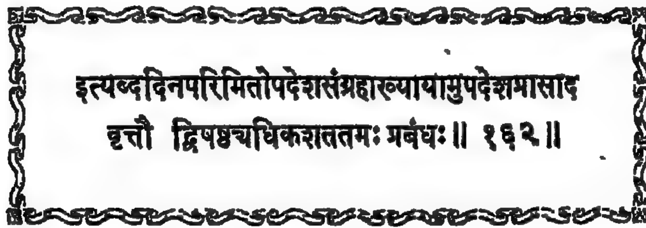
अर्थ-" स्वामीने ठगनार, लुब्ध अने मुनि स्त्री तथा बाळकनी हत्या करनारानी पाडोशमां आत्महित ईच्छनार बुद्धिमान् पुरुषे रहेवुं नहि." हवे अंबिकानी सासु बहार गई हती ते थोडी वारमां आवी; तेनी आगळ पेली पाडोशणे ते बधी हकीकत कही दीधी. ते सांभळी सासुए क्रोध करी पोताना पुत्र सोमभट्टने ते विषे कह्युं. सोम भट्ट अंबिका उपर धसी आव्यो अने बोल्यो-'अरे पापिणी! तें आ शुं कर्युं? हजु कुळदेवतानी पूजा करी नथी तेम पितृओने पिंड पण आप्या नथी, ते पहेलां मलिन साधुने दान केम आप्युं? जा, मारा घरमांथी नीकळ.' अंबिका पोताना बे पुत्र सिद्ध बुद्धने लई घरना बीजा द्वारथी नीकळी गई. कोई ठेकाणे स्थान न मळवाथी नगरनी बहार चाली. मार्गे चालतां थाकी गयेला बंने पुत्रोने तृषा लागी, तेमणे वारंवार जळ मागवा मांड्युं, पण जळ मळ्युं नहि. आगळ जतां एक सुकायेल सरोवर हतुं, ते अंबिकाना शीलना माहात्म्यथी जळ वडे भराई गयुं, अने एक शुष्क थयेल आम्रवृक्ष फळवाळो थई गयो. अंबिकाए पुत्रोने जळ पाई हाथमां आम्रफळ आप्यां, अने तेनी शीतळ छाया नीचे विसामो खावा बेठी.

अहीं अंबिकानी सासु घरमां गई. अंदर जुए छे तो मुनिने दान आपवा लीधेलां पात्रो सुवर्णनां, भात मोतीना दाणा अने भोजन उपर शिखा चडेली विगेरे जोवामां आव्युं. ते जोई हर्ष पामती ते पुत्रने कहेवा लागी-'वत्स! अंबिका वधू खरेखरी पतिव्रता छे, माटे तेनी पछवाडे जई तेने पाछी लई आव. सोमभट्ट पण तेणीनुं माहात्म्य प्रत्यक्ष जोई पश्चात्ताप करतो पछवाडे चाल्यो. दूरथी पतिने आवतो जोई अंबिका पुत्र साथे भय पामीने नजीकमां एक कूवो हतो तेमां पडी. श्रीनेमिप्रभुनुं शरण करीने मृत्यु पामवाथी ते कोहंड विमानने विषे मोटी समृद्धिवाळी अंबिका नामे देवी थई. ते विषे पूर्वपूज्योए कहेलुं छे के "सारा अध्यवसाये प्राण त्यजीने अंबिका देवी थई." बीजा वळी एम कहे छे के "गिरनारना शिखर उपरथी झंपापात करी मृत्यु पामीने ते सौधर्म

देवलोकनी नीचे चार योजन कोहंड नामे विमान छे तेमां अंबिका नामे महार्द्धिक देवी थई. ते देवीने चार भुजा छे, दक्षिणा बे हाथमां आंबानी लुम धारण करेली छे, अने डाबा हाथमां बे पुत्र अने अंकुश राखेला छे."

अंबिकानो पति सोमभट्ट पण पोतानी स्त्रीने कूवामां पडेली जोई लोकापवादथी भय पामी " जेतुं शरण मारी स्त्रीए कर्युं तेतुं शरण मारं पण हजो " एम कही तेज कूवामां पड्यो. ते मृत्यु पामीने तेज विमानमां अंबिकानुं वाहन सिंहरूप थयो.

" जे देवीने मुनिदानना प्रभावथी पीतळनां पात्रो सुवर्णनां थई गयां, पोतानो देह पण सुवर्ण सरखी कांतिवाळो थई गयो, अने परभवमां देवी थई ते प्रभुनी भक्त अंबिका देवीने हुं नमन करूं छुं."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ द्विषष्ट्यधिकशततमः प्रबंधः॥ १६२॥

व्याख्यान १६३ मुं.

हजु चोथुं शिक्षाव्रत अतिथिसंविभागज वर्णवे छे.

अतिथिभ्योऽशनावासवासः पात्रादिवस्तुनः ।
तत्प्रदानं तदतिथिसंविभागव्रतं भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ

" अतिथिने अन्न, निवास, वस्त्र अने पात्र विगेरे वस्तुओनुं दान करवुं ते अतिथिसंविभाग नामे व्रत कहेवाय छे.

विस्तरार्थ

जेमने संसारी तिथिपर्वोत्सव नथी ते अतिथि कहेवाय छे, अथवा हिरा, माणेक, सुवर्ण, धन अने धान्यमां जेने लोभ नथी ते अतिथि कहेवाय छे. आवा अतिथि मुख्यपणे चारित्रधारी मुनि कहेवाय छे. तेमने अन्न, वस्त्र, निवास अने पात्र विगेरेनुं दान करवुं ते अतिथिसंविभाग व्रत कहेवाय छे. श्राद्धसमाचारीमां लखे छे के "ज्यां साधुओनुं आवागमन होय, ज्यां जिनमंदिर होय अने ज्यां डाह्या साधर्मी बंधु रहेता होय, त्यां

श्रावके निवास करवो. " श्रावकने प्रभाते देवगुरुने प्रणाम कर्या विना जळपान पण कल्पे नहि. गृहस्थ भोजन वखते उपाश्रये जई गुरुने निमंत्री भक्तिपूर्वक निर्दोष अन्नदान आपे, पण अनादरथी आपे नहि. कह्युं छे के—

अनादरोविलंबश्च, वैमुखं विप्रियं वचः ॥
पश्चात्तापश्च दातुः स्याव, दानदूषणपंचकं ॥ १ ॥

" अनादर, विलंब, मुख बगाडवुं, अप्रिय वचन बोलवुं अने पश्चात्ताप करवो–ए पांच दाता संबंधी दानना दूषणो छे " तथा—

आनंदाश्रूणि रोमांच, बहुमानं प्रियं वचः ॥
तथानुमोदना पात्रे, दानभूषणपंचकम् ॥ १ ॥

" आनंदना अश्रु आवे, रोमांच खडा थाय, बहु मान करे, प्रिय वचन बोले, अने पात्रनी अनुमोदना करे–ए पांच दानना आभूषण छे. " आत्माने तारवानी बुद्धिथी दान आपीने पछी जमवुं ते देवभोजन छे, अने ते शिवायनुं प्रेतभोजन छे.

दानमां पण जे सुपात्रदान छे ते मोटां फळने आपनारुं छे कह्युं छे के—

दानं धर्मपुरोविष्णुः तच्च पात्रे प्रतिष्ठितम् ॥
मौक्तिकं जायते स्वाति–वारि शुक्तिगतं यथा ॥ १ ॥

" धर्ममां दानधर्म महातेजस्वी छे; ते जो सुपात्रे आप्युं होय तो स्वातिनक्षत्रनुं छीपमां पडेलुं जळ जेम मोती थाय छे तेम ते सफळ थाय छे. " वळी कह्युं छे के—

केसिं च होइ वित्तं, चित्तं केसिंपि उभयमन्नेसिं ॥
चित्तं वित्तं च पत्तं च, तिन्नि पुन्नेहिं लभंति ॥ १ ॥

" कोईने वित्त (धन) होय, कोईने चित्त होय अने कोईने ते बंने वानां होय; पण चित्त, वित्त ने पात्र ए त्रण वानां तो पुण्य वडेज प्राप्त थाय छे. " ते उपर एक दृष्टांत छे के– कोई दानथी पराङ्मुख एवो राजा मोटा अरण्यमां जई चड्यो; त्यां मधना बिंदु जेमांथी गळी रह्या छे अने माखीओनो बणबणाट थई रह्यो छे एवो मधपुडो तेना जोवामां आव्यो. ते जोई राजाए त्यां आवी चडेला पंडितोने पूछ्युं के 'आ मधपुडो केम रडे छे ?' एटले तेओमांथी एक पंडित राजाने प्रतिबोध करवा बोल्यो–" राजन् ! ज्यारे पात्र मळे छे त्यारे वित्त होतुं नथी, अने ज्यारे वित्त होय छे त्यारे सारुं पात्र मळतुं नथी; आवी चिंतामां पडेलो मधपुडो अश्रुपात करी रुदन

करे छे, एम मने लागे छे. आ वचन सांभळ्यां त्यारथी ते राजा सत्पात्रने दान आपवामां तत्पर थयो.

कर्ण राजा घणो दातार हतो. दान करवाथी मोक्ष विगेरे सुख मळे छे एवुं मानी ते हमेशा प्रभाते सो भार सुवर्ण आपीने पछी सिंहासनथी उठतो हतो. एक वखते राजा कर्णने सत्पात्रने दान आपवानी इच्छा थई. ते दिवसे प्रभाते कोई बे चारण के जेमां एक श्रावक हतो अने एक मिथ्यात्व धर्मथी वासित हतो ते प्रथम आव्या. तेमने जोई कर्णे विचार्युं के आजे मारे प्रथम सत्पात्रने दान आपवुं छे; कारण के तेथी सद्गति मळे छे. कह्युं छे के—

अन्नदातुरधस्तीर्थंकरोपि कुरुते करं ।
तच्च दानं भवेत् पात्रदत्तं बहुफलं यतः ॥ १ ॥

" अन्न आपनारना हाथ नीचे तीर्थंकर पण हाथ धरे छे. तेवुं दान जो पात्रने आपेलुं होय तो ते महाफळ आपे छे. " आवा विचारथी पात्रनी परीक्षा करवा माटे कर्णे दान आप्युं नहि; एटलामां तेमांथी एक चारण बोल्यो—

पत्तं परिक्खह किं करह, दिज्जओ मंग्गंताह ।
वरसंतह किं अंबुदह, जोई समविसमाह ॥ १ ॥

" राजा कर्ण ! पात्रनी परीक्षा शुं करो छो ? जे मागवा आवे तेने आपो; वरसाद वर्षे छे ते शुं सारुं स्थान के नठारुं स्थान जोइने वर्षे छे ? " ते सांभळी कर्णे कह्युं—

वरसो वरसो अंबुदह, वरसीडां फळ जोय ।
धंतुरे विष ईक्षु रस, एवडो अंतर होय ॥ १ ॥

" वरसाद भले ज्यां त्यां वरसो, पण तेनां फळ जुओ. धंतुराने विषे विष थाय छे, अने शेलडीमां अमृत जेवो रस थाय छे. एटलो अंतर कुपात्र ने सुपात्र दानमां समजवो. "

सर्व दानमां अन्ननुं दान अति मोटुं छे. कह्युं छे के—

सर्वेषां चैव भूतानामन्नैः प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
तेनान्नदो विशां श्रेष्ठः प्राणदाता स्मृतो बुधैः ॥ १ ॥

" सर्व प्राणीओना प्राण अन्न वडेज रहेला छे तेथी अन्नदान करनार पृथ्वीमां श्रेष्ठ छे, अने तेने विद्वानो प्राणदाता कहे छे. " वळी " प्राणीओना प्राण अन्न छे,

श्रावके निवास करवो." श्रावकने प्रभाते देवगुरुने प्रणाम कर्या विना जळपान पण कल्पे नहि. गृहस्थ भोजन वखते उपाश्रये जई गुरुने निमंत्री भक्तिपूर्वक निर्दोष अन्नदान आपे, पण अनादरथी आपे नहि. कह्युं छे के—

अनादरोविलंबश्च, वैमुखं विप्रियं वचः ॥
पश्चात्तापश्च दातुः स्याव, दानदूषणपंचकं ॥ १ ॥

" अनादर, विलंब, मुख बगाडवुं, अप्रिय वचन बोलवुं अने पश्चात्ताप करवो–ए पांच दाता संबंधी दानना दूषणो छे " तथा—

आनंदाश्रूणि रोमांच, बहुमानं प्रियं वचः ॥
तथानुमोदना पात्रे, दानभूषणपंचकम् ॥ १ ॥

" आनंदना अश्रु आवे, रोमांच खडा थाय, बहु मान करे, प्रिय वचन बोले, अने पात्रनी अनुमोदना करे–ए पांच दानना आभूषण छे." आत्माने तारवानी बुद्धिथी दान आपीने पछी जमवुं ते देवभोजन छे, अने ते शिवायनुं प्रेतभोजन छे.

दानमां पण जे सुपात्रदान छे ते मोटां फळने आपनारुं छे कह्युं छे के—

दानं धर्मपुरोविष्णुः तच्च पात्रे प्रतिष्ठितम् ॥
मौक्तिकं जायते स्वाति–वारि शुक्तिगतं यथा ॥ १ ॥

" धर्ममां दानधर्म महातेजस्वी छे; ते जो सुपात्रे आप्युं होय तो स्वातिनक्षत्रनुं छीपमां पडेलुं जळ जेम मोती थाय छे तेम ते सफळ थाय छे." वळी कह्युं छे के—

केसिं च होइ वित्तं, चित्तं केसिंपि उभयमन्नेसिं ॥
चित्तं वित्तं च पत्तं च, तिन्नि पुन्नेहिं लब्भंति ॥ १ ॥

" कोईने वित्त (धन) होय, कोईने चित्त होय अने कोईने ते बंने वानां होय; पण चित्त, वित्त ने पात्र ए त्रण वानां तो पुण्य वडेज प्राप्त थाय छे." ते उपर एक दृष्टांत छे के– कोई दानथी पराङ्मुख एवो राजा मोटा अरण्यमां जई चड्यो; त्यां मधना बिंदु जेमांथी गळी रह्या छे अने माखीओनो बणबणाट थई रह्यो छे एवो मधपुडो तेना जोवामां आव्यो. ते जोई राजाए त्यां आवी चडेला पंडितोने पूछ्युं के 'आ मधपुडो केम रडे छे ?' एटले तेओमांथी एक पंडित राजाने प्रतिबोध करवा बोल्यो–" राजन् ! ज्यारे पात्र मळे छे त्यारे वित्त होतुं नथी, अने ज्यारे वित्त होय छे त्यारे सारुं पात्र मळतुं नथी; आवी चिंतामां पडेलो मधपुडो अश्रुपात करी रुदन

करे छे, एम मने लागे छे. आ वचन सांभळ्यां त्यारथी ते राजा सत्पात्रने दान आपवामां तत्पर थयो.

कर्ण राजा घणो दातार हतो. दान करवाथी मोक्ष विगेरे सुख मळे छे एवुं मानी ते हमेशा प्रभाते सो भार सुवर्ण आपीने पछी सिंहासनथी उठतो हतो. एक वखते राजा कर्णने सत्पात्रने दान आपवानी इच्छा थई. ते दिवसे प्रभाते कोई बे चारण के जेमां एक श्रावक हतो अने एक मिथ्यात्व धर्मथी वासित हतो ते प्रथम आव्या. तेमने जोई कर्णे विचार्युं के आजे मारे प्रथम सत्पात्रने दान आपवुं छे; कारण के तेथी सद्गति मळे छे. कह्युं छे के—

अन्नदातुरधस्तीर्थंकरोपि कुरुते करं ।
तच्च दानं भवेत् पात्रदत्तं बहुफलं यतः ॥ १ ॥

" अन्न आपनारना हाथ नीचे तीर्थंकर पण हाथ धरे छे. तेवुं दान जो पात्रने आपेलुं होय तो ते महाफळ आपे छे. " आवा विचारथी पात्रनी परीक्षा करवा माटे कर्णे दान आप्युं नहि; एटलामां तेमांथी एक चारण बोल्यो—

पत्तं परिक्खह किं करह, दिज्जाओ मंग्गंताह ।
वरसंतह किं अंबुदह, जोई समविसमाह ॥ १ ॥

" राजा कर्ण ! पात्रनी परीक्षा शुं करो छो ? जे मागवा आवे तेने आपो; वरसाद वर्षे छे ते शुं सारुं स्थान के नठारुं स्थान जोइने वर्षे छे ? " ते सांभळी कर्णे कह्युं—

वरसो वरसो अंबुदह, वरसीडां फळ जोय ।
धंतुरे विष ईक्षु रस, एवडो अंतर होय ॥ १ ॥

" वरसाद भले ज्यां त्यां वरसो, पण तेनां फळ जुओ. धंतुराने विषे विष थाय छे, अने शेलडीमां अमृत जेवो रस थाय छे. एटलो अंतर कुपात्र ने सुपात्र दानमां समजवो. "

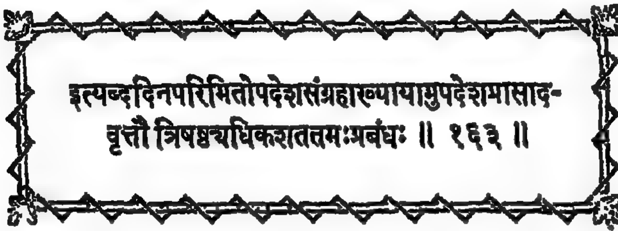
सर्व दानमां अन्ननुं दान अति मोटुं छे. कह्युं छे के—

सर्वेषां चैव भूतानामन्नैः प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
तेनान्नदो विशां श्रेष्ठः प्राणदाता स्मृतो बुधैः ॥ १ ॥

" सर्व प्राणीओना प्राण अन्न वडेज रहेला छे तेथी अन्नदान करनार पृथ्वीमां श्रेष्ठ छे, अने तेने विद्वानो प्राणदाता कहे छे. " वळी " प्राणीओना प्राण अन्न छे,

अन्न तेज अने सुखनो सागर छे; तेथी अन्नदान जेवुं कोइ वीजुं दान थयुं नथी अने थशे पण नहि." "पात्रमां सर्वथी उत्तम पात्र मुनि छे, मध्यम पात्र उत्तम श्रावक छे, अने जघन्य पात्र अविरति सम्यग्दृष्टि छे." सत्पात्रनो योग थाय तो तेने आपीने पछी जमवुं, अने जो तेवो योग न थाय तो भोजन वखते घरनी बहार आवी दिशावलोकन[1] करीने पछी जमवुं. आप्रमाणे अतिथिने आपेलुं स्वल्प दान पण चंदनबाला, श्रेयांस अने नयसार[2]नी जेम बहु फळने आपनारुं थाय छे.

जेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रण रत्नना योगे तत्काळ मोक्ष मळे छे, तेमज शुद्ध चित्त, वित्त अने पात्र ए त्रणना योगे पण मोक्ष प्राप्त थाय छे.


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्रिषष्ट्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६३ ॥

व्याख्यान १६४ मुं.

मुनिदाननुं वर्णन.

पश्य संगमको नाम, संपदं वत्सपालकः ।
चमत्कारकरीं प्राप, मुनिदानप्रभावतः ॥ १ ॥

भावार्थ

"जुओ, मुनिदानना प्रभावथी संगमक नामे वत्सपाल चमत्कार पमाडे तेवी संपत्तिने पाम्यो हतो."

संगमकनी कथा.

राजगृह नगरनी नजीक आवेला एक शालि नामना ग्राममां धन्या नामे एक गरीब स्त्री रहेती हती. तेने संगम नामे एक पुत्र हतो. आ पुत्र गामनी गायोने अने वाछरडाओने चारतो हतो. एक दिवस पर्वदिवस आववाथी सर्वत्र खीरना भोजन जमतां लोकोने जोई ए गरीब बाळके पोतानी माता पासे आवी खीरनी याचना करी. माताए कह्युं–'वत्स! आपणा घरमां खीर नथी.' तो पण बाळक हठ करी वारंवार

१ भाग्ययोगे कोई मुनि अकस्मात् आवी चडे तो लाभ मळी जाय, तेटला माटे चारे तरफ जोवुं.
२ महावीरस्वामीना २७ मा भवमां पहेले भवे जेमणे मुनिदान आप्युं हतुं ते नयसार.

भागवा लाग्यो. पुत्रनी इच्छा पार न पडवाथी माताए पण रुदन करवा मांड्युं. तेने रुदन करती जोई आसपासनी पाडोशणो भेगी थई, अने तेनं रोवानुं कारण पूछ्युं तेणीए बधी हकीकत पाडोशणोने जणावी. पाडोशणोने दया आवी, एटले दूध विगेरे खीरनी बधी सामग्री तेओए लावी आपी. धन्याए खीर बनावी तेनो थाळ भरी संगम पुत्रने आप्यो, अने पोते कोई कार्य प्रसंगे घरनी बहार गई.

खीरनो थाळ जोई ते पुण्यवान् बाळकने विचार थयो के 'जो आ अवसरे कोई मुनि आवे तो तेमने वहोरावीने पछी बाकीनी खीर हुं जमुं तो ठीक थाय.' दैवयोगे तेवामां कोई मासना उपवासवाळा मुनि तेने घेर आवी चड्या. संगमे मुनिने जोता ज तेमनुं वर्णन करतां उल्लासथी खीरनो थाळ उपाडी 'हुं तरी गयो' एवी बुद्धि वडे बधी खीर मुनिने वहोरावी दीधी. दयाळु मुनिए ते क्षीर वडे पारणुं कर्युं मुनि गया पछी धन्या आवी; तेने मुनि संबंधी कांई खबर नहोती, तेथी तेणीए जाण्युं के पुत्र बधी खीर जमी गयो जणाय छे तेथी फरीवार तेणे खीर पीरसी संगमे कंठ सुधी ते खाधी; पण रात्रिए तेने पची नहि, तेथी विशूचिका थवाथी ते मृत्यु पामी गयो. मुनिदानना प्रभावथी ते राजगृह नगरमां गोभद्र श्रेष्ठीनी भद्रा नामे स्त्रीना उदरमां अवतर्यो. ते समये भद्राए स्वप्नमां पाकेलुं शाळीनुं क्षेत्र जोयुं. पूर्ण समय थतां पुत्ररत्ननो प्रसव थयो. गोभद्र शेठे स्वप्नने अनुसारे तेनुं नाम शालिभद्र पाड्युं. पाच धात्रीओए लालनपालन करातो ते पुत्र कल्पवृक्षनी जेम वृद्धि पाम्यो. पिताए सर्व कळाओनो अभ्यास कराव्यो. शालिभद्र युवान थयो, एटले गोभद्र शेठे मोटा उत्सवथी तेने मोटा शेठीआओनी बत्रीश कन्याओ परणावी. देवीओनी साथे इंद्रनी जेम शालिभद्र ते स्त्रीओ साथे विलास करवा लाग्यो. रमणीओना विलासमां मग्न थयेला शालिभद्रने रात्रि के दिवसना अंतरनी पण खबर पडती नहोती.

एक वखत श्रीवीर प्रभुनी देशना सांभळी गोभद्र शेठने वैराग्य थयो; तेथी श्रीवीर प्रभुना चरणमां चारित्र अंगीकार करी अनशन करीने स्वर्गे गयो. त्यां अवधिज्ञानथी गोभद्र देवे पुत्रवात्सल्यने लीधे तेमज तेना पुण्यना आकर्षणथी कल्पवृक्षनी जेम प्रतिदिवस दिव्यवस्त्र, अलंकार अने सुगंधी पदार्थो स्त्रीसहित पुत्रने[1] अर्पण करवा मांड्या. घर संबंधी उचित सर्व कार्य तो भद्रामाता करवा लाग्या. शालिभद्र तो केवल भोगसुखनेज अनुभववा लाग्यो.

एक दिवसे केटलाएक रत्नकंबलना व्यापारीओ राजगृह नगरमां आव्या. तेओए रत्नकंबल वेचवा माटे श्रेणिक राजाने बताव्यां; पण ते मूल्यमां अति मोंघां होवाथी

---

१ बत्रीश स्त्रीओ ने शालिभद्र माटे ३३–३३ पेटी वस्त्र, अलंकार ने सुगंधी पदार्थोनी दररोज आपतो हतो

श्रेणिके लीधां नहि. पछी ते व्यापारीओ शालिभद्रने घेर आव्या. त्यां गोभद्र शेठनी स्त्री भद्राए माग्युं मूल्य आपी ते खरीद कर्यां. आ वृत्तांत जाणी चेलणा राणीए श्रेणिक पासे एक रत्नकंबलनी मागणी करी. पछी श्रेणिके ते व्यापारीओने बोलावी एक रत्नकंबल वेचाण माग्युं. व्यापारीओ बोल्या–' भद्रा शेठाणीए बधां रत्नकंबल खरीदी लीधां छे, हवे अमारी पासे एक पण नथी.' ते सांभळी आश्चर्य पामेला श्रेणिक राजाए एक रत्नकंबल मूल्यथी लेवा माटे एक सेवकने भद्रा पासे मोकल्यो. तेणे जई भद्रा पासे तेनी मागणी करी. भद्रा बोली–'हे सेवक ! ते १६ रत्नकंबलना बत्रीश खंड करी मारा पुत्रनी स्त्रीओना ते वडे पग लुंछी नाखी दीधां छे; जो राजाने तेनी जरुर होय तो तुं तेमने पूछीने आ नाखी दीधेला खंड लई जा.' सेवके जईने राजा श्रेणिकने ते प्रमाणे कह्युं. ते सांभळी राजा अति आश्चर्य पाम्यो, अने ते शेठना पुत्रने जोवानी इच्छा करी. तेनी माता भद्राने बोलावीने कह्युं–' भद्रे ! तमारा पुत्रने देखाडो, मारे जोवानी इच्छा छे.' भद्रा बोली–' राजेंद्र ! मारो पुत्र माखणना जेवो सुकोमल छे, ते कदि पण घरनी बहार नीकळतो नथी, घरमांज क्रीडा करे छे; माटे आप कृपा करी मारे घेर पधारी अनुग्रह करो.'

राजाए भद्राने घेर आववानुं कबुल कर्युं. एक वखते राजा शालिभद्रने घेर गया. त्यां तेना घरनो वैभव जोतांज राजा विस्मय पामी गयो. घरमां पेसतां अनुक्रमे पहेली,बीजी अने त्रीजी भूमिकामां गयो. त्यां नवरंगित अभिनव देखावो नजरे पड्या. पछी चोथी भूमिकामां जई सिंहासन उपर बेठा; एटले भद्रा सातमी भूमिकामां ज्यां पोतानो पुत्र रहेतो हतो त्यां जईने कहेवा लागी–'पुत्र ! आपणे घेर श्रेणिक आवेल छे, माटे तुं जाते आवीने तेमने जो.' शालिभद्रे जाण्युं के श्रेणिक नामनी कांईक वस्तु हशे; तेथी ते बोल्यो–' माता ! तमे तेनुं जे कहे ते मूल्य आपीने तेने घरना खुणामां मूकी दो.' भद्रा बोली–' वत्स ! श्रेणिक नामे कांई खरीदवा योग्य वस्तु नथी, पण ते तो आपणा स्वामी श्रेणिक राजा छे.' ते सांभळी शालिभद्र विचारमां पड्यो–' शुं मारी उपर पण बीजो कोई राजा छे ? अरे ! आ संसारसुखने धिक्कार छे !' एम संवेग धरतो शालिभद्र माताना आग्रहथी पोतानी स्त्रीओ सहित राजा श्रेणिक पासे आव्यो, अने विनयथी राजाने नमन कर्युं. राजा श्रेणिके तेने पोताना खोळामां बेसारी कुशलता पूछी. राजाना उत्संगमां बेठेला शालिभद्रने अग्निना संयोगथी मीणना पिंडनी जेम ओगळी जतो जोई भद्राए राजाने कह्युं–' देव ! मारा पुत्रने छोडी दो; ते मनुष्य छे, पण मनुष्यना समूहनो गंध सहन करी शकतो नथी. कारण के दिव्य भूमिमां गयेला तेना पिता त्यांथी दिव्य वस्त्र, अलंकार अने चंदन पुष्पादि

१ (के ? रत्नकंबलनुं सवालाख द्रव्य–तेवा १६ रत्नकंबल हता ते बधा खरी द्या.)

दिव्य पदार्थो मोकले छे, तेनो ते भोक्ता छे.' पछी राजाए तेने छोडी दीधो, एटले शालिभद्र सातमी भूमिए गयो.

भद्राए आग्रह करी श्रेणिक राजाने भोजननुं आमंत्रण कर्युं; स्नाननो समय थतां राजा शालिभद्रना घरनी वापिकामां स्नान करवा गयो. त्यां राजाना हाथनी आंगळीमांथी मुद्रिका वापिकाना जळमां पडी गई. राजा आम तेम तेने शोधवा लाग्यो, एटले भद्राए दासीने आज्ञा करी के 'वापिकानुं जळ दूर करी राजानी मुद्रिका शोधी आप.' दासीए तेम कर्युं, एटले पोतानी मुद्रिका बीजां दिव्य आभरणोनी मध्यमां जाणे कोलसानी होय तेवी देखावा लागी राजाए कह्युं–'आ शुं?' एटले दासी बोली–'स्वामी! ए निर्माल्य छे. हमेशां अमारा स्वामी शालिभद्र स्त्रीओ सहित स्नान करती वखते पोतानां आभरणो आ वापिकामां नाखी दे छे, अने नवां धारण करे छे.' ते सांभळी राजा श्रेणिके चिंतव्युं के 'हुं पण धन्य छुं के जेना नगरमां आवा धनाढ्यो वसे छे.' पछी राजाए परिवार सहित त्यां भोजन कर्युं. भद्राए वस्त्राभूषणथी सत्कार करेलो राजा पोताना महेलमां आव्यो.

अहिं शालिभद्रने संसारना अनित्य सुख तरफ वैराग्य उत्पन्न थयो हतो. ते समये तेना धर्ममित्रे आवीने जणाव्युं के 'हे मित्र! आ नगरमां चतुर्ज्ञानधारी धर्मघोष नामे मुनीश्वर आवेला छे.' ते सांभळी शालिभद्र उत्सुक थई गुरु पासे गयो, अने प्रणाम करी अवग्रह धारीने बेठो. ते समये मुनिराजनी देशना आ प्रमाणे सांभळी—

ज्ञानविज्ञानलावण्यरूपवर्णवपुर्बलं ।
क्षीयमाणं खलस्नेह इव याति दिनेदिने ॥ १ ॥

"ज्ञान, विज्ञान, लावण्य, रुप, वर्ण अने शरीरनुं बळ, खळ पुरुषना स्नेहनी जेम दिवसे दिवसे क्षय पामतुं जाय छे." आवी देशना सांभळी शालिभद्रे गुरुने पूछ्युं–'हे भगवन्! केवां कर्म करवाथी आपणी उपर बीजो स्वामी न थाय?' गुरु बोल्या–'भद्र! आ जिनदीक्षाना प्रभावथी बीजा जन्ममां प्राणी सर्व जगत्नो स्वामी थाय छे.' शालिभद्रे कह्युं–'प्रभु! जो तेम होय तो हुं पण घरे जई मारी मातानी रजा लई तमारी पासे आवी व्रत ग्रहण करीश.' गुरुए कह्युं–'वत्स! प्रमादी थशो नहि.' आ प्रमाणे शिक्षा आपेला शालिभद्रे घेर आवी भद्राने विज्ञप्ति करी–'माता! आजे में श्री धर्मघोष मुनिना मुखथी अनादि दुःखमांथी छोडावनार अने परमानंदयुक्त स्वाभाविक सुखने आपनार श्री जिनधर्म सांभळ्यो. आ संसारमां साररूप तेज छे, माटे तमारी आज्ञाथी हुं दीक्षा लईश.' माता बोली–'वत्स!

तने व्रत लेवानी वासना थई ते युक्त छे, पण केशनो लोच, भूमि उपर शयन, सडताळीश दोष रहित आहार, पंच महाव्रतनो भार अने परीसहो सहन करवा–इत्यादि क्रिया करवाने तुं समर्थ केम थईश ? ' शालिभद्रे कह्युं–' माता ! चिंतामणिरत्न समान चारित्ररत्नने पामीने कागडाने उडाडवा माटे मूर्खोज ते नाखी दे. ' आवुं पुत्रनुं सामर्थ्य जाणी भद्राए कह्युं–' वत्स ! जो व्रत लेवानी इच्छा होय तो प्रथम थोडे थोडे पुष्पशय्या स्त्रीभोग विगेरे तजतो जा, तेम करवाथी व्रत पाळवानो अभ्यास थशे. ' आ प्रमाणे मातानी आज्ञा सांभळी शालिभद्रे हमेशा एक स्त्रीसहित एकेक पुष्पशय्या तजवा मांडी.

ते नगरमां शोभनिक धन्य नामे शालिभद्रनी नानी बहेननो स्वामी रहेतो हतो. एक वखते शालिभद्रनी बहेन अश्रुपात करती पोताना पतिने स्नान करावती हती. धन्ये पूछ्युं–' हे सुभ्रु ! केम रुदन करे छे ? ' ते गद्‌गद् स्वरे बोली–' नाथ ! मारा भाई शालिभद्र व्रत लेवानी इच्छाथी दिवसे दिवसे एक एक शय्या साथे एकेक स्त्री छोडे छे, तेथी मने दुःख लागे छे; माटे हुं रुदन करुं छुं. ' ते सांभळी धन्ये कह्युं– ' तारो भाई सत्वहीन अने शियाळनी जेम भीरु जणाय छे के जेथी एक साथे सर्व वैभव छोडी शकतो नथी. ' तेणीए कह्युं–'स्वामीनाथ ! वैभव छोडी व्रत लेवुं जो सहेलुं होय तो तमे केम लेता नथी ? ' आ प्रमाणे धन्यने तेनी बीजी स्त्रीओए पण हास्यमां कह्युं; एटले धन्य बोल्यो–' मारा पुण्यथीज तमे बधी मळीने मने अनुमति आपो छो, तेथी हुं हवे सत्वर व्रत ग्रहण करीश. 'ते सांभळी स्त्रीओ बोली–' हे नाथ ! अमे तो हास्यमां कहेलुं छे, तेथी रीस न करो. ' धन्य बोल्यो–' स्त्रीधन विगेरे सर्व पदार्थ अनित्य छे, तेथी तेने छोडी दईने हुं दीक्षानो आश्रय करीश. ' स्त्रीओए कह्युं– ' स्वामी ! त्यारे अमे पण दीक्षा लईशुं. ' धन्ये तेमनुं वचन अंगीकार कर्युं.

ते समये श्रीवीरप्रभु वैभारगिरि उपर समोसर्या. ए खबर जाणी धन्य पोतानी स्त्रीओ सहित जगद्गुरुनी पासे गयो अने स्त्रीओ सहित दीक्षा लीधी. आ वृत्तांत सांभळी शालिभद्र पण वीरपरमात्माना चरणमां आव्यो; अने संसारना भयथी तेमनी पासे दीक्षा लीधी.

धन्य अने शालिभद्र गीतार्थ मुनि पासे अभ्यास करी बहुश्रुत थया; अने एक, बे, त्रण अने चार चार मासना उपवास सतत करवाथी ते बंनेना शरीर मांस तथा रुधिर रहित थई गया. एकदा त्रण भुवनमां सूर्य समान श्रीवीरप्रभुनी साथे विहार करतां ते बंने मुनि राजगृह नगरे आव्या. मासक्षपणने पारणे भिक्षा माटे जवा तेमणे प्रभुनी आज्ञा मागी, एटले प्रभुए कह्युं–' आजे तमारुं पारणुं शालिभद्रनी माताने हाथे थशे.'

' हुं इच्छुं छुं ' एम कही शालिभद्र मुनि धन्यने साथे लई भद्राने घेर गया. तपस्याथी कृश थयेला ते बंने मुनि कोईना ओळखवामां आव्या नहि. भद्राए पण श्रीवीरप्रभु, धन्य अने शालिभद्रने वांदवा जवानी व्याकुळतामां ए बंने मुनिओने आव्या जाण्या नहि. बंने मुनि क्षणवार त्यां उभा रही पाछा वळ्या अने नगरना दरवाजा पासे आव्या, त्यां शालिभद्रनी पूर्वजन्मनी माता धन्या दधि वेचवाने गाममां जती हती ते मळी. शालिभद्रने जोतांज तेणीना स्तनमांथी दुधनी धारा छुटी. तत्काळ तेणीए तेमने वांदीने दधि वहोराव्युं.

बंने मुनिए श्री वीरप्रभुनी पासे जई गोचरी आलोवी. पछी शालिभद्रे प्रभुने पूछ्युं-' स्वामी ! आजे मारी माताने हाथे पारणुं केम थयुं नहि ? ' सर्वज्ञ प्रभुए तेमने पूर्वभवनी मातानो संबंध सर्व कह्यो. पछी बंने मुनि दधिवडे पारणुं करी प्रभुनी रजा लई पूर्ण वैराग्य वडे वैभार पर्वत उपर गया, अने एक शिलातले पडीलेही तेनी उपर पादपोपगमन अनशन कर्युं.

अहीं भद्रा अने श्रेणिक श्री वीरप्रभुने वांदवा आव्या. भद्राए प्रभुने प्रणाम करीने पूछ्युं-' स्वामी ! ते बे मुनि क्यां गया छे ? मारे घेर भिक्षा माटे केम न आव्या ? ' प्रभुए कह्युं-' भद्रे ! तारे घेर आव्या हता पण तें ओळख्या नहि. पछी ते पूर्वभवनी माताए आपेली भिक्षा लई, आहार करीने आ वैभार गिरि उपर गया छे, अने अनशन कर्युं छे.' तत्काळ भद्रा श्रेणिकनी साथे त्यां गई. तेमने निश्चळ रहेला जोईने बोली-' पुत्र ! मने धिक्कार छे के में तमने घेर आव्या छतां ओळख्या नहि. ' एम कही ते विलाप करवा लागी; एटले श्रेणिके तेने समजावी. ते बंने मुनि अनशन पाळीने स्वार्थसिद्ध विमाने गया, अने त्यांथी मोक्षे जशे.

" अहो ! ते दानना सौभाग्यने हुं स्तवुं छुं के जेथी वश थयेली स्वर्गनी भोगलक्ष्मी अभिसारिका नायकानी जेम शालिभद्रने मनुष्यना भवमां पण प्राप्त थईने भजती हती."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चतुःषष्ठ्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६४ ॥

व्याख्यान १६९ मुं.

चोथा शिक्षाव्रतना अतिचार कहे छे.

सचित्ते क्षेपणं तेन, पिधानं काललंघनम् ।
मत्सरोऽन्यापदेशश्च, तुर्यशिक्षाव्रते स्मृताः ॥ २ ॥

भावार्थ

" सचित्त वस्तु उपर आहार मूकवो, सचित्त वस्तुथी तेने ढांकवो, योग्य कालनुं उल्लंघन करवुं, मत्सरभाव धारण करवो, अने बीजानो व्यपदेश करवो (पोतानुं छतां पारकुं कहेवुं)–ए पांच चोथा शिक्षाव्रतना अतिचार छे. "

विस्तरार्थ

सचित्त एटले सजीव एवी पृथ्वी वनस्पति विगेरेनी उपर आपवा योग्य अन्नपानने अदानबुद्धिए अथवा अनाभोगे के सहसात्कारे मूकी देवुं–ए पहेलो अतिचार छे. तेमज सचित्त एटले सुरण, कंद, पत्र, पुष्प, फळ विगेरेथी अदानबुद्धिए देवा योग्य आहारने ढांकवो ते बीजो अतिचार छे. काळ एटले साधुने भिक्षा योग्य समयनुं उल्लंघन करवुं, अर्थात् भिक्षा लेवा माटे साधुने योग्य जे काळ होय तेनुं उल्लंघन करे, त्यार पछी साधुने आमंत्रण करवा जाय अथवा साधु आव्या न होय तो पण पौषधवृत्तिए भोजन करे ते त्रीजो अतिचार छे. मत्सर एटले कोप. मागवाथी कोप करे अथवा छती वस्तु माग्या छतां न आपे अथवा ' आ क्षुद्र भिक्षुके दान आप्युं, तो शुं हुं तेनाथी हीन छुं के न आपुं ? ' एवा मत्सरथी दान आपे; अहीं बीजानी उन्नत्ति सहन न करी शकवा रुप मत्सर समजवो, ते चोथो अतिचार छे. अन्य एटले बीजा संबंधी व्यपदेश एटले मिष करे; जेम के ' आ गोळ खांड प्रमुख पारकुं छे तेथी हुं केम आपुं ? ' एवो खोटो मिष करे; ते अन्यापदेश कहेवाय छे. (अपदेश शब्द कारण, मिष अने लक्ष अर्थमां प्रवर्ते छे, एम अनेकार्थ संग्रहमां कहेल छे.) ए पांचमो अतिचार छे. आ पांच अतिचार चोथा शिक्षाव्रतमां कहेला छे. आ अतिचार अनाभोग विगेरेथी एटले अजाणपणा विगेरेथी थाय छे; पण जो जाणीने करे तो व्रतनो भंग थाय छे. अतिचार सहित दान आपवा विषे चंपकश्रेष्ठीनी कथा छे. ते आ प्रमाणे—

चंपक श्रेष्ठीनी कथा.

धन्यपुर नगरमां चंपक नामे श्रेष्ठी हतो. ते चारे पर्वमां पौषध करी तेने पारणे हमेशां अतिथिसंविभाग करतो हतो. ते संपूर्ण पोसहने पारीने गुरुने विज्ञप्ति करतो के

' स्वामी ! मारे घेर भातपाणीनो लाभ आपशो. ' पछी पोताने घेर जई पोताने माटे भोजनादिक करावतो हतो. ज्यारे गोचरीनो समय थाय त्यारे पाछो उपाश्रये जई साधुने निमंत्रण करतो. तेना निमंत्रणथी साधु पण बीजा कोई साधु के श्रावकनी साथे तेने घेर जता. कारण के साधुने एकला विहार करवो के कोई पण स्थानके जवुं उचित नथी. साधु घेर आवता एटले तेमने अचित्त तथा निर्दोष अन्नपानादि अने वस्त्र, कंबल के औषधादि जेनो खप होय ते चंपकशेठ विनयथी आपतो हतो. साधु तेने फरीने रांधवुं न पडे तेवो भय राखी तेना घरेथी अल्प वस्तु वहोरता हता. (साधुनो एवो आचारज छे, नहि तो पश्चात् कर्मादि दोष लागे छे.) पछी ते वंदना करी साधुने विदाय करतो, अने पाछळ केटलांएक पगलां वळोटावा जतो; त्यार पछी पोते भोजन लेतो हतो. तेमां पण ' जे वस्तु साधुने आपवामां आवी न होय ते श्रावके खावी नहि ' एवो आचार होवाथी ते प्रमाणे वर्ततो हतो. जो ते गाममां साधु न होय तो भोजनवेळाए ते द्वारे जई अवलोकन करतो, अने एवुं चिंतवतो के ' जो अकस्मात् आ काळे कोई साधु आवी जाय तो हुं तरी जाउं. ' (आ प्रमाणे पौषधव्रतने पारणे करवानो विधि छे.)चंपकश्रेष्ठी ए प्रमाणे सर्वदा दान आपतो हतो.

एक वखते एवुं बन्युं के चंपकशेठ कोई भिक्षा माटे फरता मुनिने जोई हर्षथी बोलावी लाव्यो. मुनिने घी आपवा उद्यमवंत थयो. भावथी अखंड धारा वडे मुनिना पात्रमां घी रेडवा मांड्युं. आथी तेणे अनुत्तर विमाननी गति उपार्जन करी.. मुनिए तेने पुण्यनो लाभ थतो जोई धीमी धारा पडवा दीधी, निषेध कर्यो नहि. मुनिए ना कही नहि एटले चंपकशेठे मनमां चितव्युं के ' अहो ! आ मुनि लोभी लागे छे, पोते एकला छे अने आटलुं बधुं घी शुं करशे ? ' आवा चिंतवनथी जे क्रम वडे ते देवगति उपार्जन करवा चड्यो हतो ते क्रम वडे तेने पाछो पडतो जोई ज्ञानी मुनि बोल्या–' मुग्ध ! आटले ऊंचे जई पाछो पड नहि. ' चंपकशेठे कह्युं–' भगवन् ! हुं तो अहींज छुं, क्यांथी पडुं छुं ? आम असंबंध केम बोलो छो ? ' पछी मुनि पात्रने खेंची लई तेने बारमा देवलोकमां स्थापी बोल्या–' श्रावक ! दान आपवामां अन्य विकल्प करवाथी ते दूषित थई जाय छे, माटे निर्विकल्पे दान आपवुं. लोकमां पण शुकन अने स्वप्नना फळ विकल्पथी तदनुसार कहेवामां आवे छे. ' ते सांभळी चंपकशेठे पोतानुं पाप आलोच्युं, अने अंते मृत्यु पामी बारमा देवलोकमां गयो. ते माटे कह्युं छे के–

सातिचारेण यद्दानं, तद्दानं स्वल्पसौख्यदम् ।
मत्वेति विधिना श्राद्धैर्वितीर्यं भावधार्मिकैः ॥ १ ॥

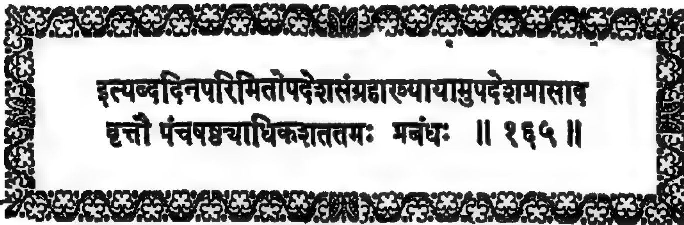
भावार्थ

" जे अतिचार सहित दान छे ते अल्पसुखने आपनारुं छे, एम जाणीने भाविक अने धार्मिक एवा श्रावकोए विधिपूर्वक दान करवुं. "

इत्युपदेशप्रासादटीकेयं लिखिता मया ।
पंचदशभिरश्राभिः स्तंभश्चैकादशः स्तुतः ॥ १ ॥

भावार्थ

" आ प्रमाणे उपदेशप्रासादनी टीका में लखेली छे, अने पंदर संबंध वडे आ अगियारमो स्तंभ स्तवेलो छे (पूर्ण करेलो छे). "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पंचषष्ठ्याधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६५ ॥

अब्दाहर्मितज्ञातेषु, शताग्रं पंचषष्ठीम ।
प्रेमादिविजयादिना, नित्यं व्याख्यानहेतवे ॥

" वर्षना दिवस जेटला दृष्टांतोमांथी एकसो ने पांसठ व्याख्यान प्रेमविजयादि मुनिने निरंतर व्याख्यान करवा माटे कहेवामां आव्या छे. "

इति एकादशः स्तंभः समाप्तः ।

(अगियारमो स्तंभ संपूर्ण.)

॥ श्री उपदेशप्रासादग्रंथे ॥

द्वादश स्तंभः

व्याख्यान १६६ मुं.

गृहस्थोनी भोजनविधि कहे छे.

मुक्तिकाले गृहस्थेन, द्वारं नैव पिधीयते ।
बालादि भोजयित्वानु, शस्यते भोजनं सदा ॥ १ ॥

भावार्थ

" भोजन वखते गृहस्थे घरनुं द्वार बंध करवुं नहि अने बाल, वृद्ध, ग्लान विगेरेने जमाडीने हमेशां भोजन करवुं ते प्रशंसनीय छे."

विशेषार्थ

भोजन वखते गृहस्थे द्वार बंध करवुं नहि. कारणके जो गृहस्थनुं द्वार बंध होय तो तेने देखी भिक्षुक प्रमुख निराश थई पाछा जाय छे. आगममां पण कह्युं छे के—

नेव दारं पिहावेइ, भुंजमाणो सुसावओ ।
अणुकंपा जिणंदेहिं, सड्ढाणं नथ्थि वारिया ॥ १ ॥

" श्रावक भोजन करती वखत पोताना घरनुं द्वार बंध करे नहि. कारणके प्रभुए श्रावकोने अनुकंपादान करवानो निषेध करेलो नथी." वळी पांचमा अंग श्रीविवाहपन्नत्तिसूत्रमां तुंगिक गिरिना श्रावकना वर्णन प्रसंगे कह्युं छे के ते श्रावको " अवंगुअदुवारा " छे. ए विशेषणनो एवो अर्थ थाय छे के ' भिक्षुक विगेरेना प्रवेश माटे ते श्रावको सर्वदा पोताना घरना द्वार उघाडा राखे छे, जेथी भिक्षुको निराश थई पाछा-चाल्या जता नथी. द्वार बंध करीने तेओ धर्मनी निंदा करावता नथी.' भोजन वखते द्वार बंध करवा ते महत् पुरुषोनुं लक्षण नथी. श्री जिनेश्वर भगवंते पण सांवत्सरिक दानथी दीन लोकोनो उद्धार करेलो छे.

विक्रमना समयथी तेरशें ने पंदरमे वर्षे ज्यारे मोटो दुकाळ पड्यो त्यारे कच्छदेशमां भद्रेश्वर नगरना रहेवासी श्रीमाळी साहुकार जगडुशाहे एकसो ने बार दानशाळाओ उघाडीने दान आप्युं हतुं. कह्युं छे के " ते दुर्भिक्षमां हंमीरने बार हजार मूडा, विशळदेवने आठ हजार मूडा, अने दिल्लीना बादशाहने एकवीश हजार मूडा धान्य जगडुशाहे आप्युं हतुं. " समृद्धिवाळा गृहस्थे भोजन समये दयादान विशेषे करवुं, अने निर्धने यथाशक्ति दान आपवुं. कह्युं छे के—

कुक्षिंभरी न कस्कोत्र, बह्वाधारा पुमान् पुमान् ।
ततस्तत्कालमायातान्, भोजयेद् बांधवादिकान् ॥ १ ॥

" पोतानुं पेट भरनार तो कयो पुरुष नथी ? पण जे पुरुष घणाना आधाररूप होय छे तेज पुरुष कहेवाय छे, तेथी भोजनकाळे आवेला बांधव प्रमुखने अवश्य भोजन आपवुं. "

ते उपर एक कथा छे के चित्रकूटमां चित्रांगद नामे एक राजा हतो. एक वखते तेना किल्ला उपर शत्रुना सैन्ये घेरो नाख्यो हतो. ते वखते नगरमां शत्रुओना प्रवेशनो भय छतां पण ते धार्मिक राजा भोजन वखते दरवाजा उघाडा राखतो हतो.

प्रारंभना श्लोकना त्रीजा पादमां ' बाळक प्रमुखने जमाडीने पछी जमवुं ' एम कह्युं छे तेमां प्रमुख (विगेरे) शब्दथी बाळ, ग्लान, वृद्ध, मातापिता, पुत्रवधू, सेवकवर्ग अने गायप्रमुखने भोजन अथवा चारापाणी विगेरे उचित प्रमाणे आपीने पछी नवकार तथा पच्चख्खाण संभारीने भोजन लेवुं. भोजन करवाना समयनुं उल्लंघन करवुं नहि. कह्युं छे के—

याममध्ये न भोक्तव्यं, यामयुग्मं नो लंघयेत् ।
याममध्ये रसोत्पत्तिः, यामयुग्मे बलक्षयम् ॥ १ ॥

"एक पहोरमां जमवुं नहि, अने बे पहोरनुं उल्लंघन करवुं नहि. कारणके पहेला पहोरमां जमे तो रसनी उत्पत्ति थाय छे, अने बे पहोर सुधी न जमे तो बळनो क्षय थाय छे." वळी योग्य समये जमवुं तेमां पण चालती ऋतुने योग्य एवो आहार लेवो. ते विषे कह्युं छे के–" शरदऋतुमां जे जळ पीवायुं, पोष अने माघ मासमां जे खवायुं, अने जेष्ठ अने अशाड मासमां जे सुवायुं तेनाथीज मनुष्य जीवे छे. " वळी कह्युं छे के–" वर्षाऋतुमां लवण अमृत छे, शरदऋतुमां जळ अमृत छे, हेमंत ऋतुमां

गायनुं दूध अमृत छे, शिशिरऋतुमां आमळानो रस अमृत छे, वसंतऋतुमां घी अमृत छे, अने ग्रीष्मऋतुमां गोळ अमृत छे."

सर्व भोजन लोलुपता शिवाय करवुं. ते विषे कह्युं छे के—

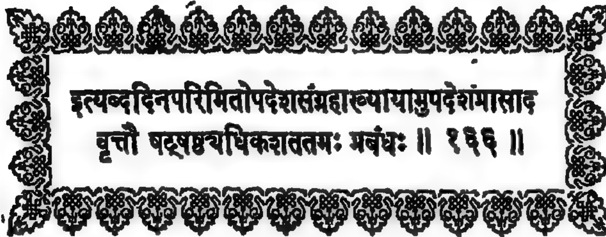
क्षणमात्रसुखस्यार्थे, लौल्यं कुर्वन्ति नो बुधाः ।
कंठनाडीमतिक्रांतं, सर्वं तदशनं समं ॥ १ ॥

"प्राज्ञपुरुषो क्षणमात्रना सुखने माटे भोजननी लोलुपता करता नथी; कारणके कंठनी नाडी अतिक्रम्या पछी तो सर्व भोजन सरखुंज छे." अधिक भोजन पण करवुं नहि· अधिक भोजन करवाथी अजीर्ण, वमन, विरेचन विगेरे रोग सुलभ थाय छे. कह्युं छे के–" हे जीभ ! जमवानुं अने बोलवानुं प्रमाण तुं जाणी ले; कारणके अति आहार करवानुं अने अति बोलवानुं परिणाम दारुण थाय छे." वळी कह्युं छे के–" हितकारी, मित अने पक्व भोजन करनार, डावे पडखे सुनार, हमेशां चालवानी टेववाळो, दस्त पिशाबने नहि रोकनार अने स्त्रीने विषे मनने वश राखनार एवो पुरुष सर्व रोगोने जीते छे." वळी कह्युं छे के "आकाशमां (अगासे), तडकामां, अंधकारवाळी जग्यामां, झाडनी नीचे, श्मशानमां, पोताना आसन उपरज बेठा बेठा, तर्जनी आंगळीने ऊंची करीने, डाबी नासिका वहेती होय त्यारे, केवळ भूमि उपर बेसीने अने जोडा पहेरीने कदिपण जमवुं नहि; तेमज टाढुं थई गयेलुं भोजन फरी उनुं करावीने खावुं नहि."

श्रीजिनदत्तसूरिए करेला विवेकविलास ग्रंथमां कह्युं छे के "एकज वस्त्र पहेरीने, भीनुं वस्त्र माथे वींटी राखीने, अपवित्रपणे अने अति लोलुपता राखीने, सुज्ञ पुरुषे भोजन करवुं नहि. १. वळी मळमूत्रादिवडे अपवित्र थयेलुं, गर्भादि हत्याना करनाराए जोयेलुं, रजस्वला स्त्रीए अडकेलुं अने गाय, श्वान के पक्षीओए चोटेलुं वा सुंघेलुं भोजन जमवुं नहि. २. वळी जळ पीवा विषे लखेलुं छे के भोजननी पहेलां जळ पीवुं ते विष तुल्य छे, भोजनने अंते पीवुं ते शिला जेवुं छे, अने मध्ये पीवुं ते अमृत जेवुं छे. ३. भोजन कर्या पछी सर्व रसे भरेला हाथवडे माणसे प्रतिदिन जळनो एक चळु पीवो. ४. जमीने उठ्या पछी जळथी आर्द्र एवा हाथवडे बे लमणाने, बीजा हाथने के नेत्रने स्पर्श करवो नहि, पण ढींचण उपरज ते हाथ फेरववो ते श्रेयकारी छे. ५. भोजन कर्या पछी डावे पडखे बे घडी निद्रा वगर शयन करवुं अथवा सो डगलां चालवुं. ६. वळी भोजन समये अग्नि, नैऋत ने दक्षिणदिशा, संध्याकाळ,

सूर्यचंद्रना ग्रहणनी वेळा अने पोताना स्वजनादिकनुं शब पड्युं होय ते वखत वर्जित करवां. ७. भोजनमां, मैथुनमां, स्नान करवामां, वमनमां, दातण करवामां, मळोत्सर्ग वखते अने पेशाब करतां बुद्धिमान् पुरुषे मौन राखवुं. ८. भोजन कर्या पछी नवकार मंत्रनुं स्मरण करीने उठवुं."

आ प्रमाणे विधिथी करेलुं भोजन प्रशंसनीय छे. तेथी तेवाज विधिथी शुद्ध आत्मावाळा गृहस्थे भोजन करवुं, अने पोताना आत्माने सेंकडो प्रकारवडे गृहिधर्मने विषे आरोपण करवो.



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ षट्षष्ठ्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६६ ॥

व्याख्यान १६७ मुं.

दाननी प्रशंसा करे छे.

पूर्वकर्मादिभिर्दोषैर्मुक्तं कल्पं शुभाशनम् ।
साधूनां पात्रसात्कृत्य भोक्तव्यं कृतपुण्यवत् ॥ १ ॥

भावार्थ

" पूर्व कर्मादि दोषथी रहित अने कल्पे तेवुं उत्तम भोजन साधुओना पात्रमां आपीने पछी कृतपुण्यनी जेम भोजन करवुं. "

कृतपुण्यनी कथा.

राजगृही नगरीमां श्रेणिक नामे राजा हतो. ते नगरमां धनेश्वर नामे सार्थवाह रहेतो हतो. तेने सुभद्रा नामनी स्त्री हती. तेने कृतपुण्य नामे एक पुत्र थयो हतो. मातपिताए धन्या नामनी एक गृहस्थनी पुत्री साथे तेने परणाव्यो हतो. परंतु

यौवनवय छतां कृतपुण्यने सत्पुरुषोना समागमने लीधे विषयथी विमुख देखीने तेना मातपिताए चिंतव्युं के' कदि आ पुत्र दीक्षा लेशे तो पछी आपणी शी गति थशे?' आवुं विचारी तेमणे पुत्रने रसिक पुरुषोनी संगतिमां मूक्यो. त्यां जारपुरुषोना संयोगथी कृतपुण्य व्यसनी थई गयो. छेवटे कोई वेश्यामां एवो आसक्त थई गयो के ते मातपिताने पण भूली गयो. मातपिता तेना उपभोग माटे हमेशां धन मोकलवा लाग्या. ए प्रमाणे वेश्याने घेर रहेतां कृतपुण्यने एक क्षणनी जेम बार वर्ष चाल्या गयां. मातपिता तेने वारंवार तेडावता पण ते घरे आव्यो नहि. छेवटे वेश्याने घेर धन मोकलतां तेनुं सर्व धन नष्ट थई गयुं; अने एकदा अकस्मात् तीव्र ज्वर आववाथी कृतपुण्यना मातपिता मृत्यु पामी गया. मात्र कृतपुण्यनी स्त्री धन्या एकली रही.

एक वखते वेश्यानी माता कुट्टिनीनी आज्ञाथी तेनी, कोई दासी कृतपुण्यने घेर धन लेवाने गई. त्यां जीर्ण थईने पडी गयेला घरमां धन्याने एकली दीठी. अनुमानवडे आ कृतपुण्यनी स्त्री हशे एवुं धारी दासीए कह्युं–" सुंदरी! तारी पासेथी तारा स्वामी धन मगावे छे, मने ते माटेज मोकली छे." धन्या बोली–" बाई! हुं मंदभागी छुं, मारी पासे धन क्यां छे ते हुं मोकलुं? मारा सासु अने सासरा तो स्वर्गवासी थया छे; तो पण मारा पिताए आपेलुं एक अंगभूषण मारी पासे छे ते तुं लई जा, अने मारा पतिने खुशी कर." एम कही ते आभूषण तेणीए दासीने आप्युं. दासी ते आभूषण लई वेश्याने घेर आवी, अने कृतपुण्यने तेना घरनी स्थिति जणावी ते आभूषण आप्युं. तेणे वेश्याने आप्युं. आ हकीकत उपरथी कुट्टिनीए तेने निर्धन थयेलो जाणी तेनुं अपमान करवा मांड्युं. कुट्टिनीनी आज्ञाथी तेना सेवको पण कृतपुण्यनी सामे रज उडाडवा लाग्या. ते जोई अनंगसेना नामे वेश्यापुत्रीए पोतानी माता (अक्का) ने कह्युं–' हे माता! आपणे आ पुरुषनुं घणुं धन खाई गय छीए, तो हमणा तेनी आवी विडंबना केम करो छो?' अक्का बोली–' पुत्री! आपणो एवोज कुलाचार छे.' आवो तेमनो वार्तालाप सांभळी कृतपुण्य मनमां कचवातो सतो त्यांथी नीकळी पोताना घर तरफ जवा चाल्यो.

पतिने दूरथी आवतो जोई धन्याए उभा थई सामा आवी आसन आपवा विगेरे योग्य सत्कार कर्यो. पछी पोताना घरनो सर्व वृत्तांत तेणीए निवेदन कर्यो. ते सांभळी कृतपुण्य चिंतववा लाग्यो–' अहो! मारा जीवितने धिक्कार छे, में मारा मातपिताने दुःखसागरमां फेंकी दीधा. अने पूर्वे संचय करेला सर्व धननो पण विनाश कर्यो.' आ प्रमाणे पोताना पतिने पश्चात्ताप करतां जोई ए धन्याए तेने संतोष पमाडयो अने कह्युं–" स्वामीनाथ! जे भावी होय ते थाय छे. कह्युं छे के—

गते शोको न कर्त्तव्यो, भविष्यन्नैव चिंतयेत् ।
वर्त्तमानेन कालेन, वर्त्तयंति विचक्षणाः ॥ १ ॥

" गई वस्तुनो शोक करवो नहि, अने भविष्यनी चिंता करवी नहि. विचक्षण पुरुषो वर्तमानकाळवडेज प्रवर्ते छे." आवां प्रियानां वचन सांभळी कृतपुण्य स्वस्थ थयो. पछी पत्नीए आपेला द्रव्यवडे व्यापार करवा लाग्यो. अनुक्रमे विलाससुख भोगवतां धन्याने एक पुत्र थयो.

एक वखते कृतपुण्ये लोकोना मुखथी एवुं सांभळ्युं के " धनेश्वरना पुत्र कृतपुण्ये पोताना कुळने कलंकित कर्युं. पोताना पितानुं धन वेश्याना फंदमां पडीने खाडामां नाखी दीधुं. तेनुं कांई पण धन सुकृतमां गयुं नहि." आवी लोकवाणी सांभळी कृतपुण्ये पोतानी स्त्रीने कह्युं-" प्रिया ! हालमां कोई सार्थवाह अहीं आवेल छे, तेनी साथे अनेक देश जोवा अने धन उपार्जन करवा माटे हुं जवा ईच्छुं छुं." आवां वचन सांभळी कुलीन स्त्री धन्या बोली-' स्वामी ! आम कांई पण लीधा विना खाली जवुं आपने उचित नथी.' पछी कांईक करीयाणुं लावी आपी ते सार्थनी साथे पतिने जवा कह्युं; अने कोई देवालयमां जई मोदकनुं भातुं साथे आपी एक खाटला उपर तेने सुवाडी धन्या घेर आवी.

आ अरसामां एवुं बन्युं के ते नगरमां धनद नामनो कोई मोटो गृहस्थ रहेतो हतो तेने चार स्त्रीओ हती; अने रुपवती नामे तेनी वृद्ध माता हती. ते धनद अकस्मात् कोई तीव्र व्याधि थवाथी मृत्यु पामी गयो. ते वखते तेनी माता रुपवतीए चारे वधूओने कह्युं-" तमारो पति पुत्र वगरनो मृत्यु पाम्यो छे एम जो आपणा राजाना सांभळवामां आवशे तो ते आपणुं सर्व धन लई लेशे; तेथी तमारे आ वखते बिलकुल रुदन करवुं नहि, गुप्त रीते आ शबने भूमिमां क्षेपवी देवुं, अने ज्यां सुधी तमने पुत्र थाय त्यां सुधी बीजो पुरुष सेववो." चारे स्त्रीओए तेम करवा कबुल कर्युं. एटले रुपवती चारे वधूओने लईने कोई योग्य पुरुषने शोधवा नीकळी. त्यां देवालयमां सुतेलो कृतपुण्य तेमना जोवामां आव्यो, एटले तेने सुतो ने सुतो उपाडी घरमां लई आव्या.

कृतपुण्य जागी उठ्यो, एटले रुपवती तेना कंठे वळगी रोवा लागी अने बोली-" वत्स ! तारी माताने छोडी तुं आटला बधा दिवस क्यां रह्यो हतो ? हमणा तारो ज्येष्ठ बंधु मृत्यु पामी गयो छे; तेथी हे पुत्र ! हवे तारे बीजे क्यांई जवुं नहि. तुं स्वेच्छाथी तारा बंधुनी स्त्रीओ साथे भोग भोगव." कृतपुण्य विचारमां पड्यो के

'आ शुं ? पण हवे जे भावी होय ते थाओ. त्यारे तो आ स्वर्गनुं सुख प्राप्त थयुं छे ते भोगवुं.' आवुं चिंतवी ते बोल्यो—"माता ! हुं बधुं भूली गयो हतो; हमणा पुण्ययोगे मने मातानुं दर्शन थयुं छे तो तमारी आज्ञा हुं माथे चढावुं छुं." पछी ते चारे स्त्रीओनी साथे अनेक प्रकारना सुख भोगववा लाग्यो. तेम करतां त्यां बार वर्ष वीती गयां. अनुक्रमे चारे स्त्रीओने पुत्र थया.

अन्यदा पेली वृद्ध रुपवतीए पोतानी वहुओने कह्युं—" हवे तमारे सर्वने पुत्र थया छे; माटे जे स्थानेथी आ पुरुषने लाव्या छो त्यां तेने पाछो मूकी द्यो, परपुरुषनो वधारे विश्वास करवो योग्य नथी." स्त्रीओने ए वात अनिष्ट हती, पण सासुना भयथी तेम करवा कबुल कर्युं. पछी ते स्त्रीओए कृतपुण्यने एक मांचा उपर सुवार्यो, अने स्नेहने लीधे एकेक बहु मूल्यवाळुं रत्न नाखीने चार मोदक तेना वस्त्रने छेडे बांध्या; पछी तेने निद्रामांज पूर्वले स्थाने मूकी आवी.

दैवयोगे पेलो सार्थवाह तेज दिवसे त्यां आवीने उतर्यो. पतिने आवेलो जाणी तेनी पूर्वप्रिया धन्या त्यां आवी. तेणीए पूर्वनी जेम पतिने सुतेलो जोयो. थोडीवारे ते जाग्रत थयो; एटले पुत्र सहित पोतानी पत्नीने जोई ते चिंतववा लाग्यो—'अहो ! स्वप्ननी जेवुं आ शुं ! आ तो मोटुं आश्चर्य थयुं छे. मने अहीं कोई देवताए के मनुष्ये मूकेलो जणाय छे.' पछी पत्नीना वचनथी ते पोताने घेर आव्यो. प्रियाए हसतां हसतां पूछ्युं—'प्राणेश ! विदेशमां जईने शुं कमाई आव्या' कृतपुण्य लज्जाथी मौन धरी रह्यो. पछी पुत्रने पल्लामांथी एक मोदक आप्यो. पुत्र ते लईने निशाळे गयो. त्यां मोदक खातां तेमांथी रत्न नीकळ्युं. कोई कंदोईए ते जळकांत रत्न छे एम जाणी थोडीक सुखडी आपी तेने ठगीने लई लीधुं अने छुपाव्युं. कृतपुण्य पण बाकीना मोदकमांथी रत्न नीकळतां खुशी थयो.

आ अरसामां एक दिवसे श्रेणिक राजानो सेचनक नामनो हाथी गंगानदीमां जळ पीवा गयेल त्यां तेने कोई जळजंतुए पकड्यो. राजा श्रेणिकने सेवके ते खबर आपी; एटले राजाए अभयकुमारने कह्युं. बुद्धिमान् अभयकुमारे हाथीने छोडाववा जळकांत मणिनी शोध कोशागारमां करावी; पण तेमां तेवो मणि मळ्यो नहिं. पछी नगरमां पडह वगडाव्यो के " जे कोई जळकांत मणि लावशे तेने अर्ध राज्य सहित राजपुत्री आपवामां आवशे." ते वखते पेला कंदोईए पटह ग्रहण कर्यो, अने जळकांतमणि राजाने आप्यो. अभयकुमारे ते मणि गंगामां हाथीनी पासे मूक्यो; एटले तेना सयोगथी जळना बे विभाग थई गया. तेथी पेलो जळजंतु हाथीने छोडी नासी गयो, अने हस्ती छुटो थयो. राजा श्रेणिक सेचनक उपर चडी राजमहेलमां

आव्या. पछी एकांते अभयकुमारने कह्युं के ' आ कंदोईने राजपुत्री शी रीते अपाय?' अभयकुमारे कह्युं–' जेनुं आ रत्न छे ते पुरुषने हुं शोधी काढीश. ' पछी अभयकुमारे ते कंदोईने बोलावीने पूछ्युं–' सत्य कहे, आ रत्न तने क्यांथी मळ्युं ? जो सत्य नहि कहे तो तारी उपर कोरडाना प्रहार पडशे, जेथी तुं मरण पामीश. ' कंदोईए भयथी सर्व वात खरेखरी जणावी दीधी; एटले राजा श्रेणिके कृतपुण्यने बोलावी अर्ध राज्य साथे पोतानी पुत्री मनोरमा आपी; अने कंदोईने पण कांईक द्रव्य आपी तेनुं सन्मान कर्युं.

एकदा कृतपुण्ये अभयकुमारने बार वर्ष पहेलां जे वार्ता बनी हती ते जणावी के ' मंत्रीराज ! आ नगरीमां मारी चार पुत्रो सहित चार पत्नीओ रहे छे. तेमने हुं दीठे ओळखुं छुं, पण तेमना निवासगृहने हुं जाणतो नथी. ' अभयकुमारे कह्युं–'तेमने हुं प्रगट करी आपीश. ' पछी मंत्रीए प्रवेश करवाना अने नीकळवाना बे जुदा जुदा द्वारवाळो एक प्रासाद कराव्यो. तेनी मध्यमां कृतपुण्यना जेवी आकृतिवाळी लेपनी यक्षप्रतिमा स्थापित करी. पछी नगरमां एवो पटह वगडाव्यो के " शहेरनी पुत्रवाळी तमाम स्त्रीओए पोताना पुत्रोसहित आ यक्षनी प्रतिमाने नमन करवा आववुं. " तत्काळ नगरनी स्त्रीओ पोतपोताना पुत्रो लई यक्षना दर्शन माटे आववा लागी, अने एक द्वारथी प्रवेश करी बीजे द्वारे नीकळवा लागी. आ समये पेली रुपवती वृद्धा पण चार वधूओने पुत्र सहित लई यक्षप्रतिमाने नमवा आवी. तेमने ओळखी कृतपुण्ये अभयने कह्युं, तेवामां तो पेला चार पुत्रो यक्षनी आकृति जोई पोताना पिता छे एम जाणी ' हे तात ! हे तात ! ' एम कहेवा लाग्या; अने कोई तेना उदरने वळगी पड्यो, ने कोई तेनी दाढी मूछ पकडवा लाग्यो. ते समये अभये कह्युं–' हे कृतपुण्य ! आ तारा पुत्रो अने आ तारी पत्नीओ. ' पछी अभयकुमार रुपवतीने घेर गया, अने तेनुं सर्वस्व कृतपुण्यने आप्युं. त्यारबाद अंगसेना वेश्या-पुत्रीने पण त्यां बोलावी. एवी रीते कृतपुण्यने सात स्त्रीओ थई.

एक वखते जगद्बंधु श्रीवीरप्रभु त्यां समोसर्या. कृतपुण्य जगदीशने वांदवा गयो. सर्वज्ञ प्रभुनी धर्मदेशना सांभळी छेवटे कृतपुण्ये अंजलि जोडीने पूछ्युं–' भगवन् ! मारे क्या कर्मना उदयथी संपत्ति अने विपत्ति वच्चे वच्चे प्राप्त थई ? ' प्रभु बोल्या– " कृतपुण्य ! तारो पूर्वभव सांभळ "–

" श्रीपुर नगरमां एक निर्धन गोवाळनो पुत्र रहेतो हतो. एक दिवसे घेरघेर खीरना भोजन थतां जोई तेणे पोतानी मातानी पासे तेनी याचना करी. गरीब माताना घरमां खीर बनी शके तेम न होवाथी ते रुदन करवा लागी.

तेने रोती जोई पाडोशीनी दयालु स्त्रीओए दुध विगेरे खीरनी सामग्री लावी आपी. ते वडे गरीब माताए खीर रांधी पुत्रने पीरशी, अने पोते कोई कार्य माटे बहार गई. तेवामां मासखमणने पारणे कोई वे मुनि त्यां आवी चड्या. तेमने जोई उल्लासथी ते गोपालपुत्रे खीरनो एक भाग आप्यो; ते थोडो जाणीने पछी बीजो भाग आप्यो; वळी तेवीज रीते त्रीजो भाग आप्यो. ए प्रमाणे त्रणवार आपी काळयोगे मृत्यु पामी ते वत्सपालनो पुत्र अहीं तुं थयेल छे. पूर्वभवे तें त्रणवार खमीखमीने दान आप्युं, तेथी तने आ भवमां आंतरे आंतरे संपत्ति अने विपत्ति प्राप्त थयेल छे."

आ प्रमाणे पूर्वभव सांभळी कृतपुण्यने जातिस्मरण थयुं, एटले तेणे पोतानो पूर्वभव जोयो. तत्काळ वैराग्य उत्पन्न थवाथी ज्येष्ठ पुत्रने गृहनो भार आपी तेणे दीक्षा लीधी; अने मोटी तपस्या करी ते पांचमा देवलोके गयो. त्यांथी छेवटे मोक्षे जशे.

" विलंब विना शीघ्र श्रावके स्वशक्ति अनुसार मुनिओने दान आपवुं. कारण के वत्सपाळनो जीव कृतपुण्य दानना प्रभावे अपूर्व संपत्ति पाम्यो, अने अनुक्रमे मोक्षे जशे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्तषष्ट्युत्तरशततमः प्रबंधः॥ १६७ ॥

व्याख्यान १६८ मुं.

भोजन वखते मुनिने संभारीने दान देवुं.

भोजनसमयेऽवश्यं, संस्मार्या मुनिसत्तमाः ।
ततोभोजनमश्नीयं, धनावहाख्यश्रेष्ठिवत् ॥ १ ॥

भावार्थ

"भोजन वखते उत्तम मुनिओने अवश्य संभारवा, अने ते पछी धनावह श्रेष्ठीनी जेम भोजन लेवुं.

धनावहश्रेष्ठीनी कथा.

एक वखत प्रथम तीर्थंकरना जीव धनावह सार्थवाहे घणा सार्थनी साथे ग्रीष्म ऋतुमां प्रयाण कर्युं. मार्गमां मोटी मेघवृष्टि थवाथी बधी पृथ्वी कादवथी आकुळ थई

गई; तेथी मार्गनी अंदरज पडाव करीने सार्थवाह रह्यो. तेनी साथे धर्मघोष सूरि आवेला हता. तेओ पण त्यां योग्य स्थळे रह्या. सार्थना लोको खोराकी खुटी जवाथी वनमां मूळ फळ खाईने तापसनी जेम रहेवा लाग्या.

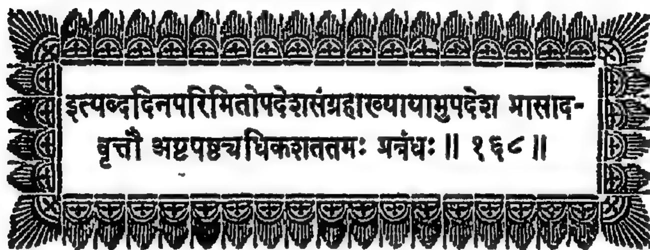
एक वखते धनावह श्रेष्ठी सर्वने संभारी भोजन करवा बेठा तेवामां तेने सूरिनुं स्मरण थई आव्युं. धनावहे चिंतव्युं के " अहो ! मने धिक्कार छे. आजे पंदरदिवस थयां में सूरिजीने बिलकुल संभार्या नथी. ए मुनीश्वर अप्रासुक, अपक्व अने तेमने उद्देशीने करेलुं जमता नथी; तेथी एमनो निर्वाह केवी रीते चालतो हशे ? " आम विचारी तत्काळ सूरि पासे जई वंदना करीने कह्युं-' स्वामी ! आजे प्रसन्न थईने मारी साथे मुनिओने वोहोरवा मोकलो.' सूरिए धनावहनी साथे बे मुनिने मोकल्या. श्रेष्ठीए तेमने निर्दोष एवुं पुष्कळ घी घणा हर्षथी वोहोराव्युं. सर्व मुनिओए तेवडे मासक्षपणनुं पारणुं कर्युं. ते पुण्यथी धनावह श्रेष्ठीए तेरमे भवे तीर्थंकर पदनो निर्धार कर्यो. " वैद्यलोको घीने आयुष्य कहे छे ते खोटुं नथी, केमके तेना दानथी धनावह सार्थवाहे पोतानुं आयुष्य शाश्वत कर्युं. "

त्यांथी धनावह युगलियामां उत्पन्न थई सौधर्म देवलोके देवता थयो. त्यांथी चवी महाबळ नामे विद्याधरेंद्र थयो. त्यांथी ललितांग देव थयो. त्यांथी चवी वज्रजंघ राजा थयो. पाछो फरीवार युगलियो थयो. त्यांथी पहेले देवलोके गयो. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां जीवानंद नामे वैद्य थयो. तेने चार मित्रो हता. एकदा तेओ वैद्यने घेर बेठा हता, तेवामां कोई साधुने कुष्ट रोगी जोई तेओए वैद्यने कह्युं-' आ मुनिनी चिकित्सा करो.' वैद्ये कह्युं-' मारी पासे लक्षपाक तेल छे, बाकी रत्नकंबळ अने गोशीर्षचंदन तमे लावी आपो तो हुं चिकित्सा करुं.' पछी ते पांचे मळीने कोई वणिकनी दुकाने गया, अने ते वस्तुओ तेनी पासे मागी. ते वणिके ते मूल्य विना आपी. ते पुण्यथी ते वणिक तेज भवे सिद्धिपदने पाम्यो. अहीं पांचे मित्रो मळीने मुनि पासे गया. प्रथम लक्षपाक तेलवडे मुनिना अंगने मर्दन कर्युं. पछी रत्नकंबलथी तेमने आच्छादित कर्या, एटले शरीरमांथी नीकळी तमाम कृमीओ तेमां भराई गया. पछी गोशीर्षचंदननो लेप कर्यो. एवी रीते त्रणवार करवाथी मुनिनो रोग मूळमांथी नष्ट थयो. पेला कीडाओ तेमणे मृतगायना कलेवरमां मूक्या. ' दयाळु पुरुषो ते क्रीडाओने पण निराश केम करे ! ' पछी रत्नकंबळ ने वधेलुं गोशीर्षचंदन ए बे वस्तुओ वेची तेना उत्पन्न थयेला द्रव्यवडे अति उन्नत जिनप्रासाद कराव्यो. आयुक्षये काळ करीने ते पांचे जणा बारमा देवलोके गया. त्यांथी चवी जीवानंद वैद्यनो जीव चक्रवर्ती थयो; अने बीजा चार बाहु, सुबाहु, पीठ ने महापीठ नामे

चक्रीना अनुज बंधुओ थया. पछी ते सर्वे सर्वार्थसिद्ध विमाने गया. त्यांथी चवी धनावहनो जीव ऋषभप्रभु थया, बाहुनो जीव भरत थयो, सुबाहुनो जीव बाहुबळ थयो अने पीठ तथा महापीठना जीव ब्राह्मी अने सुंदरी थया. पूर्वभवमां दंभयुक्त तपस्या करवाथी तेओ स्त्रीपणाने पाम्या.

आ दृष्टांतनुं विशेष वर्णन जाणवुं होय तो प्राचीन आचार्यना रचेला अढार हजार श्लोकना प्रमाणवाळा दर्शनरत्नाकर नामना ग्रंथमांथी जाणी लेवुं.

" एवी रीते विधि सहित एकवार दान आपवाथी धनावह सार्थवाह तेरमे भवे उज्वळ तीर्थंकरपदने पाम्या. "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टषष्ठ्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६८ ॥

व्याख्यान १६९ मुं.

जैन राजाओनो दानविधि कहे छे.

राजपिंडं न गृह्णंति, आद्यांतिमजिनर्षयः ।
भूपास्तदा वितन्वंति, श्राद्धादिभक्तिमन्वहं ॥ १ ॥

भावार्थ

" पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना मुनिओ राजपिंड ग्रहण करता नथी, तेथी ते वखतना जैनराजाओ हमेशां श्रावक विगेरेनी भक्ति करे छे. " आ हकीकतने श्री कुमारपाळ राजानी कथावडे दृढ करे छे.

कुमारपाळनृपकथा.

एक वखते श्रीहेमचंद्रसूरिए कुमारपाळ राजानी पासे 'मुनिओने राजपिंड कल्पतो नथी' ते विषे वर्णन कर्युं. ते सांभळी राजाए आचार्यने पूछ्युं–" भगवन् ! जो मारा घरनुं अन्न जैनमुनि स्वीकारे नहि तो पछी मारा बार व्रत पूरा शी रीते

थाय ? अने हुं उत्तम श्रावक केम थई शकुं ? माटे आप गुरुमहाराजा मारा घरनो आहार स्वीकारो. " आचार्य बोल्या-" हे सोलंकी नरेश ! पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना मुनिओने राजपिंड कल्पतो नथी; पण हे राजा ! तमारे श्रावक विगेरेनुं पोषण करवुं. पूर्वे पण श्री नाभिराजाना पुत्र ऋषभदेव ज्यारे अष्टापद गिरि उपर समोसर्या, त्यारे भरते पांचसो गाडां विविध जातनां पकानोनां भरी प्रभुने आमंत्रण कर्युं हतुं; प्रभुए तेनो निषेध कर्यो, एटले भरतने बहु खेद थयो. ते अवसरे इंद्रे प्रभुने पूछयुं-' भगवन् ! अवग्रह केटला प्रकारनो छे ? ' प्रभु बोल्या-" इंद्र ! अवग्रहना पांच प्रकार छे; देवेंद्रावग्रह, राजावग्रह, गृहपत्यवग्रह, सागारिकावग्रह अने साधर्मिकावग्रह. अहीं राजावग्रहमां भरतचक्रीने ग्रहण करवा, ग्रहपत्यवग्रहमां मंडलिक राजा लेवा, सागारिकावग्रहमां जेनी वस्ती वापरीए ते शय्यातर लेवो, अने साधर्मिकावग्रहमां साधर्मिक एटले संयमी लेवो. ए पांच अवग्रहोमां उत्तरोत्तर अवग्रहथी पूर्वपूर्वनो बाध समजवो. जेम राजावग्रहवडे इंद्रावग्रह बाधित थाय छे; अर्थात् राजानो अवग्रह लेवाथी इंद्रना अवग्रहनुं प्रयोजन थोडुं रहे छे. " आवां वचन सांभळी इंद्र बोल्यो-" जे आ मुनिओ मारा अवग्रहमां विचरे छे तेमने में अवग्रहनी आज्ञा आपेली छे. " पछी भरते चिंतव्युं के ' हुं पण मुनिओने अवग्रहनी अनुज्ञा आपुं, एटलाथीज मारी कृतार्थता थाओ. ' एम विचारी भरते पोताना अवग्रहनी अनुज्ञा आपी. पछी लावेलां पकानो विषे भरते इंद्रने पूछयुं. ' एटले इंद्रे कह्युं-' हे भरत ! तमे जे आ पांचसो गाडां भात पाणी लाव्या छो ते वडे तमाराथी अधिक गुणवाळा श्रावकोनी पूजा करो. ' एटले भरते श्रावकोने बोलावीने कह्युं-" तमारे हमेशां मारे घेर भोजन करवुं, कृषि विगेरे कांई करवुं नहि; अने मारा घर पासे आवीने मने कहेवुं के—

जितोभवान् वर्द्धते भयं, तस्मान्मा हन मा हन ॥

तुं जीतायो छे, भय वधे छे; माटे हणीश नहि, हणीश नहि. " भरतना कहेवा प्रमाणे ते श्रावको करवा लाग्या. अहीं भरत सुखमां मग्न थयो छे, परंतु हमेशां ते श्रावकोनां पूर्वोक्त वचन कहेवा पछी विचारतो के ' हुं कोनाथी जीतायो छुं ? ' अज्ञान अने कषायोथी जीतायो छुं. वळी ' भय वधे छे ' एटले तेओनाथीज भय वधे छे. तेथी आत्माने हणवो नहि. आवुं चिंतवी भाववडे निस्पृह एवा देवगुरुनी ते स्तुति करतो हतो.

आ प्रमाणे निरंतर चालवाथी भोजन करनारा लोको वधी पडवाने लीधे रसोया रांधवामां कायर थई गया. एटले तेओए भरत राजा पासे आवीने कह्युं-' आ जमनाराओमां कोण श्रावक छे अने कोण श्रावक नथी ते जाणवामां आवतुं नथी. '

ते सांभळी भरते कह्युं—' तेमने श्रावकनां बार व्रत पूछीने पछी भोजन आपवुं. ' पछी तेमने ओळखवाने माटे राजाए काकिणी रत्नवडे त्रण त्रण लीटा तेमना शरीरपर कर्या, अने तेवा चिन्हवाळा, तथा बार व्रत रुप बार तिलक करनारा अने भरते करेला चार वेदने जाणनारा जे होय तेने श्रावक गणवा, एम बधे प्रसिद्ध करवामां आव्युं. पाछा छ मास थाय एटले जे बीजा नवा श्रावको थाय तेने पण तेवीज रीते काकिणी रत्नवडे लांछन करवा लाग्या.

भरतचक्री पछी तेमना पुत्र आदित्ययशाए श्रावकोने ओळखवाने माटे सुवर्णनी यज्ञोपवीत पहेरावी. ते पछी महायशा विगेरे जे राजाओ थया तेमणे प्रथम रुपानी यज्ञोपवीत करावी अने पछी केटलाएके विचित्र पट्टसूत्र विगेरेनी यज्ञोपवीत करावी. त्यारथी यज्ञोपवीतनी प्रसिद्धि थई, ते अद्यापि चाले छे.

इत्यादि सर्व स्वरुप श्रीहेमचंद्रसूरिए कुमारपाळ राजानी आगळ जणावीने कह्युं— 'हे राजा ! तमारे बारमा व्रतमां साधर्मिवात्सल्य करवुं योग्य छे. ' पछी कुमारपाळे ज्यांसुधी पोतानी आज्ञा चालती हती त्यांसुधीमां रहेनारा श्रावकोना उपरथी तमाम कर माफ कर्यो; जे कर वडे प्रतिवर्ष बोतेर लाख द्रव्य उपार्जन थतुं हतुं. वळी तेणे साधर्मी बंधुओना उद्धार माटे चौद कोटी द्रव्य कृतार्थ कर्युं.

पारणाने दिवसे पोते करावेला श्रीत्रिभुवनपाळविहार नामना प्रासादमां स्नानमहोत्सवने अवसरे जे साधर्मीओ एकठा थता तेओनी साथे कुमारपाळ भोजन करता हता. भोजन वखते हमेशां दीन, दुःखी, अज्ञात अने क्षुधार्त्तोने अनुकंपादान देवा माटे पटह वगडावता, अने तेमने अन्नदान आपीने पछी भोजन लेता हता. तेमणे घणी दानशाळाओ स्थापी हती.

कह्युं छे के " राजा कुमारपाळ घी, भात, मग, मांडा, शाक, वडां, वडी अने तीखा वघारीआं पदार्थो विगेरे श्रावकोने सत्कारपूर्वक जमाडता हता, दुःखी श्रावकोना कुटुंबने श्रेष्ठ वस्त्रो आपता हता, अने जैनधर्मने विषे रहीने तेमणे अनेक दानशाळाओ स्थापी हती. "

" आवी रीते श्रावकना बारमा व्रतमां ऊंचे प्रकारे साधर्मिक भक्तिने विस्तारता एवा कुमारपाळ राजाए संप्रति राजा अने भरतादिक राजाओनुं स्मरण कराव्युं हतुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकोनसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६९ ॥

व्याख्यान १७० मुं.

साधर्मिनी सेवानुं फळ कहे छे.

साधर्मिवत्सले पुण्यं, यद्भवेत्तद्वचोऽतिगम् ।
धन्यास्ते गृहिणोऽवश्यं, तत्कुर्वाश्नंति प्रत्यहं ॥ १ ॥

भावार्थ

" साधर्मिवात्सल्य करवामां जे पुण्य थाय छे ते वचनथी कही शकाय तेवुं नथी. जे गृहस्थो हमेशां साधर्मिवात्सल्य करीने जमे छे तेओने धन्य छे. "

विस्तरार्थ

साधर्मिवात्सल्य एटले पोताना पुत्रादिकना जन्मोत्सवमां अथवा विवाह प्रमुख बीजा प्रसंगोमां साधर्मिओने निमंत्रण करी विशिष्ट भोजन आपी तांबूल दान आपवुं, अने कोई साधर्मि आपत्तिमां मग्न थयेल होय तो तेनो पोताना धननो व्यय करी उद्धार करवो. कह्युं छे के—

न कयं दीणुद्धरणं, न कयं साहम्मियाणवाच्छलं ।
हिययंमि वियराओ, न धारिओ हारिओ जम्मो ॥ १ ॥

" जेणे दीन जनोनो उद्धार कर्यो नहि, साधर्मिवात्सल्य कर्युं नहि, अने हृदयमां श्रीवीतरागप्रभुने धार्या नहि ते पोतानो जन्म हारी गयो. " वळी धर्ममां सीदाता लोकोने ते ते प्रकारे स्थिरता करावची. जेओ धर्ममां प्रमादी थया होय तेमने धर्म संभारी आपवो. जेओ अकार्यमां प्रवर्त्तता होय तेओने तेमांथी वारवा, अने शुभकार्यमां प्रवर्तवानी प्रेरणा वारंवार करवी. कह्युं छे के—" प्रमादीने धर्मकार्य संभारी आपवुं ते सारणा, अनाचारे प्रवर्त्तताने वारवा ते वारणा, धर्मथी भ्रष्ट थयेलाने तेना अकार्यनुं माठुं फळ समजाववुं ते चोयणा अने निष्ठुर थई गयेलाने धिक्कार आपवो ते पडिचोयणा समजवी. " तेमज पांच प्रकारना स्वाध्याय विगेरेमां पण जेनो जेम घटे तेम विनियोग करवो. धर्मानुष्ठान विशेषे थई शकवा माटे साधारण पौषधशाला विगेरे स्थानो कराववां, तथा श्रावकोनी जेम पुण्यवान् गृहस्थे श्राविकाओनुं पण वात्सल्य करवुं. जे श्रावकोनो वैभव अंतराय कर्मना दोषथी क्षय पाम्यो होय तेवा श्रावकोने पुनः धनाढ्य करवा. सांभळीए छीए के थरादना निवासी श्रीमाळी आभू नामना

संघपतिए त्रणसो ने साठ साधर्मीओने पोतानी जेवा धनाढ्य कर्या हता. साहित्यमां कह्युं छे के "ते हेमगिरि अथवा राजताद्रि शा कामना के जेणे पोतानां आश्रित वृक्षोने पोता रुप कर्या नहि; अमे तो एक मळयाचळनेज मान आपीए छीए के जेना आश्रित एवा आम्र, निंब अने बीजां कुटवृक्षो पण चंदन रुप थई जाय छे."

श्री संभवनाथ प्रभुए पोताना पूर्वेला त्रीजा भवमां धातकीखंडना ऐरावत क्षेत्रमां क्षेमापुरी नगरीने विषे विमलवाहन नामे राजा थई मोटो दुकाळ पडतां साधर्मी जनोने भोजन आपवा वडे तीर्थंकर नामकर्म बांध्युं हतुं. पछी ते दीक्षा लई आनत देवलोके देवता थई संभव नामे तीर्थंकर थया हता. तेओ फाल्गुन मासनी शुक्ल अष्टमीए अवतर्या. ते वखते मोटो दुष्काळ हतो, पण तेमना जन्मथी तेज दिवसे सर्व तरफथी धान्य आवी पहोंच्युं अने नवा धान्यनो संभव थयो तेथी तेमनुं नाम संभव एवुं पाड्युं. इत्यादि दृष्टांतोथी साधर्मिवात्सल्यनुं पुण्य वचनथी कही शकाय तेवुं नथी. तेथी जे गृहस्थो प्रतिदिवस ते आचरीने पछी भोजन करे छे तेओने धन्य छे. ते विषे भरतचक्रीना वंशमां थयेला त्रण खंडना अधिपति दंडवीर्यनी कथा छे, ते आ प्रमाणे—

राजा दंडवीर्य हमेशां प्रथम साधर्मिकने भोजन करावीने पछी जमतो हतो. एक वखते तेनी परीक्षा करवाने माटे इंद्रे पूर्वे वर्णव्या छे तेवा कोटीगमे श्रावको तीर्थ करीने आवता विकुर्वीने दंडवीर्यने बताव्या. राजाए भक्तिपूर्वक तेमने निमंत्रण करीने जमाडवा मांड्या. भोजन करावतां करावतां सूर्य अस्त थई गयो. बीजे दिवसे पण एम थयुं. एम करतां राजा दंडवीर्यने आठ उपवास थया; तथापि तेनो भक्तिभाव ओछो थयो नहि पण उलटो वृद्धि पाम्यो. राजानी एवी शुद्ध वृत्ति जोई इंद्र संतुष्ट थयो; तेथी तेणे तेमने दिव्य धनुष्य, बाण, रथ, हार अने बे कुंडल आप्यां. ते साथे शत्रुंजयनी यात्रा करवा अने तीर्थनो उद्धार करवा आज्ञा आपी. राजा दंडवीर्ये पण तेम कर्युं. आ विषे विशेष जाणवुं होय तो शत्रुंजयमाहात्म्यमांथी जाणी लेवुं.

आ विषे शुभंकर श्रेष्ठीनी बीजी कथा पण संभळाय छे ते आप्रमाणे—

शुभंकर श्रेष्ठी पोताना जन्ममां एक लाख ज्ञातिबंधुने भोजन,एक लाख कन्यादान, एक लाख गोदान अने एक लाख ब्राह्मणोने भोजन एम चार लाख पूरां करी मृत्यु पाम्यो. मृत्यु पामीने पोताना घरनी भूमिमां ज्यां द्रव्य दाटेलुं हतुं त्यां सर्प थयो. पछी दररोज पोताना पुत्रादिकने बीवराववा लाग्यो. तेना घरनी पडखे धर्मदास नामे एक श्रावक हतो. ते शुभंकर श्रेष्ठीना जेवो धनवान् नहोतो. तेथी वर्षमां एक वार एक मुनि, एक साध्वी, एक श्रावक अने एक श्राविकाने भावपूर्वक दान आपतो

हतो. ते पुण्यथी तेने अवधिज्ञान प्राप्त थयुं हतुं. एक दिवसे शुभंकर श्रेष्ठीना पुत्रोए पोताने सर्प वीवरावे छे ए वात धर्मदासने जणावी. तेथी धर्मदासे ते पुत्रोने कह्युं– ' ए सर्प तमारो पिता छे. तेणे पूर्वभवे लक्ष ज्ञातिभोजन विगेरे करी षट्कायनो आरंभ करेलो छे. ज्ञातिभोजन करावतां अनेक पत्रावळीओना ढगला उकरडा उपर थया, तेमां द्वींद्रिय विगेरे अनेक जीवोनी विराधना थयेली छे. ए प्रमाणे चोरे लाखनुं दान करतां तेणे महापाप उपार्जन करेलुं छे ते तमे स्वयमेव समजी लेजो. ते पापथी आ भवमां ते सर्प थयेल छे. तेमज वळी तेने मारां धर्मकृत्योनी निंदा करी छे तेथी ए दुर्लभबोधी जीव छे; अहींथी मृत्यु पामीने ते नरके जशे.' आवां धर्मदासनां वचन सांभळी शुभंकर श्रेष्ठीना पुत्रो प्रतिबोध पाम्या अने श्रावक थया. धर्मदास तेज भवे मुक्तिने पाम्या.

" पोताना त्रीजा भवमां श्रीसंभवनाथनो जीव, श्रीदंडवीर्य राजा अने धर्मदास साधर्मिबंधुओनी सेवाथी परमसुखना स्थानने प्राप्त थया. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ सप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१७०॥

व्याख्यान १७१ मुं.

पौषधशाळा करवानुं फळ कहे छे.

पुण्याय कुर्वते धर्मशालादि ये जनाः सदा ।
तेषां स्याद्विपुलं पुण्यमामभूमिपतेरिव ॥ १ ॥

भावार्थ

" जेओ हमेशां पुण्यप्राप्तिने माटे धर्मशाळा विगेरे करे छे तेओने आम राजानी जेम घणुं पुण्य थाय छे. "

आमराजानी कथा.

गोपगिरिने विषे श्री बप्पभट्टसूरिना प्रतिबोधथी श्री आम राजाए एक सहस्र स्तंभवाळी पौषधशाळा करावी हती. ते पौषधशाळाने साधु अने श्रावकोनी सुगमताने माटे प्रवेश अने निर्गमनां त्रण उत्तम द्वार कराव्यां हतां. तेमां दूर भागे पट्टशाळमां बेठेला साधुओने पडिलेहण तथा स्वाध्याय विगेरे सात मांडलानी वेळा जणाववा माटे मध्यस्तंभे एक मोटी घंटा बांधी हती; जेनो टंकारव ते ते वेळाए थतो हतो. ते शालामां व्याख्यानमंडप त्रण लाख द्रव्य खर्ची करवामां आव्यो हतो. ते ज्योतिरुप मणिमय शिलाओथी आच्छादित हतो, अने चंद्रकांत मणिथी तेनुं तळीयुं बांधेलुं हतुं, तेथी बार सूर्यना जेवुं तेज पडतुं हतुं; एटले रात्रे पण सर्व अंधकार हणवाथी पुस्तकना अक्षर वांची शकाता हता. आ प्रमाणे सूक्ष्म अने बादर जीवोनी अविराधना थवा माटे तेणे महा तेजस्वी उपाश्रय कराव्यो हतो.

आ विषे बीजी पण एक दृष्टांतरुप कथा छे. पाटणमां सिद्धराज जयसिंहना सर्व व्यापारनो उपरी अधिकारी, पांच हजार अश्वोनो स्वामी श्रीमाळज्ञातिनो सांतू नामे मंत्री हतो. ते स्याद्वादरत्नाकर ग्रंथना कर्ता श्री वादिदेवसूरिनो भक्त हतो. तेणे चोराशी हजार टंकारव द्रव्य खर्चीने राजमहेलना जेवुं एक अपूर्व घर कराव्युं. तेनी सुंदर शोभा जोवाने लोकोनां टोळेटोळां आववा लाग्यां. एक वखते तेणे पोतानुं घर गुरुने बताव्युं, पण गुरुए तेनी श्लाघा करी नहि; त्यारे मंत्रीए तेनुं कारण पूछ्युं, एटले सौभाग्यनिधान नामना क्षुल्लके कह्युं—

> खंडनि पेषणी चूल्ह, जलकुंभः प्रमार्जनी ।
> पंचैते यत्र विद्यन्ते, तेन नो वर्ण्यते गृहं ॥ १ ॥

" जेमां खांडणीओ, घंटी, चूलो, पाणीयारुं अने सावणी ए पांच वाना होय छे तेवुं आ घर छे, माटे तेनी प्रशंसा करी नहि. " वळी ' सुघरी, कागडा, चकला प्रमुख अनेक पक्षीओ पण यत्नथी पोतानुं घर तो करे छे, तेमां कांई तेने पुण्य थतुं नथी. ' माटे मंत्रीराज ! जो आवी पौषधशाळा होय तो उत्तम वात कहेवाय. कारणके ते धर्मनी हेतुरुप छे, अने बीजां घर तो पापनां हेतुरुप छे; तेथी गुरुजीए प्रशंसा करी नहि. वळी हे मंत्री ! घर, सरोवर, विवाहादि प्रसंग अने युद्ध ए सर्व आरंभथी थाय छे, माटे ते सर्वनी प्रशंसा करवी योग्य नथी."

आ प्रमाणे सांभळी मंत्रीए विचार्युं के " साधुओने वसतिदान करवाथी मोटुं पुण्य थाय छे. पूर्वे पण जयंती श्राविका, वंकचूल अने अवंतिसुकुमाल विगेरे वसति-

दान करवाथी इच्छित स्थानने प्राप्त थयेला छे. वळी मेघकुमार एक क्षुद्र जीव (ससला) ने स्थान आपवाथी मोटा सुखने पाम्यो छे, तो आ मुनिओ तो सर्व जीवोने अभय आपनारा छे तेमने वसतिदान करवाथी मोटुं फळ थायज; अने जेओ मुनिओने आश्रय आपता नथी, तेओ नमुंचि प्रधानंनी जेम दुःखी थाय छे." आ प्रमाणे विचारी मंत्रीए पोतानुं ते निर्दोष घर धर्मनिमित्ते अर्पण कर्युं. आधाकर्मी आहारनी जेम मुनिनिमित्ते करेल उपाश्रय पण मुनिओने कल्पतो नथी; आमां तेवो कांई पण दोष नथी. आ प्रमाणे ते स्थान मुनिओने अर्पण करी मंत्रीए बीजी पण धर्मशाळाओ करावी.

" जे सर्वसिद्धिरुप स्त्रीनी वरमाळा जेवी पौषधशाला करावे छे ते सम्यक्त्वरुप बीजनी विशाळ अने निर्मळ एवी लक्ष्मी प्राप्त करे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७१ ॥

व्याख्यान १७२ मुं.

साधुने अकल्पतुं दान आपवुं नहि.

त्यक्तुं योग्यं विषैर्मिश्रं, कुत्सितं भक्ष्यवर्जितं ।
क्रोधकैतवदुर्मत्या, दत्तं दानमनर्थदम् ॥ १ ॥

भावार्थ

" त्याग करवा योग्य, झेर साथे मळेलुं, कोही गयेलुं, अभक्ष्य अने क्रोध कपट के दुर्मतिथी आपेलुं दान अनर्थ करनारुं छे " ते विषे नागश्रीनी कथा छे ते आप्रमाणे–

नागश्रीनी कथा.

चंपानगरीमां सोमदेव, सोमभूति अने सोमदत्त नामे त्रण सहोदर बंधु हता.

तेमने नागश्री, यज्ञश्री अने भूतश्री नामे अनुक्रमे त्रण स्त्रीओ हती. ते त्रण भाईओना गृहव्यवहारनी स्थिति एवी हती के वाराफरती एक एक दिवस सर्वे एक एकने घेर भोजन करवा जता. एक वखत नागश्रीनो वारो आवतां तेणीए अजाणतां कडवी तुंबडीनुं शाक रांध्युं, अने तेने हिंग विगेरे द्रव्यथी सारी रीते वघार्युं. तेमांथी तेणीए जरा चाखी जोयुं तो ते कडवुं लाग्युं; एटले तेमां थयेल द्रव्यनो खर्च संभारी कोई पात्रमां जुदुं राखी मूक्युं, अने बीजा भोजनथी भर्तो विगेरेने जमाडया.

तेवामां धर्मघोषसूरिना शिष्य धर्मरुचि नामे मुनि मासक्षपणने पारणे ते नागश्रीने घेर आव्या. नागश्रीए 'आ शाकमां थयेलो द्रव्यनो खर्च वृथा न थाओ' एवुं विचारी ते कटुक शाक ते मुनिने वहोराव्युं. ते लई मुनि गुरु पासे आव्या. 'अहो ! आ स्त्रीनी बुद्धिने धिक्कार छे ! जेने घेर तपना तेजथी कांचनगिरि जेवा मुनिवर आव्या तेमने तेणीए उकरडा जेवा गण्या. कल्पवृक्ष, सूर्य, कामकुंभ अने पुण्योदधि जेवा मुनिने ए पापी स्त्रीए आकडो, राहु, कुंभारनो कुंभ अने खाबोचीआ जेवा जाण्या.' धर्मरुचि मुनिए ते आहार गुरुने बताव्यो. गुरुए चार ज्ञाने करी ते आहार अयोग्य जाणी कह्युं–'हे शिष्य ! आ आहार कोई शुद्ध स्थळे परठवी द्यो.' गुरुनी आज्ञाथी धर्मरुचि मुनि वनमां गया. त्यां हाथमां राखेला पात्रमांथी कोई स्थळे एक बिंदु पडी गयुं. ते बिंदुना स्वादथी आकर्षाई त्यां घणी कीडीओ एकठी थई. परंतु तेनो स्वाद लेतांज हजारो कीडीओ मरती जोवामां आवी. एटले ते मुनिए विचार्युं के " एक बिंदु आटलो प्राणघातक छे तो आ समग्र आहार केटला जीवोने भस्मसात् करशे ! माटे हवे हुं बीजा जीवोने सुख करुं के मारी जीव्हाने सुख करुं ? जो हुं जीवोने अभय आपुं छुं ने आ आहार वापरुं छुं तो मारी आ जींदगीनो तो अंत थाय छे, पण ते साथे भव (संसार) नो पण अंत थवा संभव छे; नहितो उलटी भवनी वृद्धि थशे. अथवा जिनाज्ञा पाळवी के मारा जीवने पाळवो ? अहो ! जीनाज्ञा पाळवीज योग्य छे. वळी मारा गुरुनी पण आज्ञा छे के 'शुद्ध स्थळे जईने आ आहारने परठवी देवो;' तो मारा उदरना जेवुं बीजुं स्थळ क्यांई पण जोवामां आवतुं नथी. अरे जीव ! पूर्वे तें अनेक जीवोवाळा द्रव्यथी मधुर एवा मधु प्रमुख अभक्ष आहार करेला छे. आ आहार द्रव्यथी दुष्ट छे, पण परिणामे जीवदयाना रसरुप होवाथी विशिष्ट छे. तेथी हे जीव ! तुं पोतेज ते पीजा." आ प्रमाणे चिंतवी धर्मरुचि मुनिए सर्प जेम राफडामां पेसे तेम अदीन मनवडे ते आहारने पोताना कोठामां पेसारी दीधो. पछी अनशन करी ते महामुनि सर्वार्थसिद्ध विमाने गया.

धर्मघोषसूरिए आ वार्ता ज्ञानथी जाणी लोकोनी समक्ष ते नागश्रीनी निंदा करी. ते वात जाणी स्वजनोए नागश्रीने घरमांथी बहार काढी मूकी. सर्व स्थळे भमती नागश्री अरण्यमां दावानळमां दग्ध थई मरण पामीने छठ्ठी नरकमां उत्पन्न थई. पछी साते नारकीमां बे बे वार गई. पछी अनंतो काळ भवभ्रमण करी अनुक्रमे पांडवोनी स्त्री द्रौपदी थई. आ विषे विशेष वृत्तांत श्री ज्ञातासूत्रथी जाणी लेवुं.

" त्याग करवा योग्य एवुं भोजन मुनिने आपवाथी नागश्री अनंत काळ संसारमां भमी, तेथी उत्तम श्रावकोए क्रोधादि दोष छोडी सुपात्रमां निरंतर दान आपवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्विसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७२ ॥

व्याख्यान १७३ मुं.

दान अनुमोदना करनारने पण फळ आपे छे.

फलं यच्छति दातारं, दानं नात्रास्ति संशयः ।
फलं तुल्यं ददात्येतत्, आश्चर्यं त्वनुमोदकं ॥ १ ॥

भावार्थ

" दान दातारने फळ आपे छे तेमां तो काइ संशयज नथी, पण ते अनुमोदना करनारने पण तुल्य फळ आपे छे, ए आश्चर्य छे. " ते विषे बलभद्रमुनि विगेरेनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

दानअनुमोदक मृगकथा.

एक वखते श्रीनेमिनाथ प्रभु गिरनारना उद्यानमां समोसर्या. ए खबर जाणी कृष्णवासुदेव बळदेवनी साथे त्यां वांदवा गया. जिनेश्वरने वांदी वैराग्य युक्त देशना सांभळी कृष्णे प्रभुने पूछयुं–" हे प्रभु ! स्वर्गना जेवा आ द्वारका नगरीनुं भावी-

काले शुं थशे ? जिनेश्वर बोल्या—" मदिरापान करवाथी अंध थयेला तमारा बे पुत्रो सांब अने प्रद्युम्नथी कोप पामेला द्वैपायनथी आ नगरीनो विनाश थशे; अने त्यार पछी जराकुमारे छोडेला बाणथी डाबा पगमां वींधायेला तमे काल करी त्रीजी नारकीमां उत्पन्न थशो." प्रभुनां आवां वचन सांभळी जराकुमारे चिंतव्युं के 'हुं भाइनो हणनार न थाउं' एम विचारी ते वनेचर थइ चाली नीकळ्यो. श्रीकृष्ण 'हुं नरके जइश !' एवुं आर्तध्यान करवा लाग्या. ते जोइ प्रभु बोल्या—" हे अच्युत ! तमे आवती चोवीशीमां अमम नामे बारमा तीर्थंकर थशो." ते सांभळी कृष्ण हर्ष पामी पोतानी नगरीमां आव्या; अने तत्काळ नगरीनी अंदर जेटली मदिरा हती ते तमाम बहार कढावी फेंकी दीधी.

एक वखते सांब अने प्रद्युम्न कुमार वनमां क्रीडा करवाने दूर गया. त्यां गिरनार पर्वतनी गुफाओमां नांखेली पेली मदिरानी गंध आवी; तेथी चिरकाळे देखवाथी अतिलुब्ध थयेला यादवकुमारोए त्यां जइ ते मदिरानुं पान कर्युं, पछी मदथी विकळ बनी तेओ यथेच्छ भमवा लाग्या. तेवामां द्वैपायन तपस्वी तेमना जोवामां आव्या; एटले ते उन्मत्त थयेला कुमारोए गाढ महारवडे तेने कुटी नाख्यो. ते वखते क्रोधायमान थयेला द्वैपायने तत्काळ नियाणुं कर्युं के " जो मारुं तप प्रमाण होय तो हुं यादवोनी द्वारावती पुरीनो दाह करनार थाउं." आ वृत्तांत ते कुमारोए रामकृष्ण पासे जइने कह्युं. ते सांभळी रामकृष्ण द्वैपायननी पासे जइ कहेवा लाग्या—' हे मुनि ! आवुं भयंकर नियाणुं कृपा करीने निष्फळ करो.' द्वैपायने कह्युं—" ते वृथा थशे नहि पण तमने बेने जवा दइश; ते शिवाय बीजा कोइने पण छोडीश नहि. हवे ते विषे तमारे मने कांइ कहेवुं नहि." पछी कृष्णे द्वारकामां आवी पटह वगडाव्यो के 'भो लोको ! द्वैपायन तापसे कोपथी आपणी नगरीनो प्रलय करवो निर्धार्यो छे, माटे तमे जिनध्यानमां एक चित्तवाळा थजो.' लोकोए तेम करवा मांड्युं. ते प्रसंगे श्रीनेमिनाथ प्रभुए देशना आपी के " संध्याकालना वादळनो रंग, हस्तीना कान, दर्भना अग्रभागे रहेलुं जलबिंदु, समुद्रनां मोजां अने इंद्रधनुष जेवुं आ सांसारिक द्रव्य, यौवन अने राज्यसुख सर्व चपल छे." श्रीनेमि प्रभुनी आवी देशना सांभळी केटलाएक लोकोए दीक्षा अंगीकार करी.

द्वैपायनऋषि मृत्यु पामीने अग्निकुमार निकायमां इंद्र थयो. पूर्वना रोषथी ते द्वारिका नगरीने उपद्रव करवा आव्यो. पण कृष्णनी आज्ञाथी लोको आंबेल विगेरे तप करता हता, तेथी ते तेमनो पराभव करवा समर्थ थइ शक्यो नहि. एवी रीते बार वर्ष वीती गया. अन्यदा सर्व लोको लौकिक पर्वने दिवसे धर्मकार्यमां प्रमादी थइ

गया. ते अवसरनो लाभ लई दुरात्मा द्वैपायने संवर्तक पवनवडे नगरीमां तृणकाष्ठ क्षेपवी तेने सळगावी. ते वखते बहार गाम गयेला यादवोने पण तेणे लावी लावीने तेमां नांख्या. ते समये राम अने कृष्ण संभ्रम पामी रोहिणी, देवकी अने वसुदेव ए त्रणने रथमां बेसारी नगरीना दरवाजा पासे आव्या. त्यां रथना घोडा एक डगलुं पण आगळ चाली शक्या नहि, एटले रामकृष्ण पोते रथ खेंचवा लाग्या. ते वखते द्वैपायन देवे कह्युं–' हे रामकृष्ण ! तमे वृथा प्रयास शा माटे करो छो ? तमारा बे शिवाय कोईने हुं छोडीश नहि. ' एटलुं कहेतांमांज नगरीनो ज्वलायमान थतो दरवाजो रथ उपर तुटी पड्यो, अने रथमां बेठेला त्रणे जण मृत्यु पामी गया. तेओ श्री जिनेश्वरना ध्यानमां लीन होवाथी देवपणाने पाम्या.

रामकृष्णे नगरीमांथी निकळी कोई पर्वतना शिखर उपर चडी ते नगरीने छ मास सुधी बळती जोई. पछी ते बंने पांडुपुत्रना हस्तिनापुर नगरे जवा उत्सुक थया. अनुक्रमे चालतां चालतां तेओ कौशंबी नगरीना वनमां आव्या. त्यां एक वडना वृक्ष नीचे शिला उपर बंने विश्राम लेवा बेठा. ते वखते घणी तृषा लागवाथी कृष्णे पोताना बंधु पासे जळ माग्युं; एटले बळभद्र कृष्णने त्यां मूकी जळाशये पाणी लेवा गया. अहीं कृष्ण पीतांबर ओढी ढींचण उपर वाम चरण मूकी वृक्षनी नीचे सुई गया. ते अवसरे पेलो जराकुमार ते तरफ आवी चड्यो. तेणे दूरथी सुवर्णमृगनी भ्रांतिए तीक्ष्ण बाण छोड्युं, तेनाथी कृष्णनो वाम चरण वींधाई गयो; तेथी तत्काळ जाग्रत थई कृष्णे कह्युं–' अहो ! कया दुरात्माए आ कृत्य कर्युं ? ' ते सांभळी जराकुमार पोताना आत्माने निंदतो अने नेत्रमांथी अश्रु पाडतो बंधुना चरणमां पडी रुदन करवा लाग्यो. कृष्ण बोल्या–" भाई ! शा माटे रुदन करे छे ? भगवंते जे कह्युं हतुं ते थयुं छे तो तेमां शो शोक करवो ? हवे तो हे बांधव ! मारुं आ कौस्तुभ रत्न लई तुं पांडवो पासे जा, अने ते पांडवोने आपी द्वारकाना दाह विगेरेनो सर्व वृत्तांत निवेदन करजे. आ कौस्तुभरत्ननी एंधाणीथी तेमने खरेखरो निश्चय थशे. जो तुं अहींथी नहि जाय तो हमणाज बळभद्र आवी तने हणी नाखशे. " ते सांभळी जराकुमार कौस्तुभ लई मथुरा तरफ चाल्यो. तेना गया पछी कृष्णे चिंतव्युं के " गजसुकुमाल अने ढंढण विगेरेने धन्य छे के जेओ मोहने वश करी परमानंदने प्राप्त थई गया. " पछी ज्यारे प्राणांत समय आव्यो त्यारे कृष्णने नरकने योग्य लेश्या उत्पन्न थई; तेथी तेणे चिंतव्युं के " अहो ! मारी सुंदर नगरीने बाळनार ए पापी वैरीने हुं कोई रीते जोउं तो तेने मारीने यमराजनो अतिथि करी दउं. " आवुं चिंतवतां मृत्यु पामीने ते त्रीजी नरके गया.

अहीं बळभद्र कमळना पत्रमां जळ लइ वड नीचे आव्या. त्यां मृत्यु पामेला कृष्णने संबोधीने कह्युं-' बंधु ! उठो, आ शीतळ जळ पीओ.' आ प्रमाणे घणीवार कहेतां छतां पण प्रत्युत्तर मळ्यो नहि, एटले शरीर उपरथी वस्त्र लइ लीधुं; त्यां तो वाम चरणे वींधाइ मृत्यु पामेला तेने जोइ बळभद्र विलाप करवा लाग्या. पछी मोहथी कृष्णनुं मृत शरीर स्कंध उपर लइ आम तेम छ मास सुधी भम्या.

ते अवसरे बळरामनो मित्र सिद्धार्थ नामे देवता तेने बोध करवा माटे आव्यो. ते एक खेडुतनुं रुप लइ बळरामनी आगळ शिला उपर कमळनां बीज वाववा लाग्यो. ते जोइ बळराम बोल्या-' अरे मूर्ख ! आ शिला उपर कमळ शीरीते उगशे ?' खेडुत बोल्यो- ' अरे भाइ ! तारा स्कंध उपरनुं शब जीवशे त्यारे आ शिला उपर कमळ पण उगशे. ' तेनुं ए वचन अवगणी बळराम मोहथी शब लइने आगळ चाल्या. त्यां मार्गमां दग्ध थयेला वृक्षने सिंचन करनार एक पुरुष तेमना जोवामां आव्यो. बळरामे तेने कह्युं-' अरे मूढ ! दग्ध थई गयेल वृक्षने सिंचन करवाथी शुं ते कदि पल्लवित थशे ?' पेलाए कह्युं-' आ मृत शरीर जो जीवतुं थशे तो ते पण थशे. ' ते सांभळी रामे विचार्युं के जरुर आ' मारो बंधु निश्चेष्ट होवाथी मृत्यु पामेलज छे. ' तत्काळ देवताए प्रगट थइने कह्युं-" हे बंधु ! हुं तमारो सिद्धार्थ नामनो मित्र छुं. तमने बोध करवा माटेज आ सर्व में रचेलुं हतुं, आ कृष्णने जराकुमारेज मारी नाखेल छे. " पछी बधो पूर्व वृत्तांत देवे कही संभळाव्यो. ते जाणी बळभद्रे मोह छोडी दईने कृष्णना देहने अग्निसंस्कार कर्यो.

ते समये बलभद्रने दीक्षा लेवामां उत्सुक जाणी श्रीनेमिनाथे एक चारण मुनिने त्यां मोकल्या. तेमनी पासे बलभद्रे संयम ग्रहण कर्युं. पछी तुंगिका पर्वत उपर जई तीव्र तपस्या करवा लाग्या. एक दिवसे एवुं बन्युं के रामर्षि मासक्षपणने पारणे कोई नगरमां भिक्षा लेवा जता हता, त्यां नगरमां पेसतां कूवाना कांठा उपर कोई स्त्री बाळकने साथे लई जळ भरवा आवेली, ते बळराम मुनिनुं स्वरुप जोई मोह पामी गई. तेणीनां नेत्र बळराम उपर होवाथी तेणे जळ भरवानी रज्जु घडाने बदले बाळकना गळामां नाखी. आ प्रमाणे अनुचित कार्य करती ते स्त्रीने जोई राममुनिए तेणीने सावधान करी, अने मनमा चिंतव्युं के ' आवो अनर्थ करनार मारा रुपने धिक्कार छे ! आजथी नगरमां भिक्षा लेवा माटे जवुं नहि, वनमां काष्ठ लेनारा विगेरे आवे तेमनी पासेथी जे मळे ते आहार लेवो.'

एक वखते काष्ठवाहकोए पोतपोताना राजाओने कह्युं के 'वनमां कोई पुरुष मोटी तपस्या करे छे.' ते सांभळी ते राजाओए चिंतव्युं के ' ते पुरुष तपस्या करीने

आपणां राज्य लई लेशे, माटे चालो तेने हणी नाखीये. ' एम विचारी तेओ पोतपोतानुं सैन्य लई मुनिने मारवा माटे तेमनी समीपे आव्यां. ते समये रामनो मित्र पेलो सिद्धार्थ देव वैयावच्च करवा माटे त्यां आव्यो हतो, तेणे हजारो सिंह विकुर्व्यो; तेथी ते राजाओ भय पामी मुनिने नमी पोतपोताने स्थानके चाल्या गया. त्यारथी लोकोमां तेमनुं नृसिंह ए नाम प्रसिद्ध थयुं.

बळराम मुनिना स्वाध्यायने सांभळीने अनेक वाघ, सर्प, सिंह, मृग विगेरे प्राणीओ समकित तथा श्रावकव्रतने प्राप्त थया. तेमांनो कोई एक मृग रामऋषिनो पूर्व भवनो मित्र हतो, तेने जातिस्मरण थवाथी ते नजीकमां कोई पण सार्थवाह विगेरे आवेला होय त्यारे मुनिने त्यां लई जई अशनादि प्राप्त कराववा वडे वैयावृत्य करतो हतो. ते संज्ञाथी मुनिने बधी सुचना करतो हतो. एवी रीते राममुनिए सो वर्ष सुधी तीव्र तप कर्युं. ते विषे कह्युं छे के "साठ मास खमण अने चार चोमासी तप जेमणे करेलां छे एवा बळभद्र मुनिने हुं नमुं छुं"

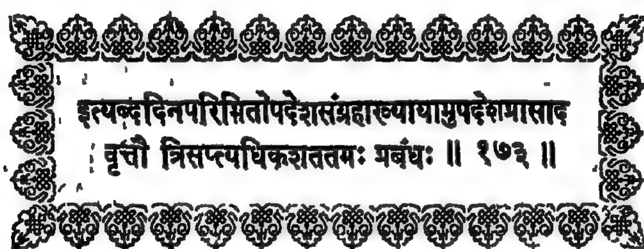
एक वखते कोई काष्ठइच्छक रथकार ते वनमां आवी अरधा कापेला वृक्षने तेमज रहेवा दई मध्यान्ह काळ थवाथी भोजन करवा माटे बेसवा तैयार थयो. ते समये पेला मृगे तेने जोई गुरुने संज्ञाथी जणाव्युं. एटले मासक्षपणने पारणे बळभद्र मुनि मृगे दर्शावेला मार्गे त्यां आव्या. पेला रथकारे मुनिने जोई भावशुद्धिथी दान आप्युं अने मनमां चिंतववा लाग्यो के "हुं धन्य छुं, हुं कृतपुण्य छुं." ते समये ते मृग ऊंचुं मुख करी रामने अने रथकारने जोई विचारवा लाग्यो के– "अरे! हुं अधन्य छुं. तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थई दूषित थयो छुं; तेथी हुं दीक्षा लेवा के साधुने भिक्षा आपवामां समर्थ नथी. हुं एकज मंदभाग्य छुं. पशुपणाथी हणायेला मने धिक्कार छे." आवुं चिंतवन करतां ते राम, रथकार अने मृग त्रणेनी उपर पवनना ऊर्मिथी प्रेरायेल ते अर्ध कापेल वृक्ष तुटी पड्युं. तेथी त्रणे मृत्यु पामी ब्रह्मदेव लोकमां देवपणे उत्पन्न थया. राममुनिए सो वर्ष सुधी संयम पाळ्युं.

देवपणाने पामेला बळराम अवधिज्ञान वडे पोताना बंधुना स्नेहने संभारी तरतज तेने मळवा माटे जवा उत्सुक थया. परंतु पूर्व पुस्तकमां लखेला पांच सभाने योग्य आवश्यक देवकृत्य करतां ब्यासी हजार वर्ष वीती गयां. त्यारपछी शीघ्रपणे त्रीजी नरके आवी तेओ कृष्णने त्यांथी लई जवा माटे खेंचवा लाग्या. कृष्णे कह्युं–"हे बंधु! मने अहींज रहवा दो, आकर्षण करो नहि, तमारा स्पर्शथी उलटो हुं अतिदुःख पामुं छुं, परंतु लोकमां आपणा बंनेनो यश देवताओ ने मनुष्यो गाम तेम करो"

पछी बळभद्र देवे पाछी पूर्व स्थळेज यादवोथी भरपूर द्वारका कृत्रिम रची, अने लोकोनुं वांछित पूरवा मांड्युं. पुनः ते द्वारका समुद्रना पूरमां तणाई गई. एवी रीते सातवार समुद्रमां द्वारकाने डुबावी; तेथी लोकोमां तेमनो माठो महिमा प्रसर्यो.

ब्राह्मणोना शास्त्रमां कृष्णावतारने अडतालीशसो वर्ष थयां एम कहे छे, ते पण उपरला प्रकारथी सत्य होय तो बने तेवुं छे. जैनशास्त्रमां तो छाशी हजार वर्ष थयां एम वृद्ध पुरुषो कहे छे.

"दातार दान आपे छे ते वखते जे अनुमोदना करे छे अथवा जे शुभ हृदयथी प्रशंसा करे छे, ते सारंग (मृग) नी जेम दातारना जेटलो लाभ मेळवे छे; एम तत्ववेत्ताओ कहे छे."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ त्रिसप्त्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७३ ॥

व्याख्यान १७४ मुं.

मुनिने दान आपतां बिंदुपात विगेरे दोष त्यजी देवा.

घृतादिवस्तुनो बिंदुर्भूमौ क्षरति नो यथा ।
तथा दानं प्रदातव्यं साधूनां तच्च कल्पते ॥ १ ॥

भावार्थ

"मुनिओने तेवी रीते दान आपवुं के जे आपतां घी विगेरे वस्तुनो बिंदु पृथ्वी उपर खरी पडे नहि तेवुं दान साधुओने कल्पे छे." ते विषे एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—.

मुनिदानमां बिंदुपात उपर दृष्टांत.

चंपानगरीमां धर्मघोष नामे मंत्री हतो. तेनी स्त्रीओ त्यांना नगरशेठ सुजातश्रेष्ठीनुं स्वरुप जोई मोह पामी हती. तेथी एकदा तेनी एक स्त्री सुजातशेठनो वेष लेवरावी दासीओनी साथे क्रीडा करती हती. ते जोई धर्मघोष मंत्री परमार्थ (खरी वात) जाण्या विना ते शेठ उपर द्वेष करवा लाग्यो. एक वखते तेणे शेठना नामथी एक कूट लेख लख्यो. तेमां एटलुं दर्शाव्युं के सुजातशेठ विक्रमराजाने लखे छे के "अमारी आ विज्ञप्ति ध्यानमां लई तमारे अहीं सत्वर आववुं. हुं अमारा राजाने प्रपंचथी मारी तमने राज्य अपावीश." आवो कूट लेख पोते लखी गुप्तचर मारफत पकडायेलो कहीने पोताना राजाने बताव्यो. राजाए क्रोधथी सुजात शेठने मारी नाखवा माटे कांईक मिष करीने चंद्रध्वज राजा पासे मोकल्यो, अने तेनी साथे एक लेख लखी आप्यो. चंद्रध्वज राजा ते लेख वांची सुजातशेठने निर्दोष जाणी विचारवा लाग्यो के 'अहो ! चंपापतिए आवुं अयोग्य कार्य मने केम बताव्युं ? आ श्रेष्ठी तो निस्पृह जणाय छे.' पछी ते वातनो निश्चय करीने तेणे पोतानी पुत्री ते सुजात शेठने आपी. नवोढा मुग्धा स्त्रीना संयोगथी (वृद्ध) श्रेष्ठी रोगी थई गयो. शेठने रोगी जोई तेनी पत्नी आत्मनिंदा करवा लागी. ते सांभळी श्रेष्ठी बोल्यो–'हे स्त्री ! शोक शामाटे करो छे ? एमां तमारो दोष नथी, कर्मनोज दोष छे' ते सांभळी तेणीने वैराग्य थयो. दीक्षा लई अनशनवडे मृत्यु पामी देवी थइ. त्यांथी अहीं आवी सुजात श्रेष्ठीने कह्युं–'हे श्रेष्ठी ! तमारा धर्मवचननो अंगीकार करी हुं आवा पदने प्राप्त थई छुं, तेथी हवे कांई कार्य होय तो कहो.' सुजाते कह्युं–'मारुं कलंक उतारो.' पछी ते देवीए श्रेष्ठीने विमानमां बेसारी चंपानगरीना वनमां मूक्यो; अने चंपानगरी उपर शिला विकुर्वी चंपापतिने उद्यानमां बोलाव्यो. ते त्यां आवीने सुजातश्रेष्ठीने नम्यो. देवीए पूर्वनो सर्व वृत्तांत राजाने जणाव्यो. ते सांभळी राजाए क्रोधथी धर्मघोष मंत्रीने देशपार कर्यो, अने सुजातशेठने मोटा उत्सव साथे घेर लाव्या. अनुक्रमे सुजातश्रेष्ठीए दीक्षा लीधी.

धर्मघोष मंत्री कोई सारा मुनिओना संयोगथी रुडुं चारित्र पामी पृथ्वीपुर नगरमां वरदत्त मंत्रीने घेर भिक्षा माटे गयो. वरदत्त संतुष्ट थई पंचामृतनुं दान देवा उद्यमवंत थयो. दान आपतां तेमांथी घी अने दुधनो एकाद बिंदु पृथ्वी उपर पडी गयो. एटले मुनि ते आहारने महा आरंभकारी होवाथी अकल्प्य जाणी लीधा विना पाछा चाल्या गया. वरदत्त पश्चात्ताप करवा लाग्यो; एटलामां जे पेलो बिंदु पड्यो हतो तेनी उपर एक माखी आवीने बेठी, ते माखीने भक्षण करवा गरोळी आवी, तेने

मारवाने काकीडो आव्यो, तेनो वध करवा बिलाडो धसी आव्यो, तेनी हिंसा करवाने कोईनो घरनो पाळेलो श्वान आव्यो, तेने मारवाने शेरीनो श्वान आव्यो; शेरीना श्वानने पाळेला श्वानना स्वामीए मार्यो. तेने मारतां जोई शेरीना लोकोए आवी तेना श्वानने मार्यो. ते कोपथी श्वाननो स्वामी शेरीना लोकोने मारवा आव्यो, एटले तेमांथी तो खड्गाखड्गी अने मुष्टामुष्टि विगेरे युद्ध थई पड्युं. आ बधुं जोई वरदत्ते विचार्युं के 'अहो! आवो महा अनर्थ ज्ञानवडे जाणीनेज ते मुनिए मारो आहार स्वीकार्यो नहीं होय. अहो! आवा प्रशंसा करवा योग्य ते मुनिना ज्ञानध्यानने धन्य छे.' आवुं चिंतवी ते मंत्री वैराग्यवडे स्वयंबुद्ध थयो. जातिस्मरण उत्पन्न थवाथी पूर्वभवे अध्ययन करेल सर्व सूत्रादिनुं स्मरण थई आव्युं. देवताए आपेलो मुनिवेष ग्रहण करी ते मुनि पृथ्वीने पवित्र करता विचरवा लाग्या. आविषे विशेष जाणवुं होय तो उपदेशमालाकर्णिकाथी जाणी लेवुं.

"दुध, घी के साकर विगेरे रसपदार्थनो बिंदु पृथ्वी उपर प्रमादथी पडे नहि तेवी रीते श्रावके मुनिने आहार आपवो, अने मुनिओए वरदत्तनी जेम ते ग्रहण करवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चतुःसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७४ ॥

व्याख्यान १७५ मुं.

अल्पदान पण मोटुं फळ आपनारुं थाय छे.

अल्पमपि क्षितौ क्षिप्तं, वटबीजं प्रवर्द्धते ।
जलयोगात्तथा दानात्, पुण्यवृक्षोपि वर्द्धते ॥ १ ॥

भावार्थ.

"जेम अल्प एवुं पण वडनुं बीज पृथ्वीमां नाखवाथी जळना योगवडे बहु वधी पडे छे, तेम सुपात्रे दान करवाथी पुण्यरुपी वृक्ष अत्यंत वधे छे."

विस्तरार्थ

वडनुं बीज अल्प एटले तलना दाणाना त्रीजा भाग जेटलुं होय छे, ते जळदानवडे जेम मोटुं वडनुं वृक्ष थई पडे छे तेम दानथी पुण्यरुपी वृक्ष पण वधे छे. ते विषे मूळदेवनी कथा छे ते आ प्रमाणे—:

मूळदेवनी कथा.

कौशल्या नगरीमां धनदेव अने धनश्रीनो पुत्र मूळदेव नामे हतो. ते कळापात्र हतो पण व्यसनथी दूषित हतो; तेथी तेना पिताए तिरस्कार करीने तेने घर बहार काढी मूक्यो हतो. अनेक देशोमां अटन करतो मूळदेव एकदा कोई शहेरनी नजीक रहेला देवालयमां कोई कापडीनी साथे सूतो हतो ते बंनेने रात्रे संपूर्ण चंद्रमंडळनुं पान कर्यानुं स्वप्न आव्युं. प्रातःकाळे पेला कापडीए पोताना गुरु पासे जई ते स्वप्ननी वार्ता कही. गुरुए तेनुं फळ कह्युं—" हे शिष्य ! आजे कोई तने घी गोळथी परिपूर्ण एवो मांडो आपशे." कह्युं छे के—

> सा सा संपद्यते बुद्धिः, सा मति सा च भावना ।
> सहायास्तादृशा ज्ञेया, यादृशी भवितव्यता ॥ १ ॥

" जेवी भवितव्यता होय छे तेवी बुद्धि थाय छे, तेवी मति थाय छे, तेवी भावना थाय छे, अने सहायक पण तेवाज प्राप्त थाय छे."

मूळदेव ते कापडीना गुरुने अज्ञ जाणी शहेरमां कोई प्रवीण स्वप्नपाठकनी पासे गयो, अने विनयपूर्वक स्वप्नतुं फळ पूछ्युं. स्वनपाठके कह्युं—' मूळदेव ! तमने आजथी सात दिवसनी अंदर राज्य मळशे.' आ प्रमाणे कहीने तेणे पोतानी पुत्री तेनी साथे परणावी. मूळदेवे जणाव्युं के ' मने ज्यारे राज्य मळशे त्यारे हुं तमारी पुत्रीने तेडीश.' पछी नगरमां भमतां तेने कोई गृहस्थने घेरथी अडद मळ्या. ते लई जंगलमां भोजन करवा बेठो; तेवामां कोई मासोपवासी मुनि अचानक त्यां आवी चड्या. मूळदेवे घणा हर्षथी मुनिने अडद वहोराव्या. तेना महिमाथी आकाशवाणी थई के ' तुं अर्धा श्लोकमां जे मागीश ते मळशे.' तेणे—

> गणियं च देवदत्तं, दंति सहस्सं च रज्जं च ।

आ प्रमाणेना अर्धा श्लोकथी देवदत्ता गणिका, एक हजार हाथी अने राज्य माग्युं. देवे ' तथास्तु ' कह्युं.

अनुक्रमे सातमो दिवस आवतां कोई अपुत्र राजा मृत्यु पाम्यो, एटले तेना मंत्रीओए पांच दिव्य कर्यां, अने ते प्रकारे मूळदेव राज्य पाम्यो. आ खबर पेला कापडीने पडी, एटले ते वारंवार पेला देवालयमां जईने तेवा स्वप्नने माटे सुवा लाग्यो, पण तेवुं स्वप्नुं फरीने क्यांथी पामे ? अहीं मूळदेवे राज्य मेळवी दानादि धर्म करी आत्मधर्मने संपूर्ण रीते साध्यो.

प्रस्तुत श्लोकना भावार्थ उपर नयसार अने चंदनबाला विगेरेनी कथाओ पण छे; तेमज आ अवसर्पिणीमां पहेला दानधर्मना दर्शक श्रेयांसकुमारनी कथा पण तेने लगती छे. आ सर्व कथा दानकुळक नामना प्रकरणमां वर्णवेली छे; त्यांथी जाणी लेवी.

शिष्य प्रश्न करे छे के–" सुपात्रदान, अभयदान, उचितदान, कीर्त्तिदान अने अनुकंपादान एम पांच प्रकारनां दान छे. सुपात्रमां पुण्यबुद्धिथी आपवुं ते सुपात्रदान; कोई प्राणीने जीवथी बचाववो– भयथी मुक्त करवो ते अभयदान; माता, पिता, पुत्र वधू, सेवक अने राजा विगेरेने आपवुं ते उचितदान; कीर्तिने माटे याचक विगेरेने आपवुं ते कीर्तिदान अने दीन दुःखीने आपवुं ते अनुकंपादान. आ पांच दानोमां सुपात्रदान एकज सर्वोत्तम छे एम वारंवार कहेवानुं शुं कारण ? " तेना उत्तरमां गुरु कहे छे के " ए पांच दानोमां पहेला बे दान मोक्ष आपनारां छे; तेमां अभयदान सर्व व्रतोनी आदिमां कहेलुं छे, अने सुपात्रदान सर्व व्रतोने अंते कहेलुं छे. बीजां त्रण दान सांसारिक सुखने आपनारां छे. तेथी अथवा पहेला अने छेल्ला तीर्थंकर सुपात्रदान आपवाथीज सुखी थया छे तेथी सुपात्रदानने सर्वोत्तम कहेलुं छे. "

" अल्प दानना महात्म्यथी मूळदेव, नयसार, चंदनबाळा, श्रेयांसकुमार अने धनोसार्थवाह (श्री ऋषभदेव भगवंतनो जीव) विगेरे मोटा फळने पाम्या छे; तेथी छेल्लुं अतिथिसंविभाग व्रत सर्व श्रावकोए अंगीकार करवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पंचसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७५ ॥

व्याख्यान १७६ मुं.

निश्चय अने व्यवहारनयथी बारव्रतनुं विवेचन.

एकैकं व्रतमप्येषु, द्विद्विभेदेन साधितम् ।
तद्विज्ञाय सुधीश्राद्धैः रुचिः कार्या व्रतादरे ॥ १ ॥

भावार्थ

" ए बार व्रतोमांहेला एक एक व्रत निश्चय अने व्यवहार एवा बेबे भेदथी कहेला छे, ते बराबर जाणीने सद्‌बुद्धिवाळा श्रावकोए ते व्रतोने आदरवा रुचि करवी "

विशेषार्थ

ए बार व्रतोमां एक एक व्रत बेबे प्रकारे एटले निश्चय अने व्यवहारनये करी कहेला छे ते आ प्रमाणे—जे बीजाना जीवने पोताना जीवनी जेम क्षुधादि वेदनाथी पोता समान जाणी तेनी हिंसा करे नहि ए व्यवहारनयनी अपेक्षाए पहेलुं व्रत छे; अने आ पोतानो जीव अन्य जीवनी हिंसा करवा वडे कर्म बांधी दुःख पामे छे, तेथी पोताना आत्माने कर्मादिकनो वियोग पमाडवो योग्य छे. वळी आ जीव अनेक स्वाभाविक गुणवाळो छे, तेथी हिंसादिवडे कर्म ग्रहण करवानो तेनो धर्म नथी, एवी ज्ञानबुद्धिथी हिंसाना त्याग रुप आत्मगुणने ग्रहण करवानो निश्चय करवो, ए निश्चयनयनी अपेक्षाए पहेलुं अहिंसा व्रत छे.

लोकनिंदित एवा असत्य भाषणथी निवृत्त थवुं ए व्यवहारथी बीजुं व्रत छे, अने मुनीश्वर-त्रिकाळज्ञानी भगवंते कहेल जीव अजीवनुं स्वरुप अज्ञानवडे विपरीत कहेवुं अने परवस्तु जे पुद्गलादिक छे तेने पोतानी कहेवी तेज खरेखरुं मृषावाद छे; तेनाथी जे विरमवुं ते निश्चयनयथी बीजुं व्रत छे. आ व्रत शिवाय बीजा व्रतोनी विराधना करे तेनुं चारित्र जाय छे, पण ज्ञान तथा दर्शन ए बे रहे छे; परंतु निश्चय मृषावादथी विराधित थतां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र त्रणे जाय छे. आगममां पण कहेल छे के " एक साधुए मैथुनविरमण व्रत भांग्युं छे, अने एके बीजुं व्रत भांग्युं छे, तो तेमां पहेलो साधु आलोचना विगेरेथी शुद्ध थाय छे, पण बीजो स्याद्वादमार्ग उत्थापक होवाथी आलोचनादिकवडे शुद्ध थतो नथी. "

जे अदत्त एवी परवस्तु धनादिक ले नहि-तेनुं प्रत्याख्यान करे ते व्यवहारथी त्रीजुं अदत्तादान विरमणव्रत छे, अने जे द्रव्यथी अदत्त वस्तु न लेवा उपरांत अंतःकरणमां पुण्यतत्वना बेंताळीश भेद प्राप्त करवानी इच्छाए धर्मकार्य करे छे, अने पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय आठ कर्मनी वर्गणा विगेरे परवस्तु ग्रहण करवानी इच्छा करतो नथी तेनो नियम करे छे ते निश्चयथी त्रीजुं व्रत छे.

श्रावकोने स्वदारसंतोष अने परस्त्रीनो त्याग तथा साधुने सर्व स्त्रीओनो त्याग ए व्यवहारथी चोथुं व्रत छे; अने विषयनी अभिलाषा, ममत्व अने तृष्णानो त्याग ए निश्चयथी चोथुं व्रत छे; अहीं एटलुं समजवुं के बाह्यथी स्त्रीनो त्याग कर्या छतां अंतरमां जो तेनी लोलुपता होय छे-तेनुं प्रत्याख्यान करतो नथी तो तेने विषय संबंधी कर्मनो बंध थया करे छे.

श्रावकोने नव प्रकारना परिग्रहनुं परिमाण करवुं ते अने मुनिओने सर्व परिग्रहनो त्याग करवो ते व्यवहारथी पांचमुं व्रत छे; अने भावकर्म जे राग, द्वेष ने अज्ञान तथा द्रव्यकर्म, आठ प्रकारनां कर्म तथा देह अने इंद्रियनो त्याग ते निश्चयथी पांचमुं व्रत छे; कर्मादि परवस्तुपर मूर्छानो त्याग करवाथीज भावथी पांचमुं व्रत थाय छे. कारणके शास्त्रकारे मूर्छानेज परिग्रह कहेलो छे. मूच्छा परिग्गहो वुत्तो इत्यादि वचनात्.

छ दिशाए जवा आववानुं परिमाण करवुं ए व्यवहारथी छठ्ठुं व्रत छे; अने नारकादि गति रुप कर्मना गुणने जाणी ते प्रत्ये उदासी भाव राखवो अने सिद्ध अवस्था प्रत्ये उपादेय भाव राखवो ए निश्चयथी छठ्ठुं व्रत छे.

प्रथम कहेवा प्रमाणे भोगोपभोग व्रतमां सर्व भोग्य वस्तुनुं परिमाण करवुं ए व्यवहारथी सातमुं व्रत छे. तथा व्यवहारनयने मते कर्मनो कर्ता अने भोक्ता जीवज छे; अने निश्चयनयने मते कर्मनुं कर्तापणुं कर्मनेज छे; कारणके मन वचन कायाना योगज कर्मना कर्ता छे. तेम भोक्तापणुं पण योगमांज रहेलुं छे. अज्ञाने करीने जीवनो उपयोग मिथ्यात्वादि कर्म ग्रहण करवाना साधनमां मळे छे. परमार्थवृत्तिए तो जीव कर्मना पुद्गळोथी भिन्नज छे अने ज्ञानादि गुणोनो कर्ता अने भोक्ता छे. पुद्गळो जड, चळ अने तुच्छ छे. वळी जगत्ना अनेक जीवोए ते भोगवी भोगवीने उच्छिष्ट थयेला भोजननी जेम मूकी दीधेला छे तेवां पुद्गळोने भोगउपभोगपणे ग्रहण करवानो जीवनो धर्म नथी; आ प्रमाणे जे चिंतन करवुं ते निश्चयथी सातमुं व्रत छे.

प्रयोजन विनाना पापकारी आरंभथी विराम पामवुं ते व्यवहारने आश्रीने आठमुं अनर्थदंड विरमण व्रत छे अने मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग एना उत्तर भेद सत्तावन जे कर्मबंधना हेतु छे अने जेथी कर्मनो बंध थाय छे तेने आत्मीय भावथी

जाणी तेनुं निवारण करवुं ते निश्चयथी अनर्थदंड विरमण नामे आठमुं व्रत छे.

आरंभना कार्य छोडी जे सामायिक करवुं ते व्यवहारथी नवमुं सामायिक व्रत छे; अने ज्ञानादि मूळ सत्ता धर्मवडे सर्व जीवोने सरखा जाणी सर्वने विषे समता परिणाम राखवा ते निश्चयथी नवमुं सामायिक व्रत छे.

नियमित क्षेत्रमां स्थिति करवी ते व्यवहारथी दशमुं देशावकाशिक व्रत छे, अने श्रुतज्ञानवडे षट्द्रव्यनुं स्वरुप ओळखी पांच द्रव्यमां त्याज्य बुद्धि राखी ज्ञानमय जीवनुं ध्यान करवुं ते निश्चयथी दशमुं देशावकाशिक व्रत छे.

अहोरात्र सावद्य व्यापारने छोडी स्वाध्याय ध्यानमां प्रवृत्ति करवी ते व्यवहारथी अगियारमुं पौषधव्रत छे; अने आत्माना स्वगुणनुं ज्ञानध्यानादिवडे पोषण करवुं ते निश्चयथी अगियारमुं पौषधव्रत छे.

पौषधना पारणे अथवा हमेशां साधु अने श्रावकोने अतिथिसंविभाग करी (दान दई) भोजन करवुं ते व्यवहारथी बारमुं अतिथिसंविभाग व्रत छे, अने आत्माने तेमज बीजाने ज्ञानादिकनुं दान करवुं, पठन, पाठन, श्रवण अने श्रावण (संभळाववुं) विगेरे करवुं ते निश्चयथी बारमुं अतिथिसंविभाग व्रत छे.

आ प्रमाणे निश्चय अने व्यवहार बंने भेदे करी सहित बारव्रत पांचमे गुणठाणे रहेला श्रावकोने मोक्ष आपनारां थाय छे; अने निश्चय विना एकला व्यवहारथी अंगीकार करेलां बारव्रत स्वर्गसुखने आपनारां थाय छे, मोक्षने आपनारां थतां नथी. कारणके व्यवहारचारित्र अने साधु श्रावकना व्रत अभव्य प्राणीओने पण प्राप्त थाय छे, तेथी कांई निर्जरा थती नथी; तेथी निश्चयनय सहितज ते व्रतोनुं पालन करवुं श्रेष्ठ छे. ते विषे कह्युं छे के–

निछ्छयनय मग्गसुरको, ववहारो पुन्नकारणो वुत्तो।
पढमो संवरहेउ, आसवहेउ बीओ भणिओ ॥

" निश्चयनय मोक्षमार्ग छे, अने व्यवहारनयने पुण्यनुं कारण कहेलो छे. पहेलो नय संवरनो हेतु छे, अने बीजो नय आश्रवनो हेतु छे." निश्चयनय ज्ञानसत्ता रुप होवाथी मोक्षमार्ग छे, अने व्यवहारनय पुण्यनो हेतु होवाथी तेनावडे शुभ अशुभ कर्मनो आश्रव थाय छे. अशुभ व्यवहारथी पापनो आश्रव थाय छे.

अहीं शिष्य शंका करेछे के " ज्यारे अनंतर गाथामां व्यवहारनय आश्रवना हेतु रुप कहेलो छे तो अमे तेने ग्रहण करशुं नहि." तेना उत्तरमां गुरु कहे छे के–हे

शिष्य! व्यवहार विना निश्चयनयनुं ज्ञान थतुं नथी, अथवा श्री जिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानो भंग थाय छे. आगममां कह्युं छे के " जो जिनमतने अंगीकार करवा इच्छो तो व्यवहार अने निश्चय ए बने नयने छोडशो नहि; कारणके एक विना शासन लोपाय छे, अने बीजा विना उच्चभाव लोपाय छे." वळी व्यवहारनय छोडवाथी सर्व निमित्त-कारण निष्फळ थाय छे; ज्यारे निमित्तकारण निष्फळ थयुं तो पछी उपादानकारणनी सिद्धि पण शी रीते थाय? एथी ते बंने नय प्रमाण करवा योग्य छे. "निश्चयनयनी साथे बीजो (व्यवहार) नय पण प्रमाण रुप छे. निश्चयनय सुवर्णना अलंकार जेवो छे, अने व्यवहारनय उपधान अथवा झाळण विगेरे जेवो छे, अथवा सांधा मेळवनार लाख विगेरे पदार्थनी जेवो छे." अहीं उपनय पोतानी मेळे करी लेवो.

" एवी रीते बारव्रतो मांहेना दरेक व्रत व्यवहार अने निश्चय एवा बे प्रकारे जाणी श्रावकोए ए व्रतो ग्रहण करवामां रुचि करवी ए तत्व छे. आ सर्व विषय आगमसार ग्रंथमांथी उद्धरीने अहीं लखेलो छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ षट्सप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१७६॥

व्याख्यान १७७ मुं.

आ बारव्रत बळात्कारे पण श्रावकने आपवां.

प्रसह्येनाप्यसौ धर्मः, श्रावकानां प्रदीयते ।
यथा पोट्टिलदेवेन, बोधितस्तेतलेः सुतः ॥ १ ॥

भावार्थ

" आ बारव्रतग्रहण रुप धर्म श्रावकोने बळात्कारे पण आपवो. जेम पोट्टिलदेवे तेतलिपुत्रने बलात्कारे प्रतिबोध कर्यो हतो तेम."

तेतलिपुत्रनी कथा.

त्रिवल्ली नगरमां कनकरथ नामे राजा छे. तेने तेतलिपुत्र नामे मंत्री हतो. ते त्यांना नगरशेठनी पुत्री उपर मोह पाम्यो. ते पुत्रीनुं नाम पोट्टिला हतुं, तेने ते मंत्री परण्यो. कनकरथ राजा राज्यमां अत्यंत लुब्ध होवाथी पोताने जे जे पुत्र थाय तेने मारी नाखतो हतो. एक समये राजानी कमलावती नामे राणी सगर्भा थई. तेणीए पोतानी विश्वासु दासीने तेतलिपुत्र मंत्री पासे मोकलीने कहेवराव्युं के 'जो मने पुत्र थाय तो कोई पण रीते तमे तेनी रक्षा करजो.' राणीनुं वाक्य बुद्धिमान मंत्रीए स्वीकार्युं. केटलोक काळ गया पछी दैवयोगे पोट्टिला अने कमलावतीए साथे पुत्री अने पुत्रने जन्म आप्यो. एटले मंत्रीए विश्वासु माणस मोकली कमलावतीना पुत्रनुं अने पोतानी पुत्रीनुं परावर्तन कराव्युं. राजाए राणीना परिजनने पूछ्युं, एटले तेमणे पुत्रीनो जन्म थयो छे एम कह्युं. मंत्रीए राजकुमारनुं कनकध्वज एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे राजा कनकरथ मृत्यु पामतां मंत्री अने राणी कमलावतीए मळीने ते पुत्रनो राज्य उपर अभिषेक कर्यो. कनकध्वज कृतज्ञ होवाथी तेणे राज्यना सर्व कार्यमां मंत्रीनेज मुख्य कर्यो.

अन्यदा दैवयोगे तेतलीपुत्र मंत्रीने तेनी पोट्टिला स्त्री उपर कोई कारणने लइने अप्रीति उत्पन्न थई. तेथी पोट्टिलाए कोई साध्वीने पतिना वशीकरण विषे पूछ्युं. साध्वीए धर्मदेशना आपीने तेने प्रतिबोधित करी, एटले तेणे दीक्षा लेवानी अर्थी थईने पति पासे आज्ञा मागी. पतिए कह्युं–'जो तुं दीक्षा लईने स्वर्गे जाय तो त्यांथी मने बोध आपवा आववानुं कबुल करे तो हुं तने व्रत लेवानी आज्ञा आपुं.' पोट्टिलाए ते कबुल कर्युं. पोट्टिला दीक्षा लीधा पछी काळयोगे मृत्यु पामीने स्वर्गे गई. अवधिज्ञानवडे पूर्वभव जाणी पोतानी प्रतिज्ञा सत्य करवाने माटे तेणे मंत्रीने व्रत लेवानी प्रेरणा करवा मांडी. परंतु विषयमां लोलुप एवा मंत्रीए श्रावक अने साधुना बंने धर्ममांथी एके धर्मनी इच्छा करी नहि. पोट्टिलादेवे विचार्युं के कोई पण प्रकारना कष्टमां पड्या विना मंत्री बोध पामशे नहि, एवुं धारी तेणे एक वखते राजानो तेना पर कोप बताव्यो. ज्यारे मंत्री राजाने नमवा गयो त्यारे राजाए तेने मुख बताव्युं नहि. आथी मंत्री अत्यंत खेद पामी नगरमांथी नीकळ्यो, अने मृत्यु पामवा माटे तेणे तालपुट विष खाधुं, पण देवप्रभावथी ते तेने अमृत रूप थई गयुं. पछी तेणे मरण पामवा माटे जलप्रवेश, अग्निप्रवेश, गळेफांसो, गिरिपात, वृक्षपात अने शस्त्राघात विगेरे मृत्युना सर्व प्रकार कर्या, पण देवप्रभावथी ते बधा निरर्थक थया. एक वखते

ते चाल्यो जतो हतो त्यां पछवाडे उन्मत्त हस्ती दोड्यो आवतो दीठो, तेथी आकुळ व्याकुळ थईने ते कोई खाडामां पडी गयो, अने मूर्छित थयो. क्षणवार चैतन्य आवतां ते बोल्यो के ' अरे पोटिला ! तुं क्यां छे ? हुं कोने शरणे जाउं ? ' ते वखते कृपावडे पोटिलादेवे प्रगट थइने कह्युं—' अरे तेतलिपुत्र ! में घणा प्रयत्नथी तने बोध कर्यो पण तुं समज्यो नहि, तेथी आ बधुं में विकुर्वीने बताव्युं छे. ' मंत्री बोल्यो—' हे देव ! में अज्ञानथी कांई जाण्युं नहि, पण हवे थोडो वखत श्रावकधर्म पाळी पछी मुनिपणानो आश्रय करीश; परंतु तुं कोई पण रीते राजाने मारा पर प्रसन्न कर. ' देवताए तेम कर्युं. तेथी राजाए संतुष्ट थई मंत्रीनी सामे आवी मंत्रीने पोतानो अपराध खमाव्यो. पछी बुद्धिमान मंत्री पोताने घेर जई दानादि धर्म युक्त श्रावकना बारव्रत पाळवा लाग्यो.

एकदा तेणे गुरु पासे जइ पोतानो पूर्वभव पूछ्यो. गुरु बोल्या—" तुं महाविदेह-क्षेत्रमां पुंडरीकिनी नगरीमां महापद्म नामे राजा हतो. तेणे गुरुनी देशनाथी प्रति-बोध पामी चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे चौद पूर्वधारी थयो. प्रांते एक मासनुं अनशन करीने महाशुक्र देवलोके देवता थयो. त्यांथी चवी तेतलिमंत्रीपुत्र तेतलिपुत्र नामे तुं थयो छे. " ते सांभळी मंत्रीने जातिस्मरणज्ञान थयुं. पूर्वे भणेला पूर्वनुं स्मरण करी तेणे शुद्ध चारित्र अंगीकार कर्युं. अनुक्रमे केवलज्ञान पामी अव्ययपद (मोक्ष) ने प्राप्त थयो.

" उत्तम मुनिवरो अनेक युक्तिओथी उपासकोने प्रतिबोध करे छे. जगत्मां सूर्यनी कांति जेवो उद्योत करनारा पुरुषो पोटिलानी जेम श्लाघा करवा योग्य छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ सप्तसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७७ ॥

व्याख्यान १७८ मुं.

(मनुष्यभव प्राप्त थयेलाने शिक्षोपदेश.)

यथा न्यायपुरे रत्नचूडो न मुग्धतां गतः ।
मोहादिबंधने तद्वत् धर्मधीर्न लुभ्यते ॥ १ ॥

भावार्थ

" जेम न्यायपुरमां रत्नचूड मुंझायो नहि, तेम धर्मबुद्धिवाळा पुरुषो मोहादिकना बंधनमां लोभाता नथी."

रत्नचूडनी कथा

आ भरतक्षेत्रने विषे ताम्रलिप्ती नामनी नगरीमां रत्नाकर नामे श्रेष्ठी हतो. तेने सरस्वती नामे स्त्री हती. तेमने रत्नचूड नामे एक पुत्र थयो हतो. ते युवान पुत्र नगरना उपवन विगेरेमां स्वेच्छाथी विहार करतो हतो. एक वखते राजमार्गे जतां सन्मुख आवती सौभाग्यमंजरी नामनी वेश्या रत्नचूडना खभा साथे अथडाई; तेथी मनमां कचवाईने ते बोली– "अरे! आवा विशाळ राजमार्गमां पण मने सन्मुख आवती तुं जोतो नथी? आटलो बधो लक्ष्मीमद करवो तने घटित नथी." कारणके–

पित्रोपार्जितवित्तेन विलासं कुरुते न कः ।
सः श्लाघ्यो यः स्वयं लक्ष्मीमुपार्ज्य विलसत्यहो ॥

" पिताए उपार्जन करेला द्रव्यथी कोण विलास न करे? पण जे स्वोपार्जित द्रव्यथी विलास करे ते पुरुषज प्रशंसाने पात्र छे." आ प्रमाणे कही वेश्या स्वस्थाने चाली गई. ते सांभळी रत्नचूडे मनमां विचार्युं के 'आ वेश्यानुं वचन मारे सत्य करवुं.' आ प्रमाणे विचार करतो अने मनमां खेद पामतो रत्नचूड घेर आव्यो. पुत्रनुं खिन्न वदन जोई तेना पिताए पूछ्युं–'वत्स! तारे शी खोट छे जेथी तारुं मुख सखेद अने निस्तेज जणाय छे? जे तारी इच्छा होय ते कहे, हुं तारी इच्छा क्षणमां पूरी करीश.' रत्नचूड बोल्यो–'पिताजी! तमारा उपार्जन करेला द्रव्यथी मारे सुख जोईतुं नथी, तेथी तमारी आज्ञा मेळवी स्वभुजाथी द्रव्य उपार्जन करवा देशांतरे जवा इच्छुं छुं.'

पिताए कह्युं-"वत्स! तुं माखण जेवा कोमळ शरीरवाळो छे, तुं देशांतरमां जईने शुं करीश?" कह्युं छे के-

इंद्रियाणि वशे यस्य, स्त्रीभिर्यो न विलुभ्यते ।
वक्तुं यो वेनीशो जातः, यांति देशांतराणि सः ॥

"जेने इंद्रियो वश होय, जे स्त्रीओथी लुब्ध थाय तेम न होय अने जे बोलवामां प्रवीण थयेल होय ते देशांतरमां जई शके छे." हे पुत्र! "में जे लक्ष्मी उपार्जन करी छे ते तारे माटेज छे." आ प्रमाणे कह्यां छतां पण रत्नचूडे आग्रह छोड्यो नहि एटले तेना पिताए आज्ञा आपी. तत्काळ रत्नचूड घणा वहाणोमां विविध प्रकारनां बहु किंमती करियाणां भरी तैयार थयो. चालती वखते श्रेष्ठीए आ प्रमाणे शीखामण आपी-"वत्स! तुं कदि पण अन्यायनगर (अनीतिपुर) मां जईश नहि. कारण के त्यां अन्यायप्रिय नामे राजा छे, अविचारी नामे मंत्री छे, गृहीतभक्षक नामे नगरशेठ छे, यमघंटा नामे वेश्या छे, अने बीजा द्यूतकार, चोर, पारदारिक (व्यभिचारी) विगेरे अनेक ठग लोको त्यां रहे छे. तेमनुं स्वरुप जाण्या विना जे त्यां जाय छे तेनुं सर्वस्व त्यांना लोको हरी ले छे; तेथी ते नगर छोडीने बीजे गमे त्यां तुं स्वेच्छाए जजे." आ प्रमाणे पितानी शीखामण स्वीकारी शुभ दिवसे मांगल्य उपचार करी रत्नचूड वहाणमां बेसी चाल्यो.

अनेक गाम, नगर, द्वीप विगेरेमां पर्यटण करतो रत्नचूड भवितव्यताना योगे अनीतिनगरेज आवी चड्यो. ते नगरमां वसनारा धूर्त लोको ते वहाणने आवतुं जोई हर्ष पाम्या, अने तेनी सन्मुख आव्या. तेमने जोई रत्नचूड शंका पाम्यो. पछी बंदरने कांठे आव्यो एटले तेणे कोई पुरुषने पूछयुं-'भद्र! आ द्वीपनुं नाम शुं?' ते पुरुषे कह्युं-'चित्रकूट नामे आ द्वीप छे, अने आ अनीतिपुर नामनुं नगर छे.' ते सांभळी रत्नचूड विचार करवा लाग्यो के "पिताए जे स्थले जवानी ना कही हती तेज स्थले हुं दैवयोगे आवी चड्यो; आ वात सारी थई नहि. पण मारा वांछितनो लाभ मने अहीं थशे एम जणाय छे." कह्युं छे के-

प्रशस्त शकुना यत्रानुकूलपवनस्तथा ।
उत्साहो मनसश्चैतत्, सर्वं लाभस्य सूचकं ॥

"जे स्थले जतां सारां शकुन थाय, अनुकूल पवन वाय अने मनमां उत्साह आवे ए सर्व लाभने सूचवे छे." आवुं विचारी रत्नचूड वहाणमांथी उतर्यो अने बंदर उपर

उतारो कर्यो. तेवामां नगरमांथी चार वणिकवेपारीओ आव्या. तेओए खुशीखबर पूछीने कह्युं-'तमारुं सर्व करियाणुं अमे लइशुं अने ज्यारे तमे पोताने नगर जवा इच्छशो त्यारे तमे कहेशो ते वस्तु तमारा वहाणमां भरी आपशुं.' रत्नचूडे ते कबुल कर्युं, एटले ते धूर्त वणिको तेनुं सर्व करियाणुं वहेंची लई पोतपोताने घेर लई गया. पछी रत्नचूड परिवार सहित वस्त्रादिकनो आडंबर करी अनीतिपुर जोवा चाल्यो. मार्गमां कोई कारीगरे सुवर्ण अने रुपाथी सुशोभित एवा बे उपान तेने भेट कर्या. तेने तांबूल आपी श्रेष्ठीपुत्रे कह्युं-"तने हुं खुशी करीश." पछी आगळ चाल्यो, त्यां कोई काणो धूर्त मळ्यो. तेणे रत्नचूडने कह्युं-'हे श्रेष्ठीपुत्र! मे एक हजार द्रव्यमां मारुं एक नेत्र तारा पिताने घेर गीरो मूक्युं छे ते हुं तारी पासेथी लईश, माटे आ तमारुं द्रव्य लई ल्यो.' रत्नचूड विचारवा लाग्यो के 'अहो! आ अघटतुं बोले छे, तथापि आ प्राप्त थयेलुं द्रव्य तो स्वाधीन करुं; पछी तेने योग्य उत्तर आपीश.' आम चिंतवी तेणे तेनुं द्रव्य ग्रहण कर्युं अने कह्युं-'तुं मारे उतारे आवजे.' एम कही रत्नचूड आगळ चाल्यो. तेने आवतो जोई चार ठगारा परस्पर वातो करवा लाग्या. एक बोल्यो-' समुद्रना जळनुं प्रमाण अने गंगा नदीनी रेतीना कणनी संख्या तो ज्ञानी पुरुष जाणी शके छे, पण स्त्रीओनुं हृदय कोई जाणी शकतुं नथी.' बीजो बोल्यो-' स्त्रीओना हृदयने जाणनारा घणा पुरुषो छे, पण समुद्रना जळनुं प्रमाण ने रेतीना कणनी संख्या जाणनार कोई नथी.' त्रीजो बोल्यो-'पूर्वाचार्योए जे कहेलुं छे ते असत्य नथी, ते सर्व बाबत सर्वज्ञ पुरुषो जाणे छे.' एटले चोथो बोल्यो के 'आ श्रेष्ठीपुत्र सर्व जाणे छे.' ते सांभळी बीजा बोली उठ्या के 'गंगानदी तो अहींथी दूर छे, पण आ समुद्रना जळनुं प्रमाण तो तुं श्रेष्ठीपुत्रनी पासे कराव.' आ प्रमाणे हठ करी तेओए रत्नचूडने उत्साहित कर्यो, एटले रत्नचूडे ते वात अंगीकार करी. पछी ते धूर्तोए रत्नचूड साथे एवो कोलकरार कर्यो के "जो तमे समुद्रना जळनुं प्रमाण करी आपो तो अमारी लक्ष्मी तमारे आधीन छे, अने नहि तो अमे चारे जण तमारी लक्ष्मी लई लेशुं." रत्नचूड ते वात कबुल करी आगळ चाल्यो. रत्नचूडे चिंतव्युं के 'आ बधा कार्यनो निर्वाह शी रीते थशे? माटे अनेक नररत्नोना चित्तने रंजन करवामां चतुर एवी वेश्याने घेर जाउं.' आवुं विचारी ते रणघंटा वेश्याने घेर गयो. वेश्याए बहुमान पूर्वक अभ्युत्थान, अभ्यंग, उद्वर्त्तन, स्नान अने भोजनादि क्रिया करी. ज्यारे संध्याकाळ थयो त्यारे रत्नचूड तेनी साथे वासगृहमां जई मनोहर शय्या उपर बेठो. पछी ए चतुर नायिका चतुर पुरुषने योग्य एवी गोष्ठी करवा लागी; एटले श्रेष्ठीपुत्रे पोतानी वार्त्ता चलावी के 'अरे प्रिया! तुं आ तारा

नगरनी सर्व चेष्टा जाणे छे तो मारे आजे मार्गमां जे विवादो थयेला छे तेना उत्तर कहे. मारी ए चिंता दूर थया पछी हे सुंदरी! हुं तारी साथे रंगभोगनी वार्ता करीश.' वेश्या बोली--"प्रिय! सांभळो. दैवयोगे जे कोई गृहस्थ अहीं आवी चडे छे तेनुं सर्वस्व अहींना धूर्त लोको ठगी ले छे. ए द्रव्यनो एक भाग राजाने, बीजो भाग मंत्रीने, त्रीजो भाग नगरशेठने, चोथो भाग कोटवालने, पांचमो भाग पुरोहितने अने छठ्ठो भाग मारी माता यमघंटाने आपे छे. अहींना सर्व लोको अनाचारप्रिय छे, तो तेमना घरमां रहीने माराथी शुं थई शके? तथापि हुं तमने मारी माता पासे लई जईश. त्यां बेसीने तमे तमारा बधा प्रश्नोना उत्तर सांभळजो." आ प्रमाणे कही रत्नचूडने स्त्रीनो वेष पहेरावीने ते चतुरा पोतानी अक्का पासे लई गई. मातानी समीपे प्रणाम करीने ते बेठी, एटले तेनी माता बोली–' वत्से! आ कोनी पुत्री छे?' ते बोली–' माता! आ रूपवती नामे श्रीदत्त श्रेष्ठीनी पुत्री छे. ते मने मळवा आवी छे.'

आ समये जेओए रत्नचूडनुं सर्व करियाणुं लई लीधुं हतुं ते धूर्त वेपारीओ यमघंटानी पासे आव्या. तेओए बधो वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी कुट्टनी बोली--' आमां तमारा सर्व मनोरथ व्यर्थ थशे, कांई पण लाभ थशे नहि; कारणके तेनी इष्ट वस्तुथी वहाण पूरी आपवुं तमे कबुल करेलुं छे तो इच्छा तो अनेक प्रकारनी थाय छे, तेथी ते कदि मच्छरना अस्थिथी वहाण पूरी आपवा कहेशे तो पछी तमे शुं करशो?' तेओ बोल्या-' तेनामां तेवी बुद्धि क्यांथी हशे? कारण के ते बाळक छे, वळी प्रथम वयमां छे.' कुट्टिनी बोली-' कोई बाळक छतां बुद्धिमान होय छे, अने कोई वृद्ध छतां मूर्ख होय छे.' ते सांभळी तेओ चारे स्वस्थाने गया.

थोडीवारे पेलो कारीगर हुस्ते मुखे आवी वेश्याने कहेवा लाग्यो–" आ नगरमां कोई श्रेष्ठीपुत्र आवेलो छे, तेने में बे श्रेष्ठ उपान भेट कर्यां छे. तेणे मने कह्युं छे के 'हुं तने खुशी करीश.' तेथी ज्यारे हुं तेनुं सर्वस्व लई लईश त्यारेज खुशी थईश." ते सांभळी अक्का बोली–" अरे कारीगर! कदि जो तने ते एवुं पूछशे के ' राजाने त्यां पुत्रजन्म थयो तेथी तुं खुशी छे के नहि?' कहे, त्यारे तुं शुं करीश? अने पछी तारी शी गति थशे?" आ प्रमाणे सांभळी ते चाल्यो गयो.

पछी पेलो काणो जुगारी आव्यो. तेणे पण पोतानी धूर्ततानी हकीकत वेश्या पासे जणावी. ते सांभळी यमघंटा हसीने बोली–' तें तेने धन आप्युं ते सारुं कर्युं नहि.' काणो बोल्यो–' केम?' त्यारे फरी अक्का बोली–" ते जो बीजा कोईनुं नेत्र तारी आगळ मूकशे त्यारे तो तुं एम कहीश के ' ए नेत्र मारुं नथी.' पण ते

सांभळी ते तने एम कहेशे के 'तें जे एक नेत्र मारा पिताने त्यां गीरो मूक्युं छे तेनी जोडनुं बीजुं नेत्र तारी पासे छे ते लाव, एटले बंने कांटामां मूकीए. जो तोलमां सरखां थाय तो आ नेत्र तारे ग्रहण करवुं, नहि तो नहि.' आम कहेशे तो पछी तुं शुं करीश ?" द्यूतकार बोल्यो–' आवी बुद्धिनी कुशलता तमारामांज छे, तेनामां नथी; तेथी तेनुं सर्वस्व मारा हाथमां आवेलुंज हुं समजुं छुं.' आ प्रमाणे कही ते चाल्यो गयो.

थोडीवार पछी पेला चार धूर्तोए आवी पोतानी कथा कही संभळावी. ते सांभळी रणघंटा बोली–" आ प्रपंचमां तमने कांई लाभ थाय एवुं मारा जोवामां आवतुं नथी; कारणके ते एम बोलशे के ' हुं समुद्रना जळनुं प्रमाण करी आपुं, पण तमारे प्रथम तेमां मळती नदीओनुं जळ जुदुं करी देवुं पडशे.' तो पछी तेम करवाने तमे अशक्त छो, एटले तमे तमारा घरनुं सर्वस्व हारी बेसशो." ते सांभळी ते धूर्तलोको ग्लान मुख करी पोताने स्थाने चाल्या गया.

श्रेष्ठीपुत्र रत्नचूड आ बधा युक्तिवाळा उत्तर सांभळी ते चित्तमां ठसावी त्यांथी उठीने रणघंटा वेश्यापुत्रीनी साथे तेना घरमां गयो; अने तेनी आज्ञा लई पोताने स्थाने आव्यो. पछी अक्काए बतावेली युक्तिओथी तेणे सर्व कार्य साधवा मांड्यां. पेला करियाणुं लई जनारा वेपारी पासेथी अने समुद्रजळनुं प्रमाण करावनारा धूर्त पासेथी तेणे बळात्कारे चार लाख द्रव्य लीधुं. आ वृत्तांत सांभळी ते नगरनो राजा आश्चर्य पाम्यो. तेणे कह्युं–'आ पुरुषनुं माहात्म्य अद्भुत छे, के जेणे आ धूर्त्तनगरना लोको पासेथी पण द्रव्य लीधुं.' आ प्रमाणे विस्मय पामेला राजाए रत्नचूडने बोलावीने कह्युं–' भद्र ! हुं तारी उपर संतुष्ट थयो छुं, तेथी तारी जे इच्छा होय ते कहे.' रत्नचूडे राजा पासे रणघंटा गणिका मागी. राजाए आज्ञा आपवाथी ते तेनी स्त्री थईने रही.

आ प्रमाणे लाभ मेळवी रत्नचूड करियाणाथी वहाण भरीने पोतानी नगरीए आव्यो, अने मातापिताना चरणमां प्रणाम करी सर्व वृत्तांत पिताने जणाव्युं. ते सांभळी श्रेष्ठीना मनमां अधिक हर्ष थयो.

रत्नचूडनी ख्याति सांभळी सौभाग्यमंजरी वेश्या तेने जोवा आवी. रत्नचूडे ते वेश्याने कह्युं–' भद्रे ! तारा उपदेशथीज देशांतर जईने आ लक्ष्मी में संपादन करेली छे.' पछी राजानी आज्ञा मेळवीने सौभाग्यमंजरी पण रत्नचूडनी पत्नी थई. त्यार पछी रत्नचूड बीजी पण घणी स्त्रीओ परणी स्वोपार्जित द्रव्यवडे दान अने उपभोग करवा लाग्यो.

चिरकाळ सांसारिक भोग भोगवी, पोताना पुत्रोने गृहभार सोंपी, सद्गुरुनी पासे

अहिंसामूळ जिनधर्म सांभळी, वैराग्य पामीने रत्नचूडे दीक्षा ग्रहण करी; अने रुडी रीते दीक्षा पाळी समाधिथी मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो. अनुक्रमे महानंदपदने पामशे.

आ कथानो उपनय आ प्रमाणे छे–" वणिकपुत्र रत्नचूड ते भव्यजीव समजवो. तेना पिता ते धर्मदायक गुरु जाणवा. सौभाग्यमंजरी वेश्यानां वचन ते साधर्मीकनां वचनो समजवां. तेथी थयेला उत्साहथी ते पुण्यलक्ष्मीनो संचय करवाने उद्यमवंत थयो. तेना पिताए जे मूळ द्रव्य आप्युं ते गुरुदत्त चारित्र समजवुं. अनीतिपुरे जवानो निषेध कर्यो ते अनीतिमार्गे जवानो निषेध समजवो. वहाण ते संयम जाणवुं; तेनाथी आ संसाररुपी समुद्र तरी शकाय छे. भवितव्यताना योगथी अथवा प्रमादथी अनीतिपुरे गमन ते अनाचारमां प्रवृत्ति जाणवी. अन्यायप्रिय राजा ते मोह समजवो. करियाणाने खरीद करनारा चार वणिक ते चार कषाय समजवा. प्राणीने सुमति आपनारी पूर्वे करेलां कर्मनी परिणति ते अक्का समजवी. तेना प्रभावथी प्राणी सर्व अशुभने उल्लंघन करी रत्नचूड जन्मभूमिए आव्यो तेम धर्ममार्गमां पाछो आवे छे एम समजवुं." आ प्रमाणे बुद्धिमान पुरुषोए यथायोग्य उपनय उतारवो.

" आ प्रबंधनो उपनय विचारी अज्ञानवडे थयेला विकारभावने छोडी जीव पुनः धर्ममार्गे आवे छे, अने ते मार्गे गमन करवावडे मनुष्यजन्मने सफळ करे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७८ ॥

व्याख्यान १७९ मुं.

आ व्रतो अल्पकाळ धारण कर्यां होय तोपण ते सुख आपे छे.

अल्पकालं धृतान्येतद्व्रतानि सौख्यदानि हि ।
अतः प्रदेशिवद् ग्राह्याण्येतानि तत्त्ववेत्तृभिः ॥ १ ॥

भावार्थ

"आ व्रत अल्पकाळ सुधी धर्यां होय तो पण सुखने आपनारां थाय छे. तेथी परदेशीराजानी पेठे तत्त्ववेत्ताओए ए व्रत (अवश्य) धारण करवां."

परदेशी राजानी कथा.

एकदा आमलकल्प नामना उद्यानमां श्रीवीरप्रभु समोसर्या. ते समये नवा उत्पन्न थयेला सूर्याभदेवे स्वर्गमांथी आवी वीरप्रभुने नमी आ प्रमाणे विज्ञप्ति करी के 'हे स्वामी! गौतम विगेरेने नवीन नाटक देखाडवा मने आज्ञा आपो.' आ प्रमाणे तेणे त्रणवार विज्ञप्ति करी, तथापि स्वामी मौन धरी रह्या. एटले तेणे ते कार्यमां संमति मानी लीधी; कारणके अनिषेधे अनुज्ञा एवुं वचन छे. पछी ईशान दिशामां जई ते देवताए पोतानी बे भुजामांथी १०८ देवताओ अने १०८ देवीओ विकुर्वी बत्रीश बद्ध नाटक देखाडयुं. पछी ते महान् ऋद्धिवाळो सूर्याभदेव विद्युत्‌नी जेम उत्पतीने पोताने स्वर्गे चाल्यो गयो.

ते वखते बीजा लोकोने प्रतिबोध पमाडवानी इच्छाए गौतमे श्रीवीरप्रभुने पूछयुं–'आ देवता कोण हतो? अने तेने आटली बधी समृद्धि क्यांथी?' ज्ञातपुत्र श्री वीरप्रभु बोल्या–'हे गौतम! श्वेतांबी नगरीमां प्रदेशी नामे नास्तिक राजा हतो. तेने सूर्यकांता नामे स्त्री अने सूर्यकांत नामे पुत्र हतो. तथा चित्र नामे प्रधान हतो. एक वखते ते मंत्री राजकार्य माटे श्रावस्ती नगरीमां जितशत्रु राजा पासे गयो हतो. त्यां केशी नामे गणधर पधारेला होवाथी ते तेमने वांदवा गयो; अने ते चतुर्ज्ञानी मुनिपासेथी गृहस्थधर्म (बारव्रत) अंगीकार करी श्वेतांबी नगरीए पधारवानी विज्ञप्ति करीने ते पाछो श्वेतांबीए आव्यो.

केशी गणधर विहार करतां करतां अनुक्रमे श्वेतांबी नगरीना उद्यानमां पधार्या. उद्यानपालक पासेथी गुरुनुं आगमन जाणी मंत्रीए विचार्युं के 'हुं मंत्री छतां मारा स्वामी (राजा) नरके जाय ते योग्य न कहेवाय, माटे आजे कांई मिष करीने राजाने गुरुनी वाणी संभळावुं अने तेम करीने हुं राजानो अनृणी थाउं.' आवो विचार करी चित्रमंत्री घोडा खेलाववानो मिष करी प्रदेशी राजाने ज्यां सूरि हता ते प्रदेशमां लई गयो. राजा शांत थई वृक्षनी छाया नीचे बेठो. एटले दूरथी गुरुनी देशना सांभळवामां आवी. ते सांभळी राजाए उद्वेग पामी मुख मरडी मंत्री प्रत्ये कह्युं–'आर्त जननी जेम आ साधु शुं आरडे छे?' मंत्री बोल्यो–'राजन्! त्यां जवाथी तेनो निश्चय थशे.' पछी राजाने तेमनी समीपे लई गयो. एटले राजाए आ प्रमाणे देशना सांभळी–

मुढस्तत्त्वमजानाना, नानायुक्त्यर्थपेशलं ।
असद्वासनया जन्म, हारयंति मुधा हहा ॥

" नाना प्रकारनी युक्तिओवाळा अने अर्थथी कोमळ एवा तत्वने नहि जाणनारा प्राणीओ खोटी वासनाओवडे पोतानो मनुष्यजन्म व्यर्थपणे गुमावी दे छे, ए मोटा खेदनी वात छे. "

इत्यादि वाक्यो सांभळी राजाए सूरिवर्यने कह्युं–" हे व्रतधारी ! परलोक, पाप, पुण्य अने जीव छेज नहि. कारणके मारा पिता घणा पापी हता, ते पाप करीने नरके गया होय तो तेने हुं घणो वहालो हतो तेथी त्यांथी आवीने मने केम कहे नहि के 'पुत्र ! तारे पाप करवुं नहि, पापथी नरकमां दुःख खमवुं पडे छे.' तेथी परलोक अने पाप छेज नहि एम सिद्ध थाय छे. (१). वळी मारी माता घणा दयाळु हता, ते स्वर्गे गया होवा जोइए; तो ते आवीने मने स्वर्गनुं सुख केम कहेता नथी ? तेम 'हे पुत्र ! तारे पुण्य करवुं' एवी भलामण पण केम करता नथी ? ए उपरथी सिद्ध थाय छे के परलोक नथी अने पुण्य पण नथी. (२). वळी कोईएक चोरने में लोढानी कोठीमां घाल्यो हतो, ते तेमां मुंझाईने मरी गयो. पछी कोठी जोतां तेमां कोई ठेकाणे छिद्र जोवामां आव्युं नहि, तो तेनो जीव क्यांथी नीकळी गयो ? (३). वळी तेना मृतशरीरमां कीडा पडेला जोवामां आव्या, अने तेमने पेसवानुं छिद्र जोवामां आव्युं नहि तेथी प्रवेश करनार के नीकळनार कोई जीव छेज नहि. (४). वळी बधा जीव सरखा नथी तेनुं शुं कारण ? एम तमे कहेशो. पण कोईनुं बाण दूर जाय छे, अने कोईनुं बाण नजीक पडे छे;. तेवी रीते बधा जीव सरखा नथी पण तेमां कोई कर्मनुं कारण नथी. (५). वळी हे आचार्य ! में एक चोरने जीवतो तुलाए चडाव्यो, अने मरण पाम्या पछी पण चडाव्यो तो भार सरखो थयो; तेथी जो जीव होय तो जीवतां भारे अने मरण पाम्या पछी हलको केम न थयो ? तेथी जीव संबंधी चिंता करवी ए वृथा छे. (६). वळी हे आचार्य ! एक चोरने में कडकेकडका करी जोयो, तथापि तेना शरीरना कोई प्रदेशमां जीव जोवामां आव्यो नहि. (७). वळी हे प्रभु ! जेम घडा विगेरे पदार्थो प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे तेम जीव होय तो ते केम जोवामां आवतो नथी ? (८). वळी कुंथुवाना अने हाथीना शरीरमां सरखो जीव होय तो कुंथुवानुं शरीर नानुं केम ? अने हाथीनुं शरीर मोटुं केम ? (९). वळी हे सूरिराज ! अमारा कुळक्रमथी जे नास्तिक मत चाल्यो आवे छे ते माराथी केम छोडी देवाय ? (१०)."

आ प्रमाणे प्रदेशी राजाना प्रश्नो सांभळी गुरुमहाराजाए उत्तर आप्यो के–" हे राजा ! तें तारी स्त्रीने परपुरुष साथे रमती जोई होय अने तें पुरुषने बांधीने कोटवाळने मारवा सोंप्यो होय ते वखते ते पुरुष कहे के 'हे राजा ! मने मारा पुत्रने मळवा

माटे घेर जवा दो, तो तमे तेनुं वचन मानशो ?' प्रदेशी राजा बोल्यो-' हे आचार्य ! एवा अपराधीनुं वचन केम मनाय ? ' गुरु बोल्या-' त्यारे नरकमां रहेला परमाधामीओ तने मळवा माटे तारा पिताने शीरीते छोडे ? १. वळी सांभळ, हे राजा ! संडासमां रहेलो अंत्यज (चंडाळ) सभामां बेसीने नायकाओनुं गायन सांभळता अने पुष्पमाळा धारण करता एवा तने बोलावे तो तुं शुं तेनी पासे जाय ? ' राजाए कह्युं-' आचार्य महाराज ! तेवे वखते एवो आनंद छोडीने तेनी पासे शीरीते जवाय ?' गुरु कहे छे के ' त्यारे सभा सदृश स्वर्गलोकमां रहेला तारी माता जे मवळ सुख भोगवता होय ते संडास जेवा आ मनुष्यलोकमां तने मळवाने के समजाववाने शीरीते आवे ? २. वळी सांभळ, भोंयरामां शंख वगाडे तेनो नाद वहार संभळाय छे, पण ते स्वरने नीकळवानुं छिद्र जोवामां आवतुं नथी; तेवीरीते लोढानी कोठी मांहेला जीवनी गति पण जाणी लेवी. ३. वळी लोढानो गोळो अग्निमां मूकवाथी ते अग्निमय थई जाय छे, पण तेमां अग्निने पेसवानुं छिद्र जोवामां आवतुं नथी; तेवी रीते ते चोरना शरीरमां कीडाओना प्रवेश विषे पण जाणी लेवुं. ४. कोमळ बाळक अने कठिन युवान तेओ बंने अनुक्रमे बाण छोडे तो ते नजीक अने दूर जाय तो तेना कोमळ अने कठिन देहनो तफावत समजवो के जे देह पूर्वकर्मवडेज प्राप्त थाय छे. ५. जेम वायुथी भरेली धम्मण भारे थती नथी; अने वायुथी रहित धम्मण तोलमां हलकी थती नथी, तेम तुला उपर आरूढ करेला चोरना जीव सहित अने जीवरहित देहमाटे समजवुं. ६. हे राजा ! जेम अरणिना काष्ठमां अग्नि रहेलो छे, पण तेना खंड खंड करीने जोतां ते जोवामां आवतो नथी, तेम आ शरीरनी अंदर पण जीव रहेलो छे, पण ते शरीरना खंड खंड करवाथी जोवामां आवतो नथी. तेने सर्वज्ञज जोई शके छे. ७. जेम वायुथी पत्र हले छे, पण वायु प्रत्यक्ष जोवामां आवतो नथी; तेम जीवप्रदेशना योगे शरीर हाले छे, पण जीव प्रत्यक्ष जोवामां आवतो नथी. ८. जेम मोटा घरमां मूकेलो दीपक आखा घरमां प्रकाश करे छे, अने नानी हांडलीमां मूक्यो होय तो ते तेटलामांज प्रकाश करे छे; एवीरीते जीव पण जेवुं नानुं मोटुं शरीर पामे छे तेवो नानो मोटो थईने रहे छे. ९. वळी तुं कहे छे के कुलक्रमागत आवेलो नास्तिकमत केम छोडुं? पण हे राजा ! जे परंपराए आवेली अधर्मबुद्धिने छोडे नहि ते लोहने वहेनारा वेपारीनी जेम विपत्तिओनुं स्थान थाय छे. ते कथा आप्रमाणे छे-कोई चार मित्रो लाभ मेळववाने माटे देशांतरे जता हता. त्यां मार्गमां प्रथम लोढानी खाण आवी, तेमांथी तेओए लोढुं लीधुं. त्यांथी आगळ चाल्या एटले रुपानी खाण तेमना जोवामां आवी, तेथी त्रण जणाए तो लोढुं नाखी दईने रुपुं लीधुं; पण तेमनामांथी चोथा माणसे कदाग्रहथी लोढुं छोडयुं नहि. आगळ चालतां

सुवर्णनी खाण आवी, एटले पेला त्रण पुरुषोए तो रूपुं छोडी सुवर्ण लीधुं, तथापि चोथाए तो लोढुं छोड्युं नहि. आगळ चालतां रत्नोनी खाण आवी, एटले त्रण मित्रोए तो सुवर्ण नाखी दई रत्नो लीधां; पण चोथाए लोढुं छोड्युं नहि. परिणामे त्रण मित्रो सुखी थया, अने चोथो दुराग्रही मित्र जन्मसुधी दरिद्री रहेवाथी दुःखी थयो. आप्रमाणे लोढाना भारने वहन करनार दुराग्रहीनी जेम परंपराए चाल्या आवता मिथ्यात्वने नहि छोडनार पुरुषो दुःखी थाय छे. १० ".

आ प्रमाणे पोताना प्रश्नोना उत्तर अश्व उपर बेठा बेठा सांभळी प्रदेशी राजा धर्म पाम्यो. पछी अश्वथी उतरी गुरुने विनयपूर्वक नमीने कह्युं–' हे महाराज ! प्रभाते तमने नमीने हुं मारो अविनय खमावीश. '

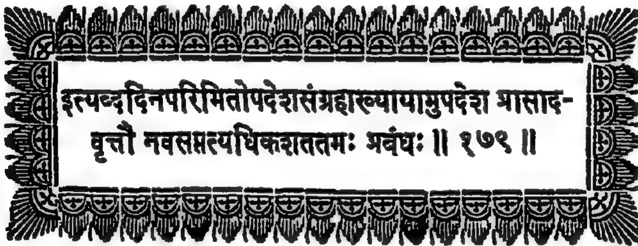
बीजे दिवसे प्रभातकाळे कोणिक राजानी जेम प्रदेशी राजाए मोटा उत्सवथी आवी गुरुने वंदना करी, अने तेमनी पासे श्रावकना बार व्रत ग्रहण कर्यां. पछी गुरुए कह्युं–" हे राजा ! पुष्पफलवाळा बगीचानी जेम प्रथम बीजाओने दान देनारा दातार थई हमणा धन प्राप्त करीने तमारे अदाता थवुं नहि, एटले के सुकाई गयेला वननी जेवा अरमणीय थवुं नहि. केमके तेम थवाथी अमने अंतराय लागे अने धर्मनी निंदा थाय. " प्रदेशी राजा बोल्यो–" हे स्वामी ! हुं मारा सात हजार गामना चार विभाग करीश; तेमांथी एक भागवडे मारा राज्यना सैन्य तथा वाहननुं पोषण करीश, बीजा भागवडे अंतःपुरनो निर्वाह करीश, त्रीजा भागवडे भंडारनी पुष्टि करीश, अने चोथा भागवडे दानशाळा विगेरे धर्मकार्य करीश. " आ प्रमाणे धर्मने स्वीकारी प्रदेशी राजा घेर आव्यो, अने ते श्रमणोपासक थयो.

कामभोगमां अनासक्त एवा राजाने जाणी तेनी राणी सूर्यकांता तेने मारी नाखवानो उपाय चिंतववा लागी. तेणीए पोताना पुत्र सूर्यकांतने कह्युं के ' तारा पिता देश-मुलक अने राज्यनी बिलकुल चिंता करतो नथी. ते श्रावक थईने फरतो फरे छे; तेथी शस्त्र, मंत्र, विष के अग्निना प्रयोगथी तुं तेने मारी नाखीने राज्य लई ले. कोहेला पानने काढी नाखवुं ए न्याय छे. ' आ प्रमाणेनां पोतानी मातानां वचन सांभळी कुमार मौन धरी रह्यो. ते जोई राणीए विचार्युं के ' आ पुत्र नमालो छे, आने में गुप्त भेद (विचार) कही नाख्यो पण आ जरूर मंत्रभेद करशे. ' एवुं चिंतवी तेणीए छळ शोधी भोजनमां विष नाखीने प्रदेशी राजाने भोजन कराव्युं. तेनाथी राजाने असह्य वेदना उत्पन्न थई. ए कृत्य पोतानी राणीनुं छे एम तेना जाणवामां आव्युं, तथापि तेणे तेनापर कोप कर्यो नहि. स्वयमेव पौषधागारमां जई दर्भना संस्थारा उपर

पूर्वाभिमुखे बेसी शक्रस्तव (नमुथ्थुणं) भणी मनमां पोताना धर्माचार्यने संभारी जावजीव सुधी सर्व पापस्थानोने वोसिरावी समाधिवडे काळधर्म पामी पहेला देवलोकमां सूर्याभविमानने विषे चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देवता थयो.

मात्र ओगणचाळीस दिवस श्रावकव्रत पाळवाथी साडाबार लाख योजनना विस्तारवाळा विमानने विषे महर्द्धिक देवता थयो. तेणे प्रदेशी राजाना भवमां मात्र तेर छठ्ठ करी तेरमा छठ्ठने पारणे संथारो कर्यो हतो.

"देवपणे उत्पन्न थया पछी अवधिज्ञाने करी पोताने समकित प्राप्त थयाना पूर्व-वृत्तांतने जाणी ते सूर्याभदेव पृथ्वीपर आव्यो, अने भगवंत पासे नाटक कर्युं. अनुक्रमे देवगतिमां चार पल्योपमनुं आयुष्य भोगवी त्यांथी चवी महाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थईने मोक्षे जशे."



व्याख्यान १८० मुं.

हजु श्रावकधर्मनुं वर्णन करे छे.

गृहेऽपि संवसन् कश्चित्, श्रावको निःस्पृहाग्रणीः ।
कूर्मापुत्रमिवाप्नोति, केवलज्ञानमुज्वलम् ॥ १ ॥

भावार्थ

"कोई श्रावक घरमां रहेतां छतां पण जो निस्पृहना अग्रेसरपणे वर्ते तो कूर्मापुत्रनी जेम ते घरमां पण उज्वल केवळज्ञान प्राप्त करे छे."

कूर्मापुत्रनी कथा.

दुर्गमपुरमां द्रोण नामे राजा हतो. तेने द्रुमादेवी नामे राणी हती. तेमने दुर्लभ-

कुमार नामे पुत्र थयो हतो. ते राज्य अने यौवनना मदथी बीजा घणा कुमारोने दडानी जेम आकाशमां उछाळी हमेशां क्रीडा करतो हतो. एक वखते ते नगरना उद्यानमां कोई एक केवळी समोसर्या. तेमने ते वनमां भद्रमुखी नामे यक्षणीए पूछ्युं—' मारा पूर्व भवना स्वामीनी शी गति थई छे ? ' ज्ञानी बोल्या—' तारा पूर्व भवनो स्वामी आ नगरना राजानो पुत्र थयो छे. ' ते सांभळी पूर्वभवना रुपथी लोभाईने ते यक्षिणी कुमारने पोताना भुवनमां लई गई. देवीए पूर्वभवनुं स्वरुप कही संभळावतां तेने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं तेथी तेओ परस्पर प्रेमी थया. यक्षिणीए पोतानी शक्तिथी तेना देहने सुगंधी करी पोताना भोगने योग्य कर्यो. दुर्लभकुमारना मातापिताए गुरुना ज्ञानथी तेनी शोध मेळवी. पछी अनुक्रमे तेमणे दीक्षा ग्रहण करी.

यक्षिणीए अवधिज्ञान वडे पोताना पतिनुं आयुष्य थोडुं जाणी तेने तेज वनमां केवळीनी पासे मूकी दीधो. त्यां केवळीना मुखथी तेणे आ प्रमाणे देशना सांभळी—" जेम लींबडानो कीडो लींबडाना कडवा रसने पण मधुर जाणे छे, तेम सिद्धिना सुखथी अजाण्या एवा प्राणीओ संसारना दुःखने पण सुख रुप माने छे. " आवी देशना सांभळी सभामां रहेला पोताना मातापिताने कंठे वळगी दुर्लभकुमार विलाप करवा लाग्यो. ऐटले गुरुए प्रतिबोध आप्यो के " जे मनुष्य मनुष्यभव पामी धर्मने विषे प्रमाद करे छे ते प्राप्त थयेला चिंतामणि रत्नने समुद्रमां फेंकी दे छे. " इत्यादि देशना सांभळवाथी देवीने समकित प्राप्त थयुं, अने कुमारे चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे कुमार अने तेना मातापिता महाशुक्र नामे देवलोके देवता थया.

पेली यक्षिणी त्यांथी चवीने भ्रमर राजानी वेशालिका नामे राणी थई. त्यां ते दंपती धर्मिष्ठ थईने स्वर्गे गया. दुर्लभकुमारनो जीव देवलोकमांथी चवीने राजगृही नगरीमां महेंद्र नामना राजानी कूर्मा राणीना उदरमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. शुभ दिवसे शुभ लग्नमां तेनो जन्म थयो. दोहदने अनुसारे तेनु धर्मदेव एवुं नाम पाड्युं. ते पूर्वभवे बाळकोने पोटलानी जेम बांधी आकाशमां उछाळी कंदुक क्रीडा करतो हतो तेथी आ भवमां तेनुं शरीर बे हाथना प्रमाणवाळुं वामन थयुं; अने लोकमां कूर्मापुत्र एवुं नाम प्रख्यात थयुं.

कूर्मापुत्रने यौवन वयमां घणी स्त्रीओ इच्छती हती, तथापि ते मनथी विरक्त हतो. एक वखते कोई मुनिना मुखथी सिद्धांतना पाठ सांभळी तेने जातिस्मरण थयुं. अनुक्रमे ध्यान रुप अग्निथी कर्म रुपी इंधणाने बाळी नाखीने तेणे केवळज्ञान प्राप्त कर्युं. पछी ते महाशये विचार्युं के " जो हुं हमणा चारित्रने ग्रहण करीश तो मारा मातापिता

शोकथी मृत्यु पामशे. माटे तेमने प्रतिबोध करवा अज्ञातवृत्तिए (केवळज्ञान थयानुं न जाणे तेम) गृहवासमां रहेवुं योग्य छे." आ प्रमाणे विचारी ते गृहवासमां रह्या। तेमने माटे कहेलुं छे के "कूर्मापुत्रना जेवो बीजो कोण धन्य छे के जे मातापिताने प्रतिबोध पमाडवाने अर्थे केवळी थया छतां पण न्यायवृत्तिथी गृहवासमां रह्या हता."

आ अरसामां बाकीना चारे जीवो स्वर्गथी चवीने वैताढ्य पर्वत उपर खेचर थया. तेओए सांसारिक सुख भोगवी कोई चारणमुनिनी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी तेओ महाविदेहक्षेत्रने विषे जिनेश्वरने वांदवा गया. त्यां प्रभु देशना आपता हता तेमने वंदना करीने तेओ बेठा. तेवामां सभामां बेठेला चक्रवर्तीए वैताढ्यथी आवेला ते चार मुनिओने प्रभुना मुखथी जाणीने प्रश्न कर्यो के 'हे स्वामी ! एकसाथे उत्कृष्टा विहार करता एवा जिनेश्वर भगवंत केटला पामीए ?' प्रभु बोल्याः-'हे चक्रवर्ती ! आ मनुष्यक्षेत्रने विषे पांच महाविदेह क्षेत्र छे. एक एक महाविदेहमां बत्रीश बत्रीश विजय छे. तेथी बत्रीशने पांच गुणा करीए त्यारे एकसो साठ विजय थाय तेमां पांच भरत अने पांच ऐरवतक्षेत्र मेळवतां एकसो ने सीत्तेर क्षेत्रो थाय छे. उत्कृष्ट काळे ए सर्व क्षेत्रोमां जिनेश्वर भगवंत विचरता होय छे.' चक्रवर्तीए पुनः पूछ्युं-'स्वामी ! हाल भरतक्षेत्रने विषे कोई चक्रवर्ती के केवळी छे के नहि?' प्रभु बोल्या-'हे चक्रवर्ती ! भरतक्षेत्रमां अधुना कूर्मापुत्र नामे एक केवळी गृहवासमां रहेला छे, ते पोताना मातापिताने प्रतिबोध करवाने माटेज गृहस्थावासमां रह्या छे.' पछी ते चार चारणमुनिओए पूछ्युं-'भगवन् ! अमने केवळज्ञान क्यां थशे ?' जिनेश्वर बोल्या-'कूर्मापुत्रनी समीपे तमने केवळज्ञान थशे.' ए प्रमाणे सांभळी चारे विद्याधर मुनि कूर्मापुत्रनी पासे आव्या, अने त्यां मौन धरीने रह्या; एटले कूर्मापुत्र केवळीए तेमने कह्युं-'तमे भगवंतना वचनथी अहीं आव्या छो, पण तमे तमारा पूर्वभवनुं स्वरुप आ प्रमाणे अनुभव्युं छे.' एम कही तेमना पूर्वभवनुं स्वरुप कही संभळाव्युं. ते सांभळतांज तेमने जातिस्मरण थयुं, अने तत्काळ क्षपकश्रेणी पर आरूढ थया तेथी तेओने पण केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी तेओ पाछा जिनेश्वर भगवंतनी पासे आवी केवली होवाथी वांद्या वगर बेठा. एटले इंद्रे पूछ्युं-'भगवंत ! आ चारे मुनि आपने वांद्या वगर केम बेठा?' प्रभु बोल्या-'तेओ कूर्मापुत्रना मुखथी स्वानुभूत पूर्वभवनुं स्वरुप जाणी केवळी थया छे.' पुनः इंद्रे पूछ्युं-'भगवन् ! ते कूर्मापुत्र क्यारे दीक्षा लेशे?' प्रभु बोल्या-'आजथी सातमे दिवसे ते द्रव्यथी संयम स्वीकारशे.'

अहीं कूर्मापुत्रे सातमे दिवसे मातापिताने प्रबोधी पोते लोच कर्यो. देवताओए सुवर्णकमळ रच्युं. तेनी उपर बेसी धर्मदेशनाथी अनेक जीवोने प्रतिबोध पमाडी अनुक्रमे सिद्धिसुखने प्राप्त थया.

सिद्धांतमां कह्युं छे के जघन्यथी बे हाथ प्रमाणवाळो पुरुष अने उत्कृष्टथी पांचसो धनुष्यना प्रमाणवाळो पुरुष सिद्धिने पामे छे.

" सुवर्ण, रुपुं, मणि अने रत्नोथी भरपूर, नृत्य, गीत अने युवतिओथी रमणीय एवा भुवनमां पण जेनुं मन लुब्ध थयुं नहि तेवा गृहस्थावासमां केवळज्ञानी थयेला कूर्मापुत्रनी अमे स्तुति करीए छीए."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ अशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८० ॥

इति द्वादशस्तंभः समाप्तः



॥ श्री उपदेशप्रासादग्रंथे ॥

स्तंभ १३ मो.

मंगलाचरण.

(जिनस्तुति)

उत्कृष्टकाले विजयेष्वभूवन्, षष्ट्युत्तराश्चंद्रशतारिहंता ।
दिक्क्षेत्रजाः कालत्रिकेण गुण्याः, विंशत्यधिकाश्च शतानि सप्त ॥ १ ॥
सीमंधराद्या विहरंति ये च, विदेहजा विंशति तीर्थनाथाः ।
कल्याणकानि वृषभादिकानां, विंशत्यथाग्रेकशतानि चात्र ॥ २ ॥
श्रीवारिषेणो वृषभाननश्च, चंद्राननार्हत्प्रभुवर्ध्धमानः ।
एतच्चतुःशाश्वतमूर्त्तयश्च, संत्यूर्ध्वलोकादिषु तां स्तवीमि ॥ ३ ॥
एतज्जिनव्यूहमनंतरोक्तं, शत्रुंजयाद्रेस्तु सहस्रकूटे ।
न्यस्तस्तु तं तत्प्रददातु नित्यं, ज्ञानं समाध्युद्यममुत्तमं मे ॥ ४ ॥

भावार्थ

"उत्कृष्ट[1] काळने विषे पांच महाविदेहक्षेत्रना १६० विजयमां एकसो ने साठ तीर्थंकरो थाय छे तेमने, तथा पांच भरत अने पांच ऐरवत मळी दश क्षेत्रमां थती दश चोवीशीना बसो ने चाळीश जिन थाय तेने त्रणे काळनी त्रण त्रण चोवीशी लेवा माटे त्रण गुणा करवाथी सातसो ने वीश जिनेश्वर थाय छे तेमने, तथा महाविदेहक्षेत्रने विषे सीमंधर स्वामी विगेरे जे वीश तीर्थंकरो हाल विचरे छे तेमने, अने भरतक्षेत्रनी वर्तमान चोवीशीना ऋषभदेव विगेरे २४ तीर्थंकरोना एकसो ने वीश

---

१ ज्यारे मनुष्यक्षेत्रमा मनुष्यो सर्वथी विशेष संख्यामा होय त्यारे उत्कृष्टकाळ कहेवाय छे. श्रीअजितनाथ प्रभुना समयमा उत्कृष्ट काळ हतो. ते वखत पांच महाविदेहमा १६० प्रभु विचरता हता.

कल्याणक छे तेमने, तेमज श्री वारिषेण, श्रीवृषभानन, श्रीचंद्रानन अने श्रीवर्धमान प्रभु ए चार नामवाळी शाश्वत मूर्तिओ ऊर्ध्व लोक विगेरेमां साश्वता सिद्धायतनमां रहेली छे तेमने हुं स्तवुं छुं. आ त्रण श्लोकमां कहेलो १०२४ जिनेश्वरनो समूह शत्रुंजय गिरि उपरना सहस्रकूटमां स्थापित करेलो छे ते मने ज्ञान, समाधि अने उत्तम उद्यम प्रत्ये आपो."

पूर्वेना बार स्तंभोमां सम्यक्त्व अने बार व्रतो वर्णवेला छे. तेवा समकित अने व्रतवाळो पुरुष जिनभक्तिमां तत्पर होय छे, तेथी ए संबंधथी आवेला श्रीजिनभक्तिना फळने हवे स्तवुं छुं (कहुं छुं).

व्याख्यान १८१ मुं.

ग्रंथमध्यमंगळ.

श्रीवीरजगदाधारं, स्तुवंति प्रत्यहं नरः ।
तेर्थवादं वितन्वंति, विश्वे दशार्णभद्रवत् ॥ १ ॥

" जगत्ना आधाररुप एवा श्रीवीरप्रभुने जे पुरुषो हमेशां स्तवे छे तेओ दशार्णभद्रनी जेम आ विश्वमां पोताना अर्थवाद (यश) ने विस्तारे छे."

दशार्णभद्रनी कथा.

दशार्ण नामना देशमां दशार्ण नगरने विषे दशार्ण नामे राजा हतो. ते पांचशें राणीओनी साथे पोताना अंतःपुरमां सुखविलास भोगवतो हतो. एक वखते सेवके आवीने संध्याकाळे जणाव्युं के 'हे स्वामी! प्रातःकाळे विश्वना स्वामी श्रीवीरपरमात्मा आपणा उद्यानमां पधारशे.' ते सांभळी राजा रोमांचित थईने बोल्यो— 'पूर्वे प्रभुने कोइए वांद्या नथी तेवी रीते प्रभाते हुं वंदना करीश.' आ प्रमाणे अहंकारथी पूर्ण थई प्रातःकाळे सुवर्णनी रुपानी अने दांतनी पांचसो पालखीओमां अंतःपुरीओने बेसारी मोटी ऋद्धि सहित ते श्रीवीरप्रभुने वांदवा माटे नीकळ्यो. तेनी साथे अढार हजार हाथीओ, चोवीश लाख घोडा, एकवीश हजार रथ अने एकाणु करोड पेदल, एक हजार सुखपाल अने सोळ हजार ध्वजाओ हती. आवा मोटा

॥ श्री उपदेशप्रासादग्रंथे ॥

स्तंभ १२ मो.

मंगलाचरण.

(जिनस्तुति)

उत्कृष्टकाले विजयेष्वभूवन्, षष्ट्युत्तराश्चंद्रशतारिहंता ।
दिक्क्षेत्रजाः कालत्रिकेण गुण्याः, विंशत्यग्राश्च शतानि सप्त॥ १ ॥
सीमंधराद्या विहरंति ये च, विदेहजा विंशति तीर्थनाथाः ।
कल्याणकानि वृषभादिकानां, विंशत्यथाग्रैकशतानि चात्र ॥ २ ॥
श्रीवारिषेणो वृषभाननश्च, चंद्राननार्हत्प्रभुवर्ध्धमानः ।
एतच्चतुःशाश्वतमूर्त्तयश्च, संत्यूर्ध्वलोकादिषु तां स्तवीमि ॥ ३ ॥
एतज्जिनव्यूहमनंतरोक्तं, शत्रुंजयाद्रेस्तु सहस्रकूटे ।
न्यस्तस्तु तं तत्प्रददातु नित्यं, ज्ञानं समाध्युद्यमसुत्तमं मे ॥ ४ ॥

भावार्थ

"उत्कृष्ट काळने[1] विषे पांच महाविदेहक्षेत्रना १६० विजयमां एकसो ने साठ तीर्थंकरो थाय छे तेमने, तथा पांच भरत अने पांच ऐरवत मळी दश क्षेत्रमां थती दश चोवीशीना बसो ने चाळीश जिन थाय तेने त्रणे काळनी त्रण त्रण चोवीशी लेवा माटे त्रण गुणा करवाथी सातसो ने वीश जिनेश्वर थाय छे तेमने, तथा महाविदेहक्षेत्रने विषे सीमंधर स्वामी विगेरे जे वीश तीर्थंकरो हाल विचरे छे तेमने, अने भरतक्षेत्रनी वर्तमान चोवीशीना ऋषभदेव विगेरे २४ तीर्थंकरोना एकसो ने वीश

---

१ ज्यारे मनुष्यक्षेत्रमा मनुष्यो सर्वथी विशेष सख्यामा होय त्यारे उत्कृष्टकाळ कहेवाय छे. श्रीअजितनाथ प्रभुना समयमा उत्कृष्ट काळ हतो ते वखत पाच महाविदेहमा १६० प्रभु विचरता हता.

कल्याणक छे तेमने, तेमज श्री वारिषेण, श्रीवृषभानन, श्रीचंद्रानन अने श्रीवर्धमान प्रभु ए चार नामवाळी शाश्वत मूर्तिओ ऊर्ध्व लोक विगेरेमां साश्वता सिद्धायतनमां रहेली छे तेमने हुं स्तवुं छुं. आ त्रण श्लोकमां कहेलो १०२४ जिनेश्वरनो समूह शत्रुंजय गिरि उपरना सहस्रकूटमां स्थापित करेलो छे ते मने ज्ञान, समाधि अने उत्तम उद्यम प्रत्ये आपो."

पूर्वेना बार स्तंभोमां सम्यक्त्व अने बार व्रतो वर्णवेला छे. तेवा समकित अने व्रतवाळो पुरुष जिनभक्तिमां तत्पर होय छे, तेथी ए संबंधथी आवेला श्रीजिनभक्तिना फळने हवे स्तवुं छुं (कहुं छुं).

व्याख्यान १८१ मुं.

ग्रंथमध्यमंगळ.

श्रीवीरजगदाधारं, स्तुवंति प्रत्यहं नरः ।
तेर्थवादं वितन्वंति, विश्वे दशार्णभद्रवत् ॥ १ ॥

" जगत्ना आधाररूप एवा श्रीवीरप्रभुने जे पुरुषो हमेशां स्तवे छे तेओ दशार्णभद्रनी जेम आ विश्वमां पोताना अर्थवाद (यश) ने विस्तारे छे."

दशार्णभद्रनी कथा.

दशार्ण नामना देशमां दशार्ण नगरने विषे दशार्ण नामे राजा हतो. ते पांचशें राणीओनी साथे पोताना अंतःपुरमां सुखविलास भोगवतो हतो. एक वखते सेवके आवीने संध्याकाळे जणाव्युं के 'हे स्वामी! प्रातःकाळे विश्वना स्वामी श्रीवीरपरमात्मा आपणा उद्यानमां पधारशे.' ते सांभळी राजा रोमांचित थईने बोल्यो– 'पूर्वे प्रभुने कोइए वांद्या नथी तेवी रीते प्रभाते हुं वंदना करीश.' आ प्रमाणे अहंकारथी पूर्ण थई प्रातःकाळे सुवर्णनी रुपानी अने दांतनी पांचसो पालखीओमां अंतःपुरीओने बेसारी मोटी ऋद्धि सहित ते श्रीवीरप्रभुने वांदवा माटे नीकळ्यो. तेनी साथे अढार हजार हाथीओ, चोवीश लाख घोडा, एकवीश हजार रथ अने एकाणु करोड पेदल, एक हजार सुखपाल अने सोळ हजार ध्वजाओ हती. आवा मोटा

आडंबर सांथे समवसरण समीपे आवी हस्ती उपरथी उतरी पांच अभिगमन साचववा पूर्वक तेणे प्रभुने वंदना करी.

ए अवसरे सौधर्म इंद्रे अवधिज्ञानवडे ते वात जाणी ते राजानुं अभिमान उतारवा सारु श्री वीरप्रभुने वंदना करवा माटे आवतां पोतानी दिव्य ऋद्धि विकुर्वी. पांचसो ने बार बार कुंभस्थळवाळा चोसठ हजार हाथीओ विकुर्व्या. तेना दरेक मस्तकमां आठ आठ दंतुशळ, प्रत्येक दंतुशळे आठ आठ वावो, प्रत्येक वावमां आठ आठ कमळो, प्रत्येक कमळे लाख लाख पांखडीओ अने प्रत्येक पांखडीए बत्रीश बद्ध नाटको विकुर्व्या. दरेक कमळनी मध्यमां कर्णिकाना भाग उपर एक एक इंद्रप्रासाद कर्यो; अने तेनी अंदर आठ आठ पट्टराणीओ साथे इंद्र पोते बेठो. आवी महान् समृद्धि साथे इंद्र प्रभुने वांदवा आव्यो.

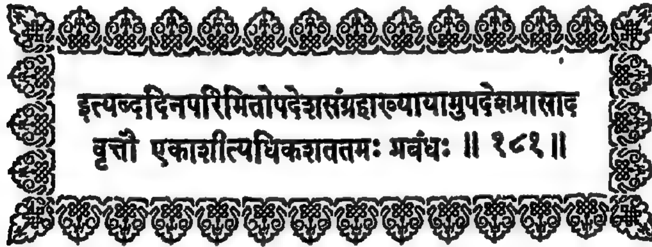
पूर्वाचार्योए दरेक हस्तीना मुखादिकनी संख्या आ प्रमाणे कहेली छे—दरेक हाथीने पांचसो ने बार मुख, चार हजार अने छनुं दंतुशळ, बत्रीश हजार सातसो ने अडसठ वापिकाओ, बे लाख बासठ हजार एकसो ने चुंमालीश कमळो, तेटलाज ते कमळोनी कर्णिका उपर प्रासादो अने वीश लाख सत्ताणु हजार एकसो ने बावन इंद्राणीओ तथा छवीशसें एकवीश क्रोड ने चुंमाळीश लाख कमळनी पांखडीओ—आ प्रमाणे एक हस्ती माटे समजी लेवुं. तेवा ६४००० हाथी होवाथी ते परना इंद्र विगेरेनी सर्व संख्या पोतानी मेळे गणी लेवी; अने तेमां रहेल इंद्राणीओनी संख्या तेर हजार चारसो ने एकवीश क्रोड सत्योतेर लाख अने अठ्यावीश हजारनी जाणवी. एक एक नाटकमां सरखे सरखां रुप, शृंगार अने नाट्यनां उपकरणोवाळां एकसो ने आठ आठ दिव्यकुमारो अने एकसो ने आठ आठ दिव्यकन्याओ जाणवी.

आवी मोटी ऋद्धिसहित आवीने इंद्रे पृथ्वी पर मस्तक नमावी प्रभुना चरणमां वंदना करी.

दशार्ण राजा इंद्रनी आवी समृद्धि जोई आश्चर्यथी चिंतवन करवा लाग्यो के " अहो! इंद्रनी समृद्धिनो विस्तार केवो छे? तेनी आगळ मारी समृद्धि तो तुच्छ छे; तेथी में वृथा अहंकार कर्यो. इंद्रना एक हाथी जेटली पण मारी संपत्ति नथी. अहो! आ इंद्रे जरुर मारा अभिमान रुप मुखने लपडाक लगावीने वांकुं करी दीधुं छे; माटे हवे हुं अंतरनी समृद्धि प्रगट करुं, अने तेवडे पुनः श्रीजिनेश्वरने वंदना करुं तो पछी इंद्र शुं करवानो छे? तेनी बाह्य समृद्धिने मारा अंतरंग बळथी हणी नाखुं. केमके अविरति गुणस्थानके रहेलो आ इंद्र कदापि पण आ भवमां संयमसमृद्धिमय आत्माने करी प्रभुने वांदवा समर्थ नथी; तेथी ते पोतानी समृद्धिवडे मने वांदे-स्तवे एम करुं."

आवो विचार करी प्रभुनी देशनाथी अंतरमां प्रतिबोध पामेला दशार्ण राजाए राज्य-संपत्ति विगेरेने क्षणविनश्वर मानी तत्काळ प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते जोई विस्मय पामेला इंद्रे ते राजर्षिने वंदना करीने कह्युं–" हे महासत्व ! तमे आवा पराक्रमथी मने जीती लीधो छे, तो बीजाओनी तो तमारी पासे शी बीशात छे ? हुं तमने वारंवार खमावुं छुं. आ तमारो मूर्छानो त्याग कोई अद्भुत छे. हुं तो विषयलंपट छुं, जेथी तमने जीतवा समर्थ नथी. तमे तो निस्पृह अने मायारहित छो. तमे मने धर्मआशिष आपो के जेथी आगामी भवे अल्प काळमां मारा संसारनो पार आवी जाय." आ प्रमाणे दशार्ण राजर्षिनी स्तुति करीने इंद्र स्वर्गे गयो. दशार्ण मुनि पण घणा प्रकारनां तप करी कर्म खपावीने मोक्षे गया.

" एवी रीते जे अंतरनी समृद्धिवाळो सुश्रावक अहंकार छोडी भक्तिपूर्वक श्रीजिनेश्वर भगवंतनी स्तुति करे छे तेज आ जगत्मां उत्तम छे."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकाशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८१ ॥

व्याख्यान १८२ मुं.

श्रीजिनभक्तिनुं फळविधान कहे छे.

नरत्वं प्राप्य दुःप्राप्यं, कुर्वंति भरतादिवत् ।
तीर्थंकरार्चनं भक्तिं, तेषां स्यात् शाश्वतं यशः ॥ १ ॥

भावार्थ

" जेओ दुर्लभ मनुष्यपणुं प्राप्त करी भरतादिकनी जेम तीर्थंकर भगवंतनी पूजा अने भक्ति करे छे तेमने शाश्वत (अक्षय) कीर्ति प्राप्त थाय छे."

अहीं भरत एटले श्रीयुगादि प्रभुना पुत्र समजवा, अने आदि शब्दथी सगर राजा विगेरेनुं ग्रहण करवुं.

भरतादिकनी कथा.

(शत्रुंजय तीर्थपरना उद्धारोनुं वर्णन.)

श्री विनीता नगरीना उद्यानमां एक वखते भरत चक्रीए प्रथम तीर्थंकरने नमी आ प्रमाणे पूछ्युं-" हे स्वामी ! पूर्वे जे तीर्थमां तमे नवाणु पूर्व सुधी समोसर्या छो ते तीर्थ शुं शाश्वत छे ? " प्रभुए कह्युं-" हे भरत ! ए सिद्धाचळ गिरि पहेला आरामां ऐंशी योजन, बीजा आरामां सीत्तेर योजन, त्रीजा आरामां साठ योजन, चोथा आरामां पचास योजन, पांचमा आरामां बार योजन अने छठ्ठा आरामां सात हाथना प्रमाणवाळो थाय छे; तेथी ए तीर्थ शाश्वत प्राय छे. अवसर्पिणीमां अने उत्सर्पिणीमां तेनी हानि वृद्धि थया करे छे. "

आ प्रमाणे सांभळी भरत चक्री संघ लई मोटा उत्सव साथे ते तीर्थे गया; अने त्यां इंद्रना वचनथी ते पहेला संघपतिए रत्नसुवर्णमय चोराशी मंडपोथी अलंकृत त्रैलोक्यविभ्रम नामे एक प्रासाद कराव्यो. ते एक कोश ऊंचो, दोढ कोश विस्तीर्ण अने हजार धनुष पहोळो हतो. पछी तेमां सुवर्णरत्नमय श्रीजिनबिंब स्थापित कर्युं. एवी रीते भरते ए तीर्थनो प्रथम उद्धार कराव्यो. १.

ते पछी अनुक्रमे श्रीऋषभदेवना संतानमां भरतेश्वरना राज्यने विषे आदित्ययशा, महायशा अने अतिबल विगेरे त्रिखंडना भोक्ताओ थया; अने भरतनी जेम घणा राजाओ संघपति थई केवळज्ञानने प्राप्त करनारा थया. ईक्ष्वाकुकुळमां बीजा पण घणा राजाओ सिद्धिपदने प्राप्त थया छे. पचास लाख कोटि सागरोपम सुधी सर्वार्थसिद्धिए अंतरित चौद लाख विगेरे श्रेणीवंडे[1] वसुदेवहिंडक नामना ग्रंथमां कह्या प्रमाणे असंख्य राजाओ आ क्षेत्रमां सिद्धिपदने पाम्या छे.

भरतचक्री पछी छ कोटि पूर्व गया पछी आठमे पाटे दंडवीर्य राजा थयो. तेणे संघपति थई शत्रुंजयतीर्थे बीजो उद्धार कर्यो. २. अनुक्रमे भरत विगेरे सात पाट थइ गया पछी आ आठमो राजा पण दर्पण भुवनमां केवलज्ञानने प्राप्त थयो.

ते पछी एकसो सागरोपम गये सते महाविदेहक्षेत्रमां श्रीजिनेश्वरना मुखथी सिद्धगिरिनुं वर्णन सांभळी ईशानइंद्रे ते तीर्थे त्रीजो उद्धार कर्यो. ३. ते पछी एक कोटि सागरोपम गया पछी माहेंद्रे चोथो उद्धार कर्यो. ४. ते पछी दश कोटि सागरोपम

1 चौद लाख मोक्षे ने एक सर्वार्थसिद्धे, पाछा चौद लाख मोक्षे ने एक सर्वार्थसिद्धे ए प्रमाणे जुदी जुदी घणी श्रेणीओ वसुदेव हिंडमां बतावेली छे.

गया पछी ब्रह्मेंद्रे पांचमो उद्धार कर्यो. ५. अने ते पछी एक कोटि सागरोपम गया पछी भुवनपति चमरेंद्रे छट्ठो उद्धार कर्यो. ६.

श्रीआदिनाथ प्रभु थया पछी पचास लाख कोटि सागरोपम जतां श्री सगरचक्री थया, तेणे इंद्रना वाक्यथी पडतो समय जाणी भरते करावेल मणिमय बिंबने भूमिमां भंडार्युं; अने तेणे सातमो उद्धार कर्यो. ७. ते पछी अभिनंदन स्वामीना मुखथी तीर्थनुं वर्णन सांभळी व्यंतरेंद्रे आठमो उद्धार कर्यो. ८. ते पछी श्रीचंद्रप्रभुना वारामां चंद्रयशा राजाए नवमो उद्धार कर्यो. ९. ते पछी शांतिनाथना पुत्र चक्रायुधे दशमो उद्धार कर्यो. १० पछी मुनिसुव्रतना समयमां रामचंद्रे अगियारमो उद्धार कर्यो. ११. ते पछी नेमिनाथना वखतमां पांडवो थया. तेओए अढार अक्षौहिणी सेना साथे लई घोर युद्ध करी महापाप उपार्जन कर्युं. पछी तेमनी माता कुंतीए तेमने कह्युं—' हे पुत्रो! तमे गोत्रद्रोह कर्यो छे तेथी तमने महापाप लाग्युं छे, माटे श्रीशत्रुंजयतीर्थे जई जिनपूजा विगेरे करी ते पापने दूर करो.' ते सांभळी पांडवोए अमूल्य काष्ठमय प्रासाद करावी तेमां लेप्यमय बिंब स्थापीने बारमो उद्धार कर्यो १२. ते पछी श्रीवीरप्रभुना निर्वाणथी चारसो ने सीत्तेर वर्षे विक्रमादित्य राजा थयो; तेणे सिद्धाचळना संघपतिनुं बिरुद धारण कर्युं हतुं. ते पछी संवत १०८ मां जावड शेठे तेरमो उद्धार कर्यो. १३. पांडवो अने जावडशेठनी वच्चे बे कोड पंचाणु लाख अने पंचोतेर हजार संघपति थया. ते पछी संवत १२१३ ना वर्षमां श्रीमाळी बाहडदेवे चौदमो उद्धार कर्यो. १४. संवत १३७१ ना वर्षमां श्रीरत्नाकरसूरिना भक्त ओसवाल श्रेष्ठी समराशा के जे बादशाहना प्रधान हता तेणे पंदरमो उद्धार कर्यो. १५. ते समराशा शेठे नवलाख बंदीवानोने सोनैयाओ आपीने मूकाव्या हता. संवत १५८७ ना वर्षमां बादशाह बहादुरशाहना मानेला शेठ करमाशाहे सोळमो उद्धार कर्यो. १६. ते सांप्रतकाळे भव्यजीवोथी वंदाय छे.

हवे छेल्लो उद्धार दुप्पसह सूरिना श्रावक विमलवाहन राजा करशे.

एकदा श्री नागपुरमां पुनड नामना श्रावके आप्रमाणे गुरुनी देशना सांभळी के "धर्मना स्थानमां स्थापित करेली लक्ष्मी शाश्वत थाय छे वळी विशेषे करीने तीर्थयात्रानुं पुण्य मोटुं छुं. कह्युं छे के— आरंभनी निवृत्ति, द्रव्यनी सफळता, उंचे प्रकारे संघनुं वात्सल्य, दर्शन (समकित) नी निर्मळता, स्नेहीजननुं हित, प्राचीन चैत्योना दर्शन, तीर्थनी उन्नतिनो प्रभाव, जिनवचननी मान्यता, तीर्थंकरगोत्रनो बंध, सिद्धिनुं सामीप्य अने देव तथा मनुष्यनी पदवीनो लाभ—ए सर्व तीर्थयात्रानां फळ छे." आवी देशना सांभळी संवत १२७५ ना वर्षमां ते पुनडशेठ नागपुर (नागोर) थी

यात्रा माटे नीकळ्यो. तेना संघमां अढारसो मोटां गाडां, एक हजार सेजपाल, चारसो वेहेल, पांचसो वाजित्र अने घणां देवालयो हतां. स्थाने स्थाने उत्सव करतो ते संघ धोलका पासे आव्यो; एटले वस्तुपाळ मंत्री ते संघनी सामे आव्यो, अने जे दिशामां संघनी रज पवनथी उडे ते दिशा तरफ चालवा लाग्यो, त्यारे संघना लोकोए कह्युं-'मंत्रीश! आ तरफ रज उडे छे, माटे आनी तरफ पधारो. मंत्री बोल्यो-"आवी पवित्र रजनो स्पर्श पुण्यथीज प्राप्त थाय छे ते विषे कह्युं छे के-

श्रीतीर्थपांथरजसा विरजी भवंति,
तीर्थेषु बंभ्रमणतो न भवेष्वटंति ।
द्रव्यव्ययादिह नराः स्थिरसंपदः स्युः,
पूज्या भवंति जगदिशमथार्चयंतः ॥ १ ॥

"श्री तीर्थयात्राए जता संघना पगनी उडेली रज लागवाथी पुरुषो कर्मरूपी रजथी रहित थाय छे, तीर्थमां परिभ्रमण करवाथी प्राणीने संसारमां भ्रमण करवुं पडतुं नथी, तीर्थमां द्रव्यनो व्यय करवाथी संपत्ति स्थिर थाय छे, अने जगत्पति जिनराजने पूजवाथी जगत्मां पूज्य थाय छे." आ प्रमाणे कहेतो मंत्री वस्तुपाळ आगळ चाल्यो. संघे सरोवरने तीरे पडाव कर्यो. मंत्रीशे संघपतिने गाढ आलिंगन करीने कह्युं-'हे श्रावकवर्य! काले प्रातःकाळे तमारे संघसहित मारे घरे भोजन करवा पधारवुं. संघवीए ते वात कबुल करी. बीजे दिवसे प्रातःकाळे सर्व संघ वस्तुपाळने घेर जमवा गयो. ते वखते मंत्री वस्तुपाळे पोतानी जाते सर्वना चरण पखाळी तिलक कर्यो. तेम करतां मध्यान्ह समय थई गयो. ते वखते तेमना नानाभाई तेजपाळे कह्युं-'हे देव! बीजा माणसो पासे आ प्रमाणेज भक्ति करावीश, माटे तमे भोजन करी ल्यो; केमके बहु मोडुं थयुं छे तेथी तमने परिताप थशे.' मंत्री बोल्या. 'तेजपाल! एवुं न कहो; आवो अवसर तो पुरा पुण्यथी मळे छे.' ते वखते गुरुजीए आ प्रमाणे कहेवराव्युं-

यस्मिन् कुले यः पुरुषप्रधानः, स एव यत्नेन संरक्षणीयः ।
तस्मिन् विनष्टे सकलं विनष्टं, न नाभिभंगे शकटा वहंति ॥

"जे कुळमां जे पुरुष प्रधान होय तेनुं यत्नथी संरक्षण करवुं; कारणके जो ते पुरुष विनाश पामे तो सघळु कुळ विनाश पामी जाय छे. जेमके धरी भांगी जाय तो गाडुं चाली शकतुं नथी." ते सांभळी मंत्रीए गुरुने आ प्रमाणे कहेवराव्युं-

अद्य मे फलवती पितुराशा, मातुराशांकुरोहिता ।
यद्युगादिजिनयात्रिकलोकं, प्रीणयाम्यहमशेषमखिन्नः ॥

" आजे युगादि प्रभुनी यात्राए जनारा सर्व यात्रिकोने हुं अखिन्न पणे सेवा करवा वडे प्रसन्न करुं छुं; तेथी मारा पितानी आशा सफळ थई, अने मारी मातानी आशाने अंकुर उगी नीकल्या एम हुं समजु छुं. "

आ प्रमाणे निरभिमान भक्ति वडे रंजित करेलो संघ त्यांथी नीकळी अनुक्रमे जिन-यात्रा करवा गयो, अने सारी रीते यात्रा करी. आ प्रमाणे बीजां पण घणां वृत्तांतो छे, ते पूर्व शास्त्रथी जाणी लेवां.

" भरतादिक राजाओए अने बीजा श्रावकोए तथा सुरासुरना पति इंद्रोए जेवी रीते ए महातीर्थनी भक्ति करेली छे, तेवी रीते बीजा श्रावकोए पण स्वात्मशुद्धिने माटे भक्ति करवी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्व्यशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८२ ॥

व्याख्यान १८३ मुं.

श्रीशत्रुंजयनी यात्रानुं फळ कहे छे.

अन्यतीर्थेषु यद्यात्रा सहस्रैः पुण्यमाप्यते ।
तदेकयात्रया पुण्यं, शत्रुंजयगिरौ भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ

" बीजां तीर्थोमां हजारो यात्रा करवाथी जेटलुं पुण्य थाय. तेटलुं पुण्य श्रीश-त्रुंजयगिरिनी एक यात्रा करवाथी थाय छे. "

विस्तरार्थ

बीजा तीर्थ एटले नंदीश्वर विगेरे तीर्थ जाणवां. यादववंशी श्रीअतिमुक्त केवलीए कृष्णने पूज्य एवा नारदनी आगळ कह्युं छे के—

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पयालि तिरिय लोगंमि ।
तं सव्वमेव दिठ्ठं, पुंडरिए वंदिए संते ॥

" श्रीपुंडरीक तीर्थने वांदवाथी स्वर्ग पाताल अने तीर्छा लोकनां सर्व तीर्थो जोयां, (वांद्या) एम समजवुं. "

बीजा महापुरुषोए पण कह्युं छे के " नंदीश्वरनी यात्राथी जे पुण्य थाय छे तेथी बमणुं पुण्य कुंडळगिरिनी यात्राथी थाय छे, त्रगणुं पुण्य रुचकद्वीपनी यात्राथी थाय छे अने चोगणुं पुण्य गजदंतानी यात्राथी थाय छे. तेथी बमणुं पुण्य जंबूवृक्ष परनां चैत्योनी यात्राथी, तेथी छगणुं धातकी खंडमां रहेला धातकी वृक्ष परना जिनेश्वरने पूजवाथी, तेथी बावीसगणुं पुण्य पुष्करवरद्वीपार्धना जिनबिंबोनी पूजाथी अने सोगणुं पुण्य मेरुपर्वतनी चूलिका पर रहेला जिनेश्वरनी पूजाथी थाय छे. हजारगणुं पुण्य संमेतगिरिनी यात्राथी, लाखगणुं अंजनगिरिनी यात्राथी, दश लाखगणुं रैवत अने अष्टापद गिरिनी यात्राथी अने कोटिगणुं पुण्य श्रीशत्रुंजय तीर्थना स्वाभाविक स्पर्शथी थाय छे; अने ते पण मन वचन कायानी शुद्धि पूर्वक थाय तो अनंतगणुं पुण्य थाय छे. "

आ भवमां ते महातीर्थनी यात्रा अवश्य करवा योग्य छे. कह्युं छे के–

क्षेत्रानुभावतो पूज्यैः, मुक्त्यद्रेर्महिमा स्मृतः ।
ध्रुवं भवौघमुक्त्यर्थं, यात्रा कार्या दयाश्रितैः ॥

" पूज्यपुरुषोए ए मुक्तिगिरिनो महिमा क्षेत्रना अनुभावथी कहेलो छे; तेथी दयालु पुरुषोए आ भवचक्रमांथी मुक्त थवाने माटे तेनी यात्रा अवश्य करवी. " आ विषे कुमारपाल राजानो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे–

कुमारपाळ राजानो प्रबंध.

" एक दिवसे पाटण नगरमां श्रीहेमचंद्राचार्ये आ प्रमाणे उपदेश कर्यो–"यौवनमां अथवा वृद्धवयमां अज्ञानपणे जे पाप कर्युं होय ते सर्व पाप सिद्धगिरिने स्पर्शवाथी विलय पामी जाय छे. वळी एक वखत भोजन करनारो, भूमिपर सुनारो, ब्रह्मचर्य पाळनारो, इंद्रियोने वश राखनारो, सम्यग् दर्शने युक्त अने छ आवश्यक(प्रतिक्रमण) करनारो[1] पुरुष जो सिद्धाचळनी यात्रा करे तो ते सर्व तीर्थनी यात्रानुं फळ पामे छे. हे कुमारपाल राजा ! आ सिद्धगिरि जेवुं बीजुं तीर्थ त्रण जगतमां नथी. तेनुं पुंडरीक एवुं नाम पहेला गणधरथी पडेलुं छे. ते विषे कहेलुं छे के

[1] आ छ 'री' समजवी. छ री पाळीने यात्रा करवी ते आ प्रमाणे.

'चैत्रशुदि पुनमने दिवसे पांच कोटि मुनिओना परिवार साथे श्री पुंडरीक गणधर जे तीर्थे निर्मळ सिद्धिसुखने पाम्या ते पुंडरीक तीर्थ जयवंतु हो. तेथी संमतिकाळे चैत्र मासनी पूर्णिमाए दश, वीश, त्रीश, चालीश अने पचास पुष्पमाळा जे चडावे छे ते अनुक्रमे एक, बे, त्रण, चार अने पांच उपवासनुं फळ पामे छे.' इत्यादि प्रमाण छे. तेथी शास्त्रोक्त विधिवडे चैत्रमासनी पूर्णिमाए देववंदन अने पुंडरीक उद्यापन विगेरे क्रिया करवी. यात्रामां पण संघवीपद भाग्यथी प्राप्त थाय छे. हे राजा ! इंद्रादिक पदवी सुलभ छे, पण संघपतिनी पदवी दुर्लभ छे. कह्युं छे के आ संघ अरीहंत प्रभुने पण मान्य अने सर्वदा पूज्य छे; तेवा संघनो जे अधिपति थाय तेने लोकोत्तर स्थितिवाळोज समजवो."

आ प्रमाणेना गुरुमहाराजना उपदेशथी कुमारपाल राजाने संघयात्रानो मनोरथ उत्पन्न थयो; तेथी तेणे ते विचार गुरुमहाराजने निवेदन कर्यो; एटले गुरुए आचार-दिनकर विगेरे ग्रंथोमां कहेला विधिथी आठ स्तुतिवडे देववंदन पूर्वक शांतिक पौष्टिक क्रिया करावीने तेमने संघपतिनी पदवीए स्थापित कर्या. शुभलग्ने राजाए हस्तीना कुंभस्थळ उपर सुवर्णनुं देवालय मूकावीने प्रस्थान कर्युं. ते पछी पहेलां बोंतेर सामंतनां देवालयो, ते पछी चोवीश मंत्रीनां देवालयो अने ते पछी अढारसो व्यापारीओनां जिनचैत्यो–एम अनुक्रमे संघनी आगळ चाल्यां. कुमारपाल राजाए पाटण मांहेना सर्व चैत्योनी पूजा, अमारी घोषणा, बंदीखानामांथी बंदीमोचन अने संघभक्ति पूर्वक यात्रा भेरी वगडावीने प्रयाण कर्युं. रस्तामां जेमने भातुं न होय तेमने भातुं आपतो अने संघमां आवेला लोकोने सहोदरथी अधिक गणतो राजा हळवे हळवे प्रयाण करवा लाग्यो.

मार्गे चालतां कुमारपाले गुरुने यात्रानो विधि पूछ्यो एटले गुरु बोल्या–

सम्यक्त्वधारी पथिपादचारी, सचित्तवारी वरसीलभारी ।
भुस्वापकारी सुकृतिसदैकाहारी विशुद्धां विदधाति यात्रां ॥

" समकित धारण करी, मार्गमां पगे चाली, सचित्तनो त्याग करी, शील पाळी, पृथ्वीपर शयन करी अने एक वखत आहार लई, सुकृतिपुरुष विशुद्धयात्रा करे छे." लोकमां पण कहेवाय छे के "यात्रामां वाहनपर बेसवाथी अर्धु फळ नाश पामे छे, जोडा पहेरवाथी चोथा भागनुं फळ नाश पामे छे, शुभ मार्गे धनव्यय न करवाथी त्रीजा भागनुं फळ नाश पामे छे, अने प्रतिग्रह (दान) लेवाथी यात्रानुं सर्व फळ नाश पामे छे." आ प्रमाणे सांभळी कुमारपाल राजाए वाहननो अने पगरखांनो

तत्काळ त्याग करी दीधो, अने गुरुमहाराजनी साथे चालवा लाग्यो. राजाने तेम करतो जोई आचार्य बोल्या–"हे राजन्! अश्वादिक वाहन अने उपानह विना तमारा देहने घणी पीडा लागशे." राजाए कह्युं–"पुर्वे दुरवस्थामां परवशपणाथी हुं पगवडे कांई थोडुं भम्यो नथी, पण ते बधुं व्यर्थ गयुं छे; अने आतो पगे चालवानो हेतु तीर्थयात्रा छे तो ते अतिसार्थक छे. तेनाथी तो मारुं अनेक भवनुं भ्रमण टळी जशे." आ प्रमाणेनो उत्तर सांभळी गुरु बहु प्रसन्न थया अने राजाने पगे चालवाने उत्साहित कर्यो.

कुमारपाल राजा मार्गमां स्थाने स्थाने प्रभावना, प्रभुनी दरेक प्रतिमाने सुवर्णनां छत्र, दरेक जिनप्रसाद उपर ध्वजारोपण, गामे गामे अने शहेरे शहेरे साधर्मिकनी पूजा, संघने भोजन, अमारीघोषणा, बेवार प्रतिक्रमण, पर्व दिवसे पौषध अने याचकोने उचित दान इत्यादि धर्मक्रिया करतो चाल्यो. ज्यारे तीर्थना दर्शन थया त्यारे तेणे तीर्थने संघ सहित पंचांग प्रणाम कर्यो; अने ते दिवसे त्यां रही शत्रुंजयने वधावी, तीर्थसन्मुख सुगंधी द्रव्यना अष्टमंगळ आलेखी, तीर्थोपवास अने रात्रि जागरण कर्युं. प्रातःकाळे देवगुरुनी पुजापूर्वक पारणुं कर्युं. अनुक्रमे गिरिराजनी तळेटीमां आव्या, एटले संघ सहित चैत्यवंदन करी सर्व आशातना टाळीने श्रीगिरिराज उपर चडवा लाग्या. जिनप्रसादनी समीप पहोंच्या एटले तेना द्वारने सवाशेर मोतीथी वधावी अंदर प्रवेश कर्यो. पछी प्रदक्षिणा करती वखते राजाए श्रीहेमचंद्राचार्यने सरस अने अपूर्व स्तुति करवा माटे प्रार्थना करी. आचार्य महाराजे "जयजंतुकप्प॰ इत्यादि धनपालपंचाशिकाना पाठवडे भगवंतनी स्तुति करी.ते सांभळी राजा प्रमुख बोल्या–'हे भगवन्! आप पोते समर्थ छो छतां आ बीजाए रचेली स्तुतिनो पाठ केम करो छो?' गुरु बोल्या–'राजन्! एवी अद्भुत भक्तिगर्भित स्तुति माराथी रची शकाय तेम नथी' गुरुनी आवी निरभिमानता जोई राजा विगेरे बहु खुशी थया. पछी तेओ गुरुनी स्तुति करतां राजादनी[1] वृक्षनी नीचे आव्या. एटले गुरुए कह्युं–'हे राजा! सीत्तेर लाख कोटि अने छप्पनहजार कोटि वर्षे एक पूर्व थाय छे. ते अंकने नवाणुगणा करतां ओगणोतेर कोडाकोड, पंचाशीलाख क्रोड अने चुमाळीश हजार क्रोड थाय; तेटलीवार श्रीआदिनाथ प्रभु आ वृक्ष नीचे समोसर्या छे. आ प्रमाणे सारावलीपयन्ना मां कहेलुं छे.'

कुमारपाल राजाए गुरुए कहेला विधि प्रमाणे प्रथम राजादनी वृक्षनी अने प्रभुनी पादुकानी सम्यक् प्रकारे पूजा करीने पछी गर्भगृहमां प्रवेश कर्यो. त्यां जाणे त्रण

1 रायण.

भुवननुं ऐश्वर्य प्राप्त थयुं होय तेम ते परमानंदथी व्याप्त थई गयो. ते वखते सर्व इंद्रियोना व्यापारथी मुक्त थयो होय तेम आंखनुं मटकुं पण मार्या वगर अने आळसुनी जेम नेत्रने स्थिर करीने एक क्षणवार प्रभुना मुख उपर दृष्टि स्थापित करी दई हर्षना अश्रुथी पूरित थई पाप रुपी सर्व तापने दूर करी स्थित थयो. पछी 'हे जगदीश! तमारुं पूजन हुं रंक शीरीते करी शकुं?' इत्यादि स्तुतिने उच्चारण करतां नव लक्ष मूल्यनां नव महारत्नोवडे नव जीवहिंसा जे भवभ्रमण–जन्ममरण तेथी मुक्त थवाने माटे प्रभुना नव अंगे पूजा करी. पछी आ प्रमाणे विचारवा लाग्यो के–

धन्योहं मानुषं जन्म सुलब्धं सफलं मम।
यदवापि जिनेंद्राणां, शासनं विश्वपावनं॥

"हुं धन्य छुं. में प्राप्त करेल मनुष्य जन्म आ विश्वने पावन करनार श्रीजिनेंद्रनुं शासन प्राप्त थवाथी सफळ थयो छे."

पछी इंद्रमाळ पहेरवाने वखते सर्व संघ एकठो थयो. ते वखते मंत्री वाग्भट्ट इंद्रमाळ पहेरवानुं चार लाख द्रव्य बोल्यो, राजा कुमारपाळे आठ लाख कह्या, मंत्रीए सोळ लाख कह्या, राजाए बत्रीश लाख कह्या. एम बोलतां कोई एक गृहस्थे गुप्तरीते सवा क्रोड कह्या. ते सांभळी राजा चमत्कार पामीने बोल्या–'तेने माळा परिधान करवा आपो.' ते समये सामान्य वेषने धारण करनार ते गृहस्थ प्रगट थयो. सामान्य वेषवाळा ते जगडुशाने जोई राजाए मंत्रीने कह्युं–'सवा क्रोड द्रव्यनी खात्री करीने माळा आपो.' एटले जगडुशा जरा हृदयमां कषायित थई एक रत्न तेटलाज मूल्यनुं आपतां बोल्या–'हे राजा! देवगुरु तथा संघपतिनी आगळ कोई कपट (मृषा) वाक्य बोलेज नहि.' राजाए तेने मिथ्या दुष्कृत आपी आलिंगन करीने कह्युं. 'तुं मारा संघमां मुख्य संघपति छे.' एम सन्मान करी तेने माळा अर्पण करी. जगडुशाए अडसठ तीर्थरूप पोतानी माताने ते माळा पहेरावी.

पछी कुमारपाळे पूजानां सुवर्णमय उपकरणो प्रासादमां मूकी पांच शक्रस्तववडे देववंदना करी. त्यार पछी संघ सहित श्रीपुंडरीकगिरिने सर्व तरफ पटकुळ विगेरे परिधान करावी अनुक्रमे नीचे उतरी पादलिप्त नगर (पालीताणा) मां आव्या.

पछी सूरीश्वरना मुखथी 'आ शत्रुंजयगिरिनुं पांचमुं शिखर गिरनार छे. अने तेने वांदवाथी तेटलुंज फळ थाय छे.' एम सांभळी संघ सहित सुखेसुखे अनुक्रमे प्रयाण करतां गिरनार आव्या. त्यां सविस्तर स्नात्र पूजा विगेरे करी श्रीनेमिनाथनी वज्रमय अने अतिशयवाळी प्रतिमा जोई राजाए गुरुने पूछ्युं–'आ प्रतिमा क्यारे अने कोणे करावी छे?' गुरु बोल्या–

" आ भरतक्षेत्रमां अतीत चोवीशीमां त्रीजा सागर नामना तीर्थंकरना समयमां अवंती नगरीने विषे नरवाहन नामे राजा थयो हतो. एक वखते ते राजाए प्रभुनी देशना सांभळीने पूछ्युं–"भगवन्! हुं केवळी क्यारे थईश?"प्रभु बोल्या–'राजन्! आवती चोवीशीमां बावीशमां तीर्थंकर श्रीनेमिनाथना वारामां तुं केवळी थईश.' ते सांभळी ते राजाए संयम लीधुं, अने तपस्या करी मृत्यु पामीने ब्रह्म देवलोकमां दश सागरोपमना आयुष्यवाळो इंद्र थयो. तेणे अवधिज्ञान वडे पोतानो पूर्वभव जाणी श्रीनेमिनाथनुं वज्रमय बिंब कराव्युं, अने तेनी स्वर्गमां पूजा करी. आयुष्यने अंते श्रीनेमिनाथना त्रण कल्याणकना स्थान रुप आ रैवतगिरि उपर वज्रथी कोतरावी पृथ्वीनी अंदर पूर्वाभिमुखे प्रासाद कराव्यो. तेमां रुपाना त्रण गर्भगृह (गभारा) रची तेमां रत्न, मणि अने सुवर्णनां त्रण बिंब स्थापित कर्या; अने तेनी आगळ सुवर्णनुं पबासण करी पेलुं वज्रमय बिंब स्थापन कर्युं. पछी ते इंद्र स्वर्गथी चवी संसारमां भमतां क्षितिसार नगरमां नरवाहन नामे राजा थयो. ते भवमां श्रीनेमिप्रभुना मुखथी पोतानुं पूर्वस्वरुप जाणी ते बिंबनी पूजा करी प्रभुनी पासे संयम लई केवळज्ञान प्राप्त करीने मोक्षे गयो. अहीं श्रीनेमिप्रभुना दीक्षा, ज्ञान अने केवळ एम त्रण कल्याणक थया अने त्यारथी अहीं चैत्य तथा लेप्यमय बिंब लोकमां पूजावा लाग्युं. श्रीनेमिप्रभुना मोक्ष पछी नवसो ने नव वर्ष गयां, त्यारे काश्मीर देशथी रत्न नामे एक श्रावक अहीं यात्रा माटे आव्यो. तेणे जळथी भरेला कळशवडे पेला लेप्यमय बिंबने स्नात्र कर्युं, तेथी ते बिंब गळी गयुं. ते वखते पोताथी तीर्थनो विनाश थयेलो जोई रत्न श्रावके बे मासना उपवास कर्या. बे मासने अंते अंबिकादेवी प्रगट थया. पछी अंबिकाना आदेशथी पेला भूमिगत प्रसादमांथी सुवर्णना पबासण उपरथी वज्रमय बिंब लावीने अहीं स्थापित कर्युं. "

आ प्रमाणे श्रीगिरनार तीर्थनी हकीकत गुरु पासेथी सांभळी सर्व प्रकारना उत्सव करी आत्माने कृतार्थ करतो राजा कुमारपाळ त्यां घणा दिवस रह्यो. त्यां पण पेला जगडुशाएज इंद्रमाळा पेहरी. पछी राजाए त्यांथी प्रयाण करी संघ सहित देवपट्टन (प्रभास पाटण) जई श्रीचंद्रप्रभ प्रभुनी यात्रा करी. त्यां पण जगडुशाएज इंद्रमाळा धारण करी. ते समये राजाए जगडुशाने एवां महामूल्यवाळां रत्नोनी प्राप्तिनो वृत्तांत पूछ्यो त्यारे जगडुशा बोल्या–" मधुमतीपुरी (महुवा) मां प्राग्वाट (पोरवाड) वंशी मारा पिता हंसराज रहेता हता. तेणे पोताना अंत समये मने कह्युं के–' आ पांच रत्न ले, तेमांथी सिद्धगिरि, रैवताचळ अने देवपाटणमां त्रण रत्नो अनुक्रमे आपजे अने बाकीनां बे रत्नोथी तारो निर्वाह करजे.' तेना वचनथी में आ पुण्य करेलुं

छे. " पछी सर्व संघ एकठो करी बाकीनां बे रत्न 'आ रत्न संघपति एवा तमने घटे छे' एम कही तेणे राजाना हाथमां मुक्यां. ते जोई राजा विस्मय पामीने बोल्यो—'हे श्रावकशिरोमणि ! तमने धन्य छे, तमे सर्वमां प्रथम पुण्य करनारा छो. कारणके तमे त्रणे तीर्थमां इंद्रमाळ पहेरीने इंद्रपद प्राप्त कर्युं छे.' आ प्रमाणे स्तुति करी जगडुशाने पोताना अर्धासन उपर बेसारी सुवर्णादिकथी तेनो सत्कार करी दोढ कोटि धन आपीने ते बे रत्नो लीधां; अने ते रत्नोने मध्यमणि (चकता) रुपे नाखी बे हार करावीने श्रीशत्रुंजय अने गिरनार तीर्थे उपर प्रभुनी पूजा माटे मोकल्या. पछी पाटण जई सर्व संघनो सत्कार करीने पोतपोताने स्थानके सौने विदाय कर्या.

" कुमारपाल राजानी जेम भक्ति सहित विधि पूर्वक पापना समूहने टाळवाने माटे बीजाओए पण तीर्थयात्रा करवी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ त्र्यशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१८३॥

व्याख्यान १८४ मुं.

स्नान विगेरे करवानो विधि.

स्नानादिसर्वकार्याणि, विधिपूर्वं विधापयन् ।
हिंसाभिर्मनसा भीरुः, सर्वज्ञसेवना परः ॥ १ ॥

भावार्थ

" सर्वज्ञनी सेवामां तत्पर एवा पुरुषे मनमां हिंसानो भय राखी स्नानादि सर्वे कार्यो विधिपूर्वक करवां. "

स्नानविधि आप्रमाणे--

प्रथम जळ झीलवानुं पात्र जेनी नीचे मुकेलुं होय तेवा अने प्रनाळिआवाळा बाजोठ उपर पूर्व अथवा उत्तराभिमुखे बेसवुं. स्नान करवानी जमीन पांच वर्णनी नीलफुल, कुंथुवा, कीडी, मंकोडा विगेरे ज्यां न होय तेवी तेमज जे जमीन पोली के पोची न होय, जेमां छिद्र विगेरे कांई न होय अने ज्यां तडको आवेलो होय तेवा उत्तम भूभाग उपर स्नान करवा बेसवुं; अने स्नान करवानी जमीनमां नीचेनी शिलाओ शब्द करती होय अर्थात् पथ्थर डगमगतो न होय त्यां स्नान करवा बेसवुं वळी ते स्थाननी नीचे रहेला जीवोनी रक्षा माटे प्रथम पुंजणीवडे प्रमार्जे चारे तरफ चक्षुवडे वारंवार जोई तेवा स्थानमां बेसी जो पोताना पच्चखाणनो काळ पूर्ण थयेलो जाणवामां आव्यो होय तो त्रण नवकार गणी पच्चखाण पारवुं. जो उपवासनुं पच्चखाण कर्युं होय तो तेनी तो दंतधावन विगेरे कर्या विना पण शुद्धिज छे. कारणके तपनुं महाफळ छे. लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के--

उपवासे तथा श्राद्धे, न कुर्याद्दंतधावनं ।
दंतानां काष्ठसंयोगो, हंति सप्तकुलानि च ॥

" उपवास अने श्राद्धने दिवसे दंतधावन (दांतण) करवुं नहि. ते दिवसे दांतने काष्ठनो संयोग सात कुळने हणे छे. "

स्नान करवानुं पाणी वस्त्रथी गळेलुं, प्रासुक (उष्ण) करेलुं, अचित्त थयेलुं, परिमित अने थोडुं, तेमज शरीर पलळे तेटलुंज लेवुं. वळी जळना रेला चालवाथी त्रस विगेरे जीवोनो नाश न थाय तेवी रीते नहावुं. द्रव्यथी बाह्य मळनो नाश करवा माटे अने श्री जिनेश्वर भगवंतना परम पवित्र देहनो स्पर्श करवा माटे स्नान करवानुं छे; अने भावथी क्रोधादि मळनो नाश करवा माटे स्नान करवानुं छे. गृहस्थने देवपूजा करवा माटेज द्रव्यस्नान करवानुं कहेलुं छे. ते द्रव्यस्नान भावशुद्धिनुं हेतुरूप होवाथीज तेने संमत करेलुं छे. बीजा कोई पण कारणे स्नान करवानी अनुमति आपेली नथी. आप्रमाणे कहेवाथी द्रव्यस्नानथी पुण्य थाय छे एम जेओ कहे छे तेना कथननो निरास करेलो छे एम समजवुं.

तीर्थस्नानथी पण जीवनी अंशमात्र पण शुद्धि थती नथी. ते विषे काशीखंडना छठ्ठा अध्यायमां पण कहेलुं छे के--

मृदो भारसहस्रेण जलकुंभशतेन च ।
न शुद्ध्यंति दुराचाराः स्नाता तीर्थशतैरपि ॥ १ ॥

जायंते च म्रियंते च, जलेष्वेव जलौकसः ।
न च गच्छंति ते स्वर्गं, न विशुद्धं मनोमलाः ॥ २ ॥
परदारपरद्रव्य, परद्रोहपराङ्मुखाः ।
गंगाप्याह कदागत्य, मामयं पावयिष्यति ॥ ३ ॥

"हजारो भार माटिथी अने सैकडो जळना घडाथी सैकडो तीर्थमां स्नान करे तो पण दुराचारी पुरुषो शुद्ध थता नथी. १. जळना जीवो जळमांज उत्पन्न थाय छे अने जळमांज मृत्यु पामे छे, पण तेमना मननो मेल गयेलो न होवाथी तेओ स्वर्गे जता नथी. २. गंगा कहे छे के परस्त्री, परद्रव्य अने परद्रोहथी विमुख रहेनार मनुष्यो आवीने मने क्यारे पवित्र करशे ? ३."

अहीं कोई शंका करे के द्रव्यस्नान अपकाय जीवोनी हिंसानुं कारण छे तो गृहस्थे पूजा वखते पण ते शामाटे करवुं जोइए? तेना उत्तरमां कहेवानुं के समवसरणमां रहेला प्रभुना पवित्र देहने मलमूत्रना बिंदु जेना शरीरपर लागेलां होय छे एवो कोई पण मनुष्य स्पर्श करतो नथी, कारणके ते आशातनानो हेतु छे. तेवी रीते अहीं पण स्त्रीनी शय्या, लघुनीति, वडीनीति तेमज दुगंधी वातनो स्पर्श विगेरे थवाथी मलीन थयेलुं शरीर जिनपूजामां भावशुद्धि करनारुं थतुं नथी. कारणके हुं 'अपवित्र छुं, हुं अपवित्र छुं' एवुं वारंवार पूजकने स्मरण थया करे छे, अने शुद्धि करवाथी हुं शुद्ध छुं, प्रभुनी पूजाने योग्य छुं' एम विचार करतां पूजकने भावनी वृद्धि थाय छे. देवताओ स्वच्छ देहवाळा होय छे, तथापि स्वर्गनी वापिकामां स्नान करी पवित्र थईने शाश्वत प्रतिमानी पूजा करे छे; त्यारे मनुष्य तो तेम करवाने अवश्य योग्य छे. परंतु जे मनुष्य भावपूर्वक यतनाथी द्रव्यस्नान करे छे तेने महाफळ प्राप्त थाय छे. भावस्नान विषे लखे छे के "निर्मळ बुद्धिना कारणभूत ध्यानरूप जळवडे कर्मरूप मळने दूर करवो ते भावस्नान कहेवाय छे"

स्नान कर्या पछी बाजोठ नीचे मुकेली कुंडीमां आवेलुं जळ तडकावाळी जग्याए पुंजणीवडे पृथ्वी पुंजीने कोई दक्ष माणस पासे परठाववुं.

स्नान कर्या छतां पण जो शरीरपर गुडगुंमड थवाथी रुधीर के परु स्रवतुं होय तो तेणे प्रभुनी अंगपूजा करवी नहि; कारण के तेथी आशातना थाय छे. ऋतुवंती स्त्रीए चार दिवस सुधी देवदर्शन करवुं नहि, अने सात दिवस सुधी पूजा करवी नहि. ते विषे कह्युं छे के—

तइ जिणभवणे गमणं, गिहपडिमाच्चणं च सज्झायं ।
पुप्फवइ थ्थियाणं पडिनिसिद्धं जाव सत्तदिणं ॥ १ ॥

"ऋतुवाळी स्त्रीने माटे सात दिवस सुधी जिनभवनमां गमन, गृहप्रतिमानी पूजा अने स्वाध्यायनो निषेध करेलो छे."

केटलाएक मूढ लोको ऋतुवाळी स्त्रीओने पठन पाठननो निषेध करता नथी. तेओ स्वकल्पनाथी कहे छे के 'श्रीवीरप्रभुना परिवारनी साध्वीओ ऋतु प्राप्त थाय तो पण पोतानी वांचना छोडी देती नथी; कारणके ऋतुस्राव थवो ए देहनो स्वाभाविक धर्म छे.' आ विषे गुरु कहे छे के ए वचन कहेवुं योग्य नथी. कारण के ए सर्व साध्वीओ छठ्ठे अने सातमे गुणठाणे वर्ते छे, तेथी तेमने ए दोष संभवतो नथी एम सांभळ्युं छे.'

उपर प्रमाणे श्रावकनो स्नानविधि समजवो. आद्य श्लोकमां आदि (विगेरे) शब्द छे, तेथी ते पछी जे करवानुं छे तेनो विधि आ प्रमाणे—

स्नान कर्या पछी शुभ वस्त्रवडे अंग लुंछवुं. पछी स्नानवस्त्र छोडी बीजुं पवित्र वस्त्र पहेरवुं. जळथी आर्द्र पगवडे भूमिनो स्पर्श करवो नहि, तेम काष्ठनी पादुका तो सर्वथा पहेरवी नहि. पग लुंछी पवित्र स्थाने आवी उत्तराभिमुखे वगर सांधेलां बे श्वेत वस्त्र पहेरवां. कह्युं छे के—

न कुर्यात् संधितं वस्त्रं, देवकर्मणि भूमिप ।
न दग्धं न तु विच्छिन्नं, परस्य तु न धारयेत् ॥

"हे राजा! सांधेलुं, दाझेलुं, फाटेलुं अने बीजानुं वस्त्र देवपूजाने माटे धारण करवुं नहि." पुराणमां पण कह्युं छे के—

कटिस्पृष्टं तु यद्वस्त्रं, पुरिषं येन कारितं ।
समुत्र मैथुनं वापि, तद्वस्त्रं परिवर्जयेत् ॥

"जे वस्त्र कटिने अडक्युं-होय अर्थात् पहेर्युं होय, जे वस्त्र पहेरी मळ, मूत्र के मैथुन कर्युं होय ते वस्त्र देवकर्ममां वर्जवुं." वळी कह्युं छे के—

एकवस्त्रो न भुंजित न कुर्याद्देवतार्चनं ।
न कंचूकं विना कार्या देवार्चा स्त्रीजनेन तु ॥

---

१ अन्य स्थाने जिनपूजानो पांच दिवस निषेध करेलो छे.
२ काष्ठनी पावडी पहेरीने चालवाथी जीवहिंसा वधारे थाय छे.

"एक वस्त्र पहेरीने जमवुं नहि अने देवपूजा करवी नहि; अने स्त्रीओए कंचूकी विना देवपूजा करवी नहि." आ उपरथी एम जाणवुं के पुरुषोने बे वस्त्र अने स्त्रीओए त्रण वस्त्र विना देवपूजा करवी योग्य नथी."

सिद्धांतमां कह्युं छे के–एगसाडीयं उत्तरासंगं करेइ "एक वस्त्रनुं उत्तरासंग करवुं" तेथी उत्तरासंग अखंड वस्त्रनुंज करवुं; बे खंडवाळा वस्त्रनुं करवुं नहिं. वळी लोको कहे छे के" रेशमी वस्त्रवडे भोजन विगेरे करवामां आवे तो पण ते सर्वथा पवित्र छे" ए लोकवचन अप्रमाण छे. रेशमी वस्त्र पण सुतराउ वस्त्रनी जेम भोजन, मळ, मूत्र विगेरे अशुचि स्पर्शथी वर्जित होय तोज देवपूजामां धारण करवा योग्य छे. पहेरेलुं धोतीयुं अल्पकाळज वापरवुं. पसीनो, बडखो विगेरे पहेरेला धोतीयावडे न निवारवा.

देवपूजामां प्राये करीने पारकुं वस्त्र वर्जवुं; तेमां पण बाळक, वृद्ध के स्त्रीनुं वस्त्र तो विशेषे करीने वर्जवुं; ते विषे एवी कथा संभळाय छे के एक वखते कुमारपाळ राजाना पूजा करवानां बे वस्त्र बाहड मंत्रीए वापर्यां, ते जोई राजाए कह्युं–'मारे माटे नवां वस्त्र मंगावी आपो.' मंत्री बोल्यो–'हे स्वामी! आवा नवा वस्त्रनुं सवा लाख द्रव्य मूल्य बेसे छे, अने ते बंबेरा नगरीमांज बने छे. ते पण त्यांना राजानुं वापरेलुं तुच्छ करेलुं अहीं आवे छे.' आ प्रमाणे सांभळी राजा कुमारपाळे बंबेराना राजा पासे एक वस्त्र नहि वापरेलुं माग्युं, पण बंबेरा पुरीना राजाए वगर वापरेलुं आप्युं नहि. तेथी कुमारपाळ राजा तेना उपर क्रोधायमान थयो. तेणे सैन्य सहित बाहड मंत्रीने तेनी साथे युद्ध करवा मोकल्यो. चौदसो सांढणीओ उपर बेठेला सुभटोए उतावळे त्यां पहोंची रात्रे बंबेरापुरीने घेरी लीधी. परंतु ते रात्रे ते नगरीमां सातसो कन्याओना विवाह थता हता, तेमां विघ्न न थवा माटे रात्रे युद्ध कर्युं नहि; प्रभाते किल्लो सर करी सात कोटि सुवर्ण अने अगियारसो अश्व दंडमां लीधा, अने किल्लाने चूर्ण करी नाख्यो. ए प्रमाणे बंबेरा नगरीने कबजे करी ते देशमां पोताना स्वामीनी आज्ञा प्रवर्तावी अने सातसो साळवी उत्सव सहित पाटणमां लई आव्यो. पछी ते साळवीओनी पासे वस्त्रो करावी कुमारपाळ राजा पूजा वखते धारण करवा लाग्या. आप्रमाणे बीजे वापर्यां शिवायनां वस्त्र पूजामां वापरवा उपर संबंध जाणवो.

तेवां शुद्ध वस्त्र पहेर्या पछी चैत्यने प्रमार्जवुं. पछी यतनापूर्वक पूजानी सर्व सामग्री मेळववी. आ प्रमाणे द्रव्यशुद्धि जाणवी; अने राग, द्वेष, कषाय, आलोक अने परलोक संबंधी स्पृहा अने कौतुक विगेरेनो त्याग करी एकाग्र चित्त राखवुं ते भावशुद्धि जाणवी. ते विषे कह्युं छे के–

---

1 बे खंड एटले बे ककडानुं साधेलु अथवा बे पाट (फाळ) वाळुं पण नहिं.

मनोवाक्कायवस्त्रोर्वि, पूजोपकरणस्थितेः ।
शुद्धिः सप्तविधा कार्या, श्रीअर्हत्पूजनक्षणे ॥

" श्री जिनेश्वर भगवंतनी पूजा वखते मन, वचन, काया, वस्त्र, पृथ्वी, पूजाना उपकरण अने आसन ए सात प्रकारनी शुद्धि करवी ."

" विधिवडे स्नानादि कार्य करनार प्राणी अनल्प एवुं अक्षर फळ पामे छे. जैनधर्मा भाव विना मात्र बाह्यक्रिया निर्जरा माटे थती नथी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चतुरशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८४ ॥

व्याख्यान १८५ मुं.

पुष्प विगेरे लाववानो विधि.

पुष्पादिसर्वसामग्री, मेलनीयार्चनक्षणे ।
अंतर्दयापरस्तीर्थ–नाथभक्तिभरांचितः ॥ १ ॥

भावार्थ

"श्री तीर्थंकरनी भक्तिना भारथी शोभित एवा श्रावके अंतरमां दयापूर्वक जिनपूजाने अवसरे पुष्पादिक सर्व सामग्री मेळववी."

पुष्प लाववानो विधि आप्रमाणे–

पुष्प लाववा माटे प्रथम माळीने कहेवुं के " जे पुष्प माथे उपाडी लावेलां होय, शरीर परना वस्त्रमां बांधीने लावेल होय, काखमां राख्यां होय, पृष्ठ भागे, वस्त्रने छेडे के पेट उपर बांध्यां होय, जीर्ण थई गयां होय, पांखडी विगेरे तोडी नाखेलां होय, अने रजस्वला स्त्रीए स्पर्श करेलां होय तेवां पुष्प अमारे काम आवतां नथी, तेथी तेवा दोष रहित शुद्ध पुष्प तारे प्रतिदिवस लावी आपवां, हुं तने वांछित मूल्य

आपीश." आ प्रमाणे तेने कहेवाथी ते निर्दोष पुष्प लावी आपे तो ठीक,नहितो पछी पूजा वखते आप्त अने शूग न चडे तेवा दक्ष पुरुष पासे मंगाववा,अथवा पोतेज पोताना अंगने फरसे नहीं तेम छातीआगळ राखीने लाववां. ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के "जे पुष्प पत्र के फळ हाथमांथी पडी गयेलुं, पृथ्वी पर रहेलुं, पगे चंपायेलुं, माथा उपर धरेलुं, नठारा वस्त्रमां लीधेलुं, नाभिनी नीचे राखेलुं, दुष्ट लोकोए अडकेलुं, घणा जळथी हणायेलुं अने कीडाए दूषित करेलुं होय ते जिनेश्वरना भक्तोए जिनेश्वर भगवंतनी पूजाना प्रसंगमां त्याग करवुं अर्थात् वापरवुं नहि." वळी कह्युं छे के "एक पुष्पना बे भाग करवा नहि, अने पुष्पनी कळी पण छेदवी नहि; कारण के पांखडी के डांडलीना भांगवाथी हत्या जेवुं पाप थाय छे." पछी–

आमसुत्रतंतुभिः शिथीलग्रंथीना गुंथनीयो हारः

'काचा सूत्रना तंतुओथी शिथिल ग्रंथीवडे हार गुंथवो.' पंचपरमेष्ठीना गुणनुं स्मरण करतां एकसो ने आठ पुष्पनो हार करवो अथवा कराववो; अथवा जिनेश्वर भगवंतना १००८ लक्षणनी संख्या संभारीने एक हजार ने आठ पुष्पनो हार करवो; अथवा वर्तमान चोवीशीना चोवीश तीर्थंकर, त्रण चोवीशीना बोंतेर तीर्थंकर, वीहरमान वीश तीर्थंकर, उत्कृष्ट काळे विचरता एकसो सीतेर तीर्थंकर, पांच भरत ने पांच ऐरवत ए दश क्षेत्रनी दश चोवीशीना बसो चालीश जिनेश्वर अथवा त्रण काळनी त्रण त्रण चोवीशी ग्रहण करवा माटे त्रगणा करतां सातसो ने वीशनी संख्या थाय तेटला तीर्थंकरोने संभारीने ते प्रमाणे पुष्पोना हार करवा. एवी रीते अनेक प्रकारनी जिनेश्वरनी संख्यानुं स्मरण करवा पूर्वक ते संख्या प्रमाणे पुष्पो लई हार करवो. जो छुटां पुष्प होय तो भगवंतना आठ अंग उपर आठ प्रकारनां कर्मोनां नामोच्चारपूर्वक ते ते कर्मोना अभावनी याचना करीने आठ पुष्पो मूकवां, अने नवमा अंग उपर नवमा तत्त्वनी[1] मागणी करवा पूर्वक नवमुं पुष्प चडाववुं. आ प्रमाणेनी भावना स्वबुद्धिथी जाणी लेवी.

अहीं कोई शंका करे के 'जेम मनुष्यनी आंगळी छेदवाथी मनुष्यने दुःख थाय छे तेम वृक्षनुं अवयव पुष्प छेदवाथी वृक्षने दुःख थाय तेथी महादोष थाय, माटे पुष्प चडाववां योग्य नथी. जिनेश्वर भगवंत छकायना पीयर (रक्षक) छे ते एवो उपदेश केम करे'? आना उत्तरमां गुरु कहे छे के 'अरे जिनागमना अज्ञ प्राणी! तुं सांभळ-आरामीके (माळीए) आजीविकामाटे विधिपूर्वक लावेलां पुष्प मूल्य आपीने लेवामां आवे छे, तेमां श्रावकने दोष नथी; कारण के ते जीवोनी दयामाटे ते लेवामां आवे छे.

1 नवमुं तत्त्व–मोक्षतत्त्व.

ते विचारे छे के जो कोई मिथ्यात्वी तेनी पासेथी पुष्प लई होमकुंड विगेरेमां नाखशे तो ते पुष्पना जीवोनो सत्वर वध थई जशे, तेम व्यभिचारी पुरुष लई जशे तो स्त्रीना कंठमां मस्तक उपर अथवा पोताना उरस्थळपर राखशे, अथवा पुष्पनी शय्या करी तेनी उपर सुशे, अथवा तेना दडा करी रमशे; त्यां स्त्रीपुरुषना प्रस्वेद विगेरेथी पुष्पना कोमळ जीवो एक क्षणमां नाश पामी जशे. वळी स्त्रीओना कंठ विगेरेमां रहेला पुष्पना हार जोई कोईने शुभ भावना नहि थाय पण उलटो पापनो बंध थशे, तेथी उत्तम गृहस्थो पुष्पोने देखी एवी भावना करे छे के "जो आ पुष्पने कोई पापी पुरुष लेशे तो ते क्रीडामात्रमां सहजमां तेने तत्काळ हणी नाखशे, माटे तेमने अभय करवा सारु हुं मूल्य आपी ग्रहण करुं; हुं जो एनी उपेक्षा करीश तो मने कसाइना हाथमां जता बकराने न छोडाववानी जेम महान दोष लागशे." आ प्रमाणेनी विचारणाथी पुष्पो खरीद कर्या बाद जो ते पुष्पमां तेना वर्ण जेवाज वर्णना एळ के कीडा प्रमुख जणाय तो ते पुष्पने अगोचर स्थाने मूकी देवां के जेथी ते जीवोनी हिंसा न थाय.

त्यार पछी त्रसजीव रहित पुष्पोनो पूर्वे कहेल रीति प्रमाणे हार बनावी श्रावके भगवंतना कंठमां स्थापन करवो. तेम करवाथी स्त्रीना कंठमां रहेला हारनी जेम अशुभ भावना थती नथी, पण उलटी पुष्पना जीवने अभयपणानो अने आत्माने परमेश्वरना परम गुणनो एम उभय लाभ थाय छे. उत्तम जीवोए एमज धारवुं के आप्रमाणे प्रभुने चडाववाथी जेटला काळनुं ते पुष्पना जीवोए आयुष्य बांध्युं हशे तेटलो काळ छेदन, भेदन, क्लेदन[1], शुचिकारोपण[2], मर्दन अने पंचेंद्रियादि जीवोनो स्पर्श ए सर्व दुःख सहन करवानो अभाव थवाथी ते सुखे सुखे जीवशे.

शुद्ध पुष्पोनी रकाबी भरी प्रभुनी पासे लावी श्रावक आ प्रमाणे कहे के "हे स्वामी! तमे त्रण जगत्‌ना हितकारी छो; आ पुष्पोना जीवोने हुं हिंसकोनी पासेथी छोडावी लाव्यो छुं; तेथी तेमने अने मने अभय आपो." आ प्रमाणेना शुभभावपूर्वक पुष्पपूजा करवाथी कांइ पण दोष लागतो नथी. अवधिज्ञान अने सम्यक्त्वथी युक्त तेमज जेमनी अरिहंते प्रशंसा करेली छे तेवा देवो पण जळ तथा स्थळना नीपजेला पुष्पोथी जिनबिंबने पूजे छे. श्रीराजप्रश्नीयसूत्रमां तथा जिवाभिगमसूत्रमां कह्युं छे के "नंदापुष्करिणी नामे देवतानी वापिका छे, तेमां यावत् हजार पांखडीनां कमळो उगे छे. ते वापिकामां प्रवेश करीने देवताओ ते कमळो ग्रहण करे छे. ग्रहण

---

1 कपाइ ते. 2 सोयथी विंधाइ ते.

करीने ते वापिकामांथी नीकळे छे, अने ज्यां शाश्वता जिनमंदिर छे त्यां जाय छे; इत्यादि" तथा समवायांगसूत्रमां चोत्रीश अतिशयना अधिकारमां पण कह्युं छे के "प्रभु केवळज्ञान पामे छे त्यारे वायुवडे एक योजन क्षेत्रने साफ करी मेघवृष्टिवडे ते जमीन उडती रज रहित करे छे. पछी तेनी उपर जळ तथा स्थळना उत्पन्न थयेला देदीप्यमान पुष्कळ पंचवर्णी पुष्पोना जानुप्रमाणे पगर भरे छे"

अहीं कोई "जळस्थळना उपजेला पुष्पोनी जेवा पुष्पो" एम कहे छे, पण ते योग्य नथी. कारणके इव विगेरे उपमावाचक शब्दो मूल सूत्रमां ग्रहण करेला नथी. वळी राजप्रश्नीयसूत्रमां पण जिनप्रतिमानी आगळ पुष्पना पुंज करवा संबंधी पाठ छे.त्यां पण जळमां उत्पन्न थयेला सचित्त पुष्पोनो पुंज करे छे एम कह्युं छे. तेमज ज्ञातासूत्रमां समकितधारी द्रौपदीए करेल जिनपूजानो विधि पण सूर्याभदेवना जेवोज वर्णवेलो छे. कांई पण न्यूनाधिक कहेल नथी. तेथी जो देवताओनो करेलो पुष्पनो पुंज विकुर्वेलो कहीए तो द्रौपदीए करेल जिनेश्वर पासेनो पुष्पपुंज विकुर्वीने शी रीते थाय? एथी एकज सूत्रपाठमां पूर्वापर विरोधवाळो अर्थ न करवो. एक ठेकाणे सांधे त्यां बीजे ठेकाणे तुटे एवो न्याय न करवो जोईए. जोके देवताओमां अनेक जातनुं सामर्थ्य छे तथापि सिद्धांतमां कपोलकल्पित मति चलाववी युक्त नथी. वळी नारकी विना त्रेवीश दंडकमां रहेला जीव पुष्पपणुं पण प्राप्त करेछे, अने पुष्पना जीवो ईशान देवलोक सुधी जई शके छे[1]. पुष्पपूजा विषे कुमारपाळ राजाना पूर्व भवनुं वृत्तांत दृष्टांत रुपे छे ते आ प्रमाणे—

कुमारपाळ राजाना पूर्वभवनुं वृत्तांत.

एक वखते राजा कुमारपाळे श्रीहेमचंद्रसूरीने पोताना पूर्वभव विषे पूछ्युं, ते वखते सूरिश्रीए सिद्धपुरमां सरस्वती नदीने तीरे अट्ठम करी सूरिमंत्रना बीजा पीठनी अधिष्ठात्री देवीनी आराधना करी देवीए कुमारपाळनो पूर्वभव कह्यो; एटले सूरिए राजा तथा नगरजनो समक्ष आ प्रमाणे तेना पूर्वभवनुं वृत्तांत कह्युं. हे राजन्! पूर्वभवे मेवाडना सीमाडामां जयकेशी नामे राजा हतो तेने नरवीर नामे एक पुत्र हतो. ते सात व्यसनने सेवनारो थवाथी पिताए तेने नगरमांथी काढी मूक्यो. ते पर्वतनी श्रेणीमां कोई पाळनो स्वामी पल्लीपति थयो. एक वखते जयंतिक नामना सार्थपतिनो सार्थ तेणे तमाम लुंटी लीधो. सार्थपति नासीने माळवाना राजाने शरणे गयो, अने तेनुं सैन्य लावी ते पाळने घेरी लीधी. नरवीर त्यांथी नाठो. तेनी सगर्भा स्त्रीने सार्थ-

1 पुष्पना जीवोनी ईशान देवलोक पर्यंत गति शी अपेक्षाए कही छे ते समजी शकातु नथी. तेनी गति एटले सुधी कहेली नथी.

वाहे हणी. तेना उदरमांथी नीकळी बाळक पण पृथ्वीपर पडी मरी गयो. पाळ भांगी नाखी. माळवपतिए ते सार्थवाहने बे हत्यां[1] करनारो जाणी देशमांथी तिरस्कार करीने काढी मूक्यो. तेथी तेने वैराग्य उपजतां तापस थई तपस्या करी मृत्यु पामी जयसिंह[2] राजा थयो. परंतु पूर्वभवमां करेली बे हत्याना पापथी ते अपुत्र रह्यो.

नरवीरने देशांतर जतां मार्गमां यशोभद्रसूरि मळ्या. सूरिए कह्युं–"अरे क्षत्रिय! तुं क्षात्रकुळमां जन्मी जीवहिंसा केम करे छे? तुं क्षत्रिय छे, तेथी आ बाण पाछुं संहरी ले, कारणके तमारा शस्त्रो आर्त्त (पीडित) जनना रक्षण माटे छे, निरपराधी जीवोने जरा पण प्रहार करवा माटे नथी." ते लज्जा पामी बोल्यो–"हे स्वामी! क्षुधातुर माणस शुं पाप नथी करतो? केमके क्षीण पुरुषो प्राये निर्दय होयज छे. ते उपर पंचतंत्रमां गंगदत्तनी कथा प्रसिद्ध छे." आ प्रमाणे कह्या पछी गुरुना उपदेशथी ते व्यसन रहित थयो.

त्यांथी फरतो फरतो नरवीर नवलाखतैलंग नामना देशमां आवेल एकशिला नगरीमां आव्यो. त्यां उढेर नामना श्रेष्ठीने घेर भोजनवस्त्रनी आजीविका उपर सेवक थईने रह्यो. ते नगरीमां उढेर श्रेष्ठीए श्रीवीरप्रभुनुं एक चैत्य करावेलुं हतुं. अन्यदा पर्युषण पर्व आव्ये सते उढेर श्रेष्ठी ते चैत्यमां कुटुंब सहित पूजा करवा गयो; त्यां मोटी विधिथी पूजा कर्या पछी साथे आवेला नरवीरने उढेर शेठे कह्युं–'आ पुष्प ले, अने प्रभुनी पूजा कर.' नरवीर ते सांभळी विचारवा लाग्यो के "आवा परमेश्वर कोई दिवसे में जोया नथी; आ प्रभु अपूर्व जणाय छे, वळी आ प्रभु रागादि चिन्हथी रहित होवाथी साचा परमेश्वर जणाय छे तो एवा प्रभुनी पूजा बीजाना आपेलां पुष्पथी शा माटे करुं?" आ प्रमाणे विचारी पोतानी पासे मात्र पांच कोडी हती तेना पुष्प लीधां, अने नेत्रमां आनंदना अश्रु लावी प्रसन्न थई त्रिकरण शुद्धिवडे प्रभुनी पूजा करी. पछी पूर्ण रुचिवडे भक्तिथी ते बोल्यो–"हे स्वामी! तमे दयाळु होवाथी आ संसारथी मने उद्धर्यो छे. कारणके इंद्रोने पण दुर्लभ एवी भक्ति करवानो आपे मने अवकाश आप्यो छे." आ प्रमाणे वारंवार कहेतो ते उढेर शेठनी साथे त्यां पधारेला यशोभद्रसूरिनी पासे आव्यो. त्यां गुरुनी देशना सांभळी. देशना थई रह्या पछी शेठनी साथे तेणे पण उपवास कर्यो. अनुक्रमे मृत्यु पामी तुं आ त्रिभुवनपालराजानो पुत्र थयो छे. उढेर शेठ उदयन मंत्री थयो छे, अने यशोभद्रसूरि हता ते हुं थयो छुं. अहींथी आयुष्य पूर्ण करी छेवटे व्यंतर जातिमां महर्द्धिकपणुं प्राप्त करी त्यांथी चवी भरतक्षेत्रमां भद्दिलपुर नगरमां शतानंद राजानी धारणी नामे राणीथी शतबल नामे

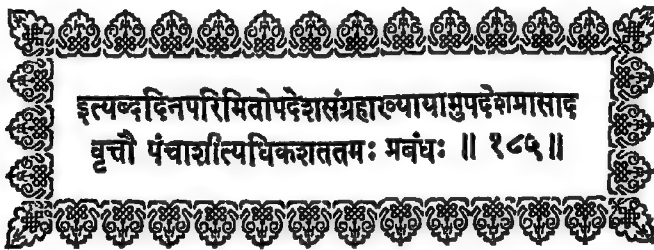
1 स्त्रीहत्या ने बाळहत्या. 2 सिद्धराज जयसिंह.

पुत्र थईश; अने तेज भवमां श्री पद्मनाभ प्रभुनो अगियारमो गणधर थई मोक्ष पामीश.

आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव सांभळी कुमारपाल प्रसन्न थया. पछी पोताना प्रिय दूतने गुरुनी रजा लई ते देशमां मोकल्यो. ते दूत त्यां जई उढेर शेठना पुत्रना मुखथी ते प्रमाणे सर्व वृत्तांत सांभळी पाछो आव्यो, अने ते वृत्तांत राजा कुमारपालने जणाव्युं. ते सांभळी राजाए विशेष प्रसन्न थई सर्व संघनी समक्ष हेमाचार्य गुरुने हर्षथी कलिकालसर्वज्ञ एवुं बिरुद आप्युं.

आ वृत्तांत पूजामाटे विधिपूर्वक पुष्पसामग्री मेळववामां शिक्षारुप छे.

"पूर्वभवमां अनुचर हतो ते राजापणाने प्राप्त थयो, अने पूर्वे स्वामी हतो ते प्रधानपणाने पाम्यो; तेथी थोडा के घणा पुष्पोनी गणत्री नथी, परंतु भावाधिक पुष्पवडे पूजा करवाथी महाफळ थाय छे."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पंचाशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८५ ॥

व्याख्यान १८६ मुं.

अभिमान दोष लाव्या विना जिनचैत्य कराववुं.

भव्येऽहनि शुभे क्षेत्रे, प्रासादो विधिपूर्वकम् ।
मानादिदोषमुक्तेन कार्यते पुण्यशालिना ॥ १ ॥

भावार्थ.

"शुभ दिवसे सारा क्षेत्रमां अभिमान विगेरे दोषोरहित एवा पुण्यशाळी पुरुषे विधिपूर्वक जिनचैत्य कराववुं." तेनो विधि आ प्रमाणे—

जिनचैत्य कारापणविधि.

जिनचैत्य करावनारे चैत्य बंधाववाने माटे इंटो तथा चुनो पोतानी जाते पकववो

नहि, तेम कोईनी पासे पकवाववो पण नहि, तैयार माल खरीद करवो; लाकडां पण सुकां लेवां, वृक्षोनुं छेदन कराववुं नहि. ए विषे प्राचीन ग्रंथने आधारे पोतानी मेळेज विचारी लेवुं. मूळ श्लोकमां मान विगेरे शब्द छे, तेथी कीर्ति दंभ विगेरे दोषो ग्रहण करवा अने ते दोषोथी रहितपणे पुण्यवान् जीवे जिनचैत्य कराववुं. ते विषे संप्रति राजा विगेरेना दृष्टांतो छे; तेमांथी संप्रति राजानी कथा आ प्रमाणे–

संप्रति राजानी कथा.

संप्रति राजा त्रण खंड पृथ्वीनो विजय करीने सोळ हजार राजाओना परिवार सहित अवंती नगरीए आव्यो, अने पोतानी माताना चरणमां पड्यो. ते वखते मातानुं मुख श्याम थई गयुं. ते जोई राजाए पूछ्युं–'हे माता! हुं घणा देश साधीने आव्यो ते छतां तमे केम हर्ष पाम्या नहि?' माता बोली–हे पुत्र! तें राज्यना लोभथी संसारज वधार्यो छे, अने मस्तक उपर पापना व्यापारनो बोजो उपाडीने अहीं आव्यो छे; तेथी अत्यारे हर्षनो अवसर नथी. मने तो जिनचैत्य विगेरे पुण्यनां काम करी आवे तोज हर्ष थाय, ते शिवाय हर्ष थाय नहि. हे वत्स! में आर्यसुहस्तीसूरिनी पासेथी सांभळ्युं छे के–श्री जिनप्रासाद करावावाथी मोटुं पुण्य थाय छे. कह्युं छे के–

> काष्ठादीनां जिनावासे, यावंतः परमाणवः ।
> तावंति वर्षलक्षाणि, तत्कर्त्ता स्वर्गभाग्भवेत् ॥

"श्री जिनप्रासाद मांहेना काष्ठ विगेरेमां जेटला परमाणु छे तेटला लाख वर्ष सुधी ते प्रासादनो करावनार स्वर्गनां सुख पामे छे."

लौकिकमां परमाणुनुं लक्षण एवुं कहेलुं छे के "घरना छापरामां रहेलां सूक्ष्म छिद्रोमांथी आवता सूर्यना तडकामां जे सूक्ष्म रज जोवामां आवे छे तेनो त्रीशमो भाग परमाणु केहवाय छे."

वळी कह्युं छे के "विवेकी पुरुषने नवो जिनप्रासाद कराववामां जे पुण्य थाय तेथी आठगणुं पुण्य जीर्णोद्धार कराववामां थाय छे." "अग्नि, जळ, चोर, याचक, राजा, दुर्जन तथा भागीदारो विगेरेथी उगरेलुं जेनुं धन जिनभुवन विगेरेमां खरचाय छे ते पुरुषने धन्य छे." माता कहे छे–"हे वत्स! मे आ प्रमाणे ते सूरिपासेथी सांभळ्युं छे; वळी चैत्य कराववामां मोटुं पुण्य छे, तेनुं ए पण कारण छे के चैत्यपरिमितक्षेत्रने

चैत्य करावनारे संसारारंभना व्यापारमांथी दूर करीने धर्मव्यापारमां जोडी दीधुं छे. सांभळ्युं छे के " जेटला क्षेत्रमां चैत्य होय तेटला क्षेत्रमां चुला मांडवा नहि, तेमज रांधवुं, पीसवुं, विषयसेवन करवुं, द्यूतक्रीडा करवी अने खेत्र खेडाववां विगेरे अधमं कार्य करवां नहि; चैत्यक्षेत्रने तेवां कार्यथी दूर राखवुं. लोकोना स्थानको पापक्रियानी प्रवृत्तिवाळां होय छे, तेथी आ स्थान तेवुं करवुं नहि; पुण्यबुद्धिए धर्मक्रियानुंज ते स्थान करवुं." वळी हे वत्स! चैत्य करावनारे कुंतलादेवीनी जेम मत्सर करवो नहि.

कुंतलानी कथा.

अवनीपुरमां जितशत्रु नामे राजाने कुंतला नामे पट्टराणी हती. ते अर्हतधर्ममां निष्ठावाळी हती. तेना उपदेशथी तेनी बीजी सपत्नी [शोक्यो] पण धर्मवाळी थई हती. ते बधी कुंतलाने बहु मान आपती हती. एक वखते बीजी सर्व सपत्नीओए जिनेश्वर भगवंतना नवीन चैत्य कराव्यां; ते जोई अत्यंत मत्सरभाववाळी कुंतलाए पोतानो जिनप्रासाद तेओनाथी अधिक कराव्यो. तेमां पूजा नाट्य विगेरे पण विशेषपणे करावता लागी; अने सपत्नीओना प्रासाद विगेरेमां द्वेष राखवा लागी. सरल हृदयनी सपत्नीओ तो तेना कार्यने नित्य अनुमोदन करवा लागी. कुंतला ए प्रमाणेना मत्सरभावमां ग्रस्त थई सती दुर्दैवयोगे कोई सख्त व्याधि उत्पन्न थवाथी मृत्यु पामी, अने चैत्यपूजाना द्वेषथी श्वनी [कुतरी] थई. पूर्वना अभ्यासथी पोताना चैत्यना द्वार आगळज बेसी रहेवा लागी. एक वखते कोई केवळी भगवंत त्यां पधार्या, तेमने कुंतलानी सपत्नीओए पूछ्युं-'कुंतला कई गतिमां गई छे?' ज्ञानीए जे यथार्थ हतुं ते कह्युं. ते सांभळी ते राणीओने संवेग उत्पन्न थयो. पछी पेली श्वनी थयेली कुंतलाने तेओ स्नेहथी खावानुं आपती सती कहेवा लागी के " हे पुण्यवती बेन! तें धर्मिष्ठ थईने व्यर्थ द्वेष शामाटे कर्यो? के जेथी तने आवो भव प्राप्त थयो. " ते सांभळी कुंतलाने जातिस्मरणज्ञान थयुं, तेथी ते परम वैराग्य प्राप्त करी प्रभुनी प्रतिमा सन्मुख पोतानुं पाप आलोची अनशन अंगीकार करी मृत्यु पामीने वैमानिक देवी थई. तेथी हे वत्स! उत्तम कार्य करीने ते संबंधी मत्सरभाव करवो नहि. "

आ प्रमाणे माताना मुखथी शिक्षा पामी संप्रति राजाए घणां चैत्यो नवां करावता मांड्यां. एकदा संप्रति राजाए गुरुना मुखथी सांभळ्युं के पोतानुं आयुष्य सो वर्षनुं छे. तेथी तेणे एवो नियम लीधो के प्रतिदिन एक एक जिनप्रासाद उपर कळश चढेलो सांभळ्यां पछी अन्न जमवुं. आवा नियम प्रमाणे सो वर्षमां छत्रीश हजार जिनचैत्यो तेणे नवां कराव्यां.

एक वखते राजाए गुरुना मुखथी आप्रमाणे देशना सांभळी–

अप्पा उद्धरिओच्चिय, उद्धरिओ तहय तेण नियवंसो।
अन्नेय भवसत्ता, अणुमोयंताय जिणभवणं॥ १॥

"जिनभुवनना करावनारे पोताना आत्मानो, पोताना वंशनो अने तेनी अनुमोदना करनारा बीजा भव्य प्राणीओनो उद्धार कर्यो एम समजवुं" आ प्रमाणेनी देशना सांभळी संप्रति राजाए बीजा छन्नु हजार जीर्णोद्धार कराव्या. एकंदर सर्वे मळीने सवालाख जिनचैत्य थयां.

एक वखते गुरुना मुखथी आ प्रमाणे सांभळ्युं के "सर्वे लक्षणवाळी अने सर्वे अलंकारोथी युक्त एवी प्रासादमां रहेली प्रतिमाने जोई जेम जेम मन हर्ष पामे तेम तेम निर्जरा थाय छे." "तेवां जिनबिंबो मणि, रत्न, सुवर्ण, रुपुं, काष्ठ, पाषाण अने मृत्तिकानां अथवा चित्रमां कराववां." वळी "मेरु गिरि जेवो बीजो गिरि नथी, कल्पवृक्ष जेवुं बीजुं वृक्ष नथी; तेमज जिनबिंब निर्माण करवा जेवो बीजो कोई मोटो धर्म नथी." "जो धन खरचवानी शक्ति होय तो पांचसो धनुष्य प्रमाणवाळी प्रतिमा कराववी; तेवी शक्ति न होय तो एक आंगळनुं पण बिंब करावेलुं होय तो ते मुक्तिना सुखने अर्थे थाय छे." कह्युं छे के "जे पुरुष श्री ऋषभदेवथी वीरभगवंत सुधी गमे ते प्रभुनुं अंगुष्ठप्रमाणे पण बिंब करावे छे ते स्वर्गमां प्रधान एवी विशाळ समृद्धिना सुख भोगव्या पछी प्रांते अनुत्तर पद [मोक्ष] ने प्राप्त करे छे." आ प्रमाणे गुरुमहाराजनो उपदेश सांभळी संप्रति राजाए सवाकोटी जिनबिंब शिल्पग्रंथोमां लख्या प्रमाणे सौचेर भाग प्रमाण बराबर कराव्यां.

एक वखते आर्यसुहस्तीसूरि के जेमने पूर्वभवे जोया हता तेमने जोई राजाए जातिस्मरणवडे पूर्वभव जाण्यो, तेथी गुरुने ओळखी प्रणाम करी पोतानो पूर्वभव पूछयो. एटले गुरुए श्रुतज्ञानना बळथी कह्युं-"हे राजन्! पूर्वे तुं भिक्षुक हतो. एक वखते मोटी किंमतना अलंकारयुक्त राजा, मंत्री, श्रेष्ठी विगेरेने मोटी समृद्धि साथे अमारा चरणने वंदना करतां जोई तने विचार थयो के 'हुं पण आ सूरिराजना चरणकमलने सेवुं.' पछी तें अमारा शिष्य पासे भोजन माग्युं त्यारे ते मुनिए कह्युं-'जो तुं अमारा जेवो थाय तो अमे तने भोजन आपीशुं.' पछी तें दीक्षा लीधी. पण अन्न गळा सुधी खाधुं, तेथी तने तत्काळ अजीर्ण थई आव्युं. ते समये तें अनेक मुनिओना मुखथी धर्मवाक्यो सांभळ्यां, तेथी तें तेनी अनुमोदना करी अने तारुं आयुष्य पण पूर्ण थई गयुं. एटले त्यांथी मृत्यु पामी एक दिवसनी दीक्षाने प्रभावे तुं त्रण खंडनो राजा थयो."

आ प्रमाणे सांभळी प्रतिबोध पामीने तेणे विरतिधर्म ग्रहण कर्यो.

"धर्मबुद्धिथी श्री जिनेश्वर भगवंतना चैत्यादि कार्यनी विधि सहित क्रिया सर्व-रीते योजवी अने तेमां श्रीसंप्रति राजानुं दृष्टांत अवधारवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ षडशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८६ ॥

व्याख्यान १८७ मुं.

जिनेश्वरभगवंतनी स्थापनानुं वर्णन.

जिनमूर्तिर्जिनैस्तुल्या, विज्ञेया विधिपूर्वकम् ।
द्विधा सूत्रोक्तयुक्तिभ्यां, स्थापना स्वर्गसौख्यदा ॥ १ ॥

भावार्थ.

"जिनेश्वर भगवंतनी प्रतिमा जिनेश्वरभगवंतनी समान जाणवी. सूत्रोक्त अने युक्ति एम बंने प्रकारवडे तेनी विधिपूर्वक स्थापना स्वर्गना सुखने आपनारी छे." तेमां प्रथम सूत्रोक्त रीते स्थापनानुं प्रमाणपणुं बतावे छे.

श्रीठाणांगसूत्रमां आ प्रमाणे कह्युं छे के-तिविहे सच्चे नामसच्चे ठवणसच्चे दव्वसच्चे । "त्रण प्रकारे सत्य-नामसत्य, स्थापनासत्य अने द्रव्यसत्य" एम सूत्रमां स्थापना सत्य कहेल छे.

युक्तिवडे स्थापनानुं प्रमाणपणुं आ प्रमाणे-जेम महाव्रतधारी मुनिए चित्रमां आलेखेल पुतळी पण जोवी नहि, कारणके ते सरागजनक छे, एम कह्युं छे ते अनुसारे जिनप्रतिमा हमेशां जोवी; कारणके ते वैराग्यनुं कारण छे. जेम बाळक मुखे अक्षर बोले छे, पण तेनी आकृति ओळखीने निर्धार कर्या वगर ककार विगेरे अक्षरो जोईने जेम तेम प्रलपे छे; पण जो तेणे वर्णाकृति नेत्रथी निर्धारी होय तो पछी सर्व कार्यमां ककारादि वर्ण जोई 'आ क छे' एम ओळखे छे. तेम जिनेश्वरना चोवीश

नामनुं उच्चारण करे पण तेमनी आकृति जोया विना ब्रह्माविष्णुमहेश्वरादिनी मूर्ति-ओथी तेमनी भिन्नता अने स्वरुपनुं यथार्थ अवधारण केवी रीते थाय? माटे जिनेश्वरनी स्थापना करवी ए न्याययुक्त छे.

लौकिक शास्त्रमां पण मूर्तिसेवाथी कार्यसिद्धि कहेली छे; ते विषे महाभारतमां एक दृष्टांत कहेल छे ते आप्रमाणे-

पांडवादिक द्रोणाचार्यनी पासे धनुर्विद्या शीखता हता. तेमां अर्जुने ते विद्या सत्वर शीखी लीधी; पछी अर्जुने गुरुना चरणमां नमीने कह्युं-'हे गुरु! तमे जेवी विद्या मने शिखवी छे तेवी बीजाने शिखववी नहि.' द्रोणाचार्ये खुशीथी तेम करवा कबुल कर्यु. एक वखते कोई भिल्ले धनुर्विद्या शिखवानी इच्छाए द्रोणाचार्य पासे आवी पोताने शिखववानी मागणी करी, त्यारे द्रोणाचार्य मौन धरी रह्या. पछी भक्तिवाळो भिल्ल गुरुबुद्धिए द्रोणाचार्यनी मृत्तिकानी मूर्ति बनावी, शुद्ध स्थानमां स्थापित करी, प्रतिदिन प्रभातकाळे तेना चरणमां नमीने कहेतो-'हे गुरुजी! प्रसन्न थईने मने विद्या आपो.' पछी ते गुरुनी आगळ हाथमां धनुष्य लई तेमां बाण योजी चिंतवेला पत्रोने वींधतो हतो, अने एवी रीते पत्रमां हाथी घोडा विगेरेनां रुप पण बाणवडे कोतरतो हतो. एक वखते अर्जुन ते वनमां आवी चड्यो. तेणे ते कोतरेलां पत्रो जोइ विचार्यु के जरुर गुरुए पोतानी प्रतिज्ञानुं विस्मरण करीने कोईने धनुर्विद्या आपी लागे छे; नहि तो आवुं अद्भुत कार्य कोण करी शके? पछी अर्जुने गुरु पासे आवी कह्युं -'भगवन्! आपे प्रतिज्ञा तोडी लागे छे.' गुरु द्रोण बोल्या-'अर्जुन! मारी प्रतिज्ञा पाषाणनी रेखानी जेम अचळ छे.' पछी संशय थतां ते बंने वनमां गया. त्यां पाषाणनी द्रोणाचार्यनी प्रतिमा तेमना जोवामां आवी. पेलो भिल्ल प्रातःकाळे ते प्रतिमा पासे आवी नमीने कहेवा लाग्यो-'गुरुजी! अर्जुननी जेवी मने धनुर्विद्या आपो.' एम कही ते वृक्षना पत्रने बाणथी कोतरवा लाग्यो; ते जोई तेओए भिल्लने पूछ्युं-'तारा गुरु कोण छे?' भिल्ले कह्युं-'मारा गुरु द्रोणाचार्य छे.' एम कही तेणे पाषाणनी मूर्ति बतावी, अने कह्युं के 'आ प्रतिमाए मने धनुर्विद्या शिखवाडी छे. भक्तिथी शुं नथी बनतुं?' ते जोई अर्जुनने खेद थयो. पछी द्रोणाचार्ये भिल्लने कह्युं-'मारा प्रसादथी तने विद्यानी सिद्धि थई, माटे हुं जे मागुं ते आप.' ते बोल्यो-'गुरुजी! आ शरीरज तमारुं छे, तेथी जे रुचे ते मागी लो.' द्रोणाचार्ये तेना हाथनो अंगुठो माग्यो. गुरुभक्त भिल्ले तरतज ते कापी आप्यो. अंगुठो जवाथी तेनी धनुर्विद्या अर्जुन करतां कांइक न्यून थई गई, तथापि ए भिल्लने द्रोणाचार्य उपर जरा पण खेद थयो नहि. आप्रमाणे स्थापनाथी कार्यनी सिद्धि कहेली छे.

लोकोत्तर शास्त्र (जैनशास्त्र) मां पण प्रतिमाथी कार्यसिद्धि कहेली छे. ज्ञाता सूत्रमां कथा छे के—मल्लीनाथ भगवंतनी करावेली सुवर्णमय स्त्रीनी पुतळीवडे पूर्वभवना मित्र एवा छ पुरुषो वैराग्य पाम्या. अभयकुमारे करावेली कयवन्ना शेठनी प्रतिमा जोई तेना पुत्रो मोह पाम्या हता; अने वारंवार तेना उत्संगमां जईने बेसता हता. आ प्रमाणे सर्व दृष्टांतथी सिद्ध थाय छे के मूर्तिवडे कार्यसिद्धि थाय छे. वळी जिनप्रतिमा जोवाथी पण गुणकारी थाय छे. ते उपर एक कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

पृथ्वीपुर नामना नगरमां जिनदास नामे एक परम श्रावक हतो. तेने देवदत्त नामे एक पुत्र हतो. ते साते व्यसनोनो सेवनारो हतो. जिनदास तेने प्रतिदिवस धर्मशिक्षा आपतो, पण शठपणाथी ते बिलकुल ग्रहण करतो नहि; कारणके ते स्वभावेज वक्र हतो.

अन्यदा तेना पर कृपा लावीने तेना पिताए गृहप्रवेशना द्वारनी सामेज शुभस्थळ उपर एक जिनमूर्ति स्थापन करी; अने प्रतिदिवस तेनी पूजा करी आ प्रमाणे स्तुति करवा लाग्यो के " हे त्रण जगत्‌ना आधार प्रभु ! तमारी प्रतिमा मने आत्मस्वरूपनुं दर्शन करवामां दर्पण रूप छे, अने ते अनादिकाळनी मारी भ्रांतिने निवारे छे. जेम कोई हंसनुं बाळक बगलाना टोळामां आवी चड्युं, अने बगलानी साथे घणो काळ रही उछरीने मोटुं थयुं. एकदा कोई राजहंस त्यां आवी चड्यो. तेने जोई हंसनुं बाळक विचारवा लाग्युं के ' अहो ! आ पक्षीनी कांति, स्वरूप, वर्ण, स्वर अने गति मारी साथे मळता आवे छे, तेमां कांई पण भेद जणातो नथी. ' आ प्रमाणे विचार करी तेणे तेना अने पोताना स्वरूपनो अभेदपणे निर्णय कर्यो. तेमज ते बाळके पोतानी बुद्धिथी पोतानी जातिना आचार विगेरेथी सर्वथा भिन्न जाणी बककुळनो त्याग कर्यो, अने राजहंसनी साथे पोतानुं राजहंसपणुं मेळवी तेनो स्वीकार कर्यो. आ कथानो उपनय एवो छे के 'राजहंसने स्थाने जिनेश्वर जाणवा. हंसनुं बाळक ए जीव समजवो. संसारमां भमाडनारां आठ कर्म अने मिथ्यात्व मार्गने बतावनारा गुरुरूप बगलानुं टोळुं समजवुं. जीव अनादि काळना भवाभ्यासथी तेमनी साथे वृद्धि पामे छे. तेवामां कांईक लघुकर्मीपणुं प्राप्त थवाथी श्रीजिनप्रतिमारूप राजहंसने जोई तेनुं स्वरूप पोतानी साथे सरखावी स्वपर विवेचनवडे स्वधर्मने प्रगट करे छे.' आ प्रमाणे स्वबुद्धिथी जोडी लेवुं. हे वीतराग ! हंसना बाळकनी जेम मारो उद्धार करवाने माटे तमारी स्थापना संसारनो अंत करनारी छे. "

आ प्रमाणे ते श्रेष्ठी नित्य ते जिनेश्वरनी स्तुति करता हता. तेनो पुत्र ते प्रतिमाने जोतो, पण स्तुति करतो नहि, अने वंदना-पण करतो नहि. पछी श्रेष्ठीए गृहनुं द्वार नीचुं कर्युं; एटले तेनो पुत्र नीचो नमी गृहमां जतो, अने सन्मुख जिन-

बिंबने जोतो हतो. एवी रीते श्रेष्ठीए पुत्रने द्रव्यथी वंदना करावी पण भावथी करावी शक्यो नहि; कारणके भाव आत्मानेज आधीन छे. पछी ते श्रेष्ठीपुत्र आयुष्यना क्षयथी मृत्यु पामी छेल्ला स्वयंभूरमण समुद्रने विषे मत्स्यपणाने प्राप्त थयो. त्यां समुद्रमां भमतां भमतां अन्यदा एक जिनप्रतिमा जेवी आकृतिवाळो मत्स्य तेना जोवामां आव्यो. 'नळीया अने वलयाना आकार शिवाय नर विगेरे अनेक प्रकारनी आकृतिवाळा मत्स्यो थाय छे एम वृद्धो कहे छे.' ते मत्स्यनी जिनबिंब जेवी आकृति जोई तेने जातिस्मरण थई आव्युं, तेथी पूर्वभवनुं स्मरण थतां ते पश्चात्ताप करवा लाग्यो के "अहो ! मारा पिताए मने अनेक रीते बोध कर्यो, तथापि हुं बोध पाम्यो नहि. मने धिक्कार छे ! में अनेक दोषथी मुक्त एवा जिनेश्वर भगवंतनी पण आराधना करी नहि. हवे हुं तिर्यंच थयो छुं तेथी शुं करी शकुं? तथापि आ तिर्यंचना भवमां पण बनी शके एटलो धर्म करूं." आवुं विचारी तेणे सूक्ष्म मत्स्य अने सचित्त जळनी हिंसा करवानो नियम लीधो. पछी धीमे धीमे जळनी बहार नीकळी चोवीश पहोरनुं अनशन सारी रीते पाळी मृत्यु पामीने स्वर्गमां देवपदने प्राप्त थयो. त्यां शाश्वती जिनप्रतिमानी पूजा करतां अवधि ज्ञानवडे पोतानुं पूर्वभवनुं सर्व स्वरूप जाणी जिनबिंबना दर्शननो महान् उपकार लोकोने दर्शाववाने माटे भावजिननी आगळ आवी बार पर्षदानी समक्ष बोल्यो-"हे वितराग! तमारी प्रतिमा पण साक्षात् प्रभुनी (तमारी) जेवी उपकार करनारी छे. में ते बराबर अनुभव्युं छे." आ प्रमाणे कही तेणे स्वर्गने अलंकृत कर्युं. तेना गया पछी पर्षदाए तेनुं वृत्तांत पूछ्युं एटले प्रभुए तेनुं सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं. ते सांभळी सर्व सभा जिनप्रतिमानी वंदना विगेरे करवामां तत्पर थई.

"श्रीजिनेश्वर भगवंतनी प्रतिमा जेवी तेवी रीते जोई होय तो पण ते जिनेश्वर भगवंतनी जेम आगामीकाळे सुख करनारी थाय छे; ते युक्तिथी स्थापनानी अहीं स्तुतिकरेली छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्ताशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८७ ॥

व्याख्यान १८८ मुं.

" देवीओ पासे जीववध न करवा विषे "

घणा मिथ्यात्वी लोको नवरात्रना दिवसोमां अष्टमीने दिवसे चंडी, दुर्गा, बहुचरा, भवानी विगेरे देवीओनी पूजामाटे अनेक प्राणीओनो वध करे छे तेनो निषेध करवा उपर कथा कहे छे.

यशोधर नृपकथा.

मेषादिघातैस्तनुते कृपाघ्नाः, दुर्गादिपूजां नवरात्र्यहस्सु ।
मात्राज्ञया पिष्टककुर्कुटं घ्नन्, यशोधरः सांब दधौ भवौघम् ॥

भावार्थ

"निर्दयलोको नवरात्रिना दिवसोमां बकरा प्रमुखनो घात करी दुर्गा विगेरेनी पूजा करे छे, परंतु यशोधरे मातानी आज्ञाथी मात्र लोटनो बनावेलो कुकडो हण्यो हतो तो तेथी पण तेने माता सहित घणा भव भटकवुं पड्युं हतुं." तेनी कथा आप्रमाणे—

राजपुर नगरमां मारीदत्त नामे राजा हतो. तेने चंडमारी नामे गोत्रदेवी हती. राजा मारीदत्त ते गोत्रदेवीनी प्रतिदिवस पुष्पादिकथी पूजा करी स्तवना करतो हतो. आश्वीनमास आवे त्यारे शुक्ल पडवेथी मांडी नवमी सुधी कंदमूल, दूध, घी अने फळादिकनोज आहार करी तेनी आगळ बेसी रहेतो हतो. लौकिकमां कहेवाता नवरात्रिना पर्वमां ते ज्यारे तेनी आराधना करतो हतो त्यारे गोत्रदेवीनी तृप्तिमाटे होमबलिदान अर्थे एक लाख बकरा विगेरे जीवोने हणतो, अने बे माणसोनो पण वध करतो; तेमां आठमने दिवसे तो जीवनो होम विशेषे करतो हतो.

एक वखते ते नगरमां गुणधर नामे आचार्य चातुर्मास रह्या हता. तेमने अभयरुचि नामे एक महात्मा (साधु) शिष्य हतो, अने अभयमति नामे एक संयम तप अने क्रियामां तत्पर साध्वी शिष्यणी हती. महा तपोधन अने शीलरूप पवित्रताथी युक्त अभयरुचि मुनि एक दिवस चार प्रकारनो अभिग्रह करी नगरमां आहारमाटे फरता हता, तेवामां राजपुरुषो तेने पकडीने राजापासे लइ गया. राजाए अभयरुचि मुनिने पूछ्युं—" हे शास्त्रोपदेशक मुनि! तमारा शास्त्रमां नवरात्रिना दिवसोमां गोत्रदेवीनी पूजानुं फळ शुं कह्युं छे अने होमक्रिया केवी रीते करवानुं

वर्णवेलुं छे?" संयमी अभयरुचि बोल्या–"राजेंद्र! में पूर्वभवे एक पिष्टनो कुकडो मात्र मार्यो हतो, ते पापे हुं सात भवसुधी घणुं दुःख भोगवतो भटक्यो हतो तो तमारी शी गति थशे?" राजाए तेमना सात भवनुं स्वरूप पूछ्युं, एटले अभयरुचि बोल्या–

अवंतीनगरीमां यशोधर नामे राजा हतो. तेने चंद्रवती नामे माता हती, अने नयनावळी नामे स्त्री हती. तेने गुणधर नामे पुत्र थयो हतो. एक वखते संसारथी उद्वेग पामेला अने वैराग्यमां तत्पर यशोधर राजाए पोतानी राणी नयनावळीने कह्युं–'प्रिये! हुं दीक्षा लईश.' दैवयोगे तेज रात्रिए राजाने स्वप्नुं आव्युं के 'सातमा माळना गोख उपरथी तेनी माताए तेने पृथ्वी उपर पाडी नाख्यो.' प्रभाते ते वात तेणे पोतानी माताने जणावी. माताए यशोधरने कह्युं–'वत्स! एवा माठा स्वप्नना निवारणमाटे तुं चामुंडादेवीने बकरा विगेरेनुं बलिदान आप.' राजाए कह्युं–'प्राण जाय तो पण हुं तेवुं कार्य करुं नहि.' ते सांभळी माताए अनेक उपालंभ आपी तेने शरमावी दीधो, अने बळात्कारे एक पिष्टनो कुकडो करीने तेने आप्यो, के जेने हणीने तेणे शक्तिने चडाव्यो.

राणी नयनावळी कोई गायन करता कुबडा पुरुषने जोई तेनी उपर मोह पामी, तेथी तेणीए प्रपंच करी राजानी आज्ञा मेळवीने ते पुरुषने पोताना आवास पासे राख्यो. रात्रे राजा सुई गया पछी वखत मेळवी राणी तेनी साथे स्वेच्छाए विलास करवा लागी. एक समये राजाए ते वात जाणी, अने नजरे पण दीठी; तथापि तेणे क्षमा राखी अने मौन रह्यो. बीजे दिवसे प्रभातकाळे गुणधर पुत्रने राज्य आपी पोते दीक्षा लेवा उजमाळ थयो. ते जोई राणीए चिंतव्युं के "जरूर मारुं चरित्र स्वामीना जाणवामां आव्युं छे, तेथी हुं तेने भोजनमां विष आपी मारी नाखुं; नहि तो ते पुत्रने मारी वात कहीने आ कुबडा पुरुषना सुखमांथी मने भ्रष्ट करशे." आवो विचार करी तेणीए भोजनमां विष नाखी राजाने खवराव्युं अने विष चडवाथी राजा आकुळव्याकुळ थयो एटले तेणीए गळे अंगुठो दईने तेने मारी नाख्यो. त्यारपछी थोडा दिवसे तेनी माता पण मृत्यु पामी.

राजा त्यांथी मरीने मयूर थयो अने तेनी माता श्वान थई. दैवयोगे कोई वनचरे ते बंनेने पकडी क्रीडामाटे गुणधर राजाने भेट कर्या. राजा तेथी खुशी थयो. मयूरने पांजरामां पूर्यो, अने श्वानने बांधीने राख्यो.

एक वखते मयूरे नयनावळीने पेला कुबडा नरनी साथे जोई, तेथी तत्काळ ते मयूरने जातिस्मरण थई आव्युं. पछी ज्यारे नयनावळी ते मयूरने हाथवडे पकडवा जती ते वखते ते मयूर द्वेषथी तेणीने चांचनो बहु प्रहार करतो हतो. एक वखते

राजमाता नयनावळीए चंचूनो प्रहार करता ते मोरने आभूषणथी मार्यो, तेथी ते गोख उपरथी पडी गयो. ते वखते राजानी पासे बेठेला पेला श्वाने कटीथी तेने पकड्यो. तेने छोडाववा राजाए घणी महेनत करी, पण श्वाने छोड्यो नहि एटले राजाए श्वानने सोगठाथी मार्यो. बंने मृत्यु पामी गया.

पछी मयूर मृत्यु पामीने नोळीयो थयो अने श्वान सर्प थयो. त्यां पण तेओ युद्ध करीने मरण पाम्या. त्यांथी ते बंने सिप्रा नदीमां मत्स्य थया. चंद्रवतीमत्स्यना जीवने माछीओए मारी नाख्यो अने त्यारपछी केटलेक वखते यशोधरमत्स्य नयनावळी तथा गुणधरने अर्पण कर्यो. नयनावळीए तेने रंधाव्यो. त्यां तेने जातिस्मरणज्ञान थयुं.
मत्स्यपणामांथी मृत्यु पामीने चंद्रवती गुणधर राजाना पशुपाळने घेर बकरीपणे उत्पन्न थई. यशोधर ते बकरीनो पुत्र बकरो थयो. तरुणवये ते पोतानी माता बकरी साथे विषयभोग करवा लाग्यो. ते जोई पशुपाळे तेने मारी नाख्यो. ते मृत्यु पामीने पोतानाज वीर्यमां उत्पन्न थयो. ते गर्भिणी बकरीने गुणधरे सेवकने हाथे मगावीने हणावी अने तेना गर्भमांथी बकराने खेंची लई घरे पाळ्यो.

एक दिवसे गुणधरे पूर्वजना मृत्युदिवसे पंदर पाडाओ मार्या अने ब्राह्मणोने जमाड्या. ब्राह्मणोए आशिर्वाद आप्यो के "तमारो पिता स्वर्गमां क्रीडा करो." ते सांभळी बकराने जातिस्मरण थई आव्युं. ते अरसामां पापना उदयथी नयनावळीने कुष्टनो व्याधि उत्पन्न थयो. तेने व्याधिदुःखित जोई पेलो बकरो हर्ष पामवा लाग्यो. एक वखते राजाना भोजनसमये पेला बकराने पुष्ट थयेलो जोई रसोईआए तेने मारी पकावी राजाने पीरस्यो.

चंद्रवतीनो जीव कलिंगदेशमां पाडो थयो हतो. ते सार्थवाहना साथ भेगो उज्जयिनी नगरीए आव्यो. त्यां राजानो अश्व नदीमां पाणी पीवा आवतो हतो तेने ते पाडाए मारी नाख्यो. तेथी राजाए क्रोध करी ते पाडाने बांधी अग्निवडे भुंजी नाख्यो. त्यारपछी छठ्ठे भवे ते बंने पाछा कुकडा थया. कोई पुरुषे ते गुणधर राजाने अर्पण कर्या. राजा तेमनुं परस्पर युद्ध करावतो हतो अने ते जोईने राजी थतो हतो. एम करतां करतां तेओ राजाने वल्लभ थई पड्या. एक वखते राजा वनमां क्रीडा करवा गयो हतो ते वखते काळदंड नामनो कोटवाळ पण ते बंने कुकडाने लईने वनमां गयो. वनमां कोई एक मुनिने जोई बंने कुकडा जातिस्मरण पाम्या. पछी पूर्वाभ्यासथी तेमने वंदना करी बोल्या-"स्वामी! अमोए अज्ञानथी करेलां कर्मोनां फळ बहु भोगव्यां. हवे आ संसारदुःखनी परंपरामांथी मुक्त थवा माटे अमने व्रत आपो. तमने जोई अमे संसारथी उद्वेग पाम्या छीए." मुनिए ते बंने कुकडाने

अनशन आप्युं. तेवामां गुणधर राजाए तेज वनमां एकांतमां राणी साथे बेठा सता शब्दवेधी बाणवडे ते बंनेने मारी नाख्या.

त्यांथी मरण पामी तेओ सातमे भवे गुणधर राजानी स्त्री जयावळीना उदरमां उत्पन्न थया. यशोधरनो जीव अभयरुचि नामे पुत्र थयो, अने चंद्रवतीनो जीव अभयमती नामे पुत्री थयो. ते बंने परस्पर स्नेहवाळा अने वियोगने नहि सहन करता एवा आठ वर्षना थया. राजा गुणधर तेमने साथे लई एकदा वनमां मृगया रमवा गयो. त्यां शशला प्रमुख जीवने मारवा माटे श्वानोने छोडवामां आव्या. ते वनमां ध्यानमां तत्पर एवा कोई मुनिने जोई तेमना प्रभावथी ते श्वाननी शक्ति हणाई गई. अनेक रीने प्रेरणा कर्या छतां पण तेओ पाछा फरवा लाग्या. ते जोई राजा शरमाई गयो, अने विचार करवा लाग्यो के 'अहो! आ पशुथी पण हुं विशेष पापात्मा छुं के आ श्वान जीववध करवाने इच्छता नथी तथापि हुं तेमने वारंवार प्रेरणा करूं छुं.' एवामां अर्हद्दत्त नामे कोई श्रावक मुनिने वांदवा जतो हतो तेने जोई राजाए पछ्युं–'भद्र! क्यां जाय छे?' तेणे कह्युं–'हुं मुनिपासे धर्म सांभळवा जाउं छुं.' राजाए कह्युं–'चाल, हुं पण तारी साथे आवुं.' पछी तेओ मुनिनी पासे आव्या. ते श्रावक पांच अभिगम साचवी, त्रण वार जमणा पासाथी प्रदक्षिणा करी वांदीने मुनिपासे बेठो. राजा पण तेने अनुसारे वंदनविधि करीने बेठो. पछी तेमणे आ प्रमाणेनी देशना सांभळी–"अहो! दैव मित्रनी जेम कोई वार दया करे छे, अने कोई वार शत्रुनी जेम निःशंक थई मारी नाखे छे." इत्यादि देशना सांभळ्या पछी राजाए मुनिने पोताना मातापितानी गति विषे प्रश्न कर्यो. मुनि बोल्या–'राजन्! तुं शुं पूछे छे? ते चरित्र तने लज्जा उत्पन्न करनारुं छे. तें तारा पिता अने पितामहीने तेमना मृत्युना दिवसेज अनेक वार भक्षण कर्या छे.' एम कही यशोधर अने चंद्रवतीना साते भवनो वृत्तांत मुनिए कही संभळाव्यो. ते सांभळी राजा मूर्छा पामी गयो, अने दुःखथी पश्चात्ताप करवा लाग्यो. अभयरुचि अने अभयमती जातिस्मरण पामी पोते अनुभवेलुं प्रत्यक्ष जाणी गुणधर राजाने कहेवा लाग्या के 'अमे बंने हवे दीक्षा लईशुं.' राजाने पण वैराग्य थयो. पछी पुत्र अने पुत्री सहित तेमज यशोधरनुं वृत्तांत सांभळी संसारथी उद्वेग पामेला बीजा पांच हजार सामंतादिकथी परिवृत्त थई पुत्रने राज्य उपर बेसारी पुत्रे करेला निष्क्रमणउत्सववडे राजाए दीक्षा ग्रहण करी. सर्वे महा तप करवा लाग्या. ते गुणधर आचार्य हमणा आ नगरीमां पधार्या छे.

आ प्रमाणे अभयरुचि मुनिना मुखथी सांभळीने मारीदत्त राजा बोल्यो–'हे अणगार! ते गुणधर मारा बनेवी थाय छे, अने तमे मारा भाणेज थाओ छो. अहो! तेवा गुरुनो योग न मळवाथी में पापीए नवरात्रना दिवसोमां गोत्रदेवीनी आगळ

लाखो जीवो मारी नाख्या.' पछी ते वखते बलिदान माटे एकठा करेला एक लाख जीव गुरुना वचनथी मारीदत्त राजाए छोडी मूक्या अने नगरमां अमारी घोषणा करावी.

अभयरुचि गुरुना उपदेशथी चंडमारी देवी पण श्राविका थई. "अहो! कंद फळ अने मद्यना लेनारा शाक्त लोको नवरात्रना दिवसोमां देवीना बलिदान खाई बोले छे के 'अमे उपवास कर्या छे' आ केवुं आश्चर्य!" आ प्रमाणे ते दिवसोमां घणी हिंसा थती होवाथीज बार दिवसनी असज्झाय कहेवाय छे, अने ते दिवसे साधु श्रुतपाठ करता नथी.

"आ प्रमाणे मिथ्यात्वना पर्वने जाणीने मारीदत्त प्रमुख जैनोए तेनो त्याग कर्यो अने तेम करवाथी तेओ पाछळथी आत्मधर्मने पाम्या."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टाशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१८८॥

व्याख्यान १८९ मुं.

चैत्य शब्दनो अर्थ.

प्राहुः जिनौकस्तद्बिंबं चैत्यशब्देन सूरयः।
अतस्तद्भावतो वंद्यं बह्वात्मनां गुणप्रदम् ॥ १ ॥

भावार्थ

"विद्वान् सूरिओ चैत्य शब्दनो अर्थ जिनालय अने जिनबिंब कहे छे, एथी घणा आत्माने गुण प्राप्त करी आपनार चैत्य भावथी वंदन करवा योग्य छे." १

पोताना अने पारका शास्त्रना शब्दार्थने नहि जाणनारा केटलाएक लोको चैत्य शब्दनो अर्थ ज्ञान, मुनि, वन विगेरे कल्पनाथी कहे छे पण ते असत्य छे. कारणके कोशप्रमुख शब्द शास्त्रथी चैत्य शब्दनो अर्थ प्रतिमाज थाय छे. ते आप्रमाणे—

व्याकरणमां चितिसंज्ञाने एवो धातु छे. ते उपरथी "जेनाथी काष्ठादिकनी प्रतिकृति (प्रतिमा) जोई संज्ञा उत्पन्न थाय के 'आ अरिहंतनी प्रतिमा छे' ते चैत्य कहेवाय छे." एम व्युत्पत्ति थाय छे. तथा धातुपाठवृत्तिमां "चित् चयने" ए धातुनो चैत्य एवो प्रयोग थाय छे. तथा नाममाळामां लखे छे के "चैत्यं विहारे जिनसद्मनि" "चैत्य शब्द विहार अने जिनालयमां प्रवर्ते." ते ग्रंथनी स्वोपज्ञ वृत्तिमां "चीयते इति चितिः तस्याभावः चैत्यं" एवी व्युत्पत्ति करी 'भावे अण्' प्रत्यय आव्यो छे एम लख्युं छे. वळी अमरकोशमां "चैत्यमायतनं प्रोक्तं" एम कहेलुं छे. हैम अने कार्यसंग्रहमां "चैत्यं जिनौकस्तद्विंबं, चैत्यमुद्देशपादपः" चैत्य एटले जिनालय, जिनबिंब अने उद्देशवृक्ष एम त्रण अर्थ कह्या छे. आगममां पण कह्युं छे के चेईयट्ठेनिज्जरट्ठियअणिस्सिहं बहुविहं करेई। तेनी टिकामां कह्युं छे के चैत्य जे जिनप्रतिमा-तेनो अर्थ एटले प्रयोजन ते. निर्जरानो अर्थ कर्मक्षयनी इच्छाए वैयावृत्यने योग्य क्रियावडे उपष्टंभन करे (कीर्ति विगेरेनी इच्छाविना निरपेक्षपणे). एवो प्रश्न व्याकरणनी वृत्तिमां अर्थ कह्यो छे. तेज सूत्रमां आश्रवद्वारमां पण चैत्य शब्द कहेलो छे. त्यां एम लेवुं के संसारना हेतुरूप कीर्ति विगेरेनी अपेक्षाए जे चैत्यादि कराववा तेनो आश्रवमां अंतर्भाव थाय छे, अथवा कुदेवनां चैत्य विगेरे कराववां ते आश्रव कहेवाय छे.

सूत्रमां सर्व स्थले जिनादिकनी वंदना करवामां उत्सुक एवो भावुक हृदयमां एवुं विचारे छे के—पत्तोहं कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासामि। "हुं कल्याणकारी, मंगलमय, देवताना चैत्यनी जेम विनयथी सेवा करूं." आ सूत्रपाठनो अर्थ केटलाएक अज्ञानी एवो करे छे के "देव एटले धर्म-देव-साधु, तेने चैत्य एटले छेल्लुं ज्ञान (केवळज्ञान) थयुं होय त्यारे देवता तेने जेवी रीते स्तवे छे तेम हुं स्तवुं छुं." आ तेमनो कल्पित अर्थ युक्तिवाळो नथी. तेनुं खंडन आप्रमाणे—पांचमा अंग भगवति मां तामलि श्रेष्ठीए आवी रीते चिंतव्युंके "मारा सगा संबंधीने अढार जातिना शाक करी जमाडुं, कल्याणकारी, मंगलकारी देवताना चैत्यनी जेम विनयवडे सेवा करूं." आ स्थाने पूर्वे कहेल अज्ञानीनो अर्थ शीरीते घटे? कारण के ए श्रेष्ठी मिथ्यात्वी हतो. ते जैन धर्मीनी प्रशंसा करवा योग्य वार्ता ते शी रीते जाणे? एथी आबाळगोपाळ प्रसिद्ध एवोज अर्थ करवो ते आ प्रमाणे—"देव एटले स्वाभीष्ट ईश्वर, तेनुं चैत्य एटले बिंब तेनी जेम हुं पूजा करूं वा स्तुति करूं." आ अर्थ सर्व रीते घटित छे.

कोई मिथ्यात्वी एम बोले के "जीवनी विराधना धर्मने माटे पण जे करे तेने मंदबुद्धि कहेलो छे." दशमा अंग प्रश्नव्याकरणसूत्रमां कह्युं छे के 'प्रतिमाने

१ जेनी नीचे केवळज्ञान प्राप्त थयु होय ते वृक्ष अथवा समवसरणमां रहेलुं मध्यवृक्ष. २ आ अर्थ संदेहवाळो छे. ते पाठनुं स्थान जोई यथार्थ अर्थ विचारवो.

घडवा के पूजवाने काळे जे जीवहिंसा करे ते मंदबुद्धि पुरुष छे." आवो अर्थ तेओ करे छे, पण तेनो ए अर्थ अयुक्त छे. अहीं मंदबुद्धि तो जेओ यज्ञादि कार्यमां जीव अजीवने नहि जाणनारा धर्मबुद्धिथी बकरा प्रमुखनो वध करे छे तेज समजवा. अरे मुग्ध ! जो तुं ए अर्थने अहीं जिनचैत्यादि शुभक्रियामां लगाडे छे तो तने पूछवानुं के नदी उतरवामां, विहार करवामां, धर्मक्रिया करवामां, गुरुवंदना करवा माटे जवामां अने उपाश्रय प्रमुख धर्मस्थल कराववामां सर्वत्र जीववध थाय छे के नहि ? जो थाय छे तो तुं पण मंदबुद्धि थई गयो. ते विषे कह्युं छे के "जतना पूर्वक प्रवृत्ति करतां जे विराधना थाय ते सूत्र अनुसारे चालवाना कारणथी कर्मक्षय रूप निर्जरानुं कारण थाय छे, अने आत्मस्वरूपनी शुद्धि थाय छे." आ गाथानो अर्थ बराबर धारवो. जे पोताना कुटुंबादिकने अर्थे पण आरंभ करे नहि तेवा पडिमा वहेनाराने जिनबिंबनुं विधान करवानुं नथी. तेने मात्र प्रतिमा मानवा योग्य छे. श्रावकने योग्य एवी ते प्रतिमा विधानादि क्रिया द्रव्यने आधीन छे. ते बार व्रतधारी श्रावकने करवा योग्य छे. द्रव्यपूजा विगेरे पांच महाव्रतमां नथी; कारण के तेने परिग्रहनो अभाव छे. बाकी शिक्षाव्रतनी जेम समकितमां पण ते कर्तव्य छे. आ विषे श्रीउववाई सूत्रमां अंबड परिव्राजकनो आलावो छे तेनो अर्थ आप्रमाणे—"बीजा चरकादिक परिव्राजको (गुरुओ) बीजा तीर्थना हरिहरादिक देवो अने अन्य तीर्थी तापस विगेरेए पोताना चैत्यमां स्थाप्या होय—पोताना हरिहरादि देवपणे मानेला होय एवा अरिहंतना बिंब वांदवा, पूजवा, तेनी पर्युपासना करवी ते अंबडने कल्पे नहि."

श्री भगवतिसूत्रमां आरंभवडे पण धर्मनी प्राप्ति कहेली छे ते आप्रमाणे—"हे भगवन् ! श्रावक तथाप्रकारना श्रमण जे मुनिमहाराज तेने अप्रासुक (सचित्त) अने अनेषणीय एवा अशनादिकवडे प्रतिलाभे तो ते शुं उपार्जे ?" "हे गौतम ! ते ते घणी कर्मनी निर्जरा करे अने अतिअल्प पाप बांधे." वळी सूत्रमां ग्लान विगेरे साधुओने आधाकर्मी आहारनी पण आज्ञा आपेली छे, तो ते जीवहिंसा विना थतो नथी; तेवीज रीते जिनबिंब विगेरेमां पण जाणी लेवुं. अथवा कोई मुनिना देहमां कीडा पडेला जोवामां आवे तो श्रावक अनुबंध हिंसाने अभावे जीवानंद वैद्यनी जेम सावद्य औषध करे. ते प्रमाणे अहीं चैत्य विषे पण जाणी लेवुं.

अहीं कोई शंका करे के साधुओ पोते चैत्यादि करता नथी पण श्रावकोनी ते क्रिया अनुमोदे छे, अने चैत्यक्रियामां तेने प्रेरे छे. तो करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं ए त्रणे प्रकारे सर्वने सरखुं फळ मळे छे, तेथी जे आ त्रिकनो संयोग कहेल छे तेमां बे आदरे ने एक न आदरे—न्यून करे तो ते मार्गना लोपक थाय छे. गुरु कहे छे—अरे

निविड जडतारूप अंधकारथी व्याप्त एवा पुरुष ! आवी शंका करवी योग्य नथी. कारणके चार प्रकारना धर्ममां दानधर्म प्रथम कहेल छे, ते दान मुनि पोते आपता नथी पण दाताने अनुमोदे छे अने ते क्रियामां श्रावकने प्रेरे छे ते वात तें केम अंगीकार करी? ते प्रमाणे अहीं पण समजवुं. तेम वळी कोई चडीमार के माछी मत्स्यादिकनी हिंसामां तत्पर होय ते वखते कोई मुनि पात्रमां भोजन लईने जता होय तेने जोई ते हिंसक कहे के 'हे मुनि ! मने जो भोजन आपो तो आ सर्व जीव हुं छोडी मूकुं, अने पाछा जीवतां जळमां मूकी दउं, नहि तो तेने मारी नाखीश.' आ प्रमाणे सांभळी तेमां अनेक लाभ जुए, तथापि भगवंतनी आज्ञाना लोपना भयथी तेने पोताना आहारमांथी किंचित् पण न आपे, अने श्रावकोने ते कार्यनी प्रेरणा करे, तेमज तेनी अनुमोदना करे. तेम अहीं पण अर्थ जोडी लेवो.

वळी कोई एवी शंका करे के "पाषाणनी प्रतिमानी पूजादिक करवामां शो लाभ छे? कारणके पूजादिक करवाथी कांई ते तृप्त के संतुष्ट थती नथी, अने जे तृप्त के संतुष्ट नहि थाय तेवा देव पासेथी फळनी प्राप्ति पण थती नथी." तेना उत्तरमां कहेवानुं के अचेतन एवा चिंतामणि रत्न विगेरेथी पण फळप्राप्तिनो विरोध नथी अर्थात् फळप्राप्ति थाय छे. ते विषे वितरागस्तोत्रमां कह्युं छे के-

अप्रसन्नात्कथं प्राप्यं, फलमेतदसंगति ।
चिंतामण्यादयः किं न, फलंत्यपि विचेतनः ॥

"प्रसन्न न थाय तेवानी पासेथी फळ शी रीते मळे? एम मानवुं असंगत छेः कारण के अचेतन एवा चिंतामणि विगेरे पण शुं फळ नथी आपता?"

श्रीजिनप्रतिमामां वीतरागना स्वरूपनो अध्यारोप करीने पूजाविधि करवा योग्य छे. ते विषे श्रीभगवती अंगमां चारण श्रमणना अधिकारमां कह्युं छे के "हे भगवंत! विद्याचारण मुनिनो तिरछो गतिविषय केटलो कह्यो छे?', भगवंत कहे छे- "अहींथी एक उत्पादे (एक पगले) मानुषोत्तर पर्वते जईने समोसरण करे अने त्यां रहेला चैत्यने वांदे; बीजे उत्पादे त्यांथी नंदीश्वर द्वीपे समोसरे, अने त्यां रहेला चैत्यने वांदे; त्यांथी पाछा वळतां एक उत्पादे अहीं आवे, अने अहींना चैत्यने, वांदे." "हे भगवंत! विद्याचारण मुनिनो ऊर्ध्वलोकमां गतिविषय केटलो छे?" भगवंत कहे छे- "हे गौतम! एक उत्पादे अहींथी नंदनवनमां समोसरे, त्यांना चैत्यने वांदे; बीजे उत्पादे पांडुकवने पहोंचे, त्यांना चैत्यने वांदे. पाछा एक उत्पादे अहीं आवे, ने अहींना चैत्यने वांदे." तेमां ते द्वीपादिकने विषे शाश्वत चैत्य लेवा. अहीं बहुवचन छे, तेथी चैत्य शब्दवडे जिनबिंबज जाणवा. इत्यादि अनेक युक्तिथी चैत्य शब्दनो

अर्थ ज्ञान थतो नथी; अने तेथीज कोषकारे कह्युं छे के 'चैत्य एटले जिनालय अथवा जिनबिंब.' ते युक्तियुक्त सिद्ध थाय छे. आ प्रसंगमां वधारे कहेवानी हवे जरूर नथी.

हवे ते जिनबिंब भावथी वांदवा योग्य छे. वंदनानुं फळ श्रीपद्मचरित्रमां आप्रमाणे कहेलुं छे—"चैत्यनुं एटले दर्शन करवा जवानुं मनमां चिंतवन करवाथी चोथ भक्तनुं फळ थाय छे, त्यां जवामाटे उठवाथी छठ्ठनुं फळ थाय छे, जवानो आरंभ करवाथी अठ्ठमनुं फळ थाय छे; थोडुं जवाथी दशम (चार उपवास) नुं फळ थाय छे; जरा वधारे चालवाथी पांच उपवासनुं फळ थाय छे, मार्गना मध्यमां आववाथी पक्ष उपवासनुं फळ थाय छे, जिनभुवनने देखवाथी मास उपवासनुं फळ थाय छे, जिनभवनने प्राप्त थयेलो मनुष्य छमासी तपनुं फळ मळवे छे, तेना द्वारपासे पहोंचता संवत्सर तपनुं फळ मळे छे, प्रदक्षिणा फरवाथी सो वर्षना उपवासनुं फळ मळे छे, जिनबिंबने पूजवाथी हजार वर्षना तपनुं फळ मळे छे, अने जिनेश्वरनी स्तुति करवाथी अनंतु फळ मळे छे." वळी कह्युं छे के " जिनबिंबनुं प्रमार्जन करवाथी सोगणुं, विलेपन करवाथी सहस्रगणुं, पुष्पमाळा चडाववाथी लाखगणुं अने गीतवादित्रथी अनंतगणुं पुण्य थाय छे."

आ जिनबिंबनुं दर्शन घणा जीवोने अनेक प्रकारनुं गुणकारी छे. ते विषे श्रीदशवैकालिकनीनिर्युक्तिमां कह्युं छे के " जिनप्रतिमाना दर्शनथी प्रतिबोध पामेला, मनकना पिता अने दशवैकालिकना कथक एवा सय्यंभव गणधरने हुं वांदुं छुं-" तेमनो संबंध आ प्रमाणे छे—

सय्यंभव सूरिकथा

श्री जंबूस्वामीनी पाटे प्रभवसूरि थया हता. तेमणे श्रुतज्ञानवडे पोताना पदने योग्य एवा कोई मुनि पोताना शिष्योमां के पोताना गच्छमां दीठा नहि. पछी तेमणे पोतानी श्रुतदृष्टि बहार नाखीने जोयुं, एटले राजगृही नगरीमां सय्यंभव नामनो एक श्रेष्ठ ब्राह्मण पोताना पदने योग्य जोवामां आव्यो. पछी गुरु त्यां आव्या. ते सय्यंभव ब्राह्मण अनेक ब्राह्मणोने एकठा करी यज्ञकर्म करावतो हतो तेमने बोध करवाने माटे बे चतुर साधुने यज्ञस्थळे मोकल्या. साधुओ त्यां जई आप्रमाणे श्लोकना बे पद बोल्या—"अहो कष्टमहो कष्टं तत्त्वं न ज्ञायते परं" " अहो! कष्टनी वात छे के महाकष्ट करे छे, पण परम तत्त्वने जाणता नथी." आ प्रमाणेना बे पद कही तेओ सत्वर पाछा वळ्या ते सांभळी सय्यंभवे विप्रे विचार्युं के 'आ साधु जरूर मृषाभाषी नहि होय, माटे यज्ञाचार्यने तत्त्व पूछुं.' आवुं विचारी तेणे यज्ञाचार्यने तत्त्व पूछ्युं. तेमणे कह्युं—" यज्ञज तत्त्व छे." तथापि संशयने पामेलो सय्यंभव ते साधुनी

पछवाडे सत्वर चाल्यो अने प्रभवसूरि पासे जइ तेणे सूरिने ते विषे पूछ्युं एटले सूरि बोल्या–'भद्र! जो तुं भय देखाडीश तो ते यज्ञाचार्यज तने तत्त्व कहेशे.' तेणे पाछा आवी खड्ग खेंचीने यज्ञाचार्यने कह्युं–'तत्त्व कहो, नहि तो आ खड्गवडे तमारा शिरनो छेद करी नाखीश.' पछी यज्ञगुरुए भय पामी यज्ञना स्तंभ नीचे स्थापित करेली श्रीशांतिजिननी मूर्ति तेने काढी बतावी. मूर्ति जोई ते विचारमां पड्यो के अहो! आ मूर्ति निरूपम छे. पछी ते मूर्ति लई ते सय्यंभव ब्राह्मण सूरिनी पासे आव्यो अने ते देवनुं स्वरूप पूछ्युं. सूरिना एकज उपदेशथी प्रतिबोध पामीने सय्यंभवे परंपरा गत मिथ्यात्व छोडी आशातना वगरनी भूमि उपर मूर्ति स्थापित करी दीक्षा लई अनुक्रमे द्वादशांगीनुं अध्ययन कर्युं. सूरिए तेने पोताना पद उपर स्थापित कर्यो.

सय्यंभवे दीक्षा लीधी त्यारे तेनी पत्नी सगर्भा हती. तेणे गर्भस्थिति पूर्ण थतां मनक नामना पुत्रने जन्म आप्यो. मनक आठ वर्षनो थयो एटले बाळकोनी साथे क्रीडा करतां बाळको तेने अपितृक (नबापो) कही तिरस्कार करवा लाग्या. मनके लज्जा पामी पोतानी माताने ते विषे पूछ्युं. माताए गद्गद्स्वरे कह्युं–"वत्स! तारा पिताए कोई जैनगुरु पासे दीक्षा लीधी छे. हुं शुं करूं? कोई श्वेतांबरीए कांईक कहीने तेने धूती लीधा छे. अधुना ते मुनीश्वर थयेला छे, अने पाटलीपुत्र नगरमां हाल विचरे छे." ते सांभळी मनक तत्काळ मातानी आज्ञा लई पिताने जोवा उत्सुक थई ते नगरमां आव्यो; अने मार्गे चाल्या जता मुनिओना समूहमां जईने पूछ्युं–'सय्यंभव मूनि कोण छे?' तेवुं पूछतांज सय्यभवसूरिए श्रुतज्ञानना उपयोगथी तेने पोतानो पुत्र जाणी लीधो. पछी उपाश्रयमां लावी तेने दीक्षा दीधी. परंतु तेनुं आयु मात्र छ मासनुंज अवशिष्ट रहेलुं जाणी द्वादशांगीमांथी उद्धार करी दशवैकालिक नामे सूत्र रची तेने भणाव्युं. ते सूत्रनुं अध्ययन करी आयुष्य पूर्ण थयुं एटले मृत्यु पामीने ते देवता थयो. तेना मृत्यु वखते सूरिने अश्रुपात थई आव्यो. ते जोई बीजा मुनिओ कहेवा लाग्या–"हे स्वामी! ज्यारे तमारा जेवा मोहरूप राक्षसथी ग्रस्त थई अश्रुपात करशो तो पछी धीरता क्यां रहेशे?" सुरीश्वर बोल्या–"हुं मोहवश थई अश्रुपात करतो नथी, पण आ मारो पुत्र अल्प समयनुं चारित्र पाळी स्वर्गे गयो, तो जो तेनुं आयुष्य लांबु होत तो ते तेथी पण अधिक महत्पद प्राप्त करत. आवा हेतुथी मने खेद थयो हतो." ते जाणी सर्व मुनिओने विस्मय ने विषाद साथे थया. तेओए गुरूने कह्युं के "आपना पुत्र हता तो ते अमने जणाववुं तो हतुं, अमे तेनी वैयावच्च करत." गुरुए कह्युं–'तेवुं जणाववाथी तेना आत्मानुं कार्य सिद्ध न थात.'

युगप्रधान सय्यंभव सूरि चिरकाळ भव्य श्रेणीने प्रतिबोध आपी प्रांते स्वर्गे गया.

"प्राज्ञ पुरुषोए चैत्य शब्दवडे जिनेंद्र मूर्ति कहेल छे ते सत्य छे; केमके सय्यंभव मुनि चैत्यने जोई ते शब्दमां रहेल धातुनो अर्थ चित्तमां धारी उत्तम गति पाम्या छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकोननवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १८९ ॥

व्याख्यान १९० मुं

जिनपूजाविधि.

कल्याणकानि पंचापि, स्मर्त्तव्यान्यर्चणक्षणे ।
पंचैवाभिगमा धार्या विध्यनुल्लंघ्य पूजनम् ॥ १ ॥

भावार्थ.

"पूजा वखते पांच कल्याणकनुं स्मरण करवुं, पांच अभिगम धारवा, अने पूजाना विधिनुं उल्लंघन करवुं नहि."

विशेषार्थ.

पूजा वखते पांच कल्याणकनुं स्मरण करवुं ते आप्रमाणे-पूजा कर्या पहेलां बे हाथ जोडी मनमां धारेला प्रभु संबंधी च्यवनकल्याणक आ प्रमाणे विचारवुं-"हे जिनेंद्र! तमे अमुक विमानमांथी चवी अमुक माताना उदरमां अवतर्या; अमारा जेवा जीवोने तारवा तमे मनुष्यस्वरूप धारण कर्युं छे. अहो! अमारा मोटां भाग्य छे." आ प्रमाणे चिंतवी प्रभुना देह उपरथी निर्माल्य विगेरे दूर करवा; अने ते पण ज्यां कुंथुवा विगेरे जीवो उत्पन्न न थाय तेवे स्थळे मूकवा.

पछी मोरपीछवडे प्रभुना अंगने प्रमार्जी सुगंधी जळथी भरेल कळश हाथमां लई प्रभुने स्नान कराववुं. ते वखते जन्मकल्याणक संबंधी सर्व स्वरूप भाववुं. पछी शुभ

वस्त्रथी अंग लुंछवुं, अने न्हवणनुं जळ ज्यां जिवहिंसा तथा आशातना न थाय तेवे स्थळे नाखवुं.

अंग लुंछ्या पछी प्रभुनी सन्मुख उभा रही दाढी मूछ विगेरेथी रहित एवुं प्रभुनुं अंग जोई 'अहो! आ जिनेश्वरे आटला साधुओ साथे संसार छोडी, केशोनुं लुंचन करी दीक्षा लीधी' इत्यादि दीक्षाकल्याणक संबंधी भावना भाववी.

पछी अंगपूजा करी छत्र, चामर, भामंडळ, आसन विगेरे सर्व समृद्धि जोई आठ प्रतिहार्ययुक्त एवा केवळज्ञान कल्याणकनी हृदयमां भावना करवी.

पछी चैत्यवंदनादिकने समये पर्यंकासनवाळी अथवा कायोत्सर्गादि अवस्थावाळी प्रतिमा जोई "अहो! आ प्रभु पर्यंकासने अथा काउसग्ग मुद्राए चिदानंदमय सिद्धिपदने प्राप्त थया छे" एम मोक्षकल्याणकनी भावना करवी. आप्रमाणे पांच कल्याणकनुं स्मरण करवुं.

प्रभुनी आगळ पांच अभिगम धारवा. ते आप्रमाणे-

१ प्रभुना मंदिरमां गमन करतां पुष्प, तांबूल, सोपारी, बदाम, छरी, कटारी, सूडी, मुगट अने वाहन विगेरे सचित्त अचित्त द्रव्यनो त्याग करवो. २ मुगट शिवाय बाकीना आभूषणादि अचित्त द्रव्यनो त्याग करवो नहि. ३ एकवडा अने पहोळा वस्त्रनो उत्तरासंग करवो. ४ प्रभुना दर्शन थतांज मस्तके अंजलि जोडी 'जिनाय नमः' एम कही नमस्कार करवो. अने ५ मनमां एकाग्रता करवी.

विधिनुं उल्लंघन कर्या वगर प्रभुनी पूजा करवी एम कह्युं छे ते विधि पूर्वसूरिओए आप्रमाणे कहेलो छे-"स्नान करी घरदेरासरनी नजीक जई प्रथम भूमिनुं प्रमार्जन करवुं. पछी योग्य वस्त्र पहेरी मुखकोश बांधवुं. १. पुरुषे पूजाविधिमां स्त्रीनुं वस्त्र पहेरवुं नहि अने स्त्रीए पुरुषनुं वस्त्र पहेरवुं नहि, कारणके ते वस्त्र कामरागने वधारनार छे. २. शल्य वगरना शुद्ध स्थानमां बुद्धिमान पुरुषे देवालय कराववुं; अने ते घरमां जतां डावी तरफ जमीनथी दोढ हाथ ऊंचुं करवुं. ३. चार विदिशा अने दक्षिणदिशा छोडीने करवुं अने पूजके पूजा करवा माटे पूर्वाभिमुखे अथवा उत्तराभिमुखे बेसवुं. ४. दिशाओनां फळ आ प्रमाणे कहेलां छे.-पूर्वदिशा सामे बेसवाथी लक्ष्मी मळे छे अग्नि दिशामां संताप थाय छे, दक्षिणमां मृत्यु थाय छे, नैरुतदिशामां उपद्रव थाय छे, पश्चिमदिशामां पुत्रनुं दुःख थाय छे, वायव्यदिशामां संतति थती नथी, उत्तरमां महालाभ थाय छे अने ईशानमां धर्मवासना वधे छे. ५।६. विवेकी पुरुषोए प्रथम प्रभुना

१ पुष्प तांबूलादि पोताना उपयोगना समजवा २ मुगट-पाघडीनी उपर शिरपेचनी जेम बधाय छे ते समजवो.

चरणं, जानु, हाथ, खभो अने मस्तक उपर अनुक्रम पूजा करवी. ७. चंदन सहित केशर विना पूजा करवी नहि; अने पोताना शरीरपर ललाटे, कंठे, हृदये अने उदरे एम चार स्थाने तिलक करवां. ८. प्रभाते सुवास (वासक्षेप) थी, मध्याह्ने पुष्पोथी अने संध्याकाळे धूपदीपथी विवेकी पुरुषोए प्रभुनी पूजा करवी. ९. कदि जो ए प्रमाणे त्रिकाल जिनपूजा न थई शके तो श्रावके त्रिकाल देववंदना करवी ते विषे आगममां कह्युं छे के "हे देवानुप्रिय! आजथी जावजीव सुधी त्रिकाल एकाग्रचित्ते चैत्यवंदना करवी. आ अशुचि, अशाश्वत अने क्षणभंगुर एवा मनुष्यावतारमां सार एज छे. तेथी दिवसना प्रथम पहोरे ज्यांसुधी चैत्यने अने साधुने वंदना न कराय त्यांसुधी जलपान न करवुं, मध्याह्ने ज्यांसुधी चैत्यवंदना न थाय त्यांसुधी भोजन न करवुं, अने तेवी रीतेज अपराह्न माटे पण जाणी लेवुं."

अर्हंतना दक्षिण भागे दीपक मूकवो, तेमज ध्यान अने चैत्यवंदन पण दक्षिण भागे करवा. डाबीबाजुए धूप मुकवो. वळी कह्युं छे के "प्रातःकाळे करेली जिनपूजा रात्रिना पापने हणे छे. मध्याह्नकाले करेली जिनपूजा जन्मथी मांडीने करेला पापने हणे छे, अने रात्रे करेली जिनपूजा सात जन्मना पापने हणे छे." वळी कह्युं छे के "जे प्राणी त्रिकालजिनपूजा करे छे ते सम्यक्त्वने शुद्ध करेछे अने श्रेणिकराजानी जेम तीर्थंकर नाम गोत्रनो बंध करे छे."

आ जिनपूजानो विधि द्रव्यथी अने भावथी एम बे प्रकारे छे. चैत्यवंदनभाष्य अथवा प्रवचन सारोध्धारनी वृत्तिमां कहेल "दहतिग अहिगमपणगं," इत्यादि गाथामां बतावेला चोवीश मूळ द्वार अने तेना बेहजार ने चुमोतेर उत्तर भेद द्रव्य भाव पूजानी विधिमां योजवा योग्य छे. तेना उत्तर भेद जो पूजा करनारे पोताना नामनी जेम कंठे करी राखेल होय तो ते पूजकने पूजामां मोटुं फळ प्राप्त थाय छे. विधि पूर्वक करेलुं देवपूजनादि सर्व अनुष्ठान अतिशय प्रशंसनीय छे; अने सातिचार करवामां आवे तो अपायादिकनी पण प्राप्ति थाय छे. अविधिए करेल चैत्यवंदनादिकनुं आगममां प्रायश्चित्त पण कहेलुं छे. महानिशीथसूत्रना सातमा अध्ययनमां आ प्रमाणे सूत्र छे. "अविधिथी चैत्यवंदना करे तेने तेनुं प्रायश्चित्त बताववुं. केमके अविधिथी चैत्यवंदना करनारो बीजाने अश्रद्धा उत्पन्न करे छे." ए कारण माटे देवपूजा वखते विधिमां सावधान रहेवुं. मुख्य वृत्तिए ते वखते मौन राखवुं; जो मौन रही शकाय नहि

१ पगना अंगुठा. २ प्रथमना चारे अंग युग्म जाणवां. ३ पुष्पोथी कहेवाथी अष्टप्रकारी पूजा समजवी. ४ कष्ट, विगेरेनी.

तो पापहेतुवचननो तो सर्वथा त्याग करवो. कारणके जे वखते निसिही कहेली छे ते वखतेज गृहादिकना व्यपारनो निषेध करेलो छे. वळी ते समये पापहेतु कोई संज्ञा पण न करवी. ते विषे धोळकाना निवासी जिनदास श्रेष्ठीनुं दृष्टांत छे आ प्रमाणे—

धोळकामां जिनदास नामे निर्धन श्रेष्ठी रहेतो हतो. एक वखते घीना कुडला अने कपासना बोजा उपाडी खेद पामेला ते शेठे भक्तामरस्तोत्रनुं स्मरण कर्युं. तेथी संतुष्ट थयेल शासन देवीए तेने वशीकरण रत्न आप्युं. एक वखते मार्गमां तेने दुष्ट कर्मथी विख्यात थयेला त्रण चोर मळ्या. एटले तेणे बीजां बाण भांगी नाख्यां, अने चोरनी संख्या प्रमाणे त्रण बाण राख्यां[१]. ते चोर ज्यारे तेने उपद्रव करवा आव्या त्यारे पेला रत्नना प्रभावे त्रण बाण मारीने त्रणेने तेणे मारी नाख्या.

ते अरसामां पाटण नगरमां भीमदेव राजा राज्य करतो हतो. तेणे आ अद्भुत वृत्तांत सांभळी ते शेठने बोलाव्यो अने बहुमान पूर्वक देशनी रक्षा माटे खड्ग आपीने तेने पोलीसनो अधिकारी बनाव्यो. तेवखते शत्रुशल्य नामे सेनापति ईर्ष्याथी बोल्योके.

खांगो तास समप्पिए, जसु खांडे अभ्यास;
जिणहाकुं समप्पिए, तुल चेलउ कपास. १

" हे राजा ! खड्ग तेने आपीए के जेने खड्ग राखवानो अभ्यास होय; जिणहाने तो तोलां, वस्त्र ने कपास आपीए."

शेठे तेना उत्तरमां कह्युं के—

असिधर धणुधर कुंतधर, सत्तिधरावि बहुअ ;
सत्तुसल्ल जे रणसूरनर, जणणि ते विरल पसुअ १

" हे शत्रुशल्य ! खड्गधारी, धनुष्यधारी, भालाधारी अने शक्तिधारी तो घणा छे; पण जे रणमां शूरा रहे तेवा पुरुषने कोई विरल माताज जन्म आपेछे." वळी कह्युं छे के "अश्व, शस्त्र, शास्त्र, वाणी, वीणा, नर अने नारी ते पुरुषविशेषने प्राप्त करीनेज योग्य अथवा अयोग्य थाय छे." आवां वचनथी हर्ष पामी राजाए तेने कोटवाळ बनाव्यो. ते वात सांभळीनेज चोरमात्रे चोरी तजी दीधी.

एक वखते कोई सौराष्ट्र देशना जैनी चारणे 'शेठनुं मन पूजामां केवुं छे' एनी परीक्षा करवा माटे कोई उंटडीनी चोरी करी. ग्रामरक्षकोए तेनी शोध करतां ते उंटडी पेला चारणना घरमां जोई. एटले ते चारणने बांधी सुभटो जिणहा शेठ (कोटवाळ) नी पासे सवारनी देवपूजाने वखते लाव्या. शेठ पूजा करता हता, तेथी

१ एम बताववामाटे के चोर त्रण छे तेथी वधारे बाण नकामा छे आमा तेणे पोतानु पराक्रम सूचव्युं छे.

पुष्पना डींटने तोडवानी संज्ञावडे तेणे सेवकोने पोतानो अभिप्राय जणाव्यो. ते वखते अवसर जाणी चारण बोल्यो-

जिणह्वाने जिणवरह, न मिलें तारो तार;
जिण करे जिणवर पूजिए, ते किम मारणहार. १

"जिनदास शेठ ने जिनेश्वर एकरूप थया नथी; नहि तो जे हाथे जिनवरनी पूजा थाय ते हाथ बीजाने मारवानी संज्ञा केम करे?" वळी चारणे कह्युं के-

चारण चोरी किम करे, जे खोलमे न समाय;
तुं तो चोरी ते करे, जे त्रिभुवनमां न माय. २

"हे शेठ! विचार तो कर के पोताना खोरडामां माय नहि तेवा उंटनी चोरी चारण केम करे? पण तें तो त्रण भुवनमां न माय तेवी चोरी करी छे." आवा चारणना वाक्यथी जिनदास शेठ लज्जा पामी विचारवा लाग्यो-'अहो! में जिनेश्वर भगवंतनी आज्ञा लोपी; आटला काळसुधी में मात्र द्रव्यपूजाज करी, पण जे तत्त्व आ चारणे कही बताव्यो तेनो में कदिपण आदर कर्यो नहि. मने धिकार छे'! पछी ते चारणने गुरुनी जेम मानी शेठे कह्युं-'हे उपकारी पुरुष! तमे सम्यक् प्रकारे मारो आ भव-कूपमांथी उद्धार कर्यो छे.' त्यारपछी ज्यारे जिनदास शेठ पूजा करवा बेसे त्यारे विधिपूर्वक अने भावसंयुक्त पूजा करतो हतो. अन्यदा अविधिए करेल पूजानुं प्रायश्चित्त साधुनी पासे लईने ते निर्मळ थयो.

"सद्बुद्धिवाळा पुरुषो जेम प्रायश्चित्त न आवे तेमज प्रवृत्ति करेछे. आज्ञापूर्वक विधिथीज भव्यपुरुषोनी भक्ति संभवे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ नवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९० ॥

व्याख्यान १९१ मुं.

' अविधिथी करवा करतां न करवुं सारुं ' एम कहेनारा प्रत्ये शिक्षा.

" अविधि करवा करतां न करवुं सारुं " एम जे कहे छे ते उत्सूत्रवचन कहे छे. कारणके "नहि करवाथी भारेकर्मी अने करवाथी लघुकर्मी थाय छे." सूत्रमां पण तेवुंज कहेलुं छे–

यतः । अविहिकया वरमकयं उस्सुयवयणं भणंति समयन्नु ।
पायच्छित्तं अकए गुरु अवितहं कए लहुअं ॥ १ ॥

" अविधिथी करवा करतां न करवुं सारुं–एवुं जे वचन ते उत्सूत्रवचन छे एम समयज्ञ पुरुषो कहे छे. कारणके क्रिया कर्या विना गुरु प्रायश्चित्त आवे छे; अने क्रिया करवाथी लघु प्रायश्चित्त आवे छे" तेथी सर्वदा धर्मक्रिया करवी. पण ते करतां करतां सर्व शक्तिथी विधिपूर्वक करवानो यत्न करवो. कह्युं छे के–

धन्नाणं विहिजोगो, विहिपरकाराहगा सया धन्ना ।
विहिबहुमाणा धन्ना, विहिपरकादुसगा धन्ना ॥

" विधिनो योग धन्यपुरुषोने थाय छे, विधिपक्षनुं आराधन करनारा सर्वदा धन्य छे, विधिनुं बहुमान करनारा पण धन्य छे अने विधिपक्षने दोष नहि आपनारा पण धन्य छे." खेती, वेपार, आहार, औषध अने देवतादिकनुं सेवन ते जो विधिथी कर्युं होय तो अवश्य फळ आपे छे. ते विषे एक दृष्टांत छे ते आप्रमाणे–

विधि उपर चित्रकारनुं दृष्टांत

साकेतपुर नामना नगरमां सुरप्रिय नामे एक यक्ष हतो. ते सत्यदेव तरीके ओळखातो हतो. प्रतिवर्षे तेनी यात्रा (मेळो) भराती, ते वखते तेनी मूर्तिने चितरवामां आवती हती. पण चितर्या पछी ते यक्ष चित्रकारने मारी नाखतो हतो; अने जो चितरावे नहि तो ते लोकोने मारतो हतो. एवी रीते ते यक्षे घणा चित्रकारोने मृत्यु पमाडी दीधा. आथी त्रास पामीने साकेतनगरना सर्व चित्रकारो पलायन करी बीजे गाम जता रह्या. ते वात सांभळीने राजाए प्रजानो नाश थवाना भयथी सुभटो मोकली ते चित्रकारोने पाछा बोलाव्या. अने ते बधाना नामनी चीठीओ करीने एक

घडामां भरी पछी तेमांथी प्रतिवर्षे एक चीठी कुमारी कन्यापासे कढावे, अने तेमां जेनुं नाम नीकळे ते यक्षनी मूर्ति चितरे. आप्रमाणे ठराव करवामां आव्यो.

एक वखते कौशांबी नगरीथी कोई चित्रकारनो पुत्र पोतानी चित्रकळानी कुशळता सिद्ध करवाने माटे त्यां आव्यो अने जेने एकज पुत्र छे एवी कोई चित्रकारनी वृद्धा स्त्रीने घेर उतर्यो. ते वर्षे ते वृद्धाना पुत्रना नामनी चीठी पेला घडामांथी नीकळी. एटले यमराजना आमंत्रणपत्रनी जेम ते वात सांभळीने डोशी कराघातवडे उरस्थलने कूटवा लागी, अने घणुं रुदन करवा लागी. ते जोई पेला चित्रकारकुमारे वृद्धाने पूछ्युं–'माता! केम रुओ छो?' वृद्धाए सत्य हकीकत कही. एटले कौशांबीथी आवेल चित्रकारकुमार बोल्यो–'माता! स्वस्थ थाओ. हुं पण तमारो पुत्रज छुं तेथी तमारा पुत्रने बदले हुं जईश.' वृद्धा बोली–'हे वत्स! तुं मारो प्राहुणो छे, तने मरवा माटे केम मोकलाय?' एम युक्तिपूर्वक डोशीए तेने घणुं समजाव्यो, पण ते समज्यो नहि अने ते वृद्धाना पुत्रना वारामां गयो.

त्यां जई प्रथम तो तेणे छठ्ठ तप कर्युं. पछी स्नान करी अंगे विलेपन रची बे धोयेलां वस्त्र पहेर्यां. पछी सुंदर एवा चंदन, कस्तूरी, कपूर अने अगरथी मिश्र करेला रंगना नवा कचोळां भरी, नवी पींछीओ करी मुख उपर अष्टपुट वस्त्र बांधी ते चित्रकार निर्भय अने स्वस्थचित्त थई यक्षने चितरवा लाग्यो. ज्यारे ते चितरी रह्यो त्यारे यक्षने नमस्कार करी तेना पगमां पड्यो, अने आ प्रमाणे विनयपूर्वक बोल्यो–" हे यक्षदेव! तमारा योग्य चित्र करवाने कोई पण समर्थ नथी, तेथी में जे कांई अयुक्त कर्युं होय तेने माटे क्षमा करजो." इत्यादि स्तुतिवचनो कही पुनः यक्षना चरणमां पड्यो. आ प्रमाणे करवाथी ते यक्ष प्रसन्न थयो अने बोल्यो–' हे चित्रकारपुत्र! तारी जे इच्छा होय ते मागी ले.' ते बोल्यो–" हे तात! आ नगरीमांथी मरकीनुं निवारण करो, अने सर्व चित्रकारोने अभयदान आपो, एटलुं परहित थवाथीज हुं खुशी छुं." यक्ष बोल्यो–" हे परोपकारी! आजथी आ नगरीना लोकोने अने चित्रकारोने मारो भय नहि रहे, अने तेमनुं कल्याण थशे; पण तुं तारे माटे कांईक मागी ले." युवान चित्रकार बोल्यो–" हे नाथ! जो मारी उपर संतुष्ट हो तो मने एवुं वरदान आपो के कोई मनुष्यना शरीरनो एक भाग जोवाथी हुं तेनुं आखुं रूप यथार्थ चित्री शकुं." यक्षे 'तथास्तु' कही वर आप्यो, अने पछी ते अंतर्धान थई गयो. चित्रकारकुमार वरदाननी प्राप्ति थवाथी मनमां हर्ष पामतो सतो पाछो कौशांबी नगरीए आव्यो.

एक दिवसे कोई दूत शतानीक राजानी सभामां आव्यो. तेणे दूर देशना संदेशा कह्या. ते समये राजाए तेने पूछ्युं–' अरे दूत! बीजा राज्योथी मारा राज्यमां शी

न्यूनता छे ते कहे.' दूत बोल्यो-'हे स्वामी! तमारा राज्यमां बधुं छे पण एक चित्रसभा नथी, तो देवसभा जेवी एक चित्रसभा करावो.' तेनुं आ वचन सांभळी राजाए पोताना राजमहेलनी पासे सुधर्मा सभा जेवी एक सभा करावी. पछी ते सभा सर्व चित्रकारोने चित्र करवाने वहेंची आपी. यक्षना वरदानने प्राप्त करनार पेला चित्रकारने अंतःपुरनी नजीकनो भाग आप्यो. दैवयोगे मृगावती राणीनो दिव्य आकृतिमांथी देदीप्यमान एवा पगनो अंगुठो जाळीआमांथी चित्रकारना जोवामां आव्यो. मात्र अंगुठाना जोवाथी ते चित्रकारे मृगावतीनुं सर्व रूप यथार्थ आळेखी लीधुं. तेनुं रूप चितरती वखते तेना साथळ उपर मषीनुं एक टीपुं पड्युं. चित्रकारे तेने लुंछी नाख्युं. तो पण फरीवार पड्युं. एम त्रेणवार पडवाथी चित्रकारे जाण्युं के देवीने आ अंग उपर आवुं लांछन हशे पछी तेणे त्यां लांछन कर्युं अने जेवी मृगावती हती तेवीज आळेखी. दिव्य प्रभावथी तेमां कांईपण न्यूनाधिकपणुं थयुं नहि. चित्रकार तेने आळेखीने बपोर थवाथी भोजन करवामाटे घेर गयो. तेवामां शतानीक राजा चित्रसभा जोवा माटे त्यां आव्यो. ते चित्रसभा जोई राजा घणो खुशी थयो. तेवामां त्यां राणी मृगावती सर्वांगे चितरेली तेना जोवामां आवी. ज्यां जंघानो भाग जुए त्यां ते ठेकाणे मषीनुं लांछन जोई राजाने कोप चड्यो. 'अरे आ शुं! आ चित्रकारे मारी राणीनी जंघा परनुं लांछन शीरीते जाण्युं? जरूर ए पापीए मारी स्त्रीने भोगवी हशे. नहि तो जंघानुं लांछन शी रीते जाणे?' पछी क्रोधथी सेवकोने आज्ञा करी के 'हे सेवको! आ चित्रकारने शूलीए चडावी दो.' ते सांभळी सर्व चित्रकारोए एकठा थई राजाने विनंति करीके 'हे स्वामी! आने कया अपराधथी आप हणो छो?' राजाए कह्युं-'तेणे मृगावती राणीनी जंघापरनुं लांछन शी रीते जाण्युं!' चित्रकारो बोल्या-'हे स्वामी! यक्षना वरदानथी ते चित्रकार कोईना रूपनो एक भाग जोयो होय तो तेनुं स्वरूप यथास्थित आळेखी शके छे. तेणे राणी मृगावतीना पगनो अंगुठो जोयेलो ते उपरथी तेणे मृगावतीनुं आखुं रूप आळेख्युं छे.' ते सांभळी राजाए तेनी प्रतीति करवा माटे कोई कुब्जा दासीनुं मुख गोखमांथी बताव्युं एटले ते अनुसारे तेणे कुब्जानुं यथार्थ स्वरूप आळेखी दीधुं. तथापि राजाए ते चित्रकारना जमणा हाथनो अंगुठो छेदी नाख्यो. चित्रकारे फरीवार पेला यक्षनी आराधना करी. यक्षे प्रसन्न थई डाबा हाथवडे चित्र करवानी सिद्धि आपी. त्यारथी ते चित्रकार डाबा हाथे चित्र करवा लाग्यो.

एक वखते ते चित्रकारे मनमां विचार्युं के "मारा ज्ञानने धिक्कार छे के जेथी हुं निरपराधी छतां राजाए मारा जमणा हाथनो अंगुठो छेदी मने वृथा हेरान कर्यो. तेथी जो आ राजाने मूळमांथी उखेडी नांखुं तोज मारुं नाम चित्रकार; जोके हुं अशक्त

छुं पण बुद्धिमान छुं, तेथी ए शक्तिसंपन्न राजाने मूळमांथी उखेडी नाखीश; कारणके बुद्धिमाननी आगळ इंद्र पण शी वीशातमां छे ? " आ प्रमाणे चिंतवी ते चित्रकारे पट उपर मृगावतीनुं रूप चितर्युं. पछी पोतानो परिवार लई कौशांबी नगरीमांथी बहार नीकळ्यो; अने अवंतीनो राजा प्रचंड शासनवाळो चंडप्रद्योत शतानीक राजानो बळवान् शत्रु छे एम जाणी ते अवंतीए गयो.

चंडप्रद्योत राजानी आगळ मृगावतीनुं सुंदर चित्र मूकी नमन करी ते उभो रह्यो. चंडप्रद्योत पटमां आळेखेली मृगावतीने जोईने मोह पामी गयो, अने मनमां तेणीना रूपनुं वर्णन करवा लाग्यो-' अहो ! रंभाथी पण अधिक रूप ! चमत्कारी लावण्य ! अने अति सुंदर आकृति !' पछी राजाए चित्रकारने पूछ्युं-" हे चित्रकार ! तें पोतानी कळानी कुशलता दर्शाववा माटे आ सुंदरीनुं रूप आळेख्युं छे ? वा कोईनी नकल करी छे ? सत्य होय ते कहे." चित्रकार बोल्यो-" राजेंद्र ! में कोई स्त्रीना रूपनी आ प्रतिकृति आळेखेली छे, परंतु तेणीनुं जेवुं रूप छे तेवुं रूप आळेखवाने ब्रह्मा पण समर्थ नथी तो मारा जेवा मनुष्य तो कोण मात्र !" चंडप्रद्योते कह्युं-"त्यारे कहे ते कई स्त्रीनुं रूप छे ?' चित्रकार बोल्यो-" हे राजन् ! शतानीक राजानी स्त्री मृगावतीनुं आ रूप छे. इंद्रनी इंद्राणीथी पण ते रूपमां अधिक छे. ते आप जेवा महाराजानेज योग्य छे; पण विधिना विपरीतपणाथी ते राजाने मळी छे. हवे दैवनी अनुकूळताथी ते तमारी पत्नी थशे." आ प्रमाणे कही चित्रकार पट उपर चितरेली मृगावती तेने आपीने पोताने स्थानके गयो.

अहीं चंडप्रद्योते ते दिवसथी निश्चय कर्यो के आ मृगावती शतानीक राजाने समजावीने अथवा बळात्कारे मारे ग्रहण करवी. पछी तेणे शतानीकनी उपर एक पत्र लखी केटलीक शिखामण दईने वज्रजंघ नामना दूतने मोकल्यो. तेणे कौशांबीमां आवी शतानीकने नमी चंडप्रद्योतनो आप्रमाणे संदेशो कह्यो-" हे राजेंद्र, मारा स्वामीनो संदेशो सांभळो. वृक्षने जेम मणि शोभे नहि तेम तारी पासे मृगावती शोभती नथी. तेथी तेने मारी तरफ मोकली दे; कारणके मणि चरणमां शोभे नहि, मुगटमांज शोभे. वळी जो जीववानी अने राज्यनी इच्छा होय तो मृगावतीने अहीं मोकलीने तेनी रक्षा कर. कारणके विचक्षण पुरुषोए एक अंशनो नाश करीने पण सर्व अंशनो नाश थतो अटकाववो योग्य छे." आ प्रमाणेनां दूतनां वचन सांभळी शतानीक राजा क्रोधायमान थई रक्तलोचनवाळो थयो सतो दूत प्रत्ये बोल्यो-"हे दूत ! शुं तारो स्वामी विकल थई गयो छे ? के तारा स्वामीने जीववा उपर शुं कंटाळो आव्यो छे ? अथवा मारे हाथे मृत्यु पामीने शुं नरकमां जवानी तेनी इच्छा छे ? के जेथी ते मृगावतीनी मागणी करे छे."

आ प्रमाणे कही दूतनो अत्यंत तिरस्कार करी 'तुं दूत होवाथी अवध्य छे' एम कही तेने पाछळनी बारीएथी काढी मूक्यो. शतानीके अपमान करी काढी मूकेलो ते लोहजंघ दूत चंडप्रद्योतनी पासे आव्यो, अने शतानीके जे कह्युं हतुं ते बधुं निवेदन कर्युं. पछी चंडप्रद्योते चौद राजाओ सहित पोतानुं लश्कर लई कौशांबी तरफ प्रयाण कर्युं. तेनुं सैन्य चालतां दिशाओमांथी एटली रज उडी के सूर्य निस्तेज थई गयो; तेमज ते सैन्यना भारे करीने पृथ्वी कंपवा लागी. एवी रीते अविच्छिन्न प्रयाण करतो चंडप्रद्योत अल्प दिवसमां कौशांबी नगरीनी नजिकमां आव्यो. राजा शतानीक तेने आवेलो जाणी अत्यंत भयभीत थई गयो. तेने एवो भय लाग्यो के जेथी तेने अतिसारनो महाव्याधि थयो, अने थोडा वखतमां ते यमद्वारमां पहोंची गयो. अहो! कोइनाथी पण मरणनुं उल्लंघन थई शकतुं नथी. कह्युं छे के "दिव्य ज्ञानना धरनारा, त्रण जगत्ने वंदन करवा योग्य, अनंत वीर्यवाळा अने देवेंद्र तथा असुरवृंद जेमना चरणमां नमी रह्या छे एवा जिनेश्वरो, पराक्रमी चक्रवर्तीओ, बळवान् वासुदेवो, बलभद्रो अने प्रतिवासुदेवो पण यमराजना मुखमां अशरण थईने प्रवेश करे छे. खरेखर विधि अनुलंघ्य छे. पाताळमां रहेनारा भुवनपति देवताओ, स्वेच्छाचारी व्यंतरो, ज्योतिष्क विमानमां वसनारा चंद्रथी मांडी तारा सुधीना देवताओ अने सौधर्म विगेरे देवलोकमां सुखे रहेनारा वैमानिक देवताओ ते सर्वे पण यमराजना निवासमां जईने वसे छे तो पछी शेनो शोक करवो?"

चंडप्रद्योतना भयथी शतानीक राजा मृत्यु पाम्यो एटले मृगावतीए विचार्युं के "मारो पुत्र बाळक छे अने अल्प बळवाळो छे, तेथी कांईक प्रपंच करीने शीलनी तथा पुत्रनी रक्षा करुं." आवुं विचारी तेणीए अवंतिपतिने जणाव्युं के "हवे हुं तमारे आधीन छुं. पण मारो पुत्र हजु बाळक छे तेथी आसपासना सीमना राजाओ मारुं राज्य लई लेशे; माटे मारा नगरनी फरतो मजबुत किल्लो करावी आपो, अने आ नगरी जळ तथा अन्न विगेरेथी भरपूर करावी दो." राजाए मृगावती परना मोहथी अवंतीथी ईंटो मगावीने कौशांबी फरतो मजबुत कोट करावी दीधो अने ते नगरी अन्नजळथी पूर्ण करी दीधी. पछी राणीए पोताना मंत्रीओने बोलावीने कह्युं-"आ किल्लो बार वर्ष सुधी कोईथी लई शकाय नहि तेवो थयो छे, माटे हवे मारा शीलनी रक्षामाटे दुर्गरोध करो अर्थात् दरवाजा बंध करी दो." मंत्रीओए ते प्रमाणे कर्युं.

हवे प्रद्योतन राजाए मृगावतीने तेडावी एटले मृगावतीए कहेवराव्युं के "हे राजा! हुं चेटक राजानी पुत्री होवाथी स्वप्ने पण एवुं अकार्य नहि करुं." ते सांभळी चंडप्रद्योत विलखो थई विचारवा लाग्यो के "अहो! आणे छळ करीने मारुं सर्वस्व

लई लीधुं. हवे ते युद्ध करवा सज्ज थयेली छे. तेथी हाल पाछो मारे नगरे जई सज्ज थईने फरी आवुं." आम निश्चय करी राजाए पोताने नगरे जई आवी पुनः तेनी नगरीने मोटा सैन्यवडे घेरी लीधी. ते समये मृगावतीए चिंतव्युं के "आ समये जो श्रीवीरप्रभु अहीं पधारे तो सारुं." तेना पुण्यबळथी श्रीवीरप्रभु तेज अरसामां त्यां पधार्या, मृगावती महान् समृद्धिसहित वांदवा गई. त्यां चंडप्रद्योत पण आव्यो. ते अवसरे अनुकूळ वखत जोई मृगावतीए पोताना पुत्रने चंडप्रद्योतने खोळे सोंपी, तेनी तेनेज भलामण करी पोते प्रभु पासे दीक्षा लीधी; अने तेज भवे केवळज्ञान पामीने मुक्तिपदने प्राप्त थई.

आ दृष्टांतमां पाछळनी कथा तो प्रसंगे लखवामां आवी छे. बाकी अहीं तो तेना प्रारंभना भाग उपरथी एटलीज शिखामण लेवानी छे के "यक्ष दुष्ट हतो पण विधिवडे पूजवाथी प्रसन्न थयो हतो. तेथी पूज्य सर्वज्ञ प्रभुए मान्य करेलो अत्यंत शुद्ध विधिज जिनपूजाने विषे जोडवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकनवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१९१॥

व्याख्यान १९२ मुं.

देवद्रव्य ओळववाथी जे दोष लागे छे ते कहे छे.

अक्षतादिकद्रव्यस्य, भक्षको दुःखमाप्नुयात् ।
तत्ततो यत्नतो रक्ष्यं, देवद्रव्यं विवेकिना ॥

भावार्थ

"अक्षत विगेरे देवद्रव्यने भक्षण करनारा दुःख पामे छे. तेथी विवेकी पुरुषोए देवद्रव्यनुं यत्नथी रक्षण करवुं." आनो स्पष्टार्थ शुभंकर श्रेष्ठीनी कथाथी जाणवो. ते कथा आ प्रमाणे—

शुभंकर श्रेष्ठीनी कथा.

कांचनपुर नामना नगरमां शुभंकर नामे धनाढ्य श्रेष्ठी वसतो हतो. ते नित्य जिनपूजा अने गुरुवंदना करतो हतो. एक वखते ते जिनमूर्ति आगळ नमीने उभो रह्यो. ते समये कोई देवताए भगवंतनी आगळ दिव्य अक्षतना त्रण ढगला पूर्वे करी राखेला ते तेना जोवामां आव्या. ते रांध्या वगरना छतां अत्यंत सुगंध आपता हता. ते जोई जीभना स्वादने वश थयेला शुभंकर शेठे पोताने घेरथी तेनाथी त्रगणा बीजा चोखा मंगावीने त्यां मूक्या अने ते दिव्य चोखा पोताने घेर लई जई तेनी खीर करावी. ते वखते तेनी सुगंध सर्वत्र प्रसरी रही.

तेवामां कोई मासक्षपणी सत्क्रियावान् मुनि ते श्रेष्ठीने घेर भिक्षा माटे आवी चड्या. श्रेष्ठीए ते खीरमांथी थोडी तेमने वहोरावी. मुनि परमार्थ जाण्या शिवाय ते क्षीर झोळीमां लई आगळ चाल्या. ते मुनि सडतालीश दोषथी रहित एवा आहारने लेनारा होवाथी शुद्ध कोठावाळा हता. परंतु आ अयोग्य आहारनी सुगंध मात्र ग्रहण करवाथी ते मुनि विचारवा लाग्या के–' अहो ! आ श्रेष्ठीनो अवतार अमाराथी श्रेष्ठ छे. कारणके ते आवुं अतिमनोहर भोजन यथेच्छपणे नित्य खाय छे.' अनुचित आहारना गंधमात्रथी मुनिनुं चारित्रध्यान दूर चाल्युं गयुं. तेथी आवुं दुर्ध्यान करता गुरु पासे आव्या. वळी त्यां विचारवा लाग्या के " आवा मनोज्ञ आहारनी गुरु समक्ष आलोचना करवानी शी जरूर छे ? केमके आजे अतिमनोहर आहार मळ्यो छे; तेथी कदि स्वादना लोभे गुरु पोतेज बधो खाई जाय तो पछी हुं शुं करुं ? माटे आलोचना करवाथी सर्युं. " आवो माठो विचार करी गुरुने बताव्या शिवाय ते मुनि सत्वर भोजन करवा बेठा. भोजन करतां चितव्युं के " अहो ! आनो स्वाद देवताने पण दुर्लभ छे. आजे खरेखरी जन्मनी सार्थकता थई. आटला वखत सुधी में देहनुं दमन वृथा कर्युं, अने शरीरने फोगट शोषित कर्युं. आवो आहार जेने नित्य मळे छे तेनो जन्मज सफळ छे. '' आवी रीते चिंतवता सता ते आहार जमी सुखे सुई रह्या. तेमने एवी निद्रा आवी के आवश्यक क्रियाना समये पण उठ्या नहि. एटले सूरिए विचार्युं के ' आ शिष्य सर्वदा सुविनीत छतां आजेज प्रमादी थयो छे तेनुं कारण तेणे अशुद्ध आहार करेलो लागे छे. ' तेवामां प्रातःकाळ थवाथी पेलो श्रावक गुरुने वांदवा आव्यो. त्यां ते मुनिने सुता जोई तेणे कारण पूछ्युं, एटले सूरि बोल्या–' हे श्रावक ! काले आ मुनि आहार करीने सुता छे ते उठाड्या पण उठता नथी.' ते सांभळी श्रेष्ठी बोल्यो–' हे पूज्य ! काले मारे घेरथीज तेमणे आहार वहोर्यो छे. ' गुरु बोल्या–' हे शेठ ! तमे वहोरावेलो आहार सर्व दोषथी रहित हतो

के नहिं? ' शेठे कह्युं—' दोष तो मारा जाणवामां आव्या नथी, पण में जे चोखा रंधाव्या हता ते मारा घरना अगणा चोखा मूकी जिनमंदिरना चोखा लावीने रांध्या हता. ' आ प्रमाणे सत्य वृत्तांत तेणे भद्रिक भावे कही दीधो. ते सांभळी गुरु बोल्या—' हे श्रावक ! तें ए कार्य योग्य कर्युं नहि. कारणके सिद्धांतमां कह्युं छे के " जिनप्रवचननी वृद्धि करनार अने ज्ञान दर्शन गुणनो प्रभावक एवो श्रावक पण जो जिनद्रव्यनुं भक्षण करे तो ते अनंत संसारी थाय छे; तेवोज श्रावक जो जिनद्रव्यनुं रक्षण करे तो परित्त संसारी थाय छे. " ते विषे एक दृष्टांत छे ते सांभळ—

कोई नगरमां एक द्रव्यवान् शेठ रहेतो हतो. ते पोताना एक पाडोशीने निरंतर पीडा करतो हतो तेथी ते निर्धने विचार्युं के ' कोई पण प्रकारे आ धनाढ्य श्रेष्ठी मारा जेवो निर्धन थाय तेम करुं. एकदा ते श्रेष्ठी नवुं घर चणावतो हतो. ते जोई पेला निर्धने जिनचैत्यनी ईंटोना खंड लावी गुप्त रीते तेमां चणी दीधा. देवद्रव्यनो उपभोग थवाथी ते धनाढ्य श्रेष्ठी अनुक्रमे ते घरमां रहेवाथी निर्धन थई गयो. अन्यदा पेला निर्धने कह्युं—'मने विडंबना करवानुं फळ तें आवुं प्राप्त कर्युं; आ बधुं मारुं कृत्य जाणजे.' पछी ते श्रेष्ठीए सामवाक्यथी तेने संतुष्ट कर्यो एटले तेणे पोतानुं करेलुं कृत्य जणाव्युं; ते जाणी श्रेष्ठीए घरनी भीतमांथी पेला ईंटोना खंड काढी नंखाव्या अने तेना प्रायश्चित्तमां एक नवुं चैत्य कराव्युं. पछी ते पाछो सुखी थयो.

आ प्रमाणेनी कथा कहीने सूरिए कह्युं—'हे श्रेष्ठी ! तें देवद्रव्य भक्षण कर्युं छे तेथी तने मोटुं पाप लाग्युं छे.' ते सांभळी भय पामेलो ते श्रेष्ठी बोल्यो—'मने पण गई कालेज घणा द्रव्यनी हानि थई छे.' सूरि बोल्या—' हे शेठ ! तारुं तो बाह्य धन गयुं पण आ मुनिनुं तो अंतरंग धन गयुं. हवे तेनी आलोचनामां तारे एटलुं करवुं योग्य छे के तारा घरमां अत्यारे जेटलुं द्रव्य छे तेवडे जिनचैत्य कराववुं.' श्रेष्ठीए तेमप्रमाणे कर्युं. पछी आचार्ये पेला मुनिने रेचक पाचक औषधो पाईने तेनो कोठो शुद्ध कर्यो; अने जे पात्रमां तेणे आहार लीधो हतो ते पात्रने छाण तथा रक्षानो लेप करी त्रण दिवस सुधी तडके राख्युं, त्यार पछी ते ग्रहण करवा योग्य थयुं. ते मुनिए सूरिपासे ते पापनी आलोचना ग्रहण करी, अने तपस्यावडे शुद्ध थई संयमवडे आत्मसाधन कर्युं.

आ कथा उपरथी सार ए ग्रहण करवो के " श्रावके अधिक द्रव्य आपीने पण देवद्रव्य लेवुं नहि, तेमज श्रावकोने परस्पर देवद्रव्य आपवुं नहि. "

वळी देवद्रव्य संबंधीज दोष कहे छे.

दीपं विधाय देवानां, पुरतो गृहमेधिना ।
तेन दीपेन नो गेहे, कर्त्तव्यः कज्जलध्वजः ॥

भावार्थ.

"श्रावके देवनी आगळ दीपक करीने ते दीपकवडे घरमां अग्नि पण सळगाववो नहि."

देवदीपक संबंधी कथा.

इंद्रपुर नामना नगरमां देवसेन नामे एक धनाढ्य श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने घेर एक उंटडी हमेशां आवती हती. भरवाड तेने मारीने पोताने घेर लई जतो हतो, छतां पुनः ते उंटडी पेला शेठने घेर आवती हती. एक वखते शेठे गुरुने पूछ्युं-'आ उंटडी मारेज घेर प्रीतिथी आवे छे तेनुं शुं कारण?' सूरि बोल्या-"आ उंटडी पूर्वभवे तारी माता हती. ते प्रतिदिन जिनेश्वरनी आगळ दीवो करीने पछी ते दीवावडे घरनां काम करती, अने धूपना अंगारावडे चुलो सळगावती हती. ते पापथी आ भवे ते उंटडी थई छे. पूर्वभवे तारी माता होवाथी तने पुत्रने अने पोताना घरने जोई तें तारे घेर आववाथी खुशी थाय छे. हवे तुं तेनी पासे जई तेने पूर्वभवना नामथी बोलावी तेना कानमां देवद्रव्यने विनाश करवानी हकीकत कहीश तो ते जातिस्मरण अने बोध पामशे." शेठे गुरुना कहेवा प्रमाणे कर्युं एटले ते तत्काळ ज्ञान पामी. पछी गुरुनी साक्षीए सचित्त विगेरेनो नियम लई, मनना पश्चात्तापवडे पूर्वेनुं पाप बाळी दई ते उंटडी देवपणाने प्राप्त थई.

आटलामाटेज पूर्वसूरिओए कह्युं छे के "जिनेश्वर भगवंतनी पूजाभक्तिने निमित्ते दीप, धूप करीने पछी जे मूढ तेनावडे मोहथी पोतानुं कार्य करेछे ते बहुवार तिर्यंच-पणुं पामे छे." माटे देवसंबंधी दीपकथी संसारी लेख वांचवा नहि, सावद्य नाणानी परीक्षा करवी नहि, अने ते दीपवडे पोताना कामनो बीजो दीपक पण सळगाववो नहि. उपलक्षणथी देवसंबंधी केशरचंदनमांथी पोताने ललाटे तिलक करवुं नहि, अने देवजळथी पोताना हाथ पण धोवा नहि. पण जो कोई स्नानादिक माटे जळ लावीने चैत्यमां मूके तो तेनावडे हाथ धोवामां दोष नथी. एमप्रमाणे सर्व कार्यमां विवेक करवो.

हवे चैत्यद्रव्य शीघ्र आपी देवुं ते विषे कहे छे.

चैत्यायत्तीकृतं द्रव्यं, दातव्यं शीघ्रमेव च ।
वृद्धिश्च देवद्रव्यस्य, निष्पाद्या शुद्धबुद्धिभिः ॥

"चैत्य निमित्ते बोलेलुं के आपवा कहेलुं द्रव्य सत्वर आपी देवुं, अने शुद्ध बुद्धिथी देवद्रव्यनी वृद्धि करवी."

आनो भावार्थ एवो छे के देवद्रव्य एकक्षण पण राखवुं नहि. बीजानुं करज होय ते आपवामां पण विवेकी पुरुषो ज्यारे सर्वथा विलंब करता नथी तो पछी देवद्रव्य

आपवामां तो केमज विलंब करे? जो सद्य आपवाने असमर्थ होय तो प्रथमथीज पखवाडीया के अठवाडीया पछी आपवानो स्फुट रीते अवधि करवो. पछी ते अवधिनुं उल्लंघन थाय तो पूर्वोक्त देवद्रव्यना उपभोगना दोषनो प्रसंग आवे. विलंब करवाथी सारा श्रावकने पण दुर्गतिनी प्राप्तिनुं कारण थाय छे. ते विषे एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

ऋषभदत्त श्रेष्ठीनी कथा.

महापुर नगरमां ऋषभदत्त नामे परम आर्हत् श्रेष्ठी हतो. एक वखते पर्वदिवसे ते चैत्यमां गयो. त्यां श्रावको जीर्ण चैत्यना उद्धार माटे एक टीप करता हता. तेमां ऋषभदत्त पासे द्रव्य नहि होवाथी उधारे आपवानुं कही कांईक द्रव्य नोंधाव्युं. पछी परस्पर कामनी व्यग्रताने लीधे तत्काळ ते आपी शकायुं नहि. अन्यदा दैवयोगे तेना घरमां चोरनी धाड पडी. तेनुं सर्वस्व लुंटाई गयुं. तेमां शेठे भय बताववा शस्त्र हाथमां लीधुं एटले चोरोना शस्त्रघातथी हणाईने ते मृत्यु पाम्यो; अने तेज नगरमां रहेनारा कोई निर्दय, दरिद्री अने कृपण एवा महिषवाहकने घेर पाडो थयो. ते भीस्ती निरंतर प्रत्येक घेर ते पाडा पासे जळ विगेरेनो भार वहन करावता लाग्यो. ते नगरनी बांधणी ऊंचा टेकरा उपर होवाथी ते पाडाने अहोरात्र जळादि भार लईने ऊंचे चडवुं पडतुं हतुं, तेथी निरंतर क्षुधातुर रहेवाथी अने ते साथे चाबुख विगेरेना प्रहारथी ते महाव्यथा पामतो हतो.

एक वखते कोई नवुं चैत्य बंधातुं हतुं. तेना किल्लाने माटे ते जळ वहन करवा गयो. त्यां चैत्यपूजा विगेरे जोई तेने जातिस्मरण थयुं, तेथी ते हृदयमां चैत्यभक्ति करवा लाग्यो. पछी ज्ञानीनां वचनथी तेने पोताना पितानो जीव जाणी तेना पूर्वभवना पुत्रे द्रव्य आपीने छोडाव्यो; अने पूर्वभवे देवुं रहेल देवद्रव्य हजारगणुं आपीने तेने अनृणी कर्यो. पाडो अनशन करी स्वर्गे गयो. ए प्रमाणे देवद्रव्य आपवामां विलंब करवा विषे दृष्टांत जाणवुं.

देवद्रव्यनी वृद्धि डाह्या माणसोए निर्दोष वृत्तिथी करवी. एटले ते द्रव्यथी पंदर कर्मादान तथा नठारा व्यापार कर्या शिवाय शुभव्यवहारादिकथीज देवद्रव्य वधारवुं कह्युं छे के "प्रभुनी आज्ञा विनाना कार्यवडे देवद्रव्य वधारतां छतां पण केटलाक मूढ जीवो मोहवडे अज्ञानी होईने भवसागरमां डुबे छे."

श्रावकोने तो देवद्रव्य व्याजे पण देवुं नहि तेम श्रावके लेवुं पण नहि. श्रावक शिवाय बीजाने कांईक अधिक किंमतनुं घरेणुं विगेरे राखीने व्याजवडे तेनी वृद्धि करवी योग्य छे. सम्यक्त्वसत्तरीनी टीकामां शंकाशनी कथा प्रसंगे ते प्रमाणे कहेलुं छे.

देवद्रव्य विनाश पामतुं जोई जे कोई तेनी रक्षा न करे तेने पण दोष लागे छे. कह्युं छे के " श्रावक जो देवद्रव्य खाय अथवा ते खवाई जतां तेनी उपेक्षा करे तो ते बुद्धिहीन थाय, अने पापकर्मवडे लेपाय." वळी देवद्रव्य भक्षण करवुं ते उत्कृष्टी आशातनामां गणाय छे: प्रतिमाने धूप धाणुं विगेरे अथडाई जवुं अथवा श्वास लागवो के वस्त्रनो छेडो अडी जवो इत्यादि जघन्य आशातना कहेवाय छे. अहीं कोई शंका करे के 'त्यारे तो प्रभुनी प्रतिमा उपर वाळाकुंची घसवाथी पण अवज्ञा (आशातना) थवी जोइए.' आ कहेवुं बराबर नथी केमके आशातना केम थाय छे तेनो अभिप्राय जाण्या विनानी आ शंका छे. लोकप्रसिद्धिथी पण एम छे के अपमान के तिरस्कारनी बुद्धिथी जे क्रिया करवी ते आशातना छे, पण सत्कार के हित विगेरे बुद्धिथी जे उचित क्रिया कराय ते आशातना नथी. एथीज इंद्रे करेलुं स्नात्र ते पूजा छे. अने कमठे करेलुं स्नात्र ते आशातना छे. लोकमां पण राजा विगेरेना चरणने सेवक तेलवडे मर्दन करे, मुष्टिथी ताडन करीने चांपे ते अपमान कहेवातुं नथी; एवी रीते अहीं पण वाळाकुंची घसवी, वस्त्रथी मर्दन करवुं (लुंछवुं) अने जळस्पर्श करवो (जळ नाखवुं) विगेरेमां आशातनानो संभव नथी. एकज जातनुं आचरण अभिप्रायना जुदापणाथी अमृतरूप अने विषरूप थाय छे.

धोया वगरना वस्त्रथी पूजन करवुं, बिंबनुं पृथ्वीपर पडी जवुं विगेरे मध्यम आशातना छे. अने प्रतिमाने पग लगाडवो, बळखा विगेरेनो छांटो लगाडवो, देवद्रव्य ओळववुं, बिंबनुं भांगवुं अने तेनी हेलना करवी इत्यादि उत्कृष्ट आशातना छे.

कदि कोई श्रावक ज्ञातिसंबंधे आमंत्रण करे अने ते श्रावक देवद्रव्यनो भक्षक होय छतां तेने घेर कदि खावुं पडे तो जेटली किंमतनुं भोजन कर्युं होय तेटलुं द्रव्य जिनालयमां मूकी देवुं. तो तेथी भोजन करनार निष्पाप थाय एम वृद्धवचन छे.

" पोताना द्रव्यनी जेम यत्नवडे देवद्रव्यनी रक्षा करवी, अने तेवीज रीते वृद्धि करवी. एम करवाथी जिनाज्ञानुं आराधक थवाय छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ द्विनवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९२ ॥

व्याख्यान १९३ मुं

देवद्रव्य अल्प पण लेवाथी दोष लागे छे.

देवस्वभक्षणे दोषः, अहो कोपि महात्मनः ।
सागरश्रेष्ठिनो ज्ञातं, धार्यं देवस्वरक्षकैः ॥

भावार्थ.

"देवद्रव्यनुं भक्षण करवामां अहो ! केटलो दोष! ते उपर महात्मा सागरश्रेष्ठीनुं दृष्टांत देवद्रव्यना रक्षकोए धारी राखवा योग्य छे."

सागरश्रेष्ठीनी कथा.

साकेतनगरमां सागर नामे श्रेष्ठी हतो तेने सुधर्मी (सारी निष्ठावाळो) जाणी, बीजा श्रावकोए चैत्यद्रव्य सोंपीने कह्युं–"आ द्रव्यमांथी चैत्यनुं काम करनारा सुतार विगेरे माणसोने तमारे पगार विगेरे चुकववुं." लोभथी पराभव पामेलो ते शेठ सुतार विगेरे मजुरोने रोकडुं द्रव्य न आपतां आटो गोळ विगेरे चीजो देवद्रव्यथी संग्रह करीने आपवा लाग्यो; अने तेनो जे लाभ आवे ते पोते राखवा लाग्यो; एवी रीते करतां एक रूपीआनो एंशीमो भाग कांकणी कहेवाय छे तेवी एक हजार कांकणी एकठी करी. परंतु एवी रीतना द्रव्यसंचयथी तेणे घोर दुष्कर्म बांध्युं. अंतकाळे आलोचना कर्या वगर मृत्यु पामीने ते समुद्रमां जलमनुष्यपणुं पाम्यो.

समुद्रमां रहेला जळचर जंतुओना उपद्रव टाळवामाटे जातिवंत रत्नना[1] इच्छकोए तेने मांसादिकथी लोभावी वज्रनी घंटीमां नाखीने पीली नाख्यो, अने तेना अंगमांथी नीकळेल अंडगोळी ग्रहण करी. जळमनुष्य मृत्यु पामीने त्रीजे नरके गयो. त्यांथी नीकळी पांचसो धनुष्यना प्रमाणवाळो महा मत्स्य थयो. त्यां माछीए करेली कदर्थनावडे मरण पाम्यो. मरीने चोथी नरके गयो. एवी रीते एक बे विगेरे भवने[2] अंतरे साते नरकमां बेवे वार उत्पन्न थयो.

देवद्रव्यनी एकहजार कांकणी द्रव्य खाधेल होवाथी ते आंतरे आंतरे अथवा आंतरा विना हजार वार श्वान थयो. तेमज एकहजार भव डुकरना, एक हजार भव ,,

1 साठावार रुपीआ. २ मनुष्य आकृतिनो मत्स्य.

बकराना, एक हजार भव गाडरना, एकहजार भव मृगलाना, एक हजार भव शश-लाना, एक हजार भव सांबरना अने एक हजार भव शृगालना कर्या. तेवीज रीते हजार हजार वखत मार्जार, उंदर, गरोळी, घो अने सर्प थयो. पांच थावर तथा विकलेंद्रियमां हजारो भव करी एकंदर लाखो भव संसारमां भम्यो. तेमां पण प्रायेकरीने बधा भवमां शस्त्रघात विगेरेनी पीडा सहन करीनेज मृत्यु पाम्यो.

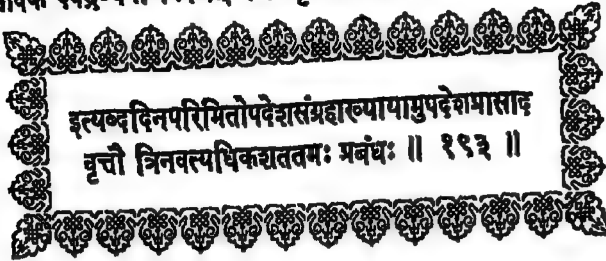
एवी रीते घणां दुष्कर्मो क्षीण थवाथी वसंतपुरमां कोटिध्वज एवा वस्तुदत्त शेठने घेर पुत्र थयो. ते गर्भमां आवतांज तेना पितानुं सर्व द्रव्य नष्ट पामी गयुं. जन्मने दिवसे पिता मृत्यु पाम्यो. अने पांच वर्षनो थयो एटले माता मृत्यु पामी. आथी लोकोए तेनुं निष्पुण्य एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे भीखारी ने रांकनी जेम ते मोटो थयो. एकदा तेना मामा तेने दयाथी पोताने घेर लई गया. त्यां रात्रे चोरोए तेनुं घर लुंटी लीधुं. पछी ते अभागीओ ज्यांज्यां जाय त्यां त्यां अग्नि विगेरे उपद्रव थवा लाग्या. एटले लोको ते आवे एटले महाउत्पात आव्यो एम कहेवा लाग्या. एवी असह्य निंदाथी उद्वेग पामीने ते देशांतरे गयो. अनुक्रमे ताम्रलिप्ती नगरीए पहोंची विनयंधर नामना कोई धनाढ्य शेठने घेर ते सेवक थईने रह्यो. तेज दिवसे तेना घरमां लाय लागी, एटले तेणे तेने घरबहार काढी मूक्यो. तेथी कंटाळीने ते पोताना पूर्वकर्मने निंदवा लाग्यो. कह्युं छे के "प्राणी कर्म स्ववशपणे करेछे; पण तेना उदयने वखते ते परवश थाय छे. जेम झाड उपर माणस स्वेच्छाथी चडे छे पण पडेछे त्यारे परवश थईने पडेछे."

अन्यदा ते कोई महेभ्यने वहाणे चड्यो; अने ते धनाढ्य श्रेष्ठीनी साथे कुशळक्षेमे परद्वीपे पहोंच्यो. त्यारे तेणे चिंतव्युं के 'अहो! मारूं भाग्य जाग्युं जणाय छे के जेथी आ वहाण भाग्युं नहि; अथवा मारूं दुर्दैव मने भूली गयेल लागे छे. हवे अहींथी पाछा वळतां जो दैव मने भूली जाय तो बहु सारूं.' आवो मनोरथ करतो ते पाछो वळ्यो, तेवामां तेना दुर्दैवथी तेना मनोरथ सहित ते वहाण भागी सो ककडा थई गयुं. आयुष्यने बळे तेने पाटीयुं हाथ लाग्युं. तेथी तरीने ते समुद्रने तीरे कोई गाममां आव्यो, अने ते गामना ठाकोरनी सेवा करवा लाग्यो. दुर्दैवयोगे ते ठाकोरना घर उपर चोरलोकोए धाड पाडी, अने ते निष्पुण्यने ठाकोरनो पुत्र जाणी बांधीने पोतानी पाळमां लई गया. तेज दिवसे बीजी पाळना स्वामीए ते पाळने भांगी, एटले तेओए ए अपशकुनीआने त्यांथी पण काढी मूक्यो. कह्युं छे के "मोटो उपाय करो, पण भाग्यविना फळ प्राप्त थतुं नथी. जुओ, राहु चंद्रना अमृतनुं पान करेछे तोपण तेनां अंग पल्लवित थतां नथी." एवी रीते ते निष्पुण्य नवसो ने नवाणु

स्थानोमां फर्यो, अने ते बधे ठेकाणे चोर अग्नि तथा जळना उपद्रवो थवाथी तेने काढी मूकवामां आव्यो. आथी महादुःख पामतो सतो ते एक अटवीमां आव्यो. त्यां सेलक नामना यक्षनुं तेणे आराधन करवा मांड्युं. एकवीश उपवास कर्या एटले ते यक्ष संतुष्ट थई बोल्यो–"हे भद्र! दररोज संध्याकाळे मारी आगळ सुवर्णना हजार पींछावाळो एक मोटो मयूर आवीने नृत्य करशे; अने प्रतिदिवस तेनी कळामांथी कनकना पींछांओ अहीं पडशे, ते तारे लई लेवां." ए प्रमाणे प्रतिदिन लेतां तेनी पासे नवसो पींछां एकठां थयां. सो बाकी रह्यां एटले दुष्कर्मथी प्रेरायेला एवा तेणे चिंतव्युं के 'हवे एकसो पींछां लेवा माटे आ जंगलमां मारे क्यां सुधी रोकावुं? तेथी आजे मोर आवे त्यारे एक मुष्टिथी बधां पींछां लई लउं.' पछी ते दिवसे मोर आव्यो एटले तेनां बधां पींछां एक मुष्टिथी लेवा माटे जेवो ते प्रवर्त्यो तेवोज ते मयूर कागडो थईने उडी गयो, अने पूर्वे ग्रहण करेलां पींछांओ पण नष्ट थई गयां. कह्युं छे के "दैवने उल्लंघन करीने जे कार्य करवामां आवे ते कार्य सफळ थतुं नथी. बपैयो सरोवरनुं जळ पीवे तो ते गळाना छिद्रमांथी नीकळी जाय छे." पछी तेणे चिंतव्युं के 'मने धिक्कार छे! में वृथा उद्यम कर्यो.'

आ प्रमाणे खिन्न थयो सतो ते आम तेम भमवा लाग्यो. तेवामां कोई एक ज्ञानी मुनि तेना जोवामां आव्या. तेने जोतांज वंदन करीने तेणे पोताना पूर्वभवनुं स्वरूप पूछ्युं. मुनिए तेना पूर्वभवनुं स्वरूप यथार्थ कही आप्युं. ते सांभळी तेणे देवद्रव्यना उपभोगनुं प्रायश्चित्त माग्युं. मुनिए कह्युं–'प्रथम उपभोगमां लीधेला देवद्रव्यथी अधिक द्रव्य पाछुं आपवुं, अने देवद्रव्यनी रक्षा करवी तेथी दुष्कर्मनो नाश थशे.' पछी तेणे 'लीधेला देवद्रव्यथी हजारगणुं द्रव्य देवभक्तिमां आपवुं, अने ते पूरूं थतां सुधी वस्त्र, आहार विगेरे निर्वाह उपरांत कांई पण द्रव्य एकठुं करवुं नहिं' एवो मुनिपासे नियम लीधो. त्यारपछी ते जे व्यापार करे तेमां घणुं द्रव्य उपार्जन करवा लाग्यो, अने ते देवद्रव्यमां आपवा लाग्यो; एवी रीते थोडा दिवसमां तेणे पूर्वे वापरेली हजार कांकणीने स्थाने दश लाख कांकणी देवद्रव्यमां आपी, अने देवनो अनृणी थयो. पछी अनुक्रमे घणुं द्रव्य मेळवी पोताना नगरमां आव्यो, त्यां ते मुख्य शेठीओ कहेवायो; पछी नवां चैत्य कराववां, देवद्रव्यनुं रक्षण करवुं, योग्य युक्तिथी ते वधारवुं इत्यादि वडे अद्भुत पुण्य उपार्जन करी तेणे तीर्थंकरनामकर्म बांध्युं. अवसरे दीक्षा लई पहेलुं स्थानक तपवडे आराधी अर्हन्नामकर्म निकाचित कर्युं. त्यांथी काळ करी सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवता थई त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां अर्हंतनी समृद्धि भोगवी सिद्धिपदने प्राप्त थयो.

"देवद्रव्य ग्रहण करवाथी अत्यंत दोष लागे छे, एम पूर्वे सूरिओए कहेलुं छे तेने जाणीने श्रावक देवद्रव्यनी किंचित् पण स्पृहा करता नथी."



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ त्रिनवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९३ ॥

व्याख्यान १९४ मुं

'चैत्य कराववां ते सावद्य छे' एम कहेनाराने शिक्षावचन.

सावद्यवचनं नोच्यं, मुनिभिर्धर्मज्ञायकैः ।
तद्वाक्येन महद्दुःखं, सावद्याचार्यवल्लभेत ॥

भावार्थ.

"धर्मना जाण एवा मुनिओए सावद्य वचन बोलवुं नहि, सावद्य वचन कहेवाथी सावद्याचार्यनी जेम महा दुःखने पामे छे." आ अर्थ स्पष्ट छे; तेमां सूचवेल दृष्टांत नीचे प्रमाणे छे-

सावद्याचार्यनी कथा.

एक वखते श्रीवीरप्रभु गौतम स्वामीने मिथ्या बोलवाना फळ विषे पूर्वेना दृष्टांत युक्त कहेता हता के "हे गौतम! पूर्वे अनंतकाळ अगाउ जे अनंती चोवीशी थई गई तेमां वर्तमान अवसर्पिणी जेवी आजथी अनंतमी अवसर्पिणीमांहेनी एक चोवीशीमां मारा जेवा धर्मश्री नामे छेल्ला तीर्थंकर थया हता. तेमना तीर्थमां सात आश्चर्य थया हतां. ते मांहेना असंयती पूजारूप आश्चर्यमां अनेक असंयतीओ श्रावक पासेथी द्रव्य लई पोतपोताना करावेला चैत्यमां वसता हता; अने तेना मालेकपणे वर्ती आनंद मानता हता. त्यां कुवलयप्रभ नामे एक तपस्वी मुनि आव्या. तेमने प्रेला चैत्यवासीओए नमीने कह्युं-'तमे अहीं एक चातुर्मास रहो, जेथी तमारा उपदेशवडे अनेक चैत्यो थशे.' तेमणे कह्युं-"अहीं जे जिनालयो छे ते बधां सावद्य छे; तेथी तेवा सावद्य कार्यने माटे हुं उपदेश करीश नहि." आवुं दृढतापूर्वक सत्य वचन कहेवाथी तेमणे जिन नामकर्म उपार्जन कर्युं; अने आ संसाररूप समुद्र एक भवावशेष कर्यो.

अर्थात् एक भवज करवो पडे तेवो करी दीधो. पेला सर्वे वेषधारीओए तेमनुं सावद्याचार्य एवुं नाम पाड्युं. तथापि तेमने क्रोध थयो नहि. तेथी मुनिओए 'चैत्यादि कराववामां महालाभ छे' एम कहेवुं. पण 'आ चैत्य, उपाश्रय के इनुं पाणी करो' एम कहेवुं नहि; एवो उपदेश करवो, पण आदेश देवो नहि. आ प्रमाणे साधुए विवेक राखवो.

एक वखते पेला वेषधारीओमां परस्पर शास्त्र संबंधी विवाद थयो. कोई बोल्या के 'जो गृहस्थनो अभाव होय तो साधु चैत्यनी रक्षा करे, चैत्यने समारे, ते संबंधी बीजो पण आरंभ करे, तो पण साधुने दोष लागे नहि.' कोई बोल्या के 'संयमज मोक्षे लई जनार छे माटे बीजुं कांई न करे' अने केटलाक बोल्या के 'चैत्यपूजा पण मोक्षे लई जनार छे माटे करे'. तेमनो आ विवाद भांग्यो नहि. एटले ते सर्वेए मळीने कुवलयप्रभ सूरिने बोलाव्या. तेमणे जे सत्यमुनिनो आचार हतो ते कही बताव्यो.

एक वखते कोई साध्वीए ते आचार्यने प्रदक्षिणा करी पगमां श्रद्धाथी मस्तक मूकी स्पर्श करवा पूर्वक वंदना करी. ते पेला लिंगीओए नजरोनजर जोयुं. त्यारपछी एक वखते व्याख्यानमां महानिशीथ सूत्रनी आ गाथा आवी के-" जे मुनि कारण प्राप्त छतां निरागीपणे पण स्त्रीना हस्तनो स्पर्श करे तो हे गौतम! तुं निश्चये जाणजे के तेना मूळ गुणनी हानि थई छे." आनो भावार्थ एवो छे के जे गच्छमां निरागी साधु पण कोई कारण प्राप्त थया छतां पण स्त्रीनो स्पर्श करे तो तेना मूळ गुणनी हानि थाय छे. आप्रमाणेनी गाथा कही तेनो अर्थ विस्तारतां सूरिए विचार्युं के 'प्रथम आ लिंगधारीओए तेमनां चैत्यो मात्र सावद्य कहेवाथी मारूं नाम सावद्याचार्य तो पाडेलुं छे. हवे आ गाथानो अर्थ सांभळीने तो वळी कांई निरूप करशे. पण जे थवानुं होय ते थाओ; आ गाथानो अर्थ तो यथार्थ कहेवो. केमके जो अन्यथा कहुं तो महादोष लागे.' आम विचारी ते गाथानी यथार्थ व्याख्या करी. ते सांभळी पेला लिंगधारीओए तेमने अडीने साध्वीने वंदन करतां जोयेल ते वृत्तांत कहीने कह्युं के 'त्यारे तो तुं पण मूळ गुणहीन साधुज छे.' ते वखते सूरि अपकीर्तिना भयथी बोल्या के अयोग्यने उपदेश आपवोज योग्य नथी. कह्युं छे के "काचा घडामां नाखेलुं जळ जेम ते घडानो विनाश करे छे तेम अल्पमति पासे कहेलुं सिद्धांतनुं रहस्य विनाश पामे छे." तेओ बोल्या-"तुंज मिथ्याभाषी छे, माटे अमारा दृष्टिमार्गथी दूर जा.". सूरि बोल्या-"स्याद्वाद मतमां उत्सर्ग अने अपवाद एवा बे मार्ग छे, ते तमे जाणता नथी. कह्युं छे के एकांतवाद ते मिथ्यात्व छे, अने अनेकांतवाद ते स्याद्वाद मार्ग छे." लिंगधारीओए ते वचन मान्य कर्युं. परंतु ए वाक्य बोलवाथी लागेलुं पाप आलोच्या वगर मृत्यु पामीने ते सूरि व्यंतर थया.

ते देव त्यांथी चवीने प्रतिवासुदेवना पुरोहितनी पुत्री के जेनो पति परदेश गयेलो छे तेनी कुक्षिमां अवतर्यो. कलंकथी भय पामेला तेना मातापिताए तेने देशमांथी काढी मूकावी. परदेश जईने ते कोई कुंभारने घेर दासीपणे रही. त्यां चोरी करी मांस विगेरे खावा लागी; एटले राजानी आज्ञा लई चोरीने माटे तेने वधकारकने सोंपी. तेणे प्रसव थतां सुधी तेने जीवती राखी. प्रसव थयो एटले बाळकने छोडीने ते नासी गई. अनुक्रमे ते बाळक पांचसो कसाईओनो अधिपति थयो. त्यांथी मृत्यु पामी छेल्ला नरकने छेल्ले पाथडे उपन्यो. त्यांथी एकोरूक नामना अंतरद्वीपमां सर्प थयो. त्यांथी मृत्यु पामी पाडो थयो. पछी पाछो मनुष्य थयो. ते पछी वासुदेव थयो. मरीने नरके गया पछी गजकर्णी मनुष्य थयो. मरीने सातमी नरके गयो. त्यांथी नीकळीने पाडो थयो. त्यांथी कोई ब्राह्मणनी विधवा स्त्रीनी कुक्षिमां उपन्यो. त्यां गर्भपात करवा माटे खाधेलां क्षार ओषधोथी गलतकोढवाळो थई ते गर्भमांथी नीकळ्यो. ते भवमां सातसो वर्ष, बे मास अने चार दिवस जीवी व्यंतर थयो. पछी कसाईनो अधिपति थयो. मरीने सातमी नरके गयो. त्यांथी नीकळीने बळद थयो. एवी रीते अनंतकाळ भमी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्यपणुं पाम्यो. ते भवमां लोकनी अनुवृत्तिए जिनेश्वरने प्रणाम करतां ते प्रतिबोध पाम्यो. पछी दीक्षा लई पार्श्वनाथ प्रभुना समयमां सिद्धिपदने प्राप्त थयो.

आ प्रमाणे श्री वीरप्रभुना मुखथी सांभळी गौतमे पूछ्युं–" हे स्वामी! ते सूरिए एवुं महापाप शुं कर्युं हतुं? तेणे मैथुन तो सेव्युं नहोतुं." प्रभु बोल्या–" हे गौतम! ते सूरिए 'उत्सर्ग तथा अपवादवडे सिद्धांतनी मर्यादा छे' एम कहीने पोतानो मिथ्या बचाव करवाथी महापाप उपार्जन कर्युं हतुं. कारणके स्याद्वादमार्गमां पण सचित्त जळनो भोग, अग्निनो समारंभ अने मैथुन एटलां तो उत्सर्गवडे निषिद्ध करेलां छे, तेथी तेमां उत्सर्ग अपवाद बंनेनी स्थापना करवी योग्य नहोती."

अहीं उत्सर्ग अने अपवादना संयोगवडे छ भांगा थाय छे, ते आगळ लखवामां आवशे. वळी ते सूरिए साध्वीनो स्पर्श थतां पण संकोच्या नहोता; इत्यादिवडे अनंत भव वधार्या हता.

हवे उत्सर्ग अने अपवादनुं स्वरूप कहे छे.

"कष्ट विगेरे आवी पडतां जो हृदयमां धैर्य न रहे तो अपवादमार्ग सेवे. बाकी केटलाक तो तेवे प्रसंगे पण उत्सर्ग मार्ग सेवे छे." भावार्थ एवो छे के कष्ट आवी पडे ते वखते कार्तिक श्रेष्ठीनी जेम कोइ निषिद्ध एवा अपवाद मार्गने आचरे छे, अने कोइ

पुरुष कामदेव श्रावकनी जेम उत्सर्ग मार्गनेज सेवे छे. ते बंनेना संयोगे छ भांगा थाय छे. ते आ प्रमाणे–१ उत्सर्ग, २ अपवाद, ३ उत्सर्ग स्थाने अपवाद, ४ अपवादस्थाने उत्सर्ग, ५ उत्सर्ग–उत्सर्ग, ६ अपवाद–अपवाद.

१ उत्सर्गनो दाखलो—

न किंचिविअणुण्णायं पडिसिद्धं वा जिणवरिंदेहिं ।
मुत्तुणं मेहुणभावं न तं विणा रागदोसेहिं ॥ १ ॥

" प्रभुए मैथुनसेवन शिवाय बीजी कोई पण बाबतनी [एकांते] आज्ञा दीधी नथी तेम एकांते निषेध कर्यो नथी. मात्र मैथुन सेवननोज एकांते निषेध करेलो छे; कारणके ते रागद्वेष विना थतुंज नथी. १."

२ अपवादनो दाखलो....

सवथ्थसंयमं सयमाओ अप्पाणमेवरखिज्जा ।
मुंचइ अइवायाओ पुणो विसोहि तथा विरइं ॥ २ ॥

" सर्वथा संयमनुं रक्षण करवुं. संयमथी पण आत्माने बचाववो. जो आत्मा बच्यो होय तो आलोयणा विगेरेथी तेनी शुद्धि थई शके छे, अने पाछी विरति प्राप्त थाय छे. २."

३ उत्सर्गमां अपवादनो दाखलो—

उस्सग्गे अववायं आयारमाणो विराहओ भणिओ ।
अववाये पुण पत्ते उस्सग्गनिसेवउ भयणा ॥ ३ ॥

" उत्सर्गने ठामे अपवाद सेवे तो ते विराधक थाय छे, अने अपवाद प्राप्त थये सते उत्सर्ग सेवे तो विराधक थाय किंवा न थाय–भजना छे. ३."

४ अपवादमां उत्सर्गनो दाखलो पण उपरली गाथामांथीज समजी लेवो.

५ उत्सर्ग–उत्सर्गनो दाखलो श्री महानिशीथ सूत्रमां कहेल छे ते आ प्रमाणेः—

जंपुण गोयमा तं मेहुणं एगंतेणं निच्छयओ बाढं तहा आउ
तेउ समारंभं च सव्वपयारेहिं संजयं विवज्जेजा ।

" भगवंत कहेछे के हे गौतम ! जे कारणमाटे वळी ते मैथुन एकांते निश्चयथी अत्यंतपणे वर्जवुं, तेमज संयमीए अपकाय तेउकाय जीवनो समारंभ पण सर्व प्रकारे वर्जवो."

६ अपवादे अपवादनो दाखलो—कोई साध्वी नदीमां डुबी जती होय ने साधु तेना अंगने स्पर्शीने बहार काढे तो तेनी शुद्धि अल्प आलोचनाथी थाय छे. अथवा मेघ वर्षतो होय तेवे समये कोई वेश्या उपाश्रयमां पेसी गई, पछी रात्रे पण त्यांथी गई नहि. एटले गुरुनी आज्ञाथी कोई वृद्ध साधुए तेने स्तंभ साथे बांधी लीधी. प्रातःकाले राजापासे फर्याद थतां राजाए गुरुने पूछ्युं, एटले गुरुए कह्युं–'राजन्! सप्तांग लक्ष्मीथी भरेला राजाना भंडारमां चोर पेसे तो तेने राजा बंधन विगेरे करे के नहि? तेवी रीते अमारा शिष्यो ते ज्ञानादि रत्नना भंडार छे तेनुं हरण करवाने माटे आवेल आ वेश्याने अमे बांधी लीधी हती.' ते सांभळी सत्य न्याय जोई राजा खुशी थयो अने अत्यंत संतोष पाम्यो.

उपर प्रमाणे उत्सर्ग अपवादना छए भांगा चित्तमां अवधारी–विचारीने बोलवुं. ते विषे प्राकृत रूपमाळामां कह्युं छे के "आ प्रमाणे छ भांगा होवाथी कोई मुनिने आकरी भीडमां नारीनो प्रसंग थई गयो तो ते आलोयण लेवाथी छूटशे, पण जो तेनुं स्थापन करशे तो अनंत संसार वधारशे." जोके प्रवचनमां उत्सर्ग–अपवादने विषे अनेकांतनी स्थापना छे, तथापि मैथुनसेवन विगेरे तो एकांते निषिद्ध करेलुं छे, तेथी तेमां अपवादनुं स्थापन करवाथी सूत्रनुं उल्लंघन थाय छे, अने उन्मार्ग प्रगट थाय छे. तेथी जिनाज्ञानो भंग थतां अनंत संसारीपणु प्राप्त थाय छे, वळी जे पोताना हीन आचार विगेरे दोष गोपववामाटे जिनागमनी अनेक युक्तिओ लईने पोतानुं पाप गोपवे छे अने पोताना गुण प्रगट करे छे ते मायावी उपर कहेला सावद्याचार्यनी जेम बहुल संसारीज थाय छे.

"जे मुनि चैत्यक्रियामां पाप छे एम कहे ते अनंत संसारी थाय छे. कारण के ते उत्सूत्रवचन छे. जुओ, सावद्याचार्ये तीर्थंकरनामकर्मनां दळीयां उपार्जन करेल ते पण नाश पाम्यां. आवुं उत्सूत्र प्ररूपणानुं तांडव छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चतुर्नवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१९४॥

व्याख्यान १९९ मुं.

नवकार गणवानो काळ अने तेनुं फळ कहे छे.

तुर्ये यामे त्रियामाया ब्राह्मे मुहूर्ते कृतोद्यमः ।
मुंचेन्निद्रां सुधीः पंचपरमेष्ठिस्तुतिं पठेत् ॥

भावार्थ.

"रात्रिना चोथा पहोरे ब्राह्ममुहूर्तमां (चार घडी रात्रि बाकी होय ते वखते) सद्बुद्धिवाळा पुरुषे उठवानो उद्यम करी निद्रा छोडी देवी अने पंचपरमेष्ठिनी स्तुति करवी."

भावार्थ एवो छे के निद्राना वशपणाथी कदि रात्रिना चोथे पहोरे उठी न शकाय तो पंदर मुहूर्तनी रात्रिमां जघन्यपणे चौदमा ब्राह्ममुहूर्तमां तो उठवुं. पछी शय्यानां वस्त्र तजी दई बीजां शुद्ध वस्त्र पहेरवां. पछी पवित्र भूमि उपर उभा रही अथवा बेसी वा पद्मासन करी श्रावके ईशानदिशा तरफ रहीने जाप करवो. जापना त्रण प्रकार छे १ उत्कृष्ट २ मध्यम अने ३ जघन्य. तेमां पद्मादि विधिवडे करवामां आवे ते उत्कृष्ट छे, अने जपमाळाथी करवामां आवे ते मध्यम छे. पद्मादि विधि आप्रमाणे–चित्तनी एकाग्रता थवाने माटे हृदयमां अष्टदळ कमळ स्थापित करवुं, तेनी मध्य कर्णिकामां प्रथम पद, पूर्वादि चार दिशाओमां बीजुं त्रीजुं चोथुं अने पांचमुं ए चार पद, अने अग्नि विगेरे चार विदिशाओमां बाकीना चार पदनी स्थापना करवी. पछी ते क्रमप्रमाणे जाप करवो ते उत्कृष्ट जाप कहेवाय छे. जपमाळा (नवकारवाळी) विगेरेथी जे जाप करवो ते तेथी न्यून मध्यम जाप कहेवाय छे. उत्कृष्ट जापनुं मोटुं फळ छे. ते विषे योगशास्त्रमां कह्युं छे के–

त्रिशुद्ध्या चिंतयन्नस्य, शतमष्टोत्तरं मुनि ।
भुंजानोपि लभत्येव, चतुर्थतपसः फलं ॥ १ ॥

"त्रिकरण शुद्धिवडे एकसो आठ वार उपर बताव्या प्रमाणे (अष्टदळ कमळनी स्थापना करीने) जाप करनार मुनि भोजन करतां छतां पण चतुर्थतप (उपवास) नुं फळ पामे छे."

हवे जघन्य जापनुं स्वरूप कहे छे–

विनामौनं विनासंख्या, विनामननिरोधनं ।
विनास्नानं विनाध्यानं, जघन्यो जायते जपः ॥

"मौन विना, संख्याविना, मननो रोध कर्याविना, स्नानविना अने ध्यानविना जे जाप करवामां आवे ते जघन्य जाप कहेवाय छे."

जप करवाथी आ लोक आश्री फळ शुं थाय ते कहे छे. " विंछी सर्प विगेरे डसेल होय अथवा दानवे तरफथी उपद्रव थयो होय तो पंचनमस्कार [नवकार मंत्र] ध्यावाथी सर्व दुःखमांथी मुक्त थवाय छे." अहीं एटलुं विशेष समजवानुं छे के वींछी विगेरेनुं विष उतारवा माटे पश्चानुपूर्वीए एकवीश विगेरे वार नवकारमंत्रनो जाप करवो इत्यादि आम्नाय छे ते गुरुगमथी जाणी लेवो. नवकारमंत्रना जापवडे राक्षसना उपद्रवथी रक्षा थवा विषे नीचे प्रमाणे कथा छे—

नवकारना जाप उपर कथा,

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां बल नामे राजा राज्य करतो हतो. एक वखते नवीन मेघ वर्षवाथी नदीमां पूर आव्युं. एटले ते जोवाने माटे लोको एकठा मळ्या. तेवामां जळनी अंदर एक मोटुं बीजोरु पाणी उपर तरतुं जोवामां आव्युं. कोई तरीआ पुरुषे जळमां पडीने ते लई लीधुं, अने ते राजाने अर्पण कर्युं. सुगंधी अने मधुर रसवाळुं ते बीजोरानुं फळ राजाए चाख्युं, एटले बहु हर्षित थई राजाए तेने पूछयुं—'आ फळ तमने क्यांथी मळ्युं ?' तेणे कह्यु—'स्वामी! नदीना पूरमांथी तणाई आवतुं आ फळ मळेलुं छे.' ते सांभळी राजाए कह्युं—" अरे पुरुष! ते नदीना तट उपर ज्यांथी आ फळ आव्युं छे त्यां तुं जा अने बीजां फळ लाव."

पेलो पुरुष ते तट पूछतो पूछतो त्यां गयो. पछी जेवो तेमां प्रवेश करवा ते तत्पर थयो एटले नजीकना लोकोए कह्युं—' अरे भद्र! अहीं प्रवेश करीश नहि. जे कोई पुरुष अहीं प्रवेश करी फळ पुष्पादि लेवा जाय छे ते त्यांज मृत्यु पामी जाय छे.' लोकोनां आवां वचन सांभळी ते पाछो वळ्यो, अने ते वृत्तांत राजा पासे आवी निवेदन कर्यु. ते सांभळी रसलंपट राजा बोल्यो—"अरे कोटवाल! तुं नगरमां जई सर्व मनुष्योनां नामनी चिठ्ठीओ लखी लाव, अने ते सर्व चिठ्ठीओ एक घडामां मूकी प्रभातकाळे कोई कुमारिका पासे तेमांथी एक चिठ्ठी कढाव. पछी जेनी चिठ्ठी आवे तेने फळ लेवा मोकल." राजानी आवी आज्ञा थवाथी तेणे तेम कर्यु. पछी जेना नामनी चिठ्ठी घडामांथी नीकळे ते जीववानी आशा छोडी कंपवा लागे. कोट-वालना पुरुषो भयभ्रांत एवा तेने पकडी पेला नदीना तटनी वापिकामां मोकले ते त्यांथी एक बीजोरुं छेदी नदीमां तरतुं मूके; एटले ते वखते नगरना द्वार आगळ रहेलो कोटवाल ते लई राजाने आपे अने पेलो पुरुष तो त्यांज मृत्यु पामी जाय. आ प्रमाणे प्रवर्तन थवाथी ते नगरना रहेनाराओने ते नगर झेर जेवुं थई गयुं, पण राजाना हृदयमां कांई पण दया आवी नहि, अने विषमपणुं टळ्युं नहि.

१ भुवनपति व्यंतरादि तुच्छ देवो.

एकदा ते नगर निवासी जिनदास श्रावकना नामनी पत्रिका नीकळी. ते पत्रिका लई जिनदास निर्भयपणे पोताने घेर आव्यो, अने स्नान करी घरना देवालयमां तथा मोटा मंदिरमां देवपूजा करी. पछी सर्व स्वजनवर्गने खमावी सागारी अनशन अंगीकार करी ते वनमां गयो. त्यां उंचे स्वरे नवकारमंत्रनुं उच्चारण करतां करतां तेणे प्रवेश कर्यो. ते अवसरे वनना अधिष्ठायक व्यंतरदेवे नवकारमंत्र सांभळी विचार्युं के 'अहो! आवा अक्षरो में पूर्वे सांभळ्या छे.' पछी ज्ञाननो उपयोग देतां तेणे पोतानो पूर्वभव दीठो, एटले विचारवा लाग्यो के "अहो! में पूर्वभवे दीक्षा लीधी हती पण ते बराबर आराधी नहि तेथी मृत्यु पामीने हुं व्यंतर थयो छुं. प्रमादने वश थई हुं वृथा दीक्षा हारी गयो." आप्रमाणे पश्चात्ताप करी ते जिनदास श्रावकनी समक्ष आव्यो, अने बे हाथ जोडी तेनी पासे उभो रही चरणमां नमीने बोल्यो–'हे सत्पुरुष! तमे मने धर्मस्थाने जोड्यो तेथी तमे मारा गुरु छो; माटे कांइक वरदान मागो.' श्रेष्ठी बोल्यो–"हे भद्र! तमे सर्व जीवनी हिंसा निवारो एज मारो वर छे. जो प्रसन्न थया हो तो ते वर आपो." राक्षस बोल्यो–"हे श्रेष्ठी! तमे ए वरदान तो मारा आत्मानुं हित थवा माटे माग्युं छे. जैनधर्मथी वासित अंतःकरणवाळा तमारा जेवा गुरुना दर्शन विना में आटलो वखत फक्त विनोद माटेज अनेक जीवोनी हिंसा करी अने करावी. हवे हुं हिंसा करीश नहि अने करावीश पण नहि. फळ ग्रहण करवाना मिषथी तमे अहीं आवीने मारा हृदयमां अनेकांत धर्मने दृढ कराव्यो छे. पण अविरतिना उदयथी देवताने श्रावकधर्म उदय आवतो नथी. तथापि तमारा दर्शनथी मारा अंतःकरणमां समकित गुण उदयमां आव्यो छे; तेथी सर्व सारुं थशे. हे पूज्य गुरु! तमारे हवे अहीं आववानो प्रयास लेवो नहि. हुं दररोज प्रभाते तमारा दर्शनमाटे आवीश, अने ते वखते वृक्ष उपरथी जे फळ पक्व थईने ताजुं उतरेलुं हशे ते तमारी आगळ भेट करीश." आप्रमाणे कही तेणे एक क्षणमां श्रेष्ठीने एक फळसहित तेने घेर मूकी दीधो. श्रेष्ठीए राजा पासे जई ते फळ राजाने आप्युं. तेने जोई राजाए पूछ्युं–'हे भद्र! तुं अक्षत–शरीरे शीरीते आव्यो?' शेठे कह्युं–'हे स्वामी! नवकारमंत्रना महिमाथी शुं शुं सिद्ध नथी थतुं?' राजा बोल्यो–'मने ते महामंत्र शीखडावो. ते बोल्यो–'समयपरत्वे जणावीश.'

अन्यदा कोई ज्ञानी आचार्य त्यां समोसर्या. श्रेष्ठी राजाने लईने तेमने वांदवा गयो. पछी श्रेष्ठीए गुरुने कह्युं–'हे पूज्य! अमारा राजाने नवकारमंत्रनुं फळ संभळावो.' गुरुए आप्रमाणे नवकारमंत्रनुं फळ कह्युं–"नवकारनो एक अक्षर सात सागरोपमनुं पाप टाळे छे, नवकारनुं एक पद पचास सागरोपमनुं पाप टाळे छे, अने समग्र नवकार पांचसो सागरोपमनुं पाप टाळे छे. जे प्राणी एक लाख नवकार गणे अने नवकारमंत्रनी विधिथी पूजा करे ते तीर्थंकर नाम गो-

अने बांधे छे तेमां जरापण संदेह नथी. जे कोई आठ करोड, आठ लाख, आठ हजार, आठसोने आठ नवकार गणे ते त्रीजे भवे सिद्धिपदने पामे छे." हमेशां नवकारनी छुटी पचास माळा गणे तो साडापांच वर्षे एक कोटी जाप थाय छे; अने बांधेली छ माळा गणे तो पांच वर्षे एक कोटी जाप थाय छे¹. तेनी संख्यानी धारणा बराबर करवी.

आ लोक संबंधी फळ आप्रमाणे छे-अवळी रीते (पश्चानुपूर्वीवडे) एक लाख नवकार गणवाथी तत्काळ सांसारिक क्लेशनो नाश थई जाय छे. जो मात्र हाथवडे जाप विगेरे करवामां अशक्त होय तो तेणे सूत्र वा रत्नादिकनी जपमाळा (नवकारवाळी) हृदयनी समश्रेणीए राखी, पहेरवाना वस्त्रने फरसे नहि तेम, मेरुनुं उल्लंघन कर्या वगर-इत्यादि विधिवडे जाप करवो. पृथ्वी प्रमार्जी, कटासणे बेसी अने मुखे वस्त्र राखी जो जाप कर्यो होय तो ते जाप स्वाध्यायनी गणनामां आवे छे. जापना संबंधमां कह्युं छे के "अंगुलीना अग्र भागवडे, मेरुनुं उल्लंघन करीने अने व्यग्रचित्ते जे जाप कर्यो होय तेनुं फळ प्राये अल्प थाय छे."

"जाप करतां थाकी जवाय तो ध्यान करवुं, ध्यान करतां थाकी जवाय तो जाप करवो, अने बंनेथी थाकी जवाय तो स्तोत्रपाठ करवो एम गुरुए कहेलुं छे, अनानुपूर्वीवडे नवकार गणवाथी क्षणमां छमासी तप विगेरेनुं पुण्य प्राप्त करे छे."

आ प्रमाणे नवकारमंत्रना जापनुं फळ मुनिमहाराजना मुखेथी सांभळी राजा श्रावक थयो. पछी नवकारमंत्रने गणवामां तत्पर रहेतो सतो ते स्वर्गे गयो.

"जेमां श्री जिनेश्वर भगवंत अग्रे विराजे छे एवो नवकारमंत्र आलोक अने परलोकमां सुखदायक छे. आप्रमाणे जाणीने जे श्रावक नवकारमंत्रना पदने जपेछे ते गुणवंत प्राणी आखा विश्वने वंदन करवा योग्य थाय छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ पंचनवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९५ ॥

पंचदशज्ञातरूपाभिः अष्टाभिः
त्रयोदशः स्तंभः संपूर्णः ।

¹ आ गणत्रीमा पद प्रमाण जाप गणेलो होवो जोइए. तेम गणवाथीज संख्यापूर्ति थाय छे.

उपदेश प्रासाद.

स्तंभ १४ मो.

व्याख्यान १९६ मुं.

तीर्थंकरनामकर्मने उपार्जन करवाना हेतुओ कहे छे.

सर्वे तीर्थंकरास्तु स्युरितस्तृतीयजन्मनि ।
विंशत्या सेवितैः स्थानैस्तीर्थकृन्नामहेतुभिः ॥

भावार्थ.

" सर्वे तीर्थंकरो तीर्थंकरनामकर्मना हेतु रूप वीश स्थानक तपनां सेववाथी त्यार पछीना त्रीजे भवे तीर्थंकर थाय छे."

विशेषार्थ.

सर्वे एटले पूर्वे अतीत काळे थई गयेला अनंता तीर्थंकरो ते सर्वे पाछले त्रीजे भवे वीश स्थानकनी आराधनावडे तीर्थंकर थया छे; एटले जे जीव तीर्थंकरनामगोत्रने बांधे छे ते ए वीश स्थानमांथी एक बे त्रण विगेरे स्थान अथवा सर्वे स्थान सेववाथी तीर्थंकरनामकर्म उपार्जे छे. ते जीवो एटले पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद वाळा जीवो समजवा. तेमां नपुंसक कृत्रिम समजवा. स्वभावथी नपुंसक समजवा नहि श्रीभद्रबाहु स्वामीए कह्युं छे के " निश्चये मनुष्यगतिमां वर्ततो स्त्री, पुरुष अथवा नपुंसकवेदी विशुद्ध लेश्यावाळो कोई पण जीव घणा प्रयासे वीश स्थानक मांहेला कोई पण पदने आराधवाथी जिननाम उपार्जे छे." ते वीश स्थानक श्रीज्ञातासूत्रमां आ प्रमाणे कहेलां छे.

अरिहंत, सिद्ध, प्रवचन, आचार्य [गुरु], स्थविर, उपाध्याय [बहुश्रुत] अने तपस्वी ते साधु; आ सात पद तथा आठमुं ज्ञान, नवमुं दर्शन, दशमुं विनय, अगियारमुं चारित्र, बारमुं शील [ब्रह्मचर्य] , तेरमुं निरतिचार क्रिया, चौदमुं तप, पंदरमुं दान, सोळमुं वैयावृत्य, सत्तरमुं समाधि, अढारमुं अपूर्व ज्ञाननुं ग्रहण, ओगणीशमुं श्रुतभक्ति अने वीशमुं शासननी प्रभावना—आ वीशे स्थानक आराधवाथी जीव तीर्थंकरपणुं पामे छे.

अरिहंत नामादि चार निक्षेपावडे सेववा. तथा निष्पन्न थयेला गुणवाला, कर्म-मळथी रहित, पाछुं फरीने संसारमां आववुं न पडे तेवी गतिने पामेला, सर्व कार्य पतावी, उद्योग मात्र पूर्ण करी, निश्चिंत थईने सुखे सुनार गृहस्थनी जेम फरीने न करवां पडे तेवी रीते संसारनां सर्व कार्य समाप्त करी परम सुखनो अनुभव करवाने माटे शाश्वतपदने जे प्राप्त थयेला ते सिद्ध जाणवा. तेवा सिद्धनुं ध्यान करवुं. प्रवचन एटले संघ सर्वश्रुतना आधारभूत चार प्रकारनो समजवो. गुरु एटले बार-सो ने छनुं गुणथी अलंकृत एवा आचार्य महाराज जाणवा. स्थविर एटले वृद्ध ते त्रण प्रकारना छे. जेमनी वय साठ वर्षनी थई होय ते वय स्थविर. दीक्षा लीधा वीश वर्ष थयां होय ते पर्याय स्थविर अने जे समवायांग सूत्रनो अर्थ पर्यंत जाण-नार होय ते श्रुतस्थविर; एम त्रण प्रकारनां स्थविर जाणवा. बहुश्रुत एटले ते सम-यमां वर्तता एवा घणा श्रुतने जाणनार अथवा उप एटले जेनी समीपे रहीने अध्ययन थाय ते उपाध्याय अथवा वाचक जाणवा. अनशन विगेरे विचित्र प्रकारना उग्र तप करनार मुनि ते साधु जाणवा. आ सात स्थाननुं वात्सल्य करवुं एटले तेमना यथार्थ गुणनुं वर्णन करवुं अने तेमनापर भक्तिराग राखवो. हमेशां ज्ञाननो उपयोग धारण करवो ते आठमुं स्थानक; तत्त्व उपर श्रद्धा राखवी ते सम्यक्त्वदर्शन, विनय, आवश्यक क्रियामां वर्तवुं ते चारित्र, शीलव्रत, तेरमुं क्षणलव नामे स्थान, एटले प्रतिक्षणे प्रतिलवे वैराग्यभावयुक्त क्रिया करवी ते. तप अनेक प्रकारनो समजवो. त्याग (दान) स्थान ते गौतम विगेरेने यथायोग्यपणे अन्नादि आपवुं. बालग्लान विगेरेनी सेवा ते वैयावृत्य नामे सोळमुं स्थान ते विषे श्रीप्रश्नव्याकरणमां कह्युं छे के "कई रीते वळी ए व्रतने आराधे ते कहे छे—उपधि, भात, पाणी विगेरेना संग्रहमां तथा दानमां कुशळ एवो मुनि अत्यंत बाळ, दुर्बळ, वृद्ध, क्षपक, प्रवर्तक, आचार्य, उपाध्याय, साधर्मी, तपस्वी, कुळ, गण, संघ ने चैत्य—ए सर्व मळी तेर पदनी दश प्रकारनी वैयावच्च अविश्रांतपणे बहु रीते करे." अहीं कोई शंका करे के जिन प्रतिमाने उपधि विगेरेनुं दान देवानो संभव नथी तो चैत्यनुं वैयावृत्य शी रीते करे? तेना समाधानमां केहवानुं के "कोई यक्ष मारी वैयावृत्य करे छे तेथी तेणे आ कुमारोने हण्या छे." आवुं हरिकेशी मुनिनुं वचन छे तेमप्रमाणे चैत्यनी अवज्ञा करता होय तेमने निवारवाथी पण चैत्यनुं वैयावृत्य थाय छे. सत्तरमुं समाधिस्थान एटले दुर्ध्यान छोडी चित्तनी स्वस्थता करवी. ते स्वस्थता चारित्र विनय विगेरेथी थाय छे. अपूर्व ज्ञान ग्रहण करवानो आदर ते अढारमुं स्थान छे. श्रुतनुं बहुमान करवुं ते ओगणीशमुं स्थान छे; अने प्रवचननी प्रभावना करवी, तीर्थनो उद्योत करवो ते वीशमुं स्थान छे. ए स्थानवडे जीव प्रभुपणाने मेळवे छे.

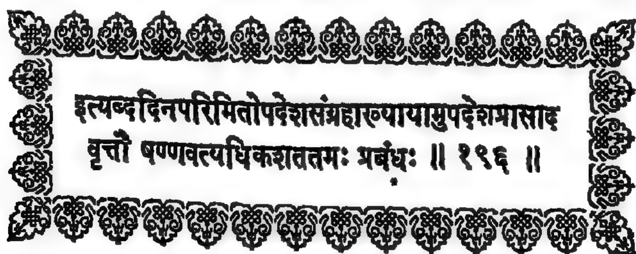
ए तपनो विधि संप्रदायथी आप्रमाणे छे—"वीश स्थानकनुं तप करवुं होय तो वीश उपवास करवाथी ते तपनी एक पंक्ति समाप्त थाय छे. जो उपरा उपर वीश उपवास करवानी शक्ति न होय तो आंतरे आंतरे उपवास करी छ मासनी अंदर तो एक पंक्ति पूर्ण करवीज जोइए. एवी एकंदर वीश पंक्तिवडे ए तप पूर्ण थाय छे, एटले तेमां एकंदर चारसो उपवास थाय छे. एप्रमाणे शक्तिने अनुसारे वीश वीश छट्ठ अट्ठम विगेरेथी मांडीने वीश वीश मासक्षपण करवा सुधीनुं तप प्राज्ञ पुरुषो करे छे. ते तपमां जे दिवसे तप करे ते दिवसे पांच नमोथ्थुणंना पाठवाळुं उत्कृष्ट चैत्यवंदन अवश्य विधिवडे करवुं जोइए. तेनी एक एक पंक्तिमां एक एक दिवसवडे भक्ति पूर्वक एकेक स्थानक आराधीने एकंदर वीशे स्थानकनी आराधना करवी. प्रथम दिवसे "नमोऽर्हद्भ्यः" ए पदनो बे हजार जाप करवो, अने अर्हंतनी भक्ति स्तवन विगेरेथी विशेपपणे करवी. बीजा दिवसोमां प्रथम कहेला सिद्ध विगेरे स्थानो क्रिया ज्ञान तथा पाठाभ्यासना आदर विगेरेथी आराधवा. केटलाएक तो एक एक पंक्तिथी (वीशे दिवस) एक एक स्थान एम वीश पंक्तिवडे वीश स्थानक आराधे छे. सांप्रतकाळे ते जप करवाना पद संप्रदायथी जाणी लेवा. जो संपूर्ण तप करवाने अशक्त होय तो एक स्थान, बे स्थान अथवा बधा स्थानो स्फुरायमान भक्तिवडे श्रेणीक राजा विगेरेनी जेम यथाशक्ति सेवन करवां. एवी रीते साधु, साध्वी, श्रावक के श्राविका आ स्थानकोने आराधवाथी तीर्थंकरपणानी उत्तम संपत्तिने पामे छे."

जिनेंद्रना भवनी पूर्वे त्रीजा भवमां तीर्थंकरगोत्र बांध्या पछी क्यां जाय ते कहे छे—"तीर्थंकरपदने उपार्जन कर्युं छे जेणे एवा जीव वैमानिक देवता थाय छे. परंतु कोई जीव पूर्वे आयुष्य बांध्युं होय-छे तो ते नरकभूमिमां पण जाय छे." आनो भावार्थ एवो छे के—अरिहंतपद सम्यक्त सतेज बंधाय छे. तेथी ते जीव मरण पामीने वैमानिक देवताज थाय छे. पण सम्यक्त्व अने जिनपदनी प्राप्ति थया अगाउ कोई जीवे नारकीनुं आयुष्य बांध्युं होय अने पछी तीर्थंकरपदनी प्राप्ति थाय तो ते दशार-सिंह (कृष्ण), सत्यकि अने श्रेणिक विगेरेनी जेम नरके पण जाय छे; अने त्यांथी नीकळीने तीर्थंकर थाय छे. जीर्णसंग्रहणीमां कह्युं छे के "पहेली त्रण नारकीथी नीकळेला जीव ते पछीना भवमां तीर्थंकर थाय छे; बाकीनी चार नारकीमांथी नीक-ळेला थता नथी. चोथी नारकीमांथी नीकळी सामान्यकवेळी थाय छे, पण जिनेंद्र थता नथी. पांचमी नारकीमांथी नीकळी सर्वविरति रूप साधुपणुं पामे छे पण केवळ-ज्ञान पामता नथी. छठ्ठी नारकीमांथी नीकळी पांचमुं गुणठाणुं, (श्रावकपणुं) पामे, पण मुनिपणुं पामता नथी. सातमी नारकीमांथी नीकळी सम्यक्त्व—सम्यग्दर्शन पामे छे

पण बीजो गुण पामता नथी." आ अर्थनेज विशेषे करीने कहे छे-"पहेली नारकीमांथी नीकळी चक्रवर्ती थाय छे. बीजी नारकीमांथी नीकळी वासुदेव बळदेव थाय छे, त्रीजीमांथी नीकळी जिन थाय छे. चोथी नारकीमांथी नीकळी भवांत करे छे अर्थात् केवळज्ञान पामी मोक्षे जाय छे. पांचमीमांथी नीकळी मनुष्यपणुं ने साधुपणुं पामे छे. छट्ठी नारकीमांथी नीकळेलाने अनंतरभवे मनुष्य थवानी भजना छे. कोई मनुष्य थाय छे, अने कोई नथी पण थता. जे मनुष्य थाय छे ते पण सर्व संयमना लाभथी रहित थाय छे, देशविरति थई शके छे.सातमी नारकीथी नीकळेला निश्चये नरपणुं पामताज नथी, पण तिर्यंचयोनिमां अवतरे छे त्यां समकित पामी शके छे. (आ प्रसंगे लखवामां आव्युं छे) '

अहीं प्रश्न थाय छे के चार देवनिकायमां कया निकायमांथी आवेला जिन थाय ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के-वैमानिक निकायमांथीज आवीने जिन थाय. कह्युं छे के "बळदेव ने चक्रवर्ती सर्व देवनिकायमांथी आवीने थाय छे, अने अरिहंत तथा वासुदेव ए मात्र विमानवासीमांथी आवीनेज थाय छे. वसुदेवना चरित्र (वसुदेवहिंड) मां तो नागकुमारमांथी नीकळी अनंतरभवे ऐरवतक्षेत्रे आ अवसर्पिणी काळमां जिन थयेला वर्णव्या छे. तत्त्व ज्ञानी जाणे.

"जेणे स्फुरायमान तीर्थंकरनामकर्म मेळव्युं होय छे ते ते कर्मना उदयथी अहीं मनुष्यगतिमां जगत्पति जिनेश्वर थाय छे."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ षण्णवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९६ ॥

व्याख्यान १९७ मुं.

तीर्थंकरोनुं च्यवनकल्याणक वर्णवे छे.

देवभवं च तत्सौख्यं, मुक्त्वा च्युत्वेह सत्कुले ।
श्रीमतीभूपतेर्भार्याकुक्षावुत्पद्यते जिनः ॥ १ ॥

भावार्थ.

"देवतानो भव अने देवगति संबंधी सुख मूकी त्यांथी चवीने कोई पण राजानी उत्तम राणीनी कुक्षिमां जिनेश्वरनो जीव उत्पन्न थाय छे"

विशेषार्थ.

जे जीव तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करेछे ते देवभव संबंधी सुख मूकी त्यांथी च वीने आ मनुष्यक्षेत्रने विषे कर्मभूमिमां उत्तम कुळनी अंदर धनाढ्य राजानी शील विगेरे गुणोथी संपन्न एवी राणीनी कुक्षिमां अवतरे छे. जोके दरेक देवतानुं ज्यारे छ मासनुं आयुष्य बाकी रहेछे त्यारे तेने आ प्रमाणे चिन्ह थाय छे–पुष्पनी माळा म्लानी पामे, कल्पवृक्ष कंपे, लक्ष्मी तथा लज्जानो नाश थाय, वस्त्र मेलां देखाय, दीनपणुं आवे, आलस थाय, काम-राग वधे, अंग भांगे, दृष्टिमां भ्रम थाय, शरीर कंपे अने अरति उपजे, तथापि तीर्थंकर थनारा देवता तो पुण्यना उत्कर्षपणाथी उलटा विशेष कांति विज्ञानादि युक्त थाय छे. कह्युं छे के "तीर्थंकर थनारा देवतानुं तेज च्यववा सुधी वधतुं जाय छे. बीजा देवताओनी जेम तेमने च्यवन संबंधी दूषित चिन्हो थतां नथी." बीजा देवताओमांथी केटलाएक उपर कहेलां चिन्हो ज्यारे जुए छे त्यारे आप्रमाणे चिंतवे छे–"अहो! अमारूं आवुं सुख चाल्युं जशे? दुर्गंधथी भरेलुं गर्भ विगेरेनुं दुःख प्रगट थशे. अरे! आ अमारी देवांगनानो स्वामी कोण थशे?" आप्रमाणे चिंतवीने तेओ आक्रंद करे छे, अने शोकमग्न थाय छे. जेओ परमार्थने जाणनारा सुलभबोधी होय छे तेओ पोताना आत्मानी तेवा प्रकारनी विडंबना करता नथी. केटलाएक तो भावी भाव मानीने आप्रमाणे चिंतवे छे के 'क्यारे अमे मनुष्यपणुं पामीने जिनमार्गने अनुसरशुं?'

अहीं एटलुं विशेष जाणवानुं के चववानो काळ एक समयनो होवाथी सूक्ष्म छे, अने छद्मस्थपणाना ज्ञाननो उपयोग जघन्यथी पण अंतर्मुहूर्तनो होय छे, तेथी चवती वखत खबर पडती नथी.

हवे च्यवनकल्याणकनो महिमा कहे छे–तीर्थंकरनो जीव चववानो होय छे त्यारे पृथ्वी उपर अशिव उपद्रव विगेरे शमी जाय छे; अने नारकीना जीव पण क्षणवार सुख मळवाथी हर्ष पामे छे. ज्यारे तीर्थंकररूप सूर्य उदय थवाने सन्मुख थाय छे त्यारे इंद्रो आसनकंपथी ते हकीकत जाणीने हर्ष पामे छे. पछी तत्काळ सिंहासन उपरथी उठी विनयथी पादुका छोडी दई श्रीजिनेश्वरनी दिशानी सन्मुख सात आठ पगलां चाले छे. पछी पंचांग प्रणिपातवडे श्रीजगदीश्वरने नमी अंजलि जोडी शक्रस्तववडे स्तुति करे छे. श्रीआवश्यकनीवृत्तिमां श्रीऋषभप्रभुना गर्भावतारना संबंधमां श्रीहरिभद्रसूरि कहे छे के "शक्र इंद्र आसनकंपथी प्रभु चव्या एम जाणी सत्वर त्यां आवे अने यावत् जिनेश्वरनी माताने कहेके तमारो पुत्र प्रथम धर्मचक्रवर्ती थशे." केटलाएक कहे छे के 'बत्रीश[1] इंद्र आवीने ते प्रमाणे कहे.' एवी रीते प्रथम

१ अहीं बत्रीश इंद्र व्यंतर शिवायनी त्रण निकायना जाणवा.

कल्याणकना उत्सवनी पद्धति बहुश्रुत विद्वानो पासेथी जाणी लेवी.

हवे गर्भावासमां जिनेश्वर आवतां तेमनी माताने जे थाय ते कहे छे–

ते अवसरे स्वर्गभवन जेवा वासगृहमां स्वर्गनी शय्या जेवी शय्या उपर मृगाक्षी जिनमाता सुता होय छे. तेओ निरोगी अने समधातुपणामां प्रसन्न चित्तथी रात्रे साक्षात्नी जेम चौद स्वप्न जुए छे. ते चौद स्वप्ननुं वर्णन प्रख्यात छे तेथी अहीं लखता नथी. बीजा उत्तम पुरुषोनी माता केटलां स्वप्नो जुए छे ते विषे कहेलुं छे के चक्रवर्तीनी माता जिनेश्वरनी मातानी जेम तेज चौद स्वप्नो जुए छे, पण ते जिनमातानी अपेक्षाए कांईक न्यून कांतिवाळा जुए छे. जेनो पुत्र एकज जन्मने विषे चक्री अने तीर्थंकर थवानो होय तेनी माता ते चौद स्वप्नो बेवार जुए छे. एम पूर्वाचार्योए कहेलुं छे. शांतिनाथ प्रभुना शीलवती माता आचिराए रात्रिना शेष भागे बेवार चौद स्वप्नो जोयां हतां. एम बृहच्छत्रुंजयमहात्म्यमां कहेलुं छे. वासुदेवनी माता ए चौद स्वप्नमांथी कोई पण सात स्वप्न जुए छे; बळदेवनी माता तेमांथी चार स्वप्न जुए छे, मांडलिक राजानी माता तेमांथी एक स्वप्न जुए छे, प्रतिवासुदेवनी माता तेमांथी त्रण स्वप्न जुए छे, अने कोई महात्मा मुनिनी माता तेमांथी एक स्वप्न जुए छे. जेम मेघकुमार विगेरेनी माताए जोयुं हतुं तेम स्वबुद्धिथी जाणी लेवुं.

हवे प्रस्तुत विषयना संबंधमां कहे छे के "त्रण ज्ञानवाळा श्री जिनेश्वर भगवंत पण गर्भरूपे आवीने रहे छे. अहो! जगतनो प्रवाह जिनेश्वरोए पण उल्लंघन कर्यो नथी." स्वर्गथी चवीने जोके गर्भमां गुप्तपणे रहे छे तो पण आखा विश्वमां प्रगट थाय छे, अने इंद्रादि तेमनी स्तुति करे छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्तनवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९७ ॥

व्याख्यान १९८ मुं.

जन्मकल्याणक वर्णन.

सर्वे जिन त्रणज्ञानवाळा आवीने उपजे छे ते विषे कहे छे.

स्वर्गाद्वा नरकाद्वा ये, यस्मादायांति तीर्थपाः ।
ज्ञानत्रयं ते तत्रैत्य, बिभ्रते गर्भगा अपि ॥ १ ॥

भावार्थ

"तीर्थंकर स्वर्गथी के नरकथी गमे त्यांथी आवे पण ते गर्भमांथीज त्रणे ज्ञानने धारण करनारा होय छे."

अहीं मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान ए त्रण ज्ञान समजवा. ते त्रण ज्ञान बीजा देवताओ करतां तीर्थंकर थनारा देवताओने अनंतगुण श्रेष्ठतर होय छे; अने तेवा त्रण ज्ञान साथेज ते गर्भमां आवीने अवतरे छे. ज्यारे जिनेश्वर गर्भमां अवतरे त्यारे ते गर्भना प्रभावथी मातानुं शरीर स्वच्छ पुद्गळमय तथा सुगंधमय थाय छे. बीजी माताओनी जेम गर्भस्थळ बिभत्स देखातुं नथी. जिनेश्वरने उत्पन्न थवा योग्य गर्भस्थान कस्तुरी बरास करतां पण अत्यंत सुगंधी होय छे. त्यां प्रभुनो जीव मुक्ताफळनी अथवा हीरानी जेम उत्पन्न थाय छे. ते स्थानके अशुभ पुद्गलनी स्थिति के संचय थतो नथी. माता जे आहार ले छे ते पण शुभरूपे परिणाम पामे छे. प्रभुना प्रभावथी, मेघे ग्रहण करेल क्षार जळ पण जेम मधुर थाय छे तेम सर्व पुद्गळ निर्मळ थई जाय छे. वळी प्रभु गर्भमां आवी गया पछी ते माताना गर्भमां पुनः बीजो जीव उत्पन्न थतो नथी अर्थात् त्यारपछी गर्भस्थितिज थती नथी. तेथी स्तुतिने अगोचर दिव्यरूप एवा योनिक्षेत्रमां बीजी असंख्यात स्त्रीओने तजी दईने प्रभु उपजे छे. अर्थात् पुण्यना पात्ररूप, उभय कुळ शुद्ध, धर्मध्यानमां तत्पर, अनंत धर्मकार्यना प्रभावे जेणे स्त्रीभव प्राप्त करेल छे, जे अगणित पुण्य लावण्यवती छे, अने जे बाल्यवयथी शीलधर्मनी धुराने धरनारी होय छे तेवी स्त्रीनेज जिनेश्वर मातारूपे स्वीकारे छे; अने ते जिनमाता पण एवा प्रभाविक पुत्रने प्रगट करवा माटे प्रबळ पुण्याढ्य होवाथीज जगत्पति जननीनुं बिरूद धारण करे छे. ते विषे श्रीभक्तामरस्तोत्रमां कहेलुं छे केः—

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥

सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालं ॥

" हे स्वामी! सेंकडो स्त्रीओ सेंकडो पुत्रने जन्म आपे छे, पण तमारा जेवा पुत्रने कोई बीजी माता जन्म आपती नथी. दृष्टांत के सर्व दिशाओ नक्षत्रोने तो धारण करे छे, पण स्फुरायमान किरणोवाळा सूर्यने तो पूर्वदिशाज धारण करे छे."

अहीं कोई शंका करे के बीजा जीवनी जेम प्रभुने पण गर्भमां दुःख थतुं हशे; पण ते शंका अहीं लाववी नहि. कह्युं छे के "गर्भमां आवेला जिनेंद्र त्यां कांई पण दुःख पामता नथी, अने प्रसवादिकमां पण तेमने के माताने किंचित् पण दुःख थतुं नथी." बीजा जीवोने गर्भमां अत्यंत दुःख थाय छे एम शास्त्रोमां कहेलुं छे. ते आप्रमाणे- " हे गौतम! सोयने अग्निमां तपावी रोमेरोमे प्रवेश कराववाथी जीवने जेवुं दुःख थाय तेथी आठगणुं दुःख प्राणीने गर्भमां थाय छे, अने गर्भमांथी नीकळतां योनियंत्रमां पीलाती वखत तेथी लाखगणुं अथवा कोटिगणुं दुःख थाय छे."भावार्थ एवो छे के कोई देवता साडात्रण करोड सोयने अग्निमां तपावी प्राणीनां साडात्रण करोड रुंवाडांमां एक साथे समकाळे वींधे, ते वडे तेने जेवुं दुःख थाय तेथी आठगणुं दुःख जीवने गर्भमां थाय छे. एवां सर्वप्रकारनां दुःखजाळथी मुक्त तीर्थंकरनो गर्भ होय छे एम कहेलुं छे तेनुं तत्त्व तो केवली जाणे.

जिनेश्वर पोतानो च्यवनसमय जाणी शकता नथी. कारणके ते काळ अति सूक्ष्म छे. कह्युं छे के-जिनेश्वर भगवंत अतीत, अनागत काळना असंख्याता समयनी वात जाणे पण च्यवननी वात न जाणे. कारणके च्यवननो काळ एक समयनो होवाथी अतिसूक्ष्म छे. एटले प्रभु च्यवीश एम जाणे, च्यवनक्षणे न, जाणे, च्यव्या पछी चव्यो एम जाणे. आप्रमाणे प्रभुना गर्भोत्पत्तिकाळनो महिमा वर्णव्यो. हवे जिन जन्मनो उत्सव वर्णवे छे.

जगत् सर्व हर्षवंत होय अने निमित्त-शकुनादिक सारां थतां होय ते समये अर्धरात्रे पृथ्वी जेम निधानने प्रसवे तेम जिनमाता जिनने जन्म आपे छे. ते समये सर्व दिशाओ हर्षित थई होय तेम प्रसन्न देखाय छे, अने ज्यां निरंतर अंधकार रहेछे तेवा नरकमां पण क्षणमात्र प्रकाश थाय छे ते विषे ठाणांगसूत्रमां कह्युं छे के " अरिहंतना जन्म वखते, दीक्षा ले ते वखते, ज्ञानप्राप्तिने समये अने मोक्षे जाय त्यारे- ए चार वखते सर्व लोकमां उद्योत थाय."

जन्मसमये तत्काळ छप्पन दिक्कुमारीओ आसनकंप थवाथी अवधि ज्ञानवडे प्रभुनो जन्म जाणी त्यां आवे छे. ते छप्पन दिक्कुमारीओनुं कृत्य आ प्रमाणे छे– भोगंकरा विगेरे अधोलोकवासी आठ दिक्कुमारीओ परस्पर बोलावीने कहे के 'अहीं रहेनारी त्रणे काळनी दिक्कुमारीओनो एवो आचार छे के तेमणे जिनेश्वर भगवंतनो जन्मोत्सव करवो. माटे चालो आपणे पण त्यां जईए. आपणा जीवितने धन्य छे के सर्वथी पहेलां श्रीजिनपतिना दर्शन आपणनेज थशे.' आवो निश्चय करी प्रत्येक कुमारिका पोतपोताना सेवकदेवता पासे योजन प्रमाण विमान करावी प्रत्येके चार हजार सामानिक देवता, चार महत्तरा, सोळ हजार आत्मरक्षक देवो अने सात प्रकारना कटकनो परिवार लई पोतपोताना विमानमां बेसी अरिहंतना जन्मगृह समीपे आवी विमानमांथी उतरे छे. पछी जिनेश्वरने तथा जिनमाताने त्रण प्रदक्षिणा करी भगवंत तथा भगवंतनी मातानी आ प्रमाणे स्तुति करे छे–' हे विश्वदीपिका! तमे त्रिभुवनने तारवाने समर्थ एवा श्रीअर्हत प्रभुनी माता थया छो, एथी तमे कृतार्थ छो.' इत्यादि स्तुति करीने कहे छे के 'हे माता! तमे बीशो नहि, अमे अमारी जेवा जीवोना स्वामी एवा तमारा पुत्रनो जन्मोत्सव करवाने माटे आवेल छीए.' आम कहीने संवर्त्तक वायुवडे प्रभुना जन्मगृहथी एक योजन प्रमाण क्षेत्रने रज, अस्थि, केश तथा तृणादिकथी रहित करी स्वकार्य बजावी गायन करती उभी रहे छे.

बीजी पण दिक्कुमारीओना आगमननी पद्धति एवी रीतेज छे. तेना कार्यमां जे कांई विशेष छे ते कहीए छीए. मेघंकरा विगेरे आठ ऊर्ध्वलोकवासी दिक्कुमारीओ जेओ आ समभुतला पृथ्वीथी पांचसो योजन ऊंचा नंदन वनमां पांचसो योजन ऊंचा शिखर उपर रहेनारी छे ते त्यांथी पूर्ववत् आवी, सुगंधी मेघने विकुर्वी, प्रथम साफ करेला योजन प्रमाण क्षेत्रने सुगंधी जलधारावडे शीतळ करे छे. पछी जानु प्रमाण ऊंची पंचवर्णी पुष्पनी वृष्टि एक योजन प्रमाण क्षेत्रमां करे छे तथा चारे तरफ धूपना धूमथी आकुळ करे छे.

पछी नंदोत्तरा प्रमुख आठ पूर्वरुचकनिवासी दिक्कुमारीओ त्यां आवी, जिनने तथा जिनमाताने नमी हाथमां दर्पण लई गाती गाती उभी रहे छे. समाहारा विगेरे आठ दक्षिणरुचकवासी लेवूं दिक्कुमारीओ हाथमां पूर्ण कळश राखी प्रभुनी दक्षिण तरफ गीत गाती उभी रहे छे. इलादेवी विगेरे आठ दिक्कुमारीओ पश्चिम रुचकथी आवी हाथमां पंखा लई प्रभुनी पश्चिमे उभी रहीने गायन करे छे. अलंबूसा विगेरे आठ दिक्कुमारीओ उत्तर रुचकथी आवी प्रभुनी उत्तरे रही चामर वींजे छे. चित्रा

१ समभूतळाथी ९०० योजन पर्यंत तीर्छालोक छे. त्यारपछी ऊर्ध्वलोक गणाय छे, तेथी आने ऊर्ध्वलोकवासी गणी छे. २ थई गयेली, वर्तती अने हवेपछी थनारी.

विगेरे चार दिक्कुमारीओ विदिशाना रुचकथी आवी प्रभुने तथा माताने नमी हाथमां दीपिका लई चारे विदिशाओमां गाती सती उभी रहे छे, अने रूपा विगेरे 'चार दिक्कुमारीओ मध्य रुचकमां रहेनारी परिवार सहित आवी प्रभुनुं नाळ चार आंगळ वर्जीने वधेरे छे, अने ते नाळने पृथ्वीमां नाखी ते खाडाने उत्तम रत्नोथी पूरी दे छे. पछी अरिहंतना अंगने आशातना न थाय एवी बुद्धिथी ते स्थान उपर पीठ बांधी दूर्वाना अंकुर वावे छे. पछी पश्चिम शिवाय त्रणे दिशाओमां कदलीना त्रण घर विकुर्वी ते प्रत्येकमां एकेक सिंहासनवाळुं चतुःशाल विकुर्वे छे. ते पछी जिनने कर-संपुटमां लई जिनमाताने हाथनो टेको आपी आगळ करी दक्षिण दिशाना घरमां लई जाय छे. त्यां भद्रासन उपर बेसारी दिव्य तैलथी अभ्यंग करी सुगंधी द्रव्यथी तेमना अंगने उद्वर्तन करे छे. ते पछी पूर्वना कदलीगृहमां पूर्वनी जेम लावी सिंहासन उपर बेसारी सुगंधी पुष्पथी वासित जळवडे नवरावे छे; पछी तेमने अलंकारथी भूषित करे छे. त्यार पछी उत्तर तरफना कदलीगृहमां लई जई सिंहासन उपर जिनमाताने उत्संगमां प्रभु आपी बेसारे छे. पछी गोशीर्ष चंदनना काष्ठ सेवकदेवता पासे मंगावी अरणि काष्ठना मथनवडे अग्नि उत्पन्न करी तेमां चंदन काष्ठनो होम करी रक्षा पाडे छे. ते पछी जिन तथा जिनमाता बंनेना हाथ उपर प्रेत प्रमुखनो दोष हणवा माटे रक्षापोटली बांधे छे. पछी गोळ बे पाषाण अफळावी 'तमे पर्वतना जेवा आयुष्य-वाळा थाओ' एम आशिष आपे छे. पछी तेमने जेम लाव्या हता तेम लई जई जन्मगृहमां शय्यापर बेसारी तेमनी समीपे भक्तिथी गीत गाय छे.

आ देवीओ भुवनपति जातिनी छे एम बहुश्रुत पुरुषोए निश्चय करेलो छे. कारणके श्रीठाणांगसूत्रमां केटलीएक दिक्कुमारीओनुं वर्णन करतां तेमनी स्थिति एक पल्योपमनी कहेली छे. समान जातिने लीधे आ देवीओनुं आयुष्य पण तेटलुंज संभवे छे. आ देवीओ अपरिगृहीता छे, तेथी तेमने दिक्कुमारी कहे छे.

आ प्रमाणे दिक्कुमारीओए करेलो प्रभुनो जन्मोत्सव 'श्रीजंबूद्वीप पन्नत्तिमांथी लईने अहीं संक्षेपथी लख्यो छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टनवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९८ ॥

व्याख्यान १९९ मुं.

हवे इंद्रकृत जन्मोत्सव वर्णवे छे.

सिंहासनं सुरेंद्रस्य, कंपते युधि भीरुवत् ।
अवधिनार्हतां जन्म, ज्ञात्वा तदुत्सवं तनोत् ॥ १ ॥

भावार्थ.

" प्रभुना जन्मवखते इंद्रनुं आसन रणभूमिमां भीरु जन कंपे तेम कंपायमान थाय छे. तेथी इंद्र अवधिज्ञानवडे प्रभुनो जन्म जाणी तेमना जन्मनो उत्सव करे छे. "

विशेषार्थ.

इंद्रकृत जिनजन्मोत्सवनो प्रकार आ प्रमाणे छे—इंद्र अवधिज्ञानवडे प्रभुनी उत्पत्ति जाणी सिंहासनथी उभो थई सात आठ पगलां प्रभुनी दिशा तरफ चाली विनयथी शक्रस्तववडे स्तुति करी पाछो आवी पूर्वाभिमुख सिंहासन पर बेसी आ प्रमाणे चिंतवे के ' अहीं त्रिकाळ उत्पन्न थता इंद्रोनो एवो आचार छे के तेमणे अरिहंत प्रभुनो जन्माभिषेक करवो. ' आम निश्चय करी पायदळ सेनाना नायक हरिणगमेषी देवने बोलावी कहे के 'तुं सुघोषा घंटा वगाड, अने आपणा स्वर्गना सर्व देवताओने अमारुं प्रस्थान जणाव.' पछी ते देव इंद्रनी आज्ञा माथे चडावी योजन प्रमाण मंडळवाळी सुघोषा घंटाने त्रणवार वगाडे. ते वगाडतांज बत्रीशलाख विमाननी बत्रीशलाख घंटाओ दिव्य प्रभावथी एक साथे वागे. तेमनो ध्वनि शांत थतां ते देव आ प्रमाणे उद्घोषणा करे के—" हे देवताओ ! तमे इंद्र साथे जिनेश्वर भगवंतना जन्मकल्याणकना उत्सव माटे तत्पर थई चालो. सत्वर सज्ज थई जाओ. " आ प्रमाणेनी उद्घोषणा सांभळी सर्व देवताओ पोतपोताना वाहन तैयार करी जिनभक्तिमाटे जवाने उत्सुक थाय. पछी इंद्र पालक नामना यान विमानना स्वामी देवने विमान सज्ज करवा आज्ञा करे. ते देव जंबूद्वीप जेवडुं (लाख योजननुं) पांचसो योजन ऊंचुं पालक नामनुं विमान सज्ज करी त्यां लावे, श्रीठाणांगसूत्रमां कह्युं छे के " चार वस्तु लोकने विषे समान छे—सातमी नरकनो अप्रतिष्ठान नरकावासो, जंबूद्वीप, पालक नामनुं यान विमान अने सर्वार्थसिद्ध महाविमान—आ चारे वानां लक्ष योजन प्रमाणना छे. " आ उपरथी पालक विमान प्रमाणांगुळ निष्पन्न लक्ष योजननुं जाणवुं. ते विमानमां पश्चिम शिवाय त्रण दिशाए त्रण त्रण पगथीआंवाळुं एकेक द्वार होय छे. मध्यमां अनेक रत्नमय स्तंभोथी पूर्ण प्रेक्षागृहमंडप होय छे. तेनी मध्ये रत्नपीठिका उपर इंद्रनुं सिंहासन होय छे. तेनाथी वायव्य कूणमां, उत्तरमां अने

ईशान कूणमां चोराशीहजार सामानिक देवतानां ८४००० सिंहासन होय छे. पूर्व दिशामां इंद्रनी आठ अग्रमहिषी (इंद्राणी) नां आठ सिंहासन होय छे. अग्निकोणमां बारहजार अभ्यंतर पर्षदाना देवोनां १२००० सिंहासन होय छे. दक्षिणमां मध्य पर्षदाना सोळहजार देवोनां १६००० सिंहासन होय छे. अने पश्चिममां सात कटकना स्वामीनां सात सिंहासन होय छे. बीजा वलयमां इंद्रना आत्मरक्षक देवतानां चोराशी चोराशी हजार सिंहासन चारे दिशामां होय छे. सर्व संख्याए त्रण लाख ने छत्रीश हजार आत्मरक्षकदेवताओनां तेटलांज सिंहासनो होय छे.

आ प्रमाणे विमान तैयार थया पछी हर्ष पामतो इंद्र अर्हंतनी सेवाने योग्य रुप करी विमानने प्रदक्षिणा दई पूर्व दिशाना त्रण सोपानवाळा मार्गे तेमां प्रवेश करी पूर्वाभिमुखे बेसे. सामानिक देवताओ उत्तरदिशाना सोपानमार्गे प्रवेश करी पोताना आसने बेसे, अने बीजाओ दक्षिणदिशाना सोपानमार्गे प्रवेश करी पोतपोताने योग्य स्थाने बेसे.

आ प्रमाणे तैयार थयेलुं विमान चालतां तेनी आगळ आठ मंगळिक तथा एक सहस्र योजन ऊंचो अने नानी नानी हजार ध्वजावाळो महेंद्रध्वज विगेरे चाले. दुंदुभिना ध्वनि साथे ते विमान आकाशमांथी उत्तर बाजुने मार्गे उतरे. कह्युं छे के–" जिनजन्मोत्सवादि प्रसंगे इंद्र तेनी प्रशंसा करनारा घणा जीवोने समकितनो लाभ थवा माटे ते मार्गे थईने नीकळे छे. " पछी असंख्य द्वीपसमुद्रना मध्ये मध्ये थई सत्वर चालतुं ते विमान नंदीश्वर द्वीपमांहेना रतिकर पर्वत उपर आवे. त्यां ते विमानने संक्षेपीने सौधर्मेंद्र प्रभुना नगरमां अने तेमना जन्मगृहमां आवे. त्यां साथे लावेला लघु विमानवडे प्रभुना घर फरती त्रण प्रदक्षिणा करी इंद्र, ईशानदिशामां पृथ्वीथी चार आंगुळ ऊंचुं ते विमान मूकी घरमां प्रवेश करे. पछी जिनेश्वर भगवंतने माता सहित नमस्कार करी त्रण प्रदक्षिणा दईने कहे के 'हे जगत्पूज्य! तमने नमस्कार हो. हे माता ! तमे धन्य छो. तमे पूर्वे पुण्य करेलां छे के जेथी तमारी कुक्षिमां आ जगत्पति उत्पन्न थया छे. हे माता ! मने आज्ञा आपो. माराथी जरापण भय पामशो नहि. अमे तमारा पुत्रनो जन्मोत्सव करीशुं.' आ प्रमाणे कही प्रभुनी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपी प्रभुनी प्रतिकृति तेमना पडखामां मूके. प्रभुनुं प्रतिबिंब पडखामां मूकवानो हेतु एवो छे के–' इंद्र पोते जन्मोत्सवमां व्यग्र होय ते प्रसंगे कोई कौतुहली दुष्ट देव वखते जिनमातानी निद्रा हरी ले, अने ते काळे पुत्रने पासे न जोवाथी माता अथवा तेमनो परिवार दुःखी थाय. तेथी तेओ दुःखथी खेद पामे नहि तेवा हेतुथी इंद्रनो आ उद्यम छे.'

पछी इंद्र पांच रुप करी एक रुपे धोयेला, पवित्र अने धूपित करेला हाथमां प्रभुने ग्रहण करे, एक रुपे छत्र धरे, बे रुपे बे बाजु चामर वींजे, अने पांचमे रुपे हाथमां वज्र लई सेवकनी जेम प्रभुनी आगळ चाले. तेनुं विमान पछवाडे खाली चाल्युं आवे. इंद्र अनेक देवोना परिवारे परवरेलो होय छे; छतां पोतेज पांच रुप विकुर्वे छे ते त्रिजगत्गुरुनी परिपूर्ण सेवा करवानी इच्छाथीज विकुर्वे छे. पछी अनेक देवताओथी परवर्यो सतो इंद्र मंदरगिरिनां[1] शिखर उपर जई पांडुक वनमां पांडुकंबला शिलानी उपर अभिषेक करवानुं शाश्वत सिंहासन छे तेनी उपर पूर्वाभिमुखे प्रभुने उत्संगमां लईने बेसे.

एवी रीते ईशान इंद्र पण लघुपराक्रम नामे पोताना सेनापतिदेव पासे महाघोषा नामनी घंटा वगडावे. पछी पुष्पक नामना देवतानी पासे पुष्पक नामनुं विमान तैयार करावी तेमां बेसी शक्र इंद्रनी जेम आवे. ते दक्षिण बाजुना मार्गे आकाशमांथी उतरी नंदीश्वरद्वीप उपरना उत्तरपूर्व वचेना रतिकर पर्वत उपर आवे. त्यां ते विमाननो संक्षेप करी मेरुगिरि उपर आवी शक्र इंद्रनी जेम प्रभुनी स्तुति करी श्रीजिनेश्वर भगवंतने सेवे. एवी रीते बाकीना इंद्रोनुं पण मेरुपर्वत उपर आगमन शक्र इंद्रनी जेम जाणी लेवुं. आ उत्सवमां सर्व इंद्रोनुं एकी साथे आगमन थाय छे. बधा मळीने चोसठ इंद्रो आवे छे. ते आ प्रमाणे—वैमानिकना दश इंद्रो, भुवनपतिना वीश इंद्रो, व्यंतरोना बत्रीश इंद्रो अने सूर्य तथा चंद्र—एम चोसठ इंद्रो जाणवा. ज्योतिष्कना जोके असंख्याता इंद्रो आवे छे तथापि जातिनी अपेक्षाए सूर्य ने चंद्र ए बेज गणेला छे.समवायांगसूत्रमां तो व्यंतरना ३२ इंद्रो शिवायना बत्रीश इंद्रो आवे एम कहेलुं छे. तेमां नवमा दशमा कल्पनो एक इंद्र अने अगियारमा बारमा कल्पनो एक इंद्र होवाथी वैमानिकना दश इंद्रो जाणवा.

वैमानिक इंद्रोनो परिवार आ प्रमाणे छे— पेहला कल्पे चोराशीहजार सामानिक देवता, बीजे एंशीहजार, त्रीजे बोंतेरहजार, चोथे सीत्तेरहजार, पांचमे साठहजार, छट्ठे पचासहजार, सातमे चाळीश हजार, आठमे त्रीश हजार, नवमा इंद्रना वीशहजार अने दशमा इंद्रना दशहजार सामानिक देवता होय छे, अने तेथी चार चार गणा अंगरक्षकदेव होय छे. इत्यादि तेमनो परिवार जाणवो. पहेला बीजा शिवाय बाकीना देवलोकनी घंटाओनां नाम आ प्रमाणे छे— त्रीजे, पांचमे, सातमे अने दशमे कल्पे सुघोषा नामनी घंटा छे, अने तेनो वादक हरिणगमेषी देव छे; अने चोथे, छठे, आठमे अने बारमे[2] घंटा तथा सेनानीनां नाम विगेरे पूर्वे कहेला ईशान इंद्रनी प्रमाणे

---

1 मंदरगिरि ते मेरुपर्वत. 2 नवमा दशमानो ने अग्यारमा बारमा देवलोकनो इंद्र एकेक होवाथी तेनी घंटा दशमा ने बारमा देवलोकमांज होय छे. इंद्रनी सभा पण त्यांज होय छे.

छे. एटले घंटा महाघोषा नामे अने वगाडनार लघुपराक्रम नामे सेनापति छे. वैमानिक दश इंद्रोनां विमानना नाम अनुक्रमे पालक, पुष्पक, सौमनस, श्रीवास, नंद्यावर्त, कामगम, प्रीतिगम, मनोरम, विमळ अने सर्वतोभद्र छे; अने विमानना नाम प्रमाणे ते विमानना अध्यक्षदेवता छे.

भुवनपतिमां चमरेंद्रने ओघस्वरा नामे घंटा, द्रुम नामे सेनानी अने पालक विमानथी अर्ध प्रमाणवाळुं विमान छे; तथा तेनो ध्वज पण महेंद्रध्वजथी अर्ध प्रमाणवाळो होय छे. एवी रीते बलींद्र ने महोघस्वरा नामे घंटा अने महाद्रुम नामे सेनापति छे. बाकीना दक्षिण निकायना नव इंद्रनो भद्रसेन नामे सेनापति छे; अने उत्तरना नव इंद्रोनो दक्ष नामे सेनापति छे. तेमना विमान अने ध्वज चमरेंद्रथी अर्धे प्रमाणवाळा होय छे; तथा नागकुमारादि नवे निकायमां घंटा मेघस्वरा, हंसस्वरा, क्रौंचस्वरा, मंजुस्वरा, मंजुघोषा, सुस्वरा, मधुस्वरा, नंदिस्वरा अने नंदिघोषा नामे अनुक्रमे छे.

दक्षिण बाजुना व्यंतरेंद्रोनी घंटा मंजुस्वरा नामे छे, अने उत्तर बाजुना इंद्रोनी घंटा मंजुघोषा नामे छे. तेमनां विमान एक हजार योजन विस्तारवाळां अने ध्वज एकसो पचवीश योजन ऊंचा होय छे. ज्योतिषीमां चंद्रनी सुस्वरा नामे घंटा अने सूर्यनी सुस्वरनिर्घोषा नामे घंटा छे. बाकीनुं व्यंतरेंद्र प्रमाणे छे. भुवनपति, व्यंतर अने ज्योतिष्कना इंद्रोने विमान रचनार खास देवता होता नथी, पण तेना आभियोगिक देवता विमान रचे छे.

हवे सौधर्म इंद्र सर्व समृद्धि साथे उत्संगमां ऊंचा करेला बे हाथमां प्रभुने लईने बेसे. त्यार पछी अच्युत इंद्र पोताना आभियोगिक देवताओने कहे के 'हे देवताओ! तमे अर्हंतना जन्मने योग्य एवी सामग्री तैयार करो.' तेवी आज्ञा थतां ते देवताओ सुवर्णना, रुपाना, रत्नना, सुवर्णरत्नना, रुपारत्नना, रुपासोनाना, सोना रुपा अने रत्नना तेमज मृत्तिकाना प्रत्येके एक हजार ने आठ आठ कलश विकुर्वे. ते साथे पंखा, चामर, तेलना दाबडा, पुष्पचंगेरी तथा दर्पण विगेरे वस्तु पण प्रत्येक जातिनी एक हजार ने आठ आठ रचे. पछी आभियोगिक देवता ते कुंभ विगेरे लईने क्षीरसागर तथा गंगादि तीर्थनां जळ तथा कमळ विगेरे लावे. ते विषे श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमां कह्युं छे के "क्षीरसागरमांथी क्षीरोदक ग्रहण करे, ग्रहण करीने त्यां उत्पन्न थयेलां कमळ तथा सहस्रदळ कमळ ले; ते लई पुष्करोदधिमांथी अने यावत् भरत, ऐरवतमांहेना मागध प्रमुख तीर्थोंएथी जळ तथा मृत्तिका ग्रहे." पछी ते देवताओ नंदनवन विगेरेमांथी गोशीर्षचंदनादि लई सर्व एकठुं करी अच्युत इंद्र पासे रजु करे. एटले अच्युतेंद्र पुष्पमाळाथी शोभित कंठवाळा अने कमळथी ढांकेला मुखवाळा आठ हजार ने चोसठ कळशोथी भवसागरनो पार पामवाने माटे

पोताना परिवारसहित अर्हंत प्रभुने पूर्वे वर्णवेला जळ पुष्पादिकथी अभिषेक करे. ते वखते ईशान इंद्र विगेरे इंद्रो उभा रहीने प्रभुने सेवे. केटलाएक देवता प्रभु आगळ गायन करे, केटलाएक नृत्य करे, अने केटलाएक अश्व तथा गजेंद्रना जेवी गर्जना करे. एवी रीते अभिषेक करी प्रभुने नमीने अच्युत इंद्र गंध काषायिक वस्त्र-वडे प्रभुनुं अंग लुछे. पछी प्रभुने अलंकार धारण करावी तेमनी आगळ सुवर्णना पट्ट उपर रुप्यमय चोखाथी अष्टमंगळ आळेखे. पछी बत्रीश प्रकारसुं नाटक करी, प्रभुनी समीपे पुष्पनो प्रकर धरी, धूप करीने एकसो आठ काव्यवडे प्रभुनी स्तवना करे. श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमां ते विषे कह्युं छे के " प्रभुने धूप करी सात आठ पगलां पाछा ओसरी दश आंगळीना नख एकठा थाय तेम अंजलि जोडी मस्तके प्रणाम करे. पछी अपुनरुक्त एवा १०८ विशुद्ध श्लोक गुंथवावडे स्तुति करे. यावत् कहेके हे सिद्ध, बुद्ध, निष्कर्म, तपस्वी, राग दोषरहित, निर्मम, धर्म चक्रवर्ती एवा प्रभु ! तमने नमस्कार हो.' इत्यादि स्तुति भक्ति करीने विनयथी प्रभुनी आगळ उभो रहे."

एवी रीते सौधर्मेन्द्र शिवाय त्रेसठ इंद्रो अनुक्रमे ए विधिथी प्रभुनो अभिषेक करे. पछी इशान इंद्र पांच रुप विकुर्वी एक रुपे प्रभुने उत्संगमां लई शक्र इंद्रने स्थाने बेसे, एक रुपे छत्र धरे, बे रुपे बे बाजु चामर वींजे अने एक मूर्तिए त्रिशूल लई प्रभुनी आगळ किंकरनी जेम उभो रहे. एटले शक्र इंद्र पूर्वेनी जेम सर्व सामग्री तैयार करे. तेमां एटलुं विशेष के चार वृषभना रुप विकुर्वी प्रभुनी चारे दिशामां राखी तेना आठ शींगडांमांथी निकळती जळनी आठ धारा ऊंची उछळी एकठी थई प्रभुना मस्तक उपर खरे तेम करे. पछी शक्रेंद्र अच्युतेंद्रनी जेम परिवार साथे कृत्रिम ने अकृत्रिम—एम बंने प्रकारना कुंभवडे प्रभुने अभिषेक करे. यावत् १०८ श्लोकवडे स्तवना करी नमस्कार थाओ पर्यंत कहे.

वृद्धोना मुखथी कलश विगेरेनी संख्या आ प्रमाणे पण सांभळवामां आवे छे—एक एक जातिना बनेला आठ आठ हजार कुंभ होवाथी तेने आठगुणा करतां चोसठ हजार कुंभ थाय. एटला कुंभवडे एक एक अभिषेक थाय छे. एवी रीते चोसठ इंद्र, तेमना त्रायस्त्रिंश देवता, लोकपाल, इंद्राणीओ अने त्रणे पर्षदाना देवो विगेरेना मळीने बसो ने पचास अभिषेक थाय छे. तेथी चोसठ हजार कुंभने बसो ने पचास अभिषेक होवाथी तेटला गुणा करतां एक कोटी अने साठ लाख कळशवडे अभिषेक थाय छे. कलशना प्रमाण विषे पूज्य पुरुषो कहे छे के " दरेक कळश पचवीश योजन ऊंचो, बार योजन पहोळो अने एक योजनना नाळचावाळो होय छे. तेवा एक कोटी अने साठ लाख कळशवडे अभिषेक थाय छे."

पछी इंद्र प्रभुना जन्म संबंधी अभिषेक थई रह्या पछी आ प्रमाणे स्तुति करे-" हे कृपालु परमेश्वर ! मारा जेवा अनंत इंद्रो तमने पूजे तो पण तमारी वीतरागपणा रुप पूज्यताने तेमज बाल्यावस्थामां रहेली एवी धीरताने कही शकवाने पण कोई समर्थ नथी. अमे आ संसारना विकारथी भरेला छीए तेथी जेमनो महिमा अकळित छे एवा तमारा एक अंगुष्ट मात्र अवयवनी पूजा करवाने पण अमे शीरीते समर्थ थई शकीए ! तथापि निःस्पृह एवा तमारी अमारा आत्माना हितमाटे करेली भक्ति अमने बोधिबीजना लाभ माटे थाय छे. हे भगवन् ! अमारी इच्छाने अनुसरी तमे अहीं आव्या, ते आश्चर्यना विचारमां मग्न थई अमे चिंतवन करीए छीए के अमोए जे इंद्रपणुं प्राप्त कर्युं छे ते आजेज सफळ थयुं छे. अलोकाकाशने लोकाकाशमां क्षेपवा समर्थ एवा जिनेश्वरना आश्रयबळथी अमे अमारुं चित्त संसारभावमांथी खेंची शकीए छीएं. " आ प्रमाणे स्तुति करी कृतार्थ थयेल सौधर्म इंद्र पांच रुपे प्रभुनी सेवामां तत्पर थई प्रभुने जन्मगृहमां लावी मातानी पासे मूकी तेमनी प्रतिकृति तथा अवस्वापिनी निद्रा संहरी ले; अने बे रेशमी वस्त्र तथा बे कुंडल प्रभुने ओशीके मूकी एक रत्नमय उल्लेच बांधी प्रभुना अंगुठामां क्षुधानी शांतिमाटे अमृतनुं संक्रमण करे. स्तनपान नहि करनारा तीर्थंकरो ते अंगुठो मुखमां नाखवाथी तृप्त थाय छे. पछी इंद्रनी आज्ञाथी धनद, जृंभक देवताओ पासे बत्रीश कोटी सुवर्णनी वृष्टि प्रभुना घरमां करावे. शक्र इंद्र उद्घोषणा करावे के 'जे कोई प्रभुनुं के तेमनी मातानुं विरुप चिंतवशे तेनुं मस्तक आर्यक वृक्षनी मंजरीनी जेम फुटी जशे.' पछी बधा देवो नंदीश्वरद्वीपे जई अष्टाह्निक उत्सव करे. ते पछीनुं कार्य कल्पसूत्र विगेरेथी जाणी लेवुं.

" मंदिरगिरिना शिखर उपर अच्युत विगेरे चोसठ इंद्रोए जेमनो जन्माभिषेक कर्यो ते वखते जे प्रभु बालक छतां कळशमांहेना जळना प्रवाहथी जरापण क्षोभ पाम्या नहि ते श्रीजिनेश्वर भगवंत जय पामो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ नवनवत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १९९॥

---

१ अलोकव्योमयत्रे लोकव्योम्नि क्षेप्तुं क्षमाजिनाः । तदाश्रयबलाच्चित्तं कृषामि भवभावतः ॥

व्याख्यान २०० मुं.

श्रीजिनेश्वर जगवंतना छद्मस्थपणानुं वर्णन.

जगदुत्कृष्टसौंदर्या बाल्येऽप्यबालबुद्धयः ।
जितेंद्रियाः स्थिरात्मानो यौवनोद्योतिता अपि ॥ १ ॥

भावार्थ.

" जगत्मां सर्वोत्कृष्ट सौंदर्यवाळा अने बाल्यवयमां पण अबाळ बुद्धिवाळा प्रभु यौवनवयथी प्रकाशित थया छतां पण जितेंद्रिय अने स्थिर आत्मावाळा होय छे. " तेओ संसारना सुखमां आसक्त थता नथी. कह्युं छे के-

बहिरागं दर्शयंतोप्यंतः शुद्धा प्रवालवत् ।
प्राप्तेपि चक्रभृद्राज्ये न व्यासक्ता भवंति ते ॥

" तेओ बहारथी राग दर्शावे छे पण अंतःकरणमां प्रवाळानी जेम निर्मळ होय छे. कदि चक्रवर्तीनुं राज्य मळे तथापि तेओ तेमां आसक्त थता नथी. "

हवे लोकांतिक देवतानुं कृत्य कहे छे-तीर्थंकरो पोतानी दीक्षानो अवसर ज्ञानथी जाणे छे. तथापि ते समये लोकांतिक देवता आवी नमस्कार करीने आ प्रमाणे विज्ञप्ति करे छे-' हे जगद्गुरु ! तमे जय पामो, अने त्रण लोकना उपगार माटे धर्मतीर्थ प्रवर्तावो. '

हवे वर्षीदाननो विधि कहे छे- दीक्षा लेवाना दिवसने एक वर्ष बाकी रहे एटले तीर्थंकर प्रभु चार प्रकारना धर्ममां दानधर्मने मुख्य मानी वार्षिक दान आपे छे. ते दान आपवानो प्रकार आ प्रमाणे होय छे- ज्यारे भगवंत वर्षीदान आपवानो विचार करे ते अवसरे आसनकंपथी शक्रइंद्र अवधिज्ञानवडे ते विचार जाणे; पछी त्रिकाळमां उत्पन्न थता इंद्रोनो एवो आचार छे के ' प्रभुने दीक्षा अवसरे वार्षिक दान आपवाने माटे त्रणसो ने अठ्याशी कोटी तथा ऐंशी लाख सुवर्ण तेमने पूरुं पाडवुं ' एवो निश्चय करी कुबेरने तेटलुं द्रव्य पूरवा आज्ञा आपे. पछी धनदनी आज्ञाथी जृंभक देवताओ तेटलुं द्रव्य प्रभुना घरमां क्षेपन करे. अहीं वृद्ध पुरुषोना मुखथी एम पण सांभळ्युं छे के ऐंशी रतिनो एक सोनैयो थाय छे तेमां प्रभुनुं पोतानुं अने पितानुं नाम होय छे. एक दिवसना दानमां आपेला सोनैयानुं तोल नव हजार मण थाय छे. चाळीश मणनुं एक गाडुं भराय छे तेथी बसो ने पचवीश गाडां भराय तेटलां सुवर्णनुं दान दररोज आपे छे. एटले हमेशां एक कोटी ने आठ लाख सुवर्णनुं दान आपे छे.

वार्षिक दानमां जोईए तेटला सोनैया इंद्रनी आज्ञाथी वैश्रमणे देवता आठ समयमां तैयार करी तीर्थंकरना गृहमां स्थापन करे छे.

दानना छ अतिशय छे ते आ प्रमाणे– दान देती वखत प्रभुना हाथमां सौधर्म इंद्र द्रव्य आपे छे के जेथी दान आपतां प्रभुने श्रम न थाय. जो के जिनेंद्र भगवान् तो अनंत बळवाळा होय छे तथापि भक्तिनी बुद्धिथी इंद्र ए प्रमाणे करे छे. १. ईशान इंद्र हाथमां सुवर्णनी यष्टिका लईने पासे उभो रहे छे. ते चोसठ इंद्रो शिवाय बीजा देवोने दान लेतां निवारे छे, अने दान लेनारनुं जेवुं भाग्य होय छे तेवुंज तेना मुखथी वाक्य उच्चरावे छे (मागणी करावे छे) २. चमरेंद्र अने बलिइंद्र प्रभुनी मुष्टिमां रहेला सोनैयामां दान लेनारा पुरुषोनी इच्छानुसार न्यूनाधिकता करे छे. जो याचकनी इच्छाथी अधिक होय तो न्यून करे छे, अने इच्छाथी न्यून होय तो अधिक करे छे. ३. बीजा भुवनपतिओ भरतखंडमां उत्पन्न थयेला मनुष्योने दान लेवा माटे खेंची लावे छे. ४. वाणव्यंतर देवताओ दान लईने जनारा माणसोने पाछा निर्विघ्न स्वस्थाने पहोंचाडे छे. ५. ज्योतिष्क देवताओ विद्याधरोने वार्षिक दाननो समय जणावे छे. ६.

आ समये तीर्थंकरना पिता त्रण मोटी शाळाओ करावे छे. एक शाळामां भरतखंडमां उत्पन्न थयेला जे मनुष्यो आवे तेने अन्नादि आपे छे, बीजी शाळामां वस्त्र आपे छे, अने त्रीजी शाळामां आभूषण आपे छे.

चोसठ इंद्रोने प्रभुने हाथे दान लेवानो एवो महिमा छे के ते दानना प्रभावथी तेमने बे वर्ष सुधी कलह उत्पन्न थतो नथी. चक्रवर्ती जेवा राजाओ दानमां आपेला सोनैयाना प्रभावथी बार वर्ष सुधी तेमनो भंडार अक्षय रहे छे. रोगीओने दान लेवाथी बार वर्ष पर्यंत नवीन रोग उत्पन्न थतो नथी. ते काळे सर्व ठेकाणे एवी उद्घोषणा थाय छे के 'सर्वे इच्छित वर मागी ल्यो.'

अहीं कोई ढुंढक मतवाळा कहे छे के 'जो प्रभु दान दे तो दान देवानुं फळ अवश्य भोगववुं पडे; ते सिवाय फळना बंधनो अभाव थाय. माटे तीर्थंकरो दान आपता नथी.' पण तेमनुं कहेवुं अयुक्त छे. कारण के छठ्ठा अंग (ज्ञातासूत्र) मां श्रीमल्लीनाथना अध्ययनमां प्रगट रीते तेवा अक्षरो छे. वळी जिनेश्वर भगवंत कीर्तिमाटे दान आपता नथी. ते विषे कह्युं छे के—

धर्मप्रभावनाबुद्धया, लोकानां चानुकंपया ।
जिना ददाति तद्दानं, नतु कीर्त्यादिकांक्षिणः ॥

---

१ वैश्रमण, धनद, कुबेर ए त्रणे पर्यायी नाम इंद्रना एक लोकपालना छे. २ आठ समयमां करी शकवानुं छद्मस्थने माटे अशक्य लागे छे.

" धर्मनी प्रभावना करवानी बुद्धिथी अने लोको उपरनी अनुकंपाथी तीर्थंकर भगवंत दान आपे छे; कीर्ति विगेरेनी इच्छाथी आपता नथी. "

हवे दीक्षा कल्याणकनुं वर्णन करे छे—

प्राप्यानुज्ञां ललौ दीक्षां, पित्रादेस्तदनुप्रभुः ।
शक्रभूपादिभिर्भक्त्या, कृतनिष्क्रमणोत्सवः ॥

" दान दीधा पछी माता पितानी अनुज्ञा लईने जेमनो शक्र इंद्र तथा राजा विगेरेए भक्तिथी निष्क्रमणोत्सव करेलो छे एवा प्रभु दीक्षा ले छे. " इंद्र अने राजा विगेरे ए करेलो दीक्षामहोत्सव आ प्रमाणे होय छे. दीक्षाने दिवसे स्वजनो बधुं नगर ध्वजश्रेणी विगेरेथी अलंकृत करावे छे. ते अवसरे चोसठ इंद्रो आसनकंपथी प्रभुनो दीक्षासमय जाणी त्यां आवे छे. पछी पूर्वे कह्या प्रमाणे आठ जातिना कळश तथा पूजानां उपकरणो आठ आठ हजार करावे छे. प्रभुनो स्वजनवर्ग पण आठे प्रकारना कळश कारीगरो पासे करावे छे. ते मनुष्यकृत कळश दिव्य कळशनी अंदर प्रवेश करे छे. एटले दिव्य शक्तिथी ते घणा शोभे छे. पछी इंद्रो तथा स्वजनो देवताओए लावेलां तीर्थजळ ओषधी तथा मृत्तिका विगेरेथी प्रभुने अभिषेक करे छे. पछी गंधकषाय वस्त्रवडे प्रभुना अंगने लुंछे छे. पछी यथा स्थान प्रकाशित आभूषण पहेरावी लक्ष मूल्यना सदर्श वस्त्र धारण करावे छे. पछी सेंकडो रत्नमय स्तंभवाळी एक पालखी स्वजनो कारीगर पासे करावे छे. देवताओए करेली दिव्य पालखीमां ते पालखी मिश्र थई जवाथी अधिक शोभे छे. पछी छठ्ठ विगेरे तपथी अलंकृत एवा प्रभु ते पालखीमां सिंहासन उपर पूर्वाभिमुखे बेसे छे. प्रभुनी दक्षिण बाजुए कुळनी वडील स्त्री बेसे छे, वामबाजु हंसना चित्रवाळुं वस्त्र हाथमां लई धावमाता बेसे छे. पृष्ठ भागे एक तरुण स्त्री छत्र धरीने बेसे छे. ईशानकूणमां एक रमणी पूर्ण कळश लइने बेसेछे. पछी स्वजननी आज्ञाथी सरखेसरखा वेश अने शरीरवाळा सहस्र पुरुषो ते शिबिकाने उपाडे छे. ते वखत शिबिकानी दक्षिण तरफनी उपरली बांह[1] शक्र इंद्र वहन करे छे, उत्तर तरफनी उपरली बांह ईशान इंद्र वहन करे छे, दक्षिण तरफनी नीचली बांह चमरेंद्र वहन करे छे, अने उत्तर तरफनी नीचली बांह बलिइंद्र वहन करे छे. बाकीना देवताओ पंचवर्णनी पुष्पवृष्टि विगेरे करता जाय छे.

आ प्रमाणे अनेक प्रकारना महोत्सवथी प्रभु दीक्षा लेवा नीकळे छे. ते समये सर्व मनुष्यो भगवंतनी आ प्रमाणे स्तुति करे छे-" हे जगत्प्रभु ! तमे सर्व कर्मरूप शत्रुओने जीती सत्वर केवलज्ञानने प्राप्त करो. " ईत्यादि स्तुति कराता प्रभु वनमां जाय छे. त्यां अशोक विगेरे वृक्ष नीचे शिबिका मूके छे. एटले प्रभु तेमांथी उतरी आभूषणो

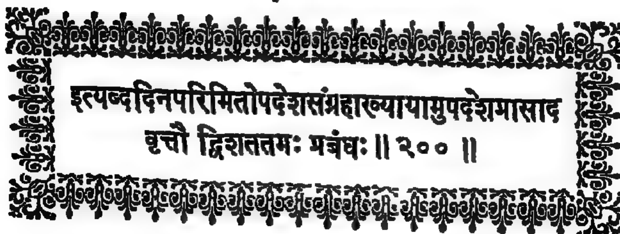
१ बंनेबाजु छेडावाळा.

उत्तारे छे. ते समये कुळनी वडेरी स्त्री हंस लक्षण पट शाटकमां ते ग्रहण करीने आ प्रमाणे हितशिक्षा आपे छे-" हे वत्स ! तमे ऊंचमां ऊंच गोत्रना उत्तम क्षत्रिय छो. तेथी प्रमाद करशो नहि; प्रमाद न करवाथी तमारुं वांछित शीघ्र सिद्ध थशे. " पछी भगवान् एक मुष्टिथी दाढी मुछना अने चार मुष्टिथी मस्तकना केशनो लोच करे छे. पांच इंद्रिय तथा चार कषाय एम नव प्रकारनो भावलोच करे छे, अने केशना त्यागरूप दशमो द्रव्यलोच करे छे. शक्र इंद्र ते केश लइ प्रभुने जणावी क्षीरसागरमां क्षेपन करी आवे छे. पछी लक्ष्य मूल्नुं देवदूष्य वस्त्र इंद्र प्रभुना स्कंध उपर नाखे छे. ते समये इंद्रना वाक्यथी देवता तथा नरनारीओनो घोंघाट शांत थई जाय छे. पछी प्रभु 'नमो सिद्धाणं' एम कही सामायिकनो पाठ भणे छे. आ पाठमां 'भंते' ए पद जिनेश्वर भगवंत बोलता नथी. कारणके तेमने बीजा भगवंत (पूज्य) होता नथी. 'नमोसिद्धाणं' ए पद तो आचारमाटे मात्र भणे छे. कारणके तेमना पण सर्व अर्थ सिद्ध थया छे एम तत्त्वार्थवृत्तिमां अपेक्षाए जणाव्युं छे.

चारित्र आदर्या पछी तरतज प्रभुने चोथुं ज्ञान उपजे छे. संयम लीधा पछी प्रभु तेज दिवसे विहार करे छे. द्रव्यादि कोई वस्तुनो प्रतिबंध राखता नथी. अहीं सचित्त विगेरे वस्तु ते द्रव्य, ग्रामगृहादि ते क्षेत्र, मास वर्ष विगेरे काळ अने रागद्वेष विगेरे भाव समजवो. ते चारेनो प्रतिबंध प्रभुने नथी.

पछी प्रभु प्रथमनुं पारणुं जेने त्यां करे छे त्यां देवता पांच दिव्य विस्तारे छे. ते पांच दिव्य आ प्रमाणे-सुगंधी जळनी वृष्टि, पुष्पवृष्टि, सुवर्णवृष्टि, आकाशमां दिव्य दुंदुभिनो ध्वनि अने अहोदान अहोदान एवी उद्घोषणा. ते वखते हर्ष पामेला देवताओ मनुष्यजन्मनी अनुमोदना करे छे; अने उत्कृष्टथी साडाबार क्रोड सोनैयानी अने जघन्यथी साडाबार लाख सोनैयानी वृष्टि करे छे.

" शक्रादि देवताओ एवी रीते प्रभुनी सेवा करवा माटे दीक्षा कल्याणक विगेरेमां मुख्य भाग ले छे. तेमना हस्तमां अने मस्तकपर अर्हंत प्रभु बिराजे छे. "



व्याख्यान २०१ मुं.

प्रभुने केवळज्ञाननी उत्पत्ति.

आद्येऽथ शुक्लध्यानस्य ध्याते भेदद्वयेऽर्हताम् ।
घातिकर्मक्षयादाविर्भवेत्केवलमुज्ज्वलम् ॥ १ ॥

भावार्थ.

" शुक्ल ध्यानना पहेला बे भेद ध्यातां अर्हन् प्रभुने घातिकर्मनो क्षय थवाथी उज्वल केवलज्ञान प्रगट थाय छे. "

आठ प्रकारना कर्ममळने शोधे ते शुक्ल अथवा शोकनो नाश करे ते शुक्ल कहेवाय छे. शुक्ल एवुं जे ध्यान ते शुक्लध्यान. तेना पहेला बे भेद ध्यातां जिनेश्वर भगवंतने केवलज्ञान उत्पन्न थाय छे. तेमां प्रथम भेद पृथकत्व वितर्क सप्रविचार नामे छे. तेमां एक द्रव्यनी अंदर उत्पाद्, व्यय अने ध्रुव ए पर्यायना विस्तारवडे जुदा जुदा भेदथी जे विचार करवो एटले विविध प्रकारना नयने अनुसारे जीव अजीव भिन्न करीने वितर्क करवो अर्थात् गुणपर्यायनो विचार करवो ते प्रथक्त्ववितर्क सप्रविचार. एटले आत्मसत्तानुं ध्यान करवुं ते शुक्ल ध्याननो प्रथम भेद छे. ए भेद आठमा गुणठाणाथी मांडीने अगियारमा गुणठाणा सुधी लभ्य थाय छे. शुक्ल ध्याननो बीजो भेद एकत्ववितर्क अप्रविचार नामे छे; जेमां जीवना गुणपर्याय आत्मामां एकपणे रहे छे— भिन्नपणे रहेता नथी एवुं ध्यान करे छे- तेमज ' मारो जीव सिद्धिस्वरूपमय होवाथी एकज छे ' एम चिंतवन करे छे. ते विषे पूज्य पुरुषो लखे छे के " एक द्रव्यने अवलंबी रहेला अनेक पर्यायमांहेथी एक पर्यायनोज आगम अनुसारे विचार करवो, अने मन विगेरे योगमांहे पण एकथी बीजानो विचार जेमां नथी ते एकत्व-वितर्क अप्रविचार नामे शुक्लध्याननो बीजो भेद छे. आ ध्यान योगनी चपलता रहित एक पर्यायमां चिरकाळ पर्यंत टके छे. तेथी पवन विनाना मकानमां दीपकनी जेम तेनी स्थिरता थाय छे. आ बीजो भेद बारमे गुणठाणे संभवे छे. ए ध्यानथी घनघाती चार कर्मनो क्षय करी जीव निर्मळ एवा केवळज्ञानने मेळवे छे. सयोगी केवली गुण-ठाणे ध्यानांतरिका थाय छे. ते ज्ञानवडे अनंत धर्मवाळा सर्व पदार्थ जाणी शकाय छे. कह्युं छे के " आ त्रण जगत्मां एवी कोई वस्तु नथी के जे श्रीजिनेश्वर भगवंत जाणता नथी अने देखता नथी. एथीज ते अर्हंत त्रण जगत्ने पूज्य थाय छे. "

तीर्थंकरपद पण केवळज्ञान उत्पन्न थया छतांज भोग्य थाय छे. कह्युं छे के—

यत्तृतीयभवे बद्धं तीर्थकृन्नामकर्म तत् ।
प्राप्तोदयं विपाकेन जिनानां जायते तदा ॥ १ ॥

" जिनेश्वर भगवंते त्रीजे भवे जे तीर्थंकरनामकर्म बांधेलुं छे ते तेमने विपाकपणे त्यारेज उदय आवे छे. " हवे प्रभुने केवळज्ञान थया पछी देवता शुं करे छे ते कहे छे–" ते समये इंद्र आसनकंपथी प्रभुने केवळज्ञान थयुं जाणी त्यां आवी ज्ञानोत्पत्तिनो महोत्सव करे छे. "

ज्यारे प्रभुने केवळज्ञान उत्पन्न थाय छे त्यारे चोसठ इंद्रो आवी प्रभुना ज्ञानकल्याणकनो महोत्सव करे छे ते आ प्रमाणे– वायुकुमारदेवो एक योजन प्रमाण भूमंडळने शोधे छे. पछी मेघकुमार देवता ते भूमिने सुगंधी जळथी सिंचन करे छे. छ ऋतुना अधिष्ठायक देवता पुष्पवडे ते पृथ्वीनी पूजा करे छे. व्यंतरदेवता भूमितलथी सवा कोश ऊंचुं सुवर्ण रत्नमय पीठ रचे छे. पछी भुवनपतिदेवो पृथ्वीथी दश हजार पगथीयांवडे पहोंची शकाय तेवो सुवर्णना कांगरावाळो रूपानो किल्लो करे छे. एक एक पगथीयुं एक हाथ पहोळुं ने एक हाथ ऊंचुं होय छे. तेथी पहेलो गढ पृथ्वीथी सवा कोश ऊंचो थाय छे. ते रुपाना किल्लानी भींत पांचसो धनुष्य प्रमाण जाडी अने तेत्रीश धनुष्य ने बत्रीश आंगळ पहोळी होय छे. ते किल्लामां पुतळीओ अने आठ मंगळिकवाळा चार द्वार रचे छे. किल्लाने चारे खुणे जमीनपर चार वापिका रचे छे. पहेला गढना पूर्वद्वार उपर तुंबरु नामे देव द्वारपाळ होय छे, दक्षिणद्वारे षट्वांग नामे देव द्वारपाळ होय छे, पश्चिमद्वारे कपाळी नामे देव द्वारपाळ होय छे, अने उत्तरद्वारे जटामुकुटधारी नामे देव द्वारपाळ तरीके रहे छे. पहेला गढनी मध्ये पेसतां चारे द्वार पासे पचास पचास धनुष्य प्रमाण सरखी भूमि होय छे. आ गढनी अंदर देवताओना तथा मनुष्योना वाहनो रहे छे.

बीजो सुवर्णनो गढ के जे रत्नमय कांगराथी अलंकृत करे छे ते पांच हजार सोपानथी चढी शकाय तेटलो ऊंचो करे छे. ते गढनी भींतनुं तथा चार द्वार विगेरेनुं मान पूर्वनी जेम जाणी लेवुं. तेना पूर्वद्वारे हाथमां अभयमुद्रा धरनारी श्वेत वर्णनी बे जया नामे देवी रहे छे. दक्षिण द्वारे रत्न जेवा वर्णवाळी विजया नामे बे देवी हाथमां अंकुश धरीने उभी रहे छे. पश्चिमे पीळा वर्णवाळी अने हाथमां पाश धरनारी अजिता नामे बे देवी रहे छे, अने उत्तरे नील वर्णवाळी अने हाथमां मगर नामे शस्त्र धरनारी अपराजिता नामे बे देवी रहे छे. पचास धनुष्य प्रमाण ते गढमां पेठा पछी पण समान भूमिभाग होय छे. ते गढमां सिंह, व्याघ्र, मृग विगेरे तिर्यंचो रहे छे. अहीं ईशान दिशामा देवछंदो रचवामां आवे छे. व्याख्यानना उत्तरकाळे देवताओए सेवेला प्रभु ते उपर आवीने बेसे छे.

तेनी उपर पांच हजार सोपान चढीए त्यारे पूर्वनी जेटली भींतनी जाडाईना तथा ऊंचाईना प्रमाणवाळो अने चार द्वारवाळो मणिमय कांगराथी सुशोभित रत्ननो त्रीजो गढ वैमानिक देवता करे छे. तेना पूर्व द्वारे सोम नामे पीत वर्णवाळो वैमानिक देव हाथमां धनुष्य लई द्वारपाळ थईने रहे छे. दक्षिणमां हाथमां दंड धरनार गौरवर्णी यम नामे व्यंतरदेवता उभो रहे छे. पश्चिममां रक्तवर्णी पाशधारी वरुण नामे ज्योतिषी देव रहेछे, अने उत्तरमां श्यामवर्णी कुबेर नामे भुवनपति देव हाथमां गदा लई द्वारपाल थईने उभो रहे छे.

ते रत्नमय वप्रनी मध्ये सरखी भूमिनुं पीठ होय छे. ते एक कोश ने छसो धनुष प्रमाण विस्तारवाळुं होय छे. एटलुंज विस्तारनुं मान पहेला अने बीजा तथा बीजा ने त्रीजा किल्लाना मध्य भागनुं पण बंने पासानुं मळीने जाणवुं. ते आ प्रमाणे— रुपाना गढमां पेठा पछी पचास धनुष्य प्रतर छे, अने तेनी आगळ बारसो ने पचास धनुष्यमां ५००० सोपान हस्त हस्त प्रमाणना छे. एवी रीते बंने मळीने तेरसो धनुष्य एक एक तरफ रुपाना तथा सुवर्णना गढनुं अंतर होय छे, ते प्रमाणे बंने पार्श्वनो विस्तार एकत्र करतां एक कोश अने छसो धनुष्यनुं मान थाय छे, एवी रीते बीजा त्रीजा किल्लाना मध्यनुं प्रमाण पण जाणी लेवुं. एवी रीते त्रण गढना मध्यभागना विस्तारनुं मान एकत्र करतां त्रण कोश अने अढारसो धनुष्य थाय छे. तेमां त्रण गढनी बे बाजुनी मळीने छ भींतो थाय छे. ते एक एक भींतनो विस्तार तेत्रीश धनुष्य अने बत्रीश आंगळ होय छे. तेथी तेत्रीश धनुष्यने छगुणा करतां एकसो अठाणु धनुष्य थाय छे, अने बत्रीश आंगळने छगुणा करतां एकसो बाणु आंगळ थाय छे. तेना बे धनुष्य थाय ते एकसो अठाणुमां नियोजित करतां बसो धनुष्य थाय छे. तेने पूर्वना अढारसोमां मेळवतां एक कोश थाय छे. ते कोशमां त्रण कोश मेळवतां एक योजन थाय छे ते प्रमाणे एक योजननुं वृत्त समवसरण होय छे.

आ समोसरणमां चारे दिशाए प्रथम दशहजार सोपान होय छे. ते योजननी बहार समजवा. प्रभुना नीचेना भागथी (मध्यबिंदुथी) बहारना सोपान पर्यंतनी भूमि बंने तरफ सवा त्रण त्रण कोश होय छे. आ समवसरण भूमिथी अधर करवामां आवे छे. तेमां ऊंचे ऊंचे सोपाननी रचना करेली होय छे. आ प्रमाणे वृत्त (गोळाकार) समवसरणनी व्याख्या समजवी. चोरस समवसरणनुं स्वरूप लोकप्रकाश ग्रंथथी जाणी लेवुं.

हवे त्रीजा गढमां जे प्रथम सरखुं भूतळ कह्युं तेनी मध्यमां मणिरत्नमय पीठ प्रभुना देह प्रमाणे ऊंचुं, चार द्वारवाळुं अने चारे दिशामां त्रण सोपानयुक्त होय छे ते लंबाई तथा पहोळाईमां बसो धनुष्य प्रमाण होय छे, अने पृथ्वीथी अढी कोश ऊंचुं होय

छे. ते विषे कह्युं छे के " एकेक हाथ ऊंचा वीश हजार पगथीयां चड्या पछी आवतुं होवाथी प्रभुनुं सिंहासन जमीनथी अढी कोश ऊंचुं थाय छे " आ प्रमाण सिंहासननी नीचेनी भूमिथी पीठिका सुधी समश्रेणीए ऊंचाई गणतां थाय छे.

ए पीठना मध्य भागे एक योजनना विस्तारवाळो अशोकवृक्ष होय छे. ते जिनेश्वर भगवंतना शरीरना मानथी बारगणो ऊंचो होय छे. ते विषे कह्युं छे के " श्रीऋषभ देव प्रभुने चैत्यवृक्ष त्रण गाउ ऊंचो होय छे अने बाकीना तीर्थंकरोने शरीरमानथी बारगणो ऊंचो होय छे. " चैत्यवृक्ष ए भगवंतने जे वृक्षनीचे केवळज्ञाननी उत्पत्ति थई होय ते वृक्षनुं नाम छे. ते अशोक वृक्षनी उपर रहे छे. अशोक वृक्षनी नीचे अर्हंतनो देवछंदो होय छे. त्यां चारे दिशाए चार सुवर्णनां सिंहासन आवेलां होय छे. तेमनी आगळ एक एक रत्नमय पादपीठ होय छे- तेनी उपर प्रभु चरण धरे त्यारे ते उल्लासवाळुं थयुं होय तेम शोभे छे. प्रत्येक सिंहासन उपर त्रण त्रण छत्रो होय छे. ते बधां मोतीनी श्रेणीओथी अलंकृत होय छे. प्रत्येक सिंहासननी बंने बाजु बबे चामरधारी देवता उभा रहे छे. सिंहासननी आगळ चारे दिशाए सुवर्णकमळ उपर सूर्यना तेजने जीते तेवुं एक एक धर्मचक्र आवेलुं होय छे. ते अर्हंत प्रभुनुं त्रिभुवनना धर्मचक्रीपणाने सूचवनारुं तथा मत्सरी जनना मदने टाळनारुं होय छे. तथा चारे दिशाए हजार हजार योजन ऊंचा, नानी नानी घंटिकाओवाळा चार महाध्वज होय छे. तेमां पूर्वमां धर्मध्वज, दक्षिणमां मानध्वज, पश्चिममां गजध्वज अने उत्तरमां सिंहध्वज कहेवाय छे.

अहीं जे धनुष्य तथा कोश विगेरेनुं मान कह्युं छे ते ते समयना तीर्थंकरना आत्मांगुळ प्रमाणे जाणवुं. मणिपीठ, चैत्यवृक्ष, सिंहासन, छत्र, चामर तथा देवछंदो विगेरे व्यंतरदेवताओ रचे छे. आ समवसरण चारे निकायना देवताओने साधारण छे, कारणके सर्वे मळीने करे छे. बाकी कोई महान उत्तम देवता धारे तो ते एकलो पण आवुं समवसरण रची शके छे.

त्यां वैमानिक देवता हर्षथी सिंहनाद अने दुंदुभिना शब्दो करे छे. सूर्योदय वखते प्रभु सुवर्णना कमळ उपर चरण मूकतां मूकतां आवीने पूर्वद्वारवडे समवसरणमां प्रवेश करे छे. पछी चैत्यवृक्षने प्रदक्षिणा करी पादपीठ उपर चरण मूकी " नमोतीर्थाय " एम कही सिंहासन उपर बेसे छे. तीर्थ एटले श्रुतज्ञान अथवा चतुर्विध संघ अथवा प्रथम गणधर समजवा के जेनावडे आ संसारसागर तरी शकाय छे. अर्हंतने श्रुतज्ञान पूर्वक अर्हंतपणानी प्राप्ति छे, माटे ते तीर्थशब्दे श्रुतज्ञानने नमे छे. लोकमां अर्हंत पूज्य होवाथी अने पूज्य जेने पूजे ते तो अवश्य पूजनिक होवाथी लोकमां तीर्थ पूजाय छे. कृतकृत्य थयेला अर्हंत प्रभु पण तीर्थने नमे छे, अने पछी धर्म कहे

छे तेम सर्व लोक तीर्थने नमे छे. पछी सिंहासन उपर बेसीने प्रभु देशना आपे छे. भगवंतना एकेक वचनवडे घणा जीवोना संशय छेदायछे. जो संशयोनो छेद अनुक्रमे थाय तो संशय करनार प्राणीओ असंख्य होवाथी असंख्याताकाळे पण तेमना संशयनो छेद थईने अनुग्रह थई शके नहि; परंतु प्रभुनी शब्दशक्ति विचित्र छे. तेओ एक वाक्यमां एक साथे घणा प्राणीओना संशयना उत्तर आपी शके छे. आवी शक्तिने पुष्टि आपनारुं एक लौकिक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणेः—

संगधर नामना गाममां धन, कण तथा सुवर्णथी भरपूर वुढण नामे एक आहीर रहेतो हतो. तेने पुष्पवती विगेरे पंदर स्त्रीयो हती. ते बधी स्नेहवाळी हती. एक वखते वुढण गायो चारवा वनमां गयो. मध्याह्नकाळ थयो एटले ते भोजन करवा बेठो. ते समये वननी शोभा जोवाने उत्सुक थयेली तेनी स्त्रीओ तेनी पासे आवी. पछी ते सर्व अनुक्रमे पुष्पवतीने आ प्रमाणे पूछवा लागी. पहेलीए कह्युं—'आजे आटली बधी खीचडी केम रांधी छे ?' बीजी बोली—'आजे छाशमां मीठाश केम थोडी छे ?' त्रीजी बोली—' पेली दाढी मूछवाळी स्त्री घेर छे ?' चोथी बोली—' आजे तमारे शरीरे शांति छे ?' पांचमी बोली—' आजे कंकोडानुं शाक आखुं केम रांध्युं छे ?' छठ्ठी बोली—'आ कुतरी केम घुरके छे ?' सातमी बोली—'ते भेंश गाभिणी थई छे?' आठमी बोली—' आ आगळ देखाती स्त्री थाकी गई छे के नहि ? ' नवमी बोली—' आजे सदाव्रतमां भोजन आपे छे ? ' दशमी बोली—' आजे आ जलप्रवाहमां घणुं जळ केम वहे छे ?' अगीयारमी बोली—'तमारो चोटलो समार्यो छे ? ' बारमी बोली—' कानमां कुंडल पहेर्यां छे के नहि ?' तेरमी बोली—' आ गव्हरमां भय केम लागतो नथी ?' चौदमी बोली—' आ फळ लेशो ? ' पंदरमी बोली—' आ बकरीओ गणी छे के नहिं ?' आ प्रमाणे अनुक्रमे पूछतां ते स्त्रीओने सर्वमां मान्य एवी पुष्पवतीए एक शब्दमांज उत्तर आप्यो के ' पाली नथी ', एटले पहेलीए पूछयुं के खीचडी आटली बधी केम रांधी छे ? तेना उत्तरमां कह्युं के धान्य मापवानी पाली मारी पासे नथी; तेथी वधारे रंधाई गई छे. धान्यनुं माप करनारा लोको ते मापवाना पात्रने पाली कहे छे. बीजीए पुछयुं के छाशमां मीठाश थोडी केम छे ? तेना उत्तरमां पण ' पाली नथी ' एम कह्युं एटले छाश करवानो वारो नथी, तेथी कालनी छाश होवाथी मीठाश ओछी छे, अथवा बोरडी बावळ विगेरे जे तिर्यंचनो चारो छे तेने लोकमां पाली अथवा पालो कहे छे ते न नाखवाथी छाशमां मीठाश ओछी छे.

त्रीजीए पुछयुं के पेली दाढीमूछवाळी स्त्री घेर नथी ? शुं ते नापितने घेर गई छे ? तेने उत्तरमां कह्युं के आजे हजामतनी पाली नथी एटले घेर छे. चोथीए पुछयुं के आजे तमने शरीरे शांति छे ? तेना उत्तरमां कह्युं के पाली नथी. एटले एकांतरो ताव आवतो हतो तेनी आजे पाली [वारो] नथी तेथी शांति छे. पांचमीए पुछयुं के कंकोडानुं शाक आखुं केम कर्युं छे ? तेना उत्तरमां कह्युं के पाली नथी, एटले ते सुधारवानी छरी नथी. छठ्ठीए कह्युं के आ कुतरी केम घुरके छे ? तेना उत्तरमां पण कह्युं के पाळी नथी. एटले ते कुतरीने कोईए पाळेली नथी, तेथी ते घुरके छे. सातमीए पुछयुं के आ भेंश गाभिणी छे? तेना उत्तरमां कह्युं के पाली नथी. गाय भेंस विगेरेने गर्भ रहेवाना समयने लोको पाली कहे छे ते नथी. आठमी स्त्रीए पुछयुं के पेली स्त्री शुं मार्गमां थाकी गई छे? तेना उत्तरमां कह्युं के पाली नथी अर्थात् ते पगपाळे चालती नथी, रथमां बेसीने आवी छे तेथी थाकेली नथी. नवमी स्त्रीए पूछयुं के आजे सदाव्रतमां भोजन अपाय छे ? तेना उत्तरमां कह्युं के ' पाळी नथी ' एटले आजे दान देवानो वारो नथी. केटलाक सदाव्रत अमुक दिवसे अपाता होय छे. दशमीए पूछयुं के आ प्रवाहमांथी विशेष जळ केम वहे छे ? तेना उत्तरमां कह्युं के ' पाली नथी' एटले तेनी पाळ बांधेली नथी तेथी वधारे जळ वहे छे. अगीयारमीए पुछयुं के चोटलो तैयार करेलो छे ? उत्तरमां पण कह्युं के 'पाली नथी.' अहीं पाली कहेतां जू समजवी एटले मारा मस्तकमां जू पडी नथी तेथी केशपाश तैयार छे. बारमीए पुछ्युंके कानमां कुंडल पहेर्यां छे के नहि? तेना उत्तरमां कह्युं के 'पाली नथी' अहीं कानमां छिद्र पडावीने उछेरे तेने कान पाळ्यो कहे छे ते पाळ्या विना कुंडल शीरीते पहेराय ! तेरमीए पुछयुं के आ गह्वरमां भय केम नथी ? तेना उत्तरमां कह्युं के ' पाली नथी ' एटले आ वननी समीपमां चोर लोकोनी पाली नथी, तेथी भय नथी. चोर लोकोना रहेवाना स्थानने पाळ कहे छे. चौदमीए पुछयुं के आ फळ ग्रहण करशो ? तेना उत्तरमां कह्युं के 'पाली नथी.' एटले मारे खोळो नथी तेथी शेमां फळ लेवाय ! पंदरमीए पुछयुं के आ बकरीओ गणी छे ? तेना उत्तरमां कह्युं के 'पाली नथी' अहीं पाली एटले प्रांत [छेडो अथवा आडश करेली] नथी तेथी एटली बधी बकरीओनी गणना शीरीते थाय ? आ प्रमाणे पुष्पवतीए सर्वे स्त्रीओना प्रश्नोनो उत्तर एक शब्दमां आप्यो अने ते बधी समजी गई; तेथी तेनो पति पण खुशी थयो. ज्यारे एक साधारण माणसमां उत्तर आपवानी आवी शक्ति होय छे तो पछी जिनेंद्रना एक वचनथी सर्वना संशयनो अभाव केम न थाय ?

" अर्हंतनुं एक वचन समकाळे अनेक लोकोनी संशयश्रेणीने एक साथे हरी ले छे. ते उपर बुढण आहेरनी स्त्रीओनुं दृष्टांत सांभळीने विचारवुं के तेमां शुं आश्चर्य छे? कांई पण आश्चर्य नथी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ एकाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०१ ॥

व्याख्यान २०२ मुं.

प्रभुनी देशनासमये जे थाय ते कहे छे.

जिनवाक्यात्प्रबुध्धा ये दीक्षां गृह्णंति ते मुदा ।
तेषु गणिपदार्हास्तान् यच्छंति त्रिपदीं जिनाः ॥ १ ॥

भावार्थ.

" जे श्रीजिनेश्वरभगवंतनी वाणीथी प्रतिबोध पामे छे ते हर्षथी दीक्षा ले छे. तेमांथी जे गणिपदने योग्य होय तेमने श्री भगवंत त्रिपदी आपे छे." तेओ त्रिपदीनुं अध्ययन करी मुहूर्तमात्रमां बुद्धिबीज प्राप्त करीने द्वादशांगी रचे छे. पछी जिनेश्वर भगवंत तेमने गणधरपद आपे छे. महाबुद्धिवाळा गणधरो सूत्र गुंथे छे. अरिहंतभगवंत तो मात्र अर्थ प्रकाशे छे. गणधरो भव्यजनना उपकारमाटेज सूत्र रचेछे एम समजवुं. जेम कोई पुरुष आम्रवृक्ष उपर चढी नीचे रहेला लोकोना उपकार माटे उपरथी-फळनी वृष्टि करे छे अने नीचे उभा रहेला लोकोमांथी कोई ते पडता फळोने वस्त्रमां झीली ले छे अने पछी तेवडे पोताने अने बीजाओने प्रसन्न करे छे. तेम श्रीजिनेश्वरभगवंत ज्ञान रूप कल्पवृक्ष उपर रही भव्य प्राणीओना हितमाटे अर्थनी वृष्टि करे छे. तेमांथी कांईक गणधरो बुद्धि रूप वस्त्रमां झीली ले छे. पछी तेनावडे द्वादशांगीनी रचना करी तेओ पोताना आत्मानो अने बीजाओनो अनुग्रह करे छे. जेम फळ जुदां जुदां पडचां होय ते नीचे रहेला सर्वनो एक सरखो उपकार न करे पण भेळां करीने आपवाथी सर्वनो उपकार करे तेम जुदा जुदा अर्थने एकत्र सूत्र रूपे गुंथवाथी ते सर्वनो उपकार करे छे.

हवे समवसरणमां प्रभुना केटलां रूप थाय छे ते कहे छे–" पूर्व दिशाए प्रभु मूळ रूपे विराजे छे अने बीजी त्रण दिशाओमां देवताओ प्रभुना महिमाथी भगवंतना जेवांज त्रण बीजां रुप रचे छे. " जोके बाकीनी दिशाओमां देवता अर्हंतनां प्रतिबिंब रचे छे तो पण ते रूप एवां होय छे के जोनारने ते कृत्रिम छे के अकृत्रिम छे तेनी खबर पडती नथी कारणके ते मूळस्वरूपथी किंचित् पण भिन्न होतां नथी. ते रूप कृत्रिम छतां जिनेश्वरनी जेवांज थाय छे, ए जिनेश्वरनोज प्रभाव छे. अन्यथा सर्व देव एकठा थाय अने सर्व शक्ति वापरे तोपण प्रभुना अंगुठा जेवुं रूप पण तेमनाथी थई शके नहि. ते विषे श्री भक्तामरस्तोत्रमां कह्युं छे के—

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं ।
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूतः ॥
तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां ।
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥

" हे त्रिभुवनमां अद्वितीय तिलक रुप प्रभु! शांत राग रुचिवाळा जे परमाणुओथी तमे निर्माण थयेला छो ते परमाणु पृथ्वीमां तेटलांज छे. जेथी तमारी समान बीजुं कोई रुप पृथ्वी पर छे नहि. " प्रभुना रुपनुं वर्णन श्री आवश्यक निर्युक्तिमां पण करेलुं छे. तेमां कह्युं छे के "अर्हंतनुं स्वरूप वाणीथी अगोचर छे (कही शकाय तेम पण नथी.) तेथी अनंत गुणहीन एवुं गणधरनुं स्वरूप होय छे. तेमनाथी आहारक शरीर अनंत गुणहीन होय छे. तेनाथी अनंत गुणहीन अनुत्तर विमानना देवताओनुं शरीर होय छे. तेथी अनुक्रमे उतरतां उतरतां व्यंतर देवता सुधीनुं शरीर अनंत अनंत गुणहीन होय छे. तेमनाथी चक्रवर्तीनुं, तेमनाथी वासुदेवनुं, तेमनाथी बलदेवनुं अने तेमनाथी मंडलिक राजानुं शरीर अनंत अनंत गुणहीन समजवुं. तेथी बाकी रहेला राजाओ अने सर्व लोकोना शरीरमां परस्पर छ स्थान पडे छे ते आ प्रमाणे— अनंत भागहीन, असंख्यात भागहीन, संख्यात भागहीन, संख्यात गुणहीन, असंख्यात गुणहीन अने अनंत गुणहीन होय छे. " श्री तीर्थंकरनुं स्वरूप सर्वने वैराग्य उत्पन्न करनारूं होय छे. रागादि वधारनारुं होतुं नथी.

हवे समवसरणमां पर्षदाना स्थान कहे छे—" देशना सांभळवानी स्पृहावाळी अने मनवचनकायाना प्रशस्त योगथी प्रकाशित एवी बार पर्षदा समवसरणमां पोतपोताने स्थानके बेसे छे. ते पर्षदाने बेसवाना स्थान आ प्रमाणे छे—ज्येष्ठ अने बीजा गणधरो होय छे ते प्रभुनी समीपे अग्निकूणमां सर्वनी आगळ बेसे छे. केवळी, भगवंतने

त्रण प्रदक्षिणा करी तीर्थने नमस्कार करी पोतानुं गौरव साचवीने पदस्थ एवा गणधरोनी पाछळ बेसे छे. तेओ प्रभुने वांदता नथी, तेना कारणमां कह्युं छे के—

कृतकृत्यतया तादृक् कल्पत्वाच्चजिनेश्वरान् ॥
न नमस्यंति तीर्थं तु नमंत्यर्हन्नमस्कृतम् ॥

" तेओ [केवळी] कृतार्थपणाने पामेला होवाथी तेमज पोतानो तेवो आचार छे तेथी तीर्थंकरने वांदता नथी पण अर्हंते नमेला एवा तीर्थने वांदे छे." ते विषे श्रीऋषभस्तोत्रमां धनपाळे पण कहेलुं छे के " हे प्रभु ! तमारी सेवावडे मोहनो छेद थाय ए तो निश्चय छे पण ते [केवळी] अवस्थामां तमने वंदना थती नथी तेथी हुं मारा हृदयमां खेद पामुं छुं. " केवळीनी पृष्ठ भागे लब्धिवाळा अने लब्धिविनाना सर्व साधुओ अर्हंत, तीर्थ तथा गणधर विगेरेने नमी अनुक्रमे विनयथी बेसे छे. तेमनी पछवाडे वैमानिक देवतानी देवीओ अर्हंत विगेरेने नमीने बेसे छे, अने तेमनी पछवाडे साध्वीओ बेसे छे. आ त्रण पर्षदा पूर्वद्वारवडे समवसरणमां प्रवेश करी अर्हंतने प्रदक्षिणा करी अग्निकूणमां बेसे छे. भुवनपति, ज्योतिषी अने व्यंतरनी देवीओ ए त्रण पर्षदा दक्षिणद्वारे पेसी नैऋतकूणमां उभी रहे छे. भुवनपति, ज्योतिषी अने व्यंतरदेवता पश्चिम द्वारे पेसी वायव्यदिशामां बेसे छे. वैमानिक देवता, नर अने नारीओ उत्तरद्वारे पेसी अर्हंत विगेरेने नमी ईशानकूणमां बेसे छे. चार प्रकारनी देवीओ अने साध्वीओ उभी रहीने देशना सांभळे छे. सर्व देवता, नर तथा नारीओ अने साधुओ बेसीने सांभळे छे. आवश्यकनी वृत्तिमां आ प्रमाणे कहेलुं छे; अने तेनी चूर्णीमां लखे छे के ' साधुओ उत्कटिक आसने बेसीने सांभळे छे अने साध्वीओ तथा वैमानिक देवतानी देवीओ उभी रहीने सांभळे छे.'

प्रभुना प्रभावथी बाल, ग्लान अने जरापीडित वृद्ध लोकोने पण पगथीयां चडतां किंचित् पण श्रम के व्याधि थतो नथी. कोईने वैरभाव पण प्रकट थतो नथी. बीजा गढमां पोताना जातिवैरने पण भूली जई बधा तिर्यंचो साथे बेसीने देशना सांभळे छे.

हवे देशना थई रह्या पछी जे थाय छे ते कहे छे—श्री जिनेश्वर भगवंत पहेली पोरषी पूर्ण थतां सुधी धर्मदेशना आपे छे. ते समये लोको चोखावडे प्रभुने वधाववानो विधि करे छे. अहीं लोको एटले चक्रवर्तीथी मांडीने सामान्य राजापर्यंत जे देशना सांभळवा आवेल होय ते अथवा श्रावक के नगरजन समजवा. तेओ शालिवडे वर्धापन विधि करे छे. वर्धापननो विधि आ प्रमाणे—कलमशालिना चोखा अत्यंत सुगंधी, फोतरां वगरना, उज्वळ अने अखंडित चार प्रस्थ अथवा एक आढक प्रमाण, शुद्ध जळथी धोईने रांधवावडे अर्धा फुलेला होय तेवा रत्नना थाळमां भरी सर्व शृंगारधारण

करेली सुवासिनी स्त्रीना मस्तकपर धारण करावे. तेमां देवताओ सुगंधी द्रव्य नाखे जेथी ते बलि अत्यंत सुगंधी थाय. पछी अनेक प्रकारना गीत-वाद्य साथे ते बलि प्रभु पासे श्रावको लई जाय. पूर्व द्वारवडे तेनो समवस-रणमां प्रवेश करावे. ते बलिनुं पात्र आवे त्यारे भगवंत क्षणवार देशना देतां विरमे. पछी चक्रवर्ती प्रमुख श्रावको ते बलिसाथे त्रण प्रदक्षिणा दई प्रभुना चरण पासे आवे. त्यां पूर्व दिशामां उमा रही सर्व दिशाओमां प्रौढ मुष्टिवडे ते बलि फेंके. तेमांथी अर्ध भूमि पर पडे ते पहेलां आकाशमांथीज देवताओ ग्रहण करे. बाकीना अर्धमांथी अर्धभाग ते बलिना कर्ता जे आगेवान होय ते ले; अने तेथी अवशिष्ट रहे ते बीजा लोको जेम मळी शके तेम लई ले. ते बलिनो एक कण मात्र माथे मुकवाथी सर्व रोग शमी जाय छे अने छ माससुधी नवो रोग थतो नथी. आ प्रमाणे बलिनो विधि पूर्ण थाय छे.

पछी श्री जिनेश्वर पहेला गढमांथी उतरी बीजा गढमां ईशानकूणमां देवछंदा उपर आवी अनेक देवताओथी परिवृत थई सुखे बेसे छे. बीजी पोरषीमां राजा विगेरेए लावेला सिंहासन उपर अथवा प्रभुना पादपीठ उपर बेसी गणधर धर्मदेशना आपे छे. बीजी पोरषी पूर्ण थाय एटले सौ स्व स्थानके जाय छे. पुनः पाछली पोरषीए प्रभु सिंहासन उपर बेसी देशना आपे छे. ज्यां आवुं समवसरण प्रथम न थयुं होय त्यां चार प्रकारना देवताओ मळीने उपर कह्याप्रमाणे समवसरण करे छे; अने कोई महर्द्धिक देवता प्रभुने नमवाने आवे तो ते एकलो पण समवसरण करी शके छे.

हवे समवसरण विना पण नियमा प्रभुनी सहचारी संपत्ति होय ते कहे छे—"ज्यारे समवसरण न होय त्यारे पण प्रभुनी पासे अवश्य आठ प्रातिहार्य होय छे." ए आठ प्रातिहार्यनुं वर्णन प्रथम स्तंभमां लखवामां आव्युं छे.

"आप्रमाणे अनंत गुणरत्नथी सुशोभित एवा अर्हतनुं वर्णन शास्त्ररूप समुद्रमांथी उद्धरीने अहीं कहेलुं छे. तेने अनुसारे प्रवृत्ति करीने धार्मिक जनोए पोताना आत्मानुं हित करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ द्व्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०२ ॥

व्याख्यान २०३ मुं.

श्री जिनेंद्रभगवान् समवसरणमां बेसी देशना आपे छे ते विषे कहे छे.

बहवोऽविरता जीवास्तेभ्योऽल्पास्तु सुदृष्टयः ।
स्वल्पतरास्ततः श्राद्धाः साधवोऽल्पतमास्तथा ॥

भावार्थ.

"जगत्मां घणा जीवो तो अविरत छे. तेमनाथी बहु अल्प जीव सम्यक्त्वधारी होय छे, तेमनाथी अति अल्प देशविरति (श्रावक) होय छे, अने तेमनाथी अतिशें अल्प सर्वविरति (साधुओ) होय छे"

अविरत एटले बार प्रकारनी विरतिए रहित एवा जीव घणा छे, कारणके समस्त विश्वमां मिथ्यात्वी जीवज घणा होय छे. तेमनुं पण अहीं ग्रहण करवानुं छे. ते बार अविरति आप्रमाणे—मन अने पांच इंद्रियोनो अनियम—ए छ तथा छ कायना जीवनो वध—ए छ मळी बार प्रकारनी अविरति छे. तेवा अविरति जीवोथी सम्यक्त्वधारी जीवो अल्प होय छे. तेमनाथी देशविरति श्रावको अति अल्प होय छे. तेओ अगियार अविरतिना नियमथी रहित, मात्र बारमा त्रसकायने हणवाना नियमवाळा [पच्चख्खाण करवावाळा] होवाथी विरतिना एक देशने धरनारा होय छे, तेथी ते देशविरति कहेवाय छे. तेमनाथी सर्वविरति साधुओ अतिशे अल्प होय छे.

अहीं आप्रमाणे भावना छे—आ संसारमां जीवोनी चार पंक्तिओ छे. तेमां पहेली पंक्तिमां सर्वे एकेंद्रिय प्रमुख जीवो छे के जे अविरतिनी पंक्तिना छे. तेमां एकेंद्रिय जीवो पांच आश्रवथी विरत थया नथी, तेथी तेवडे उत्पन्न थता कर्मनो बंध ते प्राप्त करे छे; माटे तेओ विरत कहेवाय नहि. जेम सुतेला, प्रमादी अने मूर्छित विगेरे जीवो शक्तिचेतनाना अभाववडे कदि हिंसादि करता नथी तथापि ते व्रती कहेवाय नहि. कारणके तेमनामां विरतिना परिणामनो अभाव छे. तेवीज रीते मुंगा विगेरे असत्य बोलता नथी तथापि ते सत्यवादी न कहेवाय. ठुंठा ने पांगळाओ अदत्त ग्रहण करता नथी तथापि ते अदत्तादानना त्यागवाळा न कहेवाय. कृत्रिम अकृत्रिम नपुंसक एवा तिर्यंच ने मनुष्य मैथुन सेवे नहि तथापि ते ब्रह्मचारी न कहेवाय; अने पशु दरिद्री विगेरे विशेष धनवस्त्रादिकना अभाववाळा होवा छतां ते कांई निर्ग्रंथ

न कहेवाय. तेओ कांई विरतिनुं फळ प्राप्त करता नथी. तेवी रीते एकेंद्रिय जीवने पण सम्यक्त्वादिना अभावथी अविरत जाणवा. कह्युं छे के "एकेंद्रियने बीजुं सास्वादन गुणठाणुं पण न होय." एवीज रीते विकलेंद्रिय अने संमूर्छिम पंचेंद्रिय विगेरे जीवोमां पण अविरतिपणुं जाणवुं. कारणके त्यां सास्वादन गुणठाणुं होय छे पण ते गुणठाणानी स्थिति मात्र छ आवलिका सुधीनीज छे.

हवे एकेंद्रिय जीवामां कांईक विशेष हिंसादि आश्रव छे ते दर्शावेछे–वृक्ष प्रमुख पोतपोताना आहार तरीके जळ पवन विगेरे सचित्त वस्तुने ग्रहण करे छे. तेथी तेमने जळ अने पवननी विराधना स्पष्टपणे छे. कह्युं छे के "ज्यां जळ होय त्यां वनस्पति होय, ज्यां वनस्पति होय त्यां अग्नि होय, अने तेउकाय वायुकाय संघाते होय त्यां त्रसजीव प्रत्यक्ष होय." वनस्पति विगेरेने पण आहार ग्रहण करवामां सूक्ष्म वृत्तिए विराधना रहेली छे, अने बादरवृत्तिवडे तो केटलाएक कंथेर बोरडी विगेरे वृक्ष कदली विगेरेने हणेछे; मरुदेवादिकना[1] जीवनी जेम. थोर विगेरे वृक्षो पोताना मूळना क्षार तथा कटुरस विगेरेथी पृथ्वीकाय विगेरे छ कायनी हिंसा करे छे. कीडामार तथा किंपाक विगेरे मनुष्य तथा पशु प्रमुखने मारे छे. राधागाळी विगेरेनां वृक्षो मनुष्यने उच्चाटन करे छे. केटलीक वनस्पति मनुष्यने पशु करे छे ने पशुने मनुष्य करे छे. वांस ने सरकर विगेरे वृक्षो धनुष्यने बाणरूपे थई घणा जीवोने मारे छे. धनुष्य प्रमुखना जीवोने उत्सर्गथी अविरत परिणाम होवाने लीधे तेना अचेतन थयेला शरीर विगेरेथी पण बंध थाय छे. जिन पूजाने योग्य पुष्प, फळ तथा आभूषण विगेरेना तथा मुनिना पात्र रूपे थयेला पदार्थना जीवने शरीरउत्तम साधन रूप थया छतां पुण्यबंध थतो नथी.कारण के तेना हेतु रूप विवेकनो अभाव छे. एवी रीते महारंभनी प्रवृत्तिना हेतु रूप गाडां हळ विगेरे जे जीवोना शरीरोथी थया होय ते जीवोने हिंसाना हेतुभूत जाणी लेवा. आ प्रमाणे हिंसा बतावी हवे. असत्यादि घटावे छे—

एकेंद्रियादि जीवोने सत्यअध्यवसायनो अभाव होवाथी असत्य लागे छे. वळी ते लोकोने असत्य बोलाववाना हेतुरूप थाय छे. तेथी पण तेने असत्यनुं पाप लागतुं जोवामां आवे छे, जेम केटलीएक औषधीने योगे सत्य ने असत्य पण बोलाय छे; जेवी रीते काजळी विगेरेमां कन्या विगेरे असत्य बोले छे ते प्रमाणे समजवुं. ते-

---

१ मरुदेवा मातानो जीव निगोदमांथी नीकळी प्रत्येक वनस्पतिकायमां केळना वृक्षमां उत्पन्न थयो हतो, त्यां समीपे रहेला कंथेरना वृक्षना कांटा वारंवार भोंकावाथी थती वेदना सम्यक् भावे सहन करवाथी अकाम निर्जरावडे मनुष्यपणाने पाम्या ने तेज भवमां मोक्षे गया.

मज मोहनवल्ली विगेरे मोह उत्पन्न करीने लोकोने विपरीत मार्ग विगेरे बतावे छे; इत्यादि अनेक रीते असत्यनो प्रकार कहेलो छे.

हवे अदत्तादान घटावे छे—वृक्षआश्री सर्वे जीवो सचित्त आहार ग्रहण करे छे. ते आहारमां रहेला जीवोसंबंधी जीवादत्त लागे छे. वळी वनस्पतिमां बीजाना अदत्तादानना हेतुपणुं स्पष्ट जणाय छे. कोकास सूत्रधारे (सुतारे) रचेल काष्ठना शुक पारेवा विगेरेए राजाना कोठारमांथी अदत्तादान रूप शालि विगेरे ग्रहण करेलानी हकीकत शास्त्रमां संभळाय छे. ते काष्ठना शुकादिने अदत्तादाननुं पाप पूर्वे कहेल वांसना धनुष्य विगेरेनी जेम लागे छे. वळी औषधवडे लोक परधनने ग्रहण करवानी प्रवृत्ति करतां जोवामां आवे छे. इत्यादि.

एवी रीते मैथुननुं पाप पण विरतिभावना अभावथी तेने लागे छे. तेवी जातना पुष्पना आराम विगेरे मनुष्यो प्रति कामरागना हेतु रूप छे. अफीण विगेरेथी प्राणीने मैथुननी प्रवृत्ति विशेष थाय छे; तथा लोकमा कमलकंद, आम्रमंजरी, जाइनां फुल, चंपानां फुल अने बपोरीयानां फुल ए पांच कामदेवना पांच बाण कहेशाय छे. कारण के ते मैथुनरागना जनक छे. केटलाएक वृक्षोने तो साक्षात् कामसंज्ञा देखाय छे. ते विषे कह्युं छे के " स्त्रीना चरणघातथी अशोक वृक्ष (आशोपालव) खीले छे, मधुनो कोगळो नाखवाथी बकुलनुं वृक्ष (बोरसली) प्रफुल्लित थाय छे, आलिंगन करवाथी कुरुबकनुं वृक्ष विकाश पामे छे, अने स्त्रीना जोवाथी तिलक वृक्ष कळीओवडे शोभतुं थई जाय छे. "

तेमज ते वृक्षोने विरतिना अभावे परिग्रह पण छे. केटलाएक वृक्षो मूर्छाथी द्रव्यना निधिने मूळवडे वींटाई वळे छे; तेथी तेमने परिग्रहनुं पाप स्पष्ट छे. वळी वृक्षोने बाह्यथी एकेंद्रियपणुं छे, पण भावथी पंचेंद्रियपणानो सद्भाव छे. तेमज तेमने दश संज्ञावडे कर्मनो बंध थाय छे. ते दश संज्ञानां नाम आ प्रमाणे— १ आहार, २ भय, ३ परिग्रह, ४ मैथुन, ५ क्रोध, ६ मान, ७ माया, ८ लोभ, ९ लोक ने १० ओघ. ए जीवनी दश संज्ञा छे. वृक्षआश्री ते आ प्रमाणे— वृक्षोने जळादिनो आहार ते आहारसंज्ञा, लज्जाळु वेल विगेरे भयवडे संकोचाय छे ते भयसंज्ञा, पोताना तंतुओवडे वेलाओ वृक्षने वींटाय छे ते परिग्रहसंज्ञा, स्त्रीना आलिंगनथी कुरुबक वृक्ष फळे छे ते मैथुनसंज्ञा, कोकनद कमळ कोई साथे अथडाय त्यारे हुंकारो करे छे ए क्रोधसंज्ञा, रुदंति वेल झर्यां करे छे ते मानसंज्ञा, लतापत्र पुष्पफळादिकने ढांके छे ए मायासंज्ञा, बील्ली तथा पलाशना वृक्ष द्रव्य उपर मूळीया नाखे छे ए लोभसंज्ञा, रात्रे कमल संकोच पामी जाय छे ए लोकसंज्ञा अने वेलडीओ मार्गने तजीने वृक्ष उपर

चडे छे ते ओघसंज्ञा. आवी रीते दश संज्ञा होय छे. आ प्रमाणे वनस्पतिने आश्रीने अविरतिदोष बताव्यो. तेज प्रमाणे पृथ्वीकायना जीवोने माटे पण जाणी लेवुं.

हडताल, सोमल, खार विगेरेथी विकलेंद्रिय, तिर्यंच तथा मनुष्योनो वध प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे ए हिंसा अने कुवामां रहेलो पारो अश्व उपर बेसीने आवेली स्त्रीनुं मुख जोई उछळीने तेनी पाछळ दोडे छे ए कामचिन्ह स्पष्ट छे. बाकी पूर्वनी जेम जाणवुं.

जळ पण क्षार प्रमुखना विशेषपणाथी तेमज माधुर्यथी पण पृथ्वीकाय विगेरेना जीवोने हणे छे. नदीओना पूर वखते मनुष्य तथा पशु प्रमुखनो मोटो वध थाय छे.

अग्नि ताप तथा शोषण विगेरेथी जळना जीवोने हणे छे. ते सर्व तरफ धारवाळा शस्त्र रूप छे तेमज तेनामां सर्वने दहन करवानी शक्ति छे, तेथी ते तेने जे प्राप्त थाय ते सर्वने हणी नाखे छे.

एवी रीते वायु पण उष्ण थई शीत प्रमुख वायुना जीवोने हणे छे, अने दीपक विगेरेमां रहेला अग्निना जीवोने हणे छे. वळी लुक लागवा विगेरेथी मनुष्य प्रमुखनुं मृत्यु थतुं पण जोवामां आवे छे. एवी रीते एकेंद्रिय जीवने पांच आश्रवादिनुं अविरत. पणुं रहेलुं छे.

पूरा शंख विगेरे बे इंद्रिय जीवो जीवनोज आहार करे छे. जू, कीडी, मांकड अने खजूरा प्रमुख त्रेंद्रिय जीवो पण जीवनो आहार करे छे. कानखजूरो कानमां पेसी अति उद्वेग करावे छे. चोइंद्रि वींछी भमरी विगेरे जीवो एळ प्रमुखने मारे छे. डांस मशलादि जो हाथीना कानमां पेठा होय तो हाथीने मारे छे, अने सिंहना नाकमां पेठा होय तो सिंहने हणे छे.

पंचेंद्रिय जीवोमां मत्स्य विगेरे जलचर प्राणी मत्स्यनोज आहार करे छे. व्याघ्र, सिंह तथा सर्प प्रमुख थळचर प्राणी पण मांसनो आहार करनारा छे. बाज, गीध विगेरे खेचर प्राणीओ पण बहुधा हिंसा करनारा होय छे. वळी थळचरादि सर्वने कामसेवा तो स्पष्टज छे. एमनी अहिंसादि जनीत गति पण थाय छे. कह्युं छे के " स्थावर तथा विकलेंद्रिय संख्याता वर्षना आयुष्यवाळा तिर्यंच अने मनुष्यमां अवतरे छे."

असंज्ञी जीव पहेली नरके जाय छे. भुजपरी सर्प बीजी नरक सुधी जाय छे, पक्षी त्रीजी नरक सुधी जाय छे. सिंह चोथी नरक सुधी जाय छे. उरपरी सर्प पांचमी नरक सुधी जाय छे, स्त्री छठ्ठी नरक सुधी जाय छे, अने मनुष्य तथा मत्स्य सातमी नरक सुधी

जाय छे. एम क्रमे उत्कृष्टपणे त्यांसुधी जाय छे. एवी रीते अनंता जीवो अविरतिनी पंक्तिमांज प्रवेश करे छे.

मनुष्यमां भिल्ल, कसाई, माछी, कुंभार तथा यवनादि अधर्मीओ तथा राजा मंत्री प्रमुख उत्तम छतां जैनधर्मथी विमुख होय तो अविरतज छे.

तथा द्वीपायन विगेरे देवता हिंसादिक आश्रवना करनारा होवाथी अविरतज छे. तथा देवताओ सुवर्णादिकना लोभनी बुद्धिथी असत्य बोले छे, अदत्त एवा पारका निधान प्रमुखना अधिष्ठायक थाय छे, मैथुनमां पारकी देवांगनानी कामना राखे छे अने परिग्रहमां तो विमान विगेरेनी अपरिमित लक्ष्मी तेमनी मालेकीमां होय छे, तेथी देवता पण अव्रती छे.

तेवी रीते परमते ईश्वर [शीव] ने जगत्ना संहारक कह्या छे. तेथी ते तेमज कृष्ण, ब्रह्मा विगेरे पण आश्रवपरायण छे. लौकिक ऋषिओ पण शाप, अनुग्रह अने स्त्रीपरनी आसक्ति विगेरेथी अविरतिनी पंक्तिमांज आवे छे. विश्वामित्रने ब्रह्मर्षि न कहेवाथी तेने क्रोध उत्पन्न थयो, तेथी तेणे वसिष्ठनी स्त्री अरूंधतीने तथा तेना पुत्रोने मारी नाख्या, एम अन्यमतिनां शास्त्रोमां कहेल छे. एवी रीते विषयी पाराशरे कामविह्वल थई दिवसे पण धुंसर विकुर्वी मत्स्यगंधा नामनी माछीनी पुत्रीने सेवी हती, इत्यादि अनेक वृत्तांत अन्यमतिओना ग्रंथमांथी जाणी लेवां. वळी अभव्य एवा तिर्यंच तथा मनुष्यो केटलाएक द्रव्यथी देशविरति तथा सर्वविरति लागे छे पण ते अविरतिज छे.

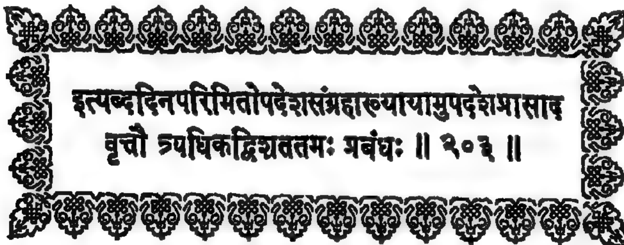
नारकीना जीवो पण क्रोधे धमधम्या थका वैक्रियशक्तिवडे अनेक प्रकारनां शस्त्रो विकुर्वी वज्रतुंड विगेरेथी परस्पर महावेदना उत्पन्न करे छे. तेओ पण अविरतिनी पंक्तिमांज आवे छे. एवी रीते चराचर [त्रस ने थावर] जीवो घणे भागे प्रत्याख्यान वगरनाज होय छे. तेथी सौथी मोटी पंक्ति अविरति जीवोनी छे.

हवे बीजी पंक्ति अविरत सम्यग् दृष्टि जीवोनी छे. श्रेणिक राजा, सत्याक तथा वासुदेव [कृष्ण] प्रमुख केटलाएक मनुष्यो, देवता तथा नारकीनो असंख्यातमो भाग अने तिर्यंचनो अनंतमो भाग ए बधा अव्रती छे, तथापि तेमनो मिथ्यात्वदोष गयेलो होवाथी ते प्रथमना भेद करता बहु श्रेष्ठ छे. केटलाएक देवताओ के जेओ समकिती छे तेओ आ भेदमां आवे छे, तो पण पूर्वे कहेला जीवोथी आ पंक्ति बहु अल्प छे.

उपर कहेला जीवो करतां असंख्यातमा भागनी विरत अविरत एटले देशविरतिमय त्रीजी पंक्ति छे. आ पंक्तिमां केटलाएक गर्भज मनुष्य तथा गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंचनो असंख्यातमो भाग आवे छे एटले असंख्याता तिर्यंचो चंडकोशीक सर्प, समलीका विहारवाळी समळी, बळभद्रनो भक्त मृग तथा मेघकुमारना पूर्वभवी हाथी विगेरे जेओ जातिस्मरणथी श्रावकधर्मने प्राप्त थयेला होय ते आ पंक्तिमां आवे छे, बीजा आवता नथी. ते विषे एवुं वचन छे के "समकिती देशविरति जीवो पल्योपमना असंख्यातमा भागे छे." पल्योपमना असंख्याता भागमां जेटला समय होय छे तेटला देशविरति लभ्य थाय छे. तेनो असंख्यातमो भाग ते सर्वविरति मनुष्यमय चोथी पंक्ति छे. कारणके उत्कृष्टा पंदर कर्मभूमिमां बे हजार क्रोडथी नव हजार क्रोड सुधीज यति प्राप्य थाय छे, अधिक होता नथी.

आ चार पंक्तिओमां पहेली पंक्ति विना आगळनी त्रणे पंक्तिओ अति अल्प छे, अने अनुक्रमे अल्पतम तेमज दुर्लभ छे. सम्यक्त्ववाळा जीव चारे गतिओमां लभ्य थाय छे. देशविरति तो तिर्यंच तथा मनुष्य बे गतिमां प्राप्य थाय छे, अने सर्वविरति जीव तो एकली मनुष्यगतिमांज मळे छे.

"आ प्रमाणे भगवंतनी वाणी सांभळीने भव्य जीवो विरति प्राप्त करवा प्रयत्न करे छे; अने तेथी धन्य पुरुषो लोकोत्तर अने अक्षय एवी सिद्ध गतिने प्राप्त करे छे."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ त्र्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०३ ॥

व्याख्यान २०४ मुं.

ग्रहण करेलुं व्रत जीवना भेदे चार प्रकारे परिणमे छे.

शालिकणसंबंधोऽत्र धार्योव्रताभिलाषिभिः ।
भवेज्जीवविशेषेण चतुर्धाव्रतविस्तरः ॥

भावार्थ.

"व्रतनी अभिलाषावाळा पुरुषोए शालिकणनो संबंध हृदयमां धारवो. कारणके जीवना विशेषवडे व्रतनो विस्तार चार प्रकारे परिणमे छे."

शालिना कण संबंधी प्रबंध.

जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां मगध नामनो देश छे. तेमा राजगृह नामनुं नगर छे. ते नगरमां धन नामनो श्रेष्ठी वसे छे. तेने धारणी नामे रुपवती स्त्री छे. ते स्त्रीनी कुक्षिथी धनशेठने धनपाल, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षित नामे चार पुत्रो थया. ते यौवनवयने पाम्या एटले तेओने धन शेठे कोई धनाढ्यनी एकेक कन्या परणावी. तेमां पहेलीनुं नाम उज्झिका, बीजीनुं नाम भक्षिका, त्रीजीनुं नाम रक्षिका अने चोथीनुं नाम रोहिणी हतुं. तेमनी साथे सुख भोगवता तेओ देवतानी जेम गतकाळने पण जाणता नहोता.

एक वखते श्रेष्ठीए प्रातःकाले धर्मध्यान करी गृहचिंता करवा मांडी. तेने विचार थयो के ' आ चार पुत्रवधूमांथी मारा गृहनो निर्वाह कई वधू करशे ? तेनो निर्णय करवा हुं तेमनी परीक्षा करुं. ' आवुं विचारी प्रातःकालनी क्रिया करी भोजन कर्या पछी पोताना बंधुपुत्रादिकनी समक्ष ते चारे वधूओने बोलावी अने तेमने पांच पांच अखंड शालिकण आप्या. पहेली पुत्रवधू मंद बुद्धिवाळी हती. तेणीए एकांतमां जईने चिंतव्युं के ' मारा ससरानी बुद्धि विपरीत थई लागे छे के जेथी तेणे सर्व जननी समक्ष मात्र पांच शालिना दाणा मारा हाथमां आप्या; माटे हुं तो तेने फेंकी दउं छुं. मारे तेनुं शुं प्रयोजन छे ? ज्यारे मागशे त्यारे हुं बीजा लावी आपीश. ' आम विचारी तेणीए ते दाणा नाखी दीधा. बीजी वधूए विचार्युं के ' ससराए आपेला आ दाणा शामाटे फेंकी देवा ? ए तो हुं खाई जाउं. ज्यारे मागशे त्यारे बीजा लावी आपीश. ' आम विचारी ते खाई गई. त्रीजीए विचार्युं के ' ससराए आ दाणा आप्या छे तेमां कांई प्रयोजन हशे, माटे ते राखी मूकुं. ' आवुं चिंतवी तेणीए ते दाणा पोताना आभूषणना दाबडामां गोपवी राख्या, अने प्रतिदिन ते तपासवा लागी. चोथी बुद्धिवाळी वधूए एकांते जई विचार्युं के ' मारा ससरा बृहस्पति जेवा बुद्धिमान् छे. तेमणे सर्व जननी समक्ष मने पांच शालिना दाणा आप्या छे तेमां कांईक विशेष हेतु हशे; माटे हुं आ दाणानो वधारो करुं. ' आ प्रमाणे हृदयमां विचारी तेणीए ते दाणा पोताना पियरमां भाईओ उपर मोकली दीधा, अने संदेशो कहेवराव्यो के ' तमे आ दाणा तमारा सारा क्षेत्रमां घरना दाणानी जेम गणी जुदा वावजो. ' बेनना कहेवाथी भाईओए वर्षाकाळमां ते पांच दाणा सारी जग्याए वाव्या. ते उगी नीकळ्या. एटले तेमांथी एक प्रस्थ [बे शेर] जेटला दाणा प्रथम वर्षे थया.

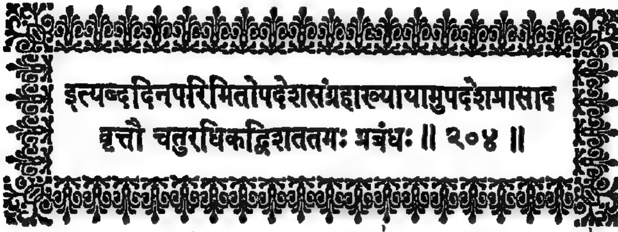
बीजे वर्षे आढक प्रमाण थया. त्रीजे वर्षे द्रोण प्रमाण थया. चोथे सोसारी [कळशी] थया. अने पांचमे वर्षे लाख पाली [माणा] थया.

पांच वर्ष गया पछी एक दिवसे श्रेष्ठीए स्वजनोनी समक्ष चारे वधूओने बोलावी. प्रथम ज्येष्ठाने कह्युं-' मारा आपेला पांच शालिकण लावो.' तेणीए घरमांथी बीजा पांच शालिना दाणा लावी आप्या. ते जोई श्रेष्ठी बोल्या-' वत्से ! आ शालिना दाणा में आप्या हता ते नथी.' ते बोली-' तात ! ते तो में फेंकी दीधा छे.' ते सांभळी श्रेष्ठीए रोष करीने कह्युं-' आ पापी वधूए घणुं अघटित काम कर्युं छे के मारा आपेला दाणा फेंकी दीधा छे, तेथी ए वहु तो घरनुं वासीदुं करनारी तथा छाणकचरो विगेरे फेंकी देवा संबंधी कामने योग्य थाओ.' पछी शेठे बीजी वहु पासे शालिकण माग्या के ' वत्से ! तमने आपेला शालिकण लावो.' ते बोली-' पिताजी ! हुं तो ते खाई गई छुं.' श्रेष्ठी बोल्या-' आ स्त्री घरना रसोडानुं काम करनारी थाओ.' पछी त्रीजी वधू पासे माग्या. एटले तेणीए तत्काळ साचवी राखेला ते शालिकण लावीने आगळ धर्या. श्रेष्ठीए कह्युं-' आ वहु घरमां धनधान्यनुं रक्षण करनारी थाओ.' पछी श्रेष्ठीए चोथी वधूने कह्युं- ' वत्से ! शालिकण लावो.' ते बोली-' पिताजी ! गाडां लावी आपो एटले लावुं.' श्रेष्ठीए कह्युं-' गाडांनुं शुं काम छे ?' वहु बोली-' मारा भाई पासे ववरावीने में ते शालिकण घणा वधार्या छे.' पछी श्रेष्ठीए गाडां लावी आप्यां. एटले ते गाडां भरीने लावी. ते जोई सर्व लोकोनी समक्ष श्रेष्ठीए तेना वखाण करी तेने घरनी स्वामिनी बनावी; अने कह्युं के ' जे आ वधूनी आज्ञा मानशे नहि तेनुं मारे प्रयोजन नथी.' सर्वेए श्रेष्ठीनुं ए वचन स्वीकार्युं. पछी श्रेष्ठी निश्चिंत थई धर्मकार्यमां सावधान थयो.

हे शिष्यो ! आ कथानो भावार्थ सांभळो. उपरोक्त कथामां जे राजगृह नगर कह्युं छे ते मनुष्यभव समजवो, धनश्रेष्ठी ते गुरु समजवा. चार वधू ते शिष्यो समजवा. पांच शालिकण ते पांच महाव्रत समजवां. स्वजनवर्ग ते चतुर्विध संघ समजवो. शालिकणनुं दान ते पंच महाव्रतनुं आरोपण समजवुं. पहेली वहुए करेलो जे शालिकणनो त्याग ते महाव्रत पामीने तेनो त्याग समजवो. एवी रीते पांच महाव्रतोनो त्याग करनार आलोक अने परलोकमां दुःखी थाय छे. बीजी वधू सरखा मुनि ते व्रत लईने मात्र आजीविका करनारा तपस्या विगेरे न करनारा समजवा. त्रीजी वधूए जेम शालिकण जाळवीने राखी मूक्या तेम मुनिए पंच महाव्रतने अतिचारथी रक्षित राखवा जोइए. तेवा मुनि त्रीजी वधू समान समजवा. अने चोथी रोहिणीए जेम शालिकण वधार्यां तेम जे महाव्रत लइने गुणवृद्धि करे ते तेना सरखा

शासनना धोरी समजवा. ते विषे चार दृष्टांत छे. प्रथम त्रीनुं दृष्टांत कुंडरीक मुनि छे. बीजीनुं दृष्टांत क्षुमक ऋषि अथवा आधुनिक वेषधारी मुनि छे. त्रीजीनुं दृष्टांत मनक मुनि छे, अने चोथीनुं दृष्टांत गौतमादि मुनिओ छे.

" आ शालिकणनो संबंध श्रीज्ञातासूत्रमां भगवंते कहेलो छे. तेनो उपनय व्रतना संबंधमां बराबर चिंतवी मनमां उतारवो. "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशमासाद वृत्तौ चतुरधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०४ ॥

व्याख्यान २०५ मुं.

भगवंतना निर्वाणकल्याणकने वर्णवे छे.

देशनां विविधां दत्वा निजायुः प्रांतदेशके ।
पुण्यक्षेत्रे जिनाः सर्वे कुर्वंत्यनशनादिकम् ॥

भावार्थ.

" सर्वे जिनेश्वर भगवंत विविध प्रकारनी देशना आपी पोताना आयुष्यना अंतकाळे पुण्यक्षेत्रमां जई अनशनादि करे छे. "

अहीं अनशन एटले आहारनो त्याग समजवो. आदि शब्दथी छेल्ला शुक्ल ध्यानना बे छेल्ला भेदनुं ध्यान करे. एटले शुक्ल ध्याननो त्रीजो भेद सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति नामे ध्यान जे योग निरोधनुं निमित्त छे तेनुं ध्यान करे. छद्मस्थने ध्याने करीने मननी स्थिरता थाय छे, अने केवळीने ध्यान शरीरनुं स्थैर्य करनार थाय छे. केवळी भगवंत शुक्लध्यानना त्रीजा पायावडे तरतमां पर्याप्तपणुं पामेला पर्याप्त संज्ञिजीवनो ते समयवर्ती जघन्य मनोयोग जेटला प्रमाणवाळो होय ते करतां असंख्यातमा भाग जेटलो मनोयोग समये समये रुंधी असंख्यात समये सर्व मनोयोगने रुंधे छे. तेमज तरतमां पर्याप्तपणुं पामेला पर्याप्ता बेइंद्रियने जेटला प्रमाणनो जघन्य वचनयोग होय तेना असंख्यातमा भाग जेटलो वचनयोग समये समये रुंधी असंख्यात समये सर्व वचनयोगने रुंधे छे. तथा आद्यसमयनिष्पन्न सूक्ष्म पनकनो[1] आद्य समये जेटलो जघन्य

1 सूक्ष्म वनस्पतिकाय.

काययोग होय छे तेना असंख्यातमा भाग जेटला काययोगने समये समये रुंधी देहना त्रीजा भागने छोडतां असंख्याता समये सर्व काययोगने रुंधे छे. एवी रीते शुक्लध्यानना त्रीजा भेदमां वर्तता योगनिरोध करी पांच ह्रस्व अक्षरना उच्चार प्रमाण आयुष्य बाकी रहे त्यारे पर्वतनी जेवी निश्चल कायावाळा केवळीने शुक्लध्यानना चोथो भेद परिणमवा रूप शैलेशीकरण प्राप्त थाय छे. ते अयोगी केवळी नामना चौदमा गुणठाणे समुच्छिन्नक्रिया रूप चोथुं ध्यान थाय छे; जेमां सूक्ष्म काययोगनी क्रिया पण उच्छिन्न थई जाय छे. छेल्ला गुणस्थानना छेल्ला बे समयमांहेना पहेला समये पंचाशी प्रकृतिनी सत्ता होय छे, उपांत्य समये तेर प्रकृतिनी सत्ता होय छे, अने अंत्य समये कर्म सत्ता रहित निष्कर्म थई तेज समये लोकांतने पामे छे. ते अस्पर्शमान गतिवडे एक समयथी अधिक समयने स्पर्श्या वगर सिद्धिए जाय छे.

अहीं शिष्य पूछे छे के ' गुरुमहाराज ! निष्कर्म आत्मावाळा सिद्धनी लोकांत सुधी गति केवी रीते थाय ? ' गुरु उत्तर आपे छे–भद्र ! पूर्व प्रयोगथी गति थाय छे अचिंत्य एवा आत्माना वीर्यवडे उपांत्यना बे समये पंचाशी कर्म प्रकृतिनो क्षय करवाने माटे जे व्यापार पूर्वे प्रयुक्त करेल तेना प्रयत्नथी सिद्धनी गति लोकांत सुधी थाय छे. अहीं दृष्टांत छे के जेम कुंभारनुं चक्र, हिंडोळो, बाण अने गोफणनो गोळो पूर्वना प्रयोगबळे गति करे छे तेम पूर्व प्रयोगना बळे सिद्धनी गति थाय छे, अथवा कर्मसंगना अभावथी गति थाय छे. जेम कोई तुंबडा उपर मृत्तिकाना आठ लेप करेला होय ते लेप गया पछी तुंबडानी ऊर्ध्व गति थाय छे, तेम कर्मरूप लेपना अभावथी सिद्धनी उर्द्ध गति थाय छे, अथवा बंधमोक्षना कारणथी गति थाय छे. जेम एरंडाना फळनी अंदर रहेला बीज विगेरेनी बंध तुटवाथी उर्द्ध गति थाय छे तेम कर्मबंधना छेदथी सिद्धनी ऊर्ध्व गति थाय छे; अथवा स्वभावना परिणामथी पण सिद्धात्मानी उर्द्ध गति थाय छे. जेम पाषाणनो स्वभाव नीचे पडवानो, वायुनो स्वभाव आडा जवानो अने अग्निनो स्वभाव उंचा जवानो छे तेम आत्मानो स्वभाव ऊर्ध्व गति करवानो छे.

सिद्ध पोताना स्थानथी चलित थता नथी. ते विषे स्पष्टिकरण करे छे–गौरवना (भारेपणाना) अभावथी सिद्ध नीचे पडे नहि, प्रेरक विना आडाअवळा जाय नहि, अने धर्मास्तिकायना अभावथी लोक उपर चाल्या जाय नहि.

हवे जीवनुं सिद्धगतिमां गमन केवी रीते थाय ते कहे छे–सिद्धि विषे जतां संयमी महात्मानो चेतनात्मा शरीररूप पांजरामांथी सर्व अंगवडे नीकळी जाय छे. ते विषे श्रीठाणांगसूत्रना पांचमा ठाणामां कह्युं छे के " जीवने नीकळवानो मार्ग पांच प्रकारे छे. १ पगे करी, २ जंघाए करी, ३ पेटे करी, ४ मस्तके करी अने ५ सर्वांगे

करी–एम पांच मार्गे जीव नीकळे छे. जे जीव पगे नीकळे ते नारकी थाय, जंघाये निकळे ते तिर्यंच थाय, पेटे नीकळे ते मनुष्य थाय, मस्तके नीकळे ते देवता थाय अने सर्वांगे नीकळे ते मोक्षे जाय छे."

जिनेश्वर भगवंत निर्वाण पामे ते पछी देवतानुं कृत्य कहे छे–' इंद्र अवधिज्ञाने प्रभुनो मोक्ष जाणी त्यां आवी विधिपूर्वक मोक्षकल्याणनो उत्सव भक्तिथी करे छे.' ज्यारे आसन कंपवडे इंद्र प्रभुनो मोक्ष जाणे छे त्यारे प्रथम तो खेद सहित कहे छे के ' अरे ! जगत्पतिनुं निर्वाण थयुं.' पछी विचारे छे के ' हवे अमारे सत्वर तेनो उत्सव करवो जोईए' आम विचारी पूर्वेनी जेम पादुका छोडी त्यांज रहीने भावथी प्रभुने वांदे छे. कह्युं छे के " इंद्रो प्रभुना निर्जिव शरीरने पण वांदे छे, तेथी समकित-दृष्टि जीवोने प्रभुनो द्रव्यनिक्षेपो पण वांदवा योग्य छे."

पछी इंद्र परिवार सहित प्रभुना निर्वाणस्थाने आवी अश्रुपूर्ण नेत्रवडे खेदसहित तथा उत्साह रहित शोक करता सता प्रभुना शरीरने त्रण प्रदक्षिणा करी प्रभुने नमी आप्रमाणे कहे छे–" हे नाथ ! अमे तमारा धर्मसेवक छीए, तो तेमने तमे पूर्वेनी जेम केम जोता नथी ? आ अकस्मात् शुं कर्युं ? निरपराधी एवा अमारो त्याग करवो आपने योग्य नथी. आ भवाटवीमां तमारा जेवा विश्वपतिने आम एकलपेटा-पणुं घटे छे ? के जेथी तमे अमने छोडी एकला अनंत सुख भोगवशो. हे नाथ ! आ रमणीय क्षेत्र तमारा विना रात्रे दीवा वगरना गृहनी जेम अने दिवसे सूर्य विनाना आकाशनी जेम शून्य लागे छे. हे स्वामी ! जोके तमे तो अनंत सुखने भजनारा थया छो, पण अमे तो अमारा स्वार्थने माटे शोक करीए छीए."

आ प्रमाणे विलाप करीने पछी इंद्र आभियोगिक देवताओनी पासे नंदनवनमांथी गोशीर्षचंदनना घणां काष्ठो मंगावे छे. देवताओ चंदन काष्ट लावीने तेवडे अर्हंतमाटे, गणधरमाटे अने साधुओमाटे एम त्रण चिताओ रचे छे. तेमां पूर्वदिशामां भगवंतनी चिता वर्तुलाकारे करे छे. दक्षिण दिशामां गणधरोनी चिता त्रिकोणी करे छे, अने पश्चिम दिशामां यतिओनी चिता चोरस करे छे. पछी इंद्र क्षीरसागरमांथी लावेला जळवडे प्रभुना देहने नवरावी, चंदनवडे विलेपन करी, हंस लक्षणवाळां वस्त्र पहेरावी, सर्व अलंकारथी विभूषित करे छे. बीजा देवताओ गणधरोनां शरीरने अने मुनिओनां शरीरने ते प्रमाणे नवरावीने पूजे छे. पछी इंद्रना वचनथी देवताओ त्रण पाल-खीओ करे छे. तेमां एकमां शक्र इंद्र पोते प्रभुना देहने स्थापे छे. बीजा देवताओ गणधर तथा मुनिओनां शरीरने बीजी बे शिबिकाओमां मूके छे. पछी इंद्र तथा देवताओ ते त्रणे शिबिकाओ उपाडीने अनुक्रमे त्रण चिताओमां महोत्सव साथे मूके

छे. पछी शक्रनी आज्ञाथी अग्निकुमार देवता साश्रुनयने ते चितामां अग्नि मूके छे. वायुकुमार देवो पोताना इंद्रनी आज्ञाथी ते अग्निने प्रज्वलित करे छे. बीजा देवताओ इंद्रना वचनथी मध तथा घीना कुंभनो अग्निने प्रदीप्त करवा माटे होम करे छे. पछी ज्यारे शरीरने दग्ध करतां अस्थि मात्र बाकी रहे छे त्यारे इंद्रनी आज्ञाथी मेघकुमार देवता ते चिताने क्षीरसमुद्रादिकथी लावेला जळनी वृष्टिवडे बुझावे छे. पछी शक्र इंद्र प्रभुनी जमणी तरफनी उपरनी दाढा ग्रहण करे छे. अमरेंद्र जमणी तरफनी नीचेनी दाढा ग्रहण करे छे. कारणके तेओ ते दिशाना स्वामी छे. ईशान इंद्र उपरनी डावी तरफनी दाढा ग्रहण करे छे अने बलि इंद्र डावी बाजुनी नीचेनी दाढाने स्वीकारे छे. बाकीना देवताओ तेमना अवशिष्ट अस्थिने ग्रहण करे छे. केटलाएक देवताओ पोतानो आचार जाणीने ले छे, अने केटलाएक भक्तिथी तेम करे छे. एनुं माहात्म्य एवुं छे के नवीन उत्पन्न थवाने लीधे सौधर्म अने ईशान इंद्रने विमान माटे ज्यारे विवाद थाय छे त्यारे तेओ वच्चे मोटुं युद्ध थई पडे छे; ते निवारवामाटे वृद्ध देवता आ जिनदंष्ट्रानो अभिषेक करी ते जळवडे छांटा नाखे छे एटले ते विग्रह शांत थई जाय छे.

चितानी भस्म विद्याधर विगेरे ग्रहण करे छे. कारण के ते सर्व उपद्रवने निवारवाने औषध रूप छे. वळी लोको ' हुं पहेलो लउं, हुं पहेलो लउं ' एम स्पर्धाथी ते ले छे. तेथी ते स्थाने मोटो खाडो पडी जाय छे. पछी प्रभुनी चिताने स्थाने बीजा लोकोना चरण स्पर्शथी आशातना न थाय ते माटे अने तेवडे तीर्थनी प्रवृत्ति थाय तेवा हेतुथी शक्र इंद्र त्यां चैत्यस्तूप रचावे छे. तेमज गणधरो अने मुनिओनी चिताने स्थाने पण इंद्र बे स्तूप करावे छे.

एवी रीते चतुर्विध देवता प्रभुनो निर्वाणोत्सव करी नंदीश्वरद्वीपे जई अट्ठाई उत्सव करी पोत पोताना स्थानके जायछे. त्यांते प्रभुनी दाढाओने पोत पोतानी सुधर्मा सभामां माणवक चैत्यस्तंभने अवलंबीने रहेला दाबडामां मूकी प्रतिदिन पूजे छे. तेमज तेनी आशातना थवाना भयथी देवताओ ते सुधर्मा सभामां कामक्रीडा पण करता नथी.

हवे सिद्धने केवुं सुख छे ते कहेछे-" अव्यय पदने प्राप्तथयेला सिद्धोने जे सुख छे ते सुख मनुष्योने के देवताओने नथी. ते सुखना माधुर्यने जाणनार केवळी पण मुंगो माणस जेम गोळ विगेरे मिष्ट पदार्थ खाधा छतां तेनुं माधुर्य कही शकतो नथी तेम तेने कही शकता नथी. सिद्ध, बुद्ध, पारंगत, परंपरागत एवा मुक्त जीवो अनंतो अनागत काळ सुखनी लीलामां व्यतीत करे छे. "

" अरुपी छतां उत्कृष्ट रुपने प्राप्त करनारा, अनंग छतां अनंग (काम) थी मुक्त थयेला अने अनंत अक्षर छतां अशेष वर्ण रस गंध स्पर्शादिथी रहित थयेला तेमज वचनने अगोचर एवा सिद्धना जीवोने अमे स्तवीए छीए. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशमासाद
वृत्तौ पंचाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०५ ॥

व्याख्यान २०६ हुं.

काळनुं स्वरुप.

अवसर्पिण्युत्सर्पिण्योः स्वरुपं जिननायकैः ।
यथा प्रोक्तं तथा वाच्यं भव्यानां पुरतो मुदा ॥

भावार्थ.

" श्रीजिनेश्वर भगवंते अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी काळनुं स्वरुप जेवुं कहेलुं छे तेवुं भव्यजननी आगळ हर्षथी कहेवामां आवे छे. "

काळनुं स्वरुप आ प्रमाणे छे— अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी मळीने एक कालचक्र थाय छे. ते काळचक्रमां बार आरा होय छे. तेमां पहेला आरानी आदिमां— पृथ्वी उपर प्रथम प्रवर्तेला कालचक्रना अगियारमा आराने प्रांते जुदा जुदा सात सात दिवस सुधी विद्युत् अने विषादिकना थयेला वर्षाथी तृण अने अन्नादिकनो नाश थयेलो होय छे; अने मनुष्यो रथना मार्ग जेटला विस्तारवाळी, घणा मत्स्यथी आकुळ एवी गंगा तथा सिंधु नदीना किनारापर रहेला वैताढ्यगिरिनी बंने बाजु आवेला नव नव बील मळी कुल बोंतेर बहु रोगादिथी व्याप्त एवा बीलमां वसेला होय छे. तेओ मांसाहारी होवाथी प्राये दुर्गतिगामी, निर्लज्ज, नग्न, दुर्भाषी, कुळधर्मरहित क्रूरकर्मा, सोळ वर्षना आयुष्यवाळा अने एक हाथना शरीरवाळा होय छे. स्त्रीओ पण छ वर्षनी वये गर्भ धारण करनारी, घणां संतानवाळी अने दुःखे प्रसवनारी थाय छे. उत्सर्पिणीना पहेला आरामां हळवे हळवे ते बीलमांथी मनुष्यो बहार नीकळे छे. एम काळ

निर्गमन थतां पहेला आराने अंते पुष्करस, क्षीररस, घृतरस, अमृतरस अने सर्वरस नामे पांच जातिना मेघ जुदा जुदा सात सात दिवस वर्षे छे. तेथी पृथ्वी सर्व प्रकारना धान्यादिना रसवाळी थाय छे. उत्सर्पिणीना प्रारंभथी माणसोना देह तथा आयुष्य धीमे धीमे वधवा मांडे छे; ते त्यांसुधी वधे छे के पहेला आरानी प्रांते तेमना शरीर बे हाथना प्रमाणवाळा अने आयुष्य वीश वर्षनुं थाय छे.

एवी रीते एकवीश हजार वर्षनो पहेलो दुषम दुषम नामनो आरो वीत्या पछी बीजा आरानो आरंभ थाय छे. तेना प्रारंभमां तो मनुष्यनां शरीर बे हाथनां अने आयुष्य वीश वर्षनुं होय छे. पण ते हळवे हळवे वृद्धि पामता बीजा आराना प्रांत भागे माणसनां शरीर सात हाथ प्रमाण अने आयुष्य एकसो वीश वर्षनुं थाय छे. बीजा आरामां जातिस्मरणथी नगर वसाववा विगेरे सर्व मर्यादाना करनारा सात कुलकरो थाय छे.

एवी रीते एकवीश हजार वर्ष प्रमाण बीजो दुषम नामनो आरो व्यतीत थया पछी त्रीजा आरानो आरंभ थाय छे. ते त्रीजा आराना नेव्याशी पखवाडीआं व्यतीत थयां पछी पहेला तीर्थंकर सात हाथनी कायावाळा अने बोंतेर वर्षना आयुष्यवाळा थाय छे. ते सर्व प्रकारना रुपातिशयवंत अने सुवर्ण जेवी कांतिवाळा वीरप्रभु जेम कुंडग्राममां उत्पन्न थया हता तेवा थाय छे. अहीं नगरनुं नाम वर्तमान चोवीशीना चरम तीर्थंकरने आश्रीने कहेलुं छे, बाकी तेनी नगरीनुं नाम तो अन्य पण होय छे. दीवाळी कल्पमां पद्मनाभ जिननी उत्पत्तिनुं स्थान शतद्वार नामे नगर कहेलुं छे. एवी रीते आगळ बीजा तीर्थंकरो माटे पण जाणी लेवुं. ते जिनेश्वर पांचमा कल्याणके मुक्ति पाम्या पछी अमुक अंतरे बीजा तीर्थंकर नव हाथना शरीरवाळा, नील वैडुर्य मणि जेवा शरीरना वर्णने धरनारा अने सो वर्षना आयुष्यवाळा थाय छे. ते प्रभु पहेला तीर्थंकरनी उत्पत्तिना समयथी बसो ने पचाश वर्ष जतां जाणे शात-रसनी मूर्ति होय तेवा उत्पन्न थाय छे. ते प्रभु पण वाराणसी नगरीमां पार्श्व प्रभुए तीर्थ प्रवर्तान्युं हतुं तेम तीर्थ प्रवर्तावी अनुक्रमे मोक्षे गया पछी केटलोक काळ जतां सात धनुषनी कायावाळा, सातसो वर्षना आयुष्यवाळा अने सुवर्णना जेवी कांतिवाळा प्रथम चक्रवर्ती कांपिल्य नगरमां ब्रह्मदत्त चक्री थया हता तेम उत्पन्न थाय छे. तेओ भरतक्षेत्रना छ खंडने साधे छे, नव महानिधि अने चौद रत्नोना स्वामी थाय छे. पचवीश हजार यक्षो तेने सेवेछे, एक लाख ने अठ्यावीश हजार वारांगनाओ तेने आनंद आपे छे, अने छन्नुकोटि गामना अधिपति होय छे. तेमना मरण पाम्या पछी बीजा तीर्थंकरना जन्मथी त्राशी हजार ने साडासातसो वर्ष वीत्या पछी त्रीजा तीर्थं-

कर शौर्यपुरमां उत्पन्न थाय छे. तेओ एक हजार वर्षना आयुष्यवाळा, दश धनुष्यनी कायावाळा अने श्याम कांतिवाळा होय छे. ए समये पहेला वासुदेव उद्भवे छे. तेओ चक्रथी वैताढ्यगिरि पर्यंत त्रिखंड पृथ्वीने साधे छे. ते अर्ध चक्री प्रतिवासुदेवना चक्र वडेज तेनो अंत करे छे. सोळ हजार मुगटबद्ध राजाओ तेमना चरणने सेवे छे. ज्यारे ते गर्भमां आवे छे त्यारे तेनी माता सात स्वप्न जुए छे. ते वासुदेव चक्र विगेरे सात रत्नोना अधिपति, एक हजार वर्षना आयुष्यवाळा, पीतांबरधारी, ध्वजमां गरुडना चिन्हवाळा, श्याम मूर्त्ति अने दश धनुष्यनी कायावाळा होय छे. तेना ज्येष्ठ बंधु बलदेव होय छे. ते उज्वलवर्णी कायावाळा, गर्भमां आवे त्यारे चार स्वप्नथी सूचित थनारा, नील वस्त्र धरनारा, ध्वजामां तालवृक्षना चिन्हवाळा, हल मुसलादि शस्त्रने धारण करनारा, बारसो वर्षना आयुष्यवाळा, मृत्यु पामीने स्वर्गे के मोक्षे जनारा अने पोताना अनुज बंधु साथे परम स्नेहाकुळ एवा उत्पन्न थाय छे. ते समये प्रथम नारद मुनि पण थाय छे. जे घणा कलहप्रिय आकाशगामी विद्यावाळा, सर्व राजाओ विगेरेथी पूजासत्कार मेळवनारा अने दृढशीळवाळा होय छे. ते संयमे तथा केवलज्ञाने करीने तेज भवे मोक्षगामी थाय छे; एवी रीते त्रीजा तीर्थंकरना वारामां चार उत्तम पुरुषो थाय छे.

त्रीजा जिन मुक्ति पाम्या पछी केटलोक काळ व्यतीत थतां राजगृह नगरमां बीजा चक्रवर्ती उत्पन्न थाय छे. तेनी सुवर्ण जेवी कांति, बार धनुषनी काया अने त्रण हजार वर्षनुं आयुष्य होय छे. तेना सर्व वैभवनो विस्तार पहेला चक्रवर्ती जेवो होय छे.

त्रीजा तीर्थंकरना जन्मथी पांच लाख वर्ष वीत्या पछी चोथा तीर्थंकर उत्पन्न थइ मिथिलापुरीने पवित्र करे छे. तेमनुं आयुष्य दश हजार वर्षनुं, काया पंदर धनुष्यनी अने देहनो वर्ण सुवर्णना जेवो होय छे. ए अवसरे कांपिल्यपुरमां त्रीजा चक्रवर्ती थाय छे. तेनो वैभव विगेरे सर्व पहेला चक्रवर्ती प्रमाणे होय छे. एवी रीते आगळ थनारा चक्रवर्तीओ माटे पण समजी लेवुं. ते चक्रवर्तीओनी गति आश्रीने एम समजवुं के जे परिग्रहनी अत्यंत आसक्तिथी अंत अवस्था सुधी चक्रवर्तीपणुं छोडता नथी ते मरण पामीने अवश्य अधोगतिमां (नर्के) जाय छे; अने जेओ धर्मदेवपणुं अंगिकार करेछे एटले के चारित्र धर्मने आचरे छे तेओ अवश्य स्वर्ग के मोक्षमांथी एक गतिने पामे छे.

चोथा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी केटलोक काळ जतां बीजा प्रतिवासुदेव, वासुदेव, बळदेव तथा नारदमुनि थाय छे. तेमनो वैभव तथा मृत्यु पछीनी गति विगेरे पूर्ववत्

जाणी लेवां. सर्वे अर्धचक्री (वासुदेव) पूर्वे जन्मे उपार्जन करेल सुकृतमां नियाणु करवाथी तेवी संपत्ति प्राप्त करी मृत्यु पछी नरके जाय छे. प्रतिवासुदेव पण तेज रीते नरके जाय छे, अने बळदेव पूर्वभवे नियाणा विना धर्मविधान करवाथी समृद्धिना विस्तारने संपादन करी संयम लइ उर्ध्व गतिमांज जाय छे. सर्वे नारद भांते शुद्ध चारित्र लइ मोक्षेज जाय छे.

उपर कहेला बीजा अर्धचक्रीनुं शरीर सोळ धनुष्य प्रमाण होय छे; अने आयुष्य बार हजार वर्ष प्रमाण होय छे; अने बळदेवनुं आयुष्य पंदर हजार वर्षनुं होय छे.

ए चार पुरुषो कीर्तिशेष थया पछी चोथा तीर्थंकरना जन्मथी छलाख वर्ष वीततां राजगृह नगरमां पांचमा तीर्थंकर थाय छे. तेओ श्याम कांतिवाळा, त्रीश हजार वर्षना आयुष्यवाळा अने वीश धनुष्यनी कायावाळा होय छे. ते अवसरे वाराणसी नगरीमां वीश धनुष्यनी कायावाळा अने त्रीश हजार वर्षना आयुष्यवाळा चोथा चक्रवर्ती थाय छे.

पांचमा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी तेमनी उत्पत्तिना समयथी चोपन लाख वर्ष व्यतीत थतां छट्ठा तीर्थंकर मिथिलानगरीमां उत्पन्न थाय छे. तेमनी काया पचवीश धनुष्यनी, आयुष्य पंचावन हजार वर्षनुं अने शरीरनी कांति मरकत मणिना जेवी होय छे, ते पण प्रथमना पांच प्रभुनी जेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्यरूप अनंत चतुष्टयने प्राप्त कर्या पछी केटलोक काळ जतां त्रीजा वासुदेवादि चार पुरुषो उद्भवे छे. तेमनुं सर्व स्वरूप पूर्वेनी जेम जाणी लेवुं. विशेष एटलुं के ते त्रीजा वासुदेवनुं शरीर छवीश धनुष्य प्रमाणने आयुष्य छप्पन हजार वर्षनुं होय छे, अने बळरामनुं आयुष्य पांसठ हजार वर्षनुं होय छे. ते चार पुरुषो व्यतीत थया पछी केटलोक काळ जतां पांचमा चक्रवर्ती हस्तिनापुरमां उत्पन्न थाय छे. तेना शरीरनुं प्रमाण अठ्यावीश धनुष्यनुं अने आयुष्य साठ हजार वर्षनुं होय छे, ते पांचमा चक्रवर्ती थया पछी केटलोक काळ व्यतीत थतां चोथा बळदेवादि चार पुरुषो थाय छे, तेमनुं स्वरूप पूर्वे प्रमाणे जाणवुं. विशेष एटलुंके चोथा अर्धचक्रीना शरीरनुं प्रमाण ओगणत्रीश धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण पांसठ हजार वर्षनुं होय छे. बळदेवना आयुष्यनुं मान पंचाशी हजार वर्षनुं होय छे.

ते चार पुरुष काळ करी गया पछी छट्ठा तीर्थंकरना जन्मथी एक हजार कोटी वर्ष व्यतीत थतां दिल्ली नगरमां सुवर्णवर्णी सातमा तीर्थंकर उद्भवे छे. ते अवसरे तेज नगरमां चक्रवर्तीनो पण प्रसव थाय छे. ते चक्रवर्ती अने भगवंतना शरीरनुं प्रमाण त्रीश धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण चोराशी हजार वर्षनुं होय छे.

ते सातमा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी तेमना जन्मथी एक हजार क्रोड वर्षे न्यून पल्योपमना चोथा भाग जेटलो काळ व्यतीत थतां आठमा तीर्थंकर हस्तिनापुरने पोताना अवतारथी पवित्र करे छे. तेमना शरीरनुं प्रमाण पांत्रीश धनुष्यनुं, आयुष्यनुं प्रमाण पंचाणु हजार वर्षनुं अने शरीरनी कांति सुवर्ण जेवी होय छे. ते अवसरे तेज नगरमां सातमा चक्रवर्ती पण थाय छे. तेमना शरीर तथा आयुष्यनुं प्रमाण ते समयना तीर्थंकर जेटलुं होय छे.

आठमा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी तेमना जन्मथी अर्धपल्योपम समय व्यतीत थतां तेज नगरमां नवमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. तेज समये तेज नगरमां आठमा चक्रवर्ती पण उत्पन्न थाय छे. ते बंनेना शरीरनुं प्रमाण चाळीश धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण एक लाख वर्षनुं होय छे. तेओ निवृत्ति पाम्या पछी केटलोक काळ जतां हस्तिनागपुरमां नवमा चक्रवर्ती थाय छे. तेमना शरीरनुं मान साडी एकतालीश धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं मान त्रण लाख वर्षनुं होय छे, ते नवमा चक्रवर्ती कथाशेष थया पछी केटलोक समय जतां सावत्थी नगरीमां दशमा चक्रवर्ती उत्पन्न थाय छे. तेना शरीरनुं मान साडी बेंताळीश धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं मान पांच लाख वर्षनुं होय छे.

दशमा चक्रवर्ती थई गया पछी रत्नपुर नगरमां सुवर्ण कांतिवाळा दशमा तीर्थंकर नवमा तीर्थंकरना जन्मथी पोणा पल्योपमे न्यून त्रण सागरोपमे थाय छे, तेमना शरीरनुं प्रमाण पीस्ताळीस धनुष्यनुं, आयुष्यनुं प्रमाण दश लाख वर्षनुं होय छे. ते समये बळदेवादि चार प्रधान पुरुष अवतरे छे, तेमनुं स्वरूप पूर्वनी जेम जाणी लेवुं. विशेष एटलुंके पांचमा वासुदेवना आयुष्य तथा शरीरनुं मान ते समयना जिनना जेटलुं जाणवुं; अने बळदेवना आयुष्यनुं प्रमाण त्रीश लाख वर्षनुं जाणवुं.

दशमा तीर्थंकर मुक्ति रुप पतिव्रताना स्वामी थया पछी तेमना जन्मथी चार सागरोपम जेटलो समय वीत्या बाद अयोध्या नगरीमां अगियारमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. तेमना शरीरनी कांति सुवर्णना जेवी होय छे, शरीरनुं प्रमाण पचाश धनुष्यनुं होय छे अने आयुष्यनुं प्रमाण त्रीश लाख वर्षनुं होय छे. एमना समयमां छठ्ठा बळदेव विगेरे चार पुरुषो उद्भवे छे. तेमां अर्धचक्रीना शरीर ने आयुनुं प्रमाण ते समयना जिननी जेटलुं समजवुं; अने बळदेवनुं आयुष्य पंचावन लाख वर्षनुं जाणवुं.

अगियारमा तीर्थंकर पोताना आत्मस्वरूपने प्राप्त थया पछी तेमना जन्मथी नव सागरोपम प्रमाण काळ वीत्या बाद कंपिलपुरमां बारमा तीर्थंकर उद्भवे छे. तेमना शरीरनुं प्रमाण साठ धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण साठ लाख वर्षनुं होय छे. ए समये सातमा बळदेवादि चार पुरुष उत्पन्न थाय छे. तेमनुं सर्व स्वरुप पूर्वनी जेम

जाणी लेवुं. विशेष एटलुं के सातमा अर्धचक्रीना शरीर ने आयुनुं प्रमाण ते समयना जिनना जेटलुं अने बलदेवना आयुष्यनुं प्रमाण पांसठ लाख वर्षनुं जाणवुं.

बारमा जिनेश्वर मुक्ति पाम्या पछी तेमना जन्मथी त्रीश सागरोपम गया पछी तेरमा तीर्थंकर चंपानगरीमां उत्पन्न थाय छे. एमनुं शरीर सित्तेर धनुष्यनुं अने आयु बोंतेर लाख वर्षनुं होय छे. देहनो वर्ण सुवर्ण समान होय छे. तेमना समयमां आठमा बलदेवादि चार पुरुषो प्रगटे छे. तेमां वासुदेवना आयुष्य तथा शरीरनुं प्रमाण ते कालना जिननी जेटलुं होय छे, अने बलदेवना आयुष्यनुं प्रमाण पंचोतेर लाख वर्षनुं होय छे.

तेरमा तीर्थंकर महानंदपदनी महर्द्धिने प्राप्त थया पछी तेमना जन्मथी चोपन सागरोपम जेटलो समय व्यतीत थतां सिंहपुरमां चौदमा तीर्थंकर उद्भवे छे. तेमना शरीरनी शोभा सुवर्णनी प्रभाने हसी काढे तेवी होय छे. तेमना आयुष्यनुं प्रमाण चोराशी लाख वर्षनुं होय छे, अने शरीरनुं प्रमाण ऐंशी धनुष्यनुं होय छे. ए अवसरे नवमा बलदेव विगेरे चार श्रेष्ठ नरो उत्पन्न थाय छे. तेमां अर्धचक्रीना शरीर तथा आयुष्यनुं प्रमाण ते समयना तीर्थंकरना जेटलुं होय छे; अने तेना अग्रज बंधुना आयुष्यनुं प्रमाण पंचाशी लाख वर्षनुं होय छे.

चौदमा तीर्थंकर मुक्ति रुप नवोढाने आलिंगन करवा रुप अति रमणीय सुखने प्राप्त कर्या पछी तेमना जन्मथी छासठ लाख ने छवीश हजार वर्षे अधिक एवा सो सागरोपमे न्यून एक कोटी सागरोपमनो काळ वीत्या पछी पंदरमा तीर्थंकर भद्दिलपुरमां अवतरे छे. तेमना आयुष्यनुं प्रमाण एक लाख पूर्वनुं, शरीरनुं प्रमाण नेवुं धनुष्यनुं अने शरीरनी कांति सुवर्णना जेवी होय छे.

छ जीव निकायना स्वामी एवा ते प्रभु शिवपदने पाम्या पछी नव कोटी सागरोपम काळ व्यतीत थतां सोळमा तीर्थंकर काकंदी नगरीमां उत्पन्न थाय छे. तेमना शरीरनो वर्ण चंद्र जेवो, कायानुं प्रमाण सो धनुष्यनुं, आयुष्यनुं प्रमाण बे लाख पूर्वनुं होय छे.

ते बोधिबीज दायक प्रभु मुक्ति पामतां तेमना जन्मथी नेवुं करोड सागरोपम काळ जतां चंद्रपुरीमां सत्तरमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. तेमनुं आयुष्य दश लाख पूर्वनुं, शरीर मूर्तिमान चंद्र जेवुं अने शरीरनुं प्रमाण दोढसो धनुष्यनुं होय छे.

ते भगवंत तीर्थने प्रवर्तावी कर्ममलने दूर करी महानंदपदने प्राप्त थतां तेमनी उत्पत्तिना समयथी नवसो कोटि सागरोपम प्रमाण काळ जतां वाराणसी नगरीमां अढारमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. ते सुवर्णवर्णी प्रभुना आयुष्यनुं प्रमाण वीश लाख पूर्वनुं अने कायानुं प्रमाण बसो धनुष्यनुं होय छे.

ते प्रभु पण सूर्यनी जेम यथार्थ मोक्षमार्गनो प्रकाश करी शिवसुखने प्राप्त थतां तेमनी पछी नव हजार क्रोड सागरोपम व्यतीत थतां कौशांबी नगरीमां ओगणीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. तेमना शरीरनुं प्रमाण अढीसो धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण त्रीश लाख पूर्वनुं होय छे.

सर्व पृथ्वीमंडलने प्रबोध आपीने ते प्रभु सिद्धि रुप महेलनुं सुख संपादन करतां तेमनी पछी नेवुं हजार क्रोड सागरोपम काळ व्यतीत थतां वीशमा तीर्थंकर अवतरी कोशला नगरीने पवित्र करे छे. ते जगत्वत्सल अने सुवर्णवर्णी प्रभुना शरीरनुं मान त्रणसो धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण चालीश लाख पूर्वनुं होय छे.

ते त्रिकालवेत्ता अने केवल ज्ञानवडे सर्व मूर्त अमूर्त पदार्थने प्रकाशित करनारा प्रभु मुक्तिपुरीना पति थतां ते पछी नव लाख कोटि सागरोपमनो काळ जतां विनीता नगरीमां मोटा राजाना कुळमां एकवीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. अज्ञान रुप अंधकारनो नाश करवामां सूर्य रुप एवा ते प्रभुना शरीरनुं प्रमाण साडात्रणसो धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण पचाश लाख पूर्वनुं होय छे. देह सुवर्णवर्णी होय छे.

ए प्रभु पण ज्ञानादि त्रण रत्नना दानथी अनेक भव्य जनने उपकार करी सिद्धिपदने पाम्या पछी दश लाख कोटि सागरोपम काळ जतां श्रावस्ती नगरीमां सुवर्ण समान कांतिवाळा बावीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. तेमना शरीरनुं प्रमाण चारशो धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण साठ लाख पूर्वनुं होय छे.

ते प्रभु पण जन्म मृत्युनो उच्छेद करी मुक्तिने प्राप्त थतां तेमना जन्मथी त्रीश लाख कोटि सागरोपमनो समय वीत्या पछी अयोध्या नगरीमां सुवर्णसमान कांतिवाळा त्रेवीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. तेमना शरीरनुं प्रमाण साडा चारसो धनुष्यनुं ने आयुष्यनुं प्रमाण बोंतेर लाख पूर्वनुं होय छे. ते समयमां अगियारमा चक्रवर्ती तेज नगरीमां अवतरे छे. तेमना देह तथा आयुष्यनुं प्रमाण ते समयना जिनना जेटलुं होय छे.

अजितनाथ समान ए प्रभु सर्व भवप्रपंचने दूर करी मोक्षे जतां तेमनी उत्पत्तिना समयथी पचाश लाख कोटि सागरोपमनो समय वीत्या पछी दुषम सुषमा नामे त्रीजो आरो समाप्त थाय छे. ए आरामां त्रेवीश तीर्थंकरो, अगियार चक्रवर्तीओ अने छत्रीश प्रतिवासुदेव विगेरे कुल सित्तेर उत्तम पुरुषो उत्सर्पिणी नामना कालचक्रना दळमां उत्पन्न थाय छे. आ त्रीजा आराना प्रारंभ समये मनुष्यनुं आयुष्य एकसो वीश वर्षनुं होय छे, ते त्यांसुधी वधे छे के आ आराने अंते क्रोड पूर्वनुं आयुष्य थाय छे. आ

त्रीजा आरानुं प्रमाण बेंताळीश हजार वर्षे उणा एक कोटाकोटि सागरोपमनुं पूज्य पुरुषोए कहेलुं छे.

" दुषम सुषमा नामे त्रीजा आरामां उत्सर्पिणीने विषे त्रेवीश तीर्थंकरो थशे, तेओ सदा संघने उत्तम लक्ष्मीना आपनारा थाओ."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ षडधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०६ ॥

व्याख्यान २०७ मुं.

भावी चोथा आरानुं स्वरूप कहे छे.

सुषम दुषमा संज्ञः तुर्यारको निगद्यते ।
नाभेयसंनिभोभावी चतुर्विंशतिमो जिनः ॥

भावार्थ.

" उत्सर्पिणीमां सुषमदुषमा नामे चोथो आरो कहेवाय छे. तेमां श्रीऋषभदेव जेवा चोवीशमा तीर्थंकर थशे."

उत्सर्पिणीना चोथा आराना साडा आठ मासे अधिक त्रण वर्षे वीत्या पछी सुवर्णवर्णी चोवीशमा तीर्थंकर विनीता नगरीने अलंकृत करशे. तेमना शरीरनुं मान पांचसो धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं मान चोराशी लाख पूर्वनुं होय छे. त्रण जगत्‌ना लोकने पूजवा योग्य एवा ए प्रभुना वारामां बारमा चक्रवर्ती थाय छे. तेमना शरीर तथा आयुष्यनुं प्रमाण जिनेश्वर भगवंतना जेटलुंज होय छे, ए प्रभु मुक्ति रुपी स्त्रीना भर्ता थया पछी तेमनी पट्ट परंपराए श्रीजिनप्रवचनना तत्त्व विचारने करनारा श्रीयुग प्रधान मुनिपति घणा समय सुधी आ भरतखंडना भूमंडळने पवित्र करशे, पछी हळवे हळवे सुखी समय वृद्धि पामतां युगलीया मनुष्य उत्पन्न थवानो समय नजीक आववाने लीधे सुखना प्रचुरपणाथी प्रथम साधु संततिनो उच्छेद थई छेवटे तीर्थनो पण उच्छेद थशे. युगलीया मनुष्यना समयमां अग्निनो पण अभाव थाय छे. ते साथे स्वामी, सेवक, वर्ण, व्यापार अने नगरादिकनी व्यवस्था पण उच्छेद पामे छे.

युगलीयानुं स्वरुप श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्रमां चोथा आश्रवद्वारने विषे वर्णवेलुं छे. त्यां लखे छे के " ते काळमां भोगसुख घणुं होवा छतां अने तेने भोगविषय कर्या छतां पण युगलीया जीवो तृप्ति पाम्या वगरज काळधर्मने ग्रास थई पडे छे." देवकुरु तथा उत्तरकुरु क्षेत्रना युगलीया संबंधी वर्णन करतां लखे छे के "देवकुरु तथा उत्तरकुरु क्षेत्रमां युगलीयाओ वनमां विचरे छे, पगे चाले छे, तेओ भोगीमा श्रेष्ठ होय छे, भोगनां लक्षणने धरनारा होय छे, तेमनां रुप वर्णन करवा योग्य अने चंद्रनी जेम निरखवा योग्य होय छे, अने तेओ सर्व अंगमां सुंदर होय छे" इत्यादि पाठ त्यांथी जोई लेवो.

वळी ते युगलीया [स्त्रीओ अने पुरुषो] आद्य संहनन तथा आद्य संस्थानवाळा होय छे. तेमना अंग उपांगना भाग कांतिवडे प्रकाशित होय छे. तेमना श्वासमां कमळ जेवी सुगंध होय छे. तेमना गुह्य भाग उत्तम अश्वनी पेठे गुप्त होय छे. तेओने क्रोध, लोभादि कषाय अत्यंत पातळा होय छे. मणिमौक्तिकादिक पदार्थो तथा हाथी, घोडा विगेरे छतां तेना उपभोगथी पराङ्मुख होय छे. वळी ज्वर विगेरे रोग, ग्रह, भूत, मारी अने व्यसनथी वर्जित होय छे. तेमनामां स्वामीसेवकभाव न होवाथी तेओ बधा अहमिंद्र होय छे ते क्षेत्रमां वाव्या कर्या शिवाय स्वभावेज जातिवंत शालि विगेरे धान्य पुष्कळ थाय छे, पण ते तेमना भोगमां आवता नथी. ते क्षेत्रमां पृथ्वी साकरथी पण अनंतगणा माधुर्यवाळी होय छे. तेओ कल्पवृक्षना पुष्पफळनुं आस्वादन करे छे. ते चक्रवर्तीना भोजनथी पण अत्यंत अधिक माधुर्यवाळुं होय छे. तेओ पृथ्वीनो तेमज कल्पवृक्षनां फळादिकनो तथाप्रकारनो आहार ग्रहण करीने प्रासादादिना आकारवाळा जे गृहाकार कल्पवृक्षो होय छे तेने विषे सुखे करीने रहे छे. तेमने खान, पान, प्रेक्षण विगेरे दश प्रकारनां कल्पवृक्षोथी प्राप्त थया करे छे. त्यां डांस, जू, मांकड अने मक्षिका विगेरे देहने उपद्रव करनारां जंतुओ उत्पन्नज थतां नथी. वाघ सिंहादि हिंसक पशुओ त्यां हिंस्य हिंसक भावे वर्तता नथी. ते क्षेत्रमां घोडा हाथी विगेरे चोपगां प्राणी, घो विगेरे भुजपरिसर्प, सर्प विगेरे उरपरिसर्प तथा चकोर हंस विगेरे पक्षीओ— सर्वे युगलीया रुपेज थाय छे. आ बधा जुगलीयाओ मरण पामीने पोताना आयुष्य जेटला आयुष्यवाळा अथवा ओछा आयुष्यवाळा देवता थाय छे; अधिक आयुष्यवाळा देव तरीके उत्पन्न थता नथी.

उत्सर्पिणीना चोथा आरामां थयेला युगलीयाना देहनी ऊंचाई ते आराने अंते एक गाउनी होय छे, अने आयुष्यनुं प्रमाण एक पल्योपमनुं होय छे. तेओ एकांतरे आमळाना फूल जेटलो आहार करे छे. तेमने चोसठ पांसळीओ होय छे. ए आरामां

युगलीया एकाशी दिवस संततिनुं पालन करे छे, पछी श्वासोश्वास, बगासुं, खांसी के छींक विगेरेथी प्राण छोडी दे छे अने देवगतिमां उत्पन्न थाय छे.

आवी रीते बे कोटाकोटि सागरोपमनो सुषम दुषमा नामे चोथो आरो व्यतीत थया पछी सुषमा नामे पांचमो आरो उद्भवे छे. ते आरानी आदिमां जुगलीयाओ चोथा आराना अंत समये उत्पन्न थयेला जुगलीया जेवा होय छे. परंतु हळवे हळवे तेमनां शरीर तथा आयुष्य त्यांसुधी वधे छे के यावत् शरीरनुं प्रमाण बे गाउनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण बे सागरोपमनुं थाय छे. तेमनी पृष्ठभागनी पांसळीओ पण त्यां सुधी वधे छे के तेनी संख्या एकसो ने अठ्यावीशनी थाय छे. तेमनो आहार घटतो घटतो त्यांसुधी घटे छे के बे दिवसने आंतरे बदरीफळ (बोर) ना जेटलो आहार करे छे, अने संततिने तेओ चोसठ दिवस सुधी पाळे छे. आ प्रमाणे त्रण कोटाकोटि प्रमाणवाळो पांचमो आरो व्यतीत थया पछी छठ्ठो आरो आवे छे.

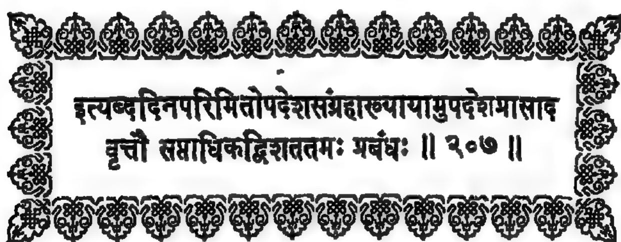
आ छठ्ठा आराना प्रारंभमां जुगलीयाओना शरीर विगेरेनुं प्रमाण पांचमा आराना अवसाने प्रसूत थयेला जुगलीयाना जेटलुं होय छे. परंतु तेमना शरीर तथा आयुष्यनुं प्रमाण त्यांसुधी वृद्धि पामे छे के यावत् ते आराने अंते शरीरनुं प्रमाण त्रण गाउनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण त्रण पल्योपमनुं थाय छे. तेमना पृष्ठनी पांसळीयोनी संख्या बसो ने छप्पननी थाय छे. तेमना आहारनी हानि तेटले सुधी थाय छे के त्रण दिवसने आंतरे तुयरना फळ जेटलो आहार करे छे. तेओ संततिनुं पालन ओगणपचास दिवस करे छे.

ए आरामां हाथीनुं आयुष्य मनुष्य जेटलुं, अश्वादिकनुं आयुष्य मनुष्यना चोथे भागे, मेंढा विगेरेनुं आठमे अंशे, गाय, भेंस, खर, उंट विगेरेनुं पांचमे अंशे, श्वान विगेरेनुं दशमे अंशे, भुजपरि सर्प तथा उरपरि सर्पनुं एक क्रोड पूर्वनुं, पक्षीओनुं पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं अने जळचरोनुं एक पूर्व कोटिनुं होय छे. तिर्यंच पंचेंद्रीनुं उत्कृष्ट आयुष्य आज आरामां होय छे.

भुजपरिना शरीरनुं मान गाउ पृथक्त्व, उरपरिना शरीरनुं प्रमाण एक हजार योजननुं, खेचरोनुं धनुष्य पृथक्त्व अने हाथी विगेरेनां शरीरनुं प्रमाण छ गाउनुं होयछे. आहारनुं ग्रहण बे दिवसने आंतरे होय छे. तिर्यंच पंचेंद्रीना शरीरनुं उत्कृष्ट मान एज आरामां जाणवुं. बाकी रहेलनां शरीर तथा आयुष्पादिनुं प्रमाण सूत्रथी जाणी लेवुं.

आ प्रमाणेनो छठ्ठो सुषमसुषमा नामनो आरो चार कोटाकोटि सागरोपमवडे समाप्त थाय छे. एवी रीते उत्सर्पिणी काळ संबंधी छ आरा जाणवा.

अवसर्पिणी काळना पण छ आरा होय छे. तेमां एटलुं विशेष के ते आरा प्रथमना आराथी विपरीत होय छे. ते आ प्रमाणे जे उत्सर्पिणीने छठ्ठे आरे कहेलुं छे ते अवसर्पिणीने पहेले आरे, जे पांचमे आरे कहेल छे ते बीजे आरे, जे चोथे आरे कहेल छे ते त्रीजे आरे, जे त्रीजे आरे कहेल छे ते चोथे आरे, जे बीजे आरे कहेल छे ते पांचमे आरे अने जे पहेले आरे कहेल छे ते छठ्ठे आरे एम जाणी लेवुं. वळी तीर्थंकर विगेरेनुं देह आयुनुं प्रमाण विगेरे कहेलुं छे ते पण विपरीत रीते जाणवुं. ते आप्रमाणेः- उत्सर्पिणीमां जे चोवीशमा तीर्थंकरनुं स्वरूप ते अवसर्पिणीमां पहेला तीर्थंकरनुं जाणवुं. एवी रीते बीजामां पण विपरीतपणे समजवुं. चक्रवर्ती विगेरेमां पण एमज समजवुं. एवी रीते बार आरा मळीने एक काळचक्र थाय छे, आ काळनी व्यवस्था पांच भरतक्षेत्र अने पांच ऐरवत क्षेत्रमां सरखीज जाणवी; विदेह क्षेत्रमां ए प्रमाणे समजवी नहि. त्यां उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी प्रमाणे काळनी वर्तना नथी. त्यां तो सर्वदा मनुष्योनां शरीरनुं प्रमाण उत्कृष्ट पांचसो धनुष्यनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण पूर्व कोटिनुं होय छे. त्रीश अकर्म भूमिमां पण सनातन एक सरखो समय वर्ते छे. तेनुं वर्णन अन्य स्थानकथी जाणी लेवुं.


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्ताधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०७ ॥

व्याख्यान २०८ मुं.

हालमां वर्तता पांचमा दुषमा नामना आरानुं लक्षण.

वर्तमानारके भाविस्वरूपं ज्ञानिनोदितम् ।
स्वप्नादिभिः प्रबंधैश्च विज्ञेयं श्रुतचक्षुषा ॥

भावार्थ.

" वर्तमान आरानुं जे भाविस्वरूप ज्ञानी महाराजे कहेलुं छे ते स्वप्नादिक प्रबंध- वडे आगमदृष्टिथी जाणवुं. "

सोळ स्वप्ननो प्रबंध व्यवहार चुलिकामां कहेलो छे ते आ प्रमाणे. ते काळ ते समयने विषे पाटलीपुर नगरमां श्रावकधर्ममां तत्पर चंद्रगुप्त नामे राजा हतो. एक वखते ते राजा पाखीनो पोसह अहोरात्रनो लइ रात्रिए धर्मजागरणाए जागतो हतो. तेवामां मध्यरात्रे अल्पनिद्रा आवतां सुखे सुतेला एवा ते राजाने सोळ स्वप्न जोवामां आव्यां, एटले ते तत्काळ जागी उठ्यो. तेने चिंता थई के आशुं ? पछी अनुक्रमे सूर्योदय थतां तेणे पोसह पार्यो. हवे ते समयने विषे संभूतिविजयना शिष्य युगप्रधान भद्रबाहु स्वामी पांचसो साधु साथे विचरता पाटलीपुरना उद्यानमां समवसर्या. राजा तेमने वांदवा नीकळ्यो. तेणे कोणिक राजानी जेम छत्रचामरादि दूर करी पांच अभिगम साचवी गुरुमहाराजने वांदीने धर्म सांभळ्यो. पछी तेणे स्वप्नमां कल्पवृक्षनी शाखा भांगी विगेरे सोळ स्वप्न दीठां हतां तेनो अर्थ स्वामीने पूछ्यो के हे भगवंत ! में आ स्वप्न जोयां छे, तेने अनुसारे शासनमां शुं शुं थशे ? ते कहो. श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी सर्व संघनी समक्ष बोल्या " हे चंद्रगुप्त राजा ! तेनो अर्थ सांभळ-

" प्रथम स्वप्ने तें कल्पवृक्षनी शाखा भांगेली जोइ, तेनुं फळ एवुं छे के आज पछी कोइ राजा चारित्र लेशे नहि. बीजे स्वप्ने तें सूर्यने अस्त थतो जोयो, तेनुं फळ एवुं छे के हवे केवळज्ञान उच्छेद पामशे. त्रीजे स्वप्ने तें चंद्रमां छिद्र थयेलां जोयां, तेनुं फळ एवुं छे के एक धर्ममां अनेक मार्ग चालशे. चोथे स्वप्ने तें भूतने नाचतां जोयां, तेनुं फळ ए छे के कुमति लोको भूतनी जेम नाचशे. पांचमे स्वप्ने तें बार-फणावाळो काळो सर्प जोयो, तेनुं फळ ए छे के बारवर्षी दुकाळ पडशे, कालिकसूत्र प्रमुखनो विच्छेद थशे, ' देवद्रव्य भक्षी ' साधुओ थशे, लोभथी मालानुं आरोपण, उपधान, उजमणा प्रमुख घणां तपना भाव प्रकाशशे, अने जे खरा धर्मना अर्थी साधु हशे ते विधिमार्गने प्ररूपशे. छठ्ठे स्वप्ने तें आवतुं विमान चलित थतुं जोयुं तेनुं फळ ए छे के चारण लब्धिवंत साधु भरत ऐरवतक्षेत्रमां आवशे नहि. सातमे स्वप्ने कमळने उकरडा उपर उगेलुं जोयुं, तेनुं फळ ए छे के चारवर्णमां वैश्यने हाथे धर्म रहेशे, ते वणिकजनो अनेक मार्गे चालशे, सिद्धांत उपर रुचिवाळा अल्प जनो थशे. आठमे स्वप्ने आगीयाने उद्योत करतो जोयो, तेनुं फळ ए छे के राजमार्ग (जैन मार्ग) मूकी बीजा मार्ग खजुवानी जेम प्रकाश करशे, अने श्रमण-निर्ग्रंथनो पूजासत्कार ओछो थशे. नवमे स्वप्ने मोटुं सरोवर सुकुं जोयुं अने तेमां दक्षिण दिशाए थोडुं जळ जोयुं, तेनुं फळ ए छे के ज्यांज्यां प्रभुनां पांच कल्याणक थया छे ते ते देशमां प्राये धर्मनी हानि थशे, अने दक्षिण दिशाए जिन-मार्गनी प्रवृत्ति रहेशे. दशमे स्वप्ने सुवर्णना थाळमां श्वानने दूध पीतो जोयो, तेनुं फळ

ए छे के उत्तम कुळनी संपत्ति मध्यमने घेर जशे अने कुळाचारकर्मने तजी दईने उत्तम लोको नीच मार्गे प्रवर्तशे (हिंसामां धर्म मानशे), अगियारमे स्वप्ने हाथी उपर बेठेलो वानर जोयो, तेनुं फळ ए छे के पारधी विगेरे अधम लोक सुखी थशे अने सुजन दुःखी थशे; वळी उत्तम एवा इक्ष्वाकु तथा हरिवंश कुळमां राज्य रहेशे नहि. बारमे स्वप्ने समुद्रे मर्यादा मूकी एम जोयुं, तेनुं फळ ए छे के राजा उन्मार्गचारी थशे अने क्षत्रियो विश्वासघात करशे. तेरमे स्वप्ने मोटे रथे नानां वाछरडां जोडेलां जोयां, तेनुं फळ ए छे के प्राये वैराग्यभावे कोइ संयम लेशे नहि, जे वृद्ध थइने लेशे ते महाप्रमादी थशे अने गुरुकुळवासने तजी देशे, अने जे बाळभावे संयम लेशे ते लज्जाथी गुरुकुळवासने छोडशे नहि. चौदमे स्वप्ने मोटा मूल्यवाळुं रत्न तेजरहित जोयुं, तेनुं फळ ए छे के भरत तथा ऐरवत क्षेत्रमां साधुओ क्लेश करनारा, उपद्रव करनारा, असमाधि उपजावनारा, अविनयी अने धर्म उपर अल्प स्नेहवाळा थशे. पंदरमे स्वप्ने राजकुमारने पोठीया उपर बेठेलो जोयो, तेनुं फळ ए छे के राजकुमारो राज्यभ्रष्ट थशे अने हलकां कार्य करशे. सोळमे स्वप्ने बे काळा हाथीने झुंझता दीठा, तेनुं फळ ए छे के आगामी काळमां पुत्रो तथा शिष्यो अल्प बुद्धिवाळा ने अविनयी थशे, देवगुरु अने मातापितानी सेवा करनारा थशे नहि, अने भाइओ मांहोमांहे इर्ष्या–कलह करशे. हे राजा ! ए प्रमाणे सोळ स्वप्ननुं फळ छे. श्रीजिनेश्वर भगवंतनां कहेलां वचन अन्यथा थतां नथी, तेमणे कह्युं छे के आ दुषम आरो लोकोने महा दुःखदायक थशे, ''

आ प्रमाणे सांभळी चंद्रगुप्त राजा वैराग्यथी संयम लइ देवलोकने प्राप्त थयो, ए स्वप्नप्रबंध जाणवो; आदि शब्दथी बीजुं भाविस्वरूप कल्कीना संबंधथी जाणवुं ते नीचे प्रमाणे छे—

श्रीवीरप्रभुना निर्वाण पछी चारसो ने सित्तेर वर्ष गया बाद विक्रम राजानो संवत्सर थयो. ते पछी ओगणीशशोने चौद वर्ष जतां पाटलीपुर नगरमां म्लेच्छकुळने विषे यशा नामनी चांडालिनीनी कुक्षिमां तेर मास रहीने चैत्र शुदी आठमने दिवसे कल्कीनो जन्म थशे. ते कल्की, रुद्र अने चतुर्मुख एवां त्रण नामने धारण करशे. तेनुं शरीर त्रण हाथ उंचुं थशे. तेना मस्तकपरना केश कपिलवर्णी [कावरा] अने नेत्र पीळां थशे. जन्मथी पांचमे वर्षे तेना उदरमां रोग उत्पन्न थशे. अठारमे वर्षे कार्तिक मासना शुक्ल पडवाने दिवसे तेनो राज्याभिषेक थशे. ते मृगांक नामे मुगट, अदंत नामे अश्व, दुर्वास नामे भालो अने दैत्यसूदन नामे खड्ग धारण करशे. तेने सूर्य, चंद्र नामे बे पगनां कडां अने त्रैलोक्यसुंदरी नामे सुंदर वासगृह थशे. ते सुवर्णनुं पुष्कळ दान आपी विक्रमना संवत्सरने उथापी पोतानो संवत्सर चलावशे.

तेने चार पुत्रो थशे. तेमां दत्त नामनो पुत्र राजगृह नगरीमां, विजय नामनो पुत्र अणहिलपुर पाटणमां, मुंज नामनो पुत्र अवंती देशमां अने अपराजित नामनो पुत्र बीजा देशमां पोतपोतानी राजधानी स्थापित करशे. ते कल्कीना राज्य समयमां आ पृथ्वी म्लेच्छोना अने क्षत्रिय राजाओना रुधिर प्रवाहथी स्नान करशे. तेना द्रव्य भंडारमां नवाणु कोटि सोनैया एकठा थशे. तेनी सेनामां चौद हजार हाथी, चारसो पचाश हाथणी, सत्याशी लाख घोडा अने पांच कोटि पेदळ थशे. आकाशमां खेले तेवा त्रिशूलने धारण करनारो, पाषाणना अश्वनुं वाहन करनारो अने अति निर्दय एवो ए कल्की छत्रीश वर्षनी वये त्रिखंड भरतनो स्वामी थशे. तेना राज्यना समयमां मथुरा नगरीमां वासुदेव तथा बलदेवना प्रासाद अकस्मात् पडी जशे. अनुक्रमे ते कल्की अतिलोभथी पोताना नगरने खोदावी सर्व तरफथी द्रव्य कढावीने ग्रहण करशे. ए प्रमाणे खोदतां लोकोनी भूमिमांथी पाषाणमय लवणदेवी नामे प्रभाविक गाय नीकळशे. तेने चौटामां स्थापन करशे. त्यां उभी रही सती ते गाय भिक्षा माटे फरता साधुओने दिव्यशक्तिवडे पोतानां शींगडांवडे मारवा धसशे. ते जोई साधुओ ते नगरमां जळनो भावी उपसर्ग जाणी विहार करी जशे. त्यारपछी सत्तर अहोरात्र सुधी अखंड मेघवृष्टि थशे. तेथी कल्कीनुं नगर डुबी जशे. कल्की नासीने कोई ऊंचे स्थळे जतो रहेशे. पछी जळना पूरथी उपरनी माटी धोवाई जवाथी नंदराजाए करावेला सुवर्णना गिरि उघाडा थयेला जोई ते अर्थनो अत्यंत लोलुपी थशे. तेथी पुनः त्यां नवुं नगर वसावी ब्राह्मण विगेरेना सर्वेना कर लेशे. ते समये पृथ्वी परथी सुवर्णनाणुं नाश पामशे अने चामडाना नाणाथी ते व्यवहार चलावशे. लोको कंबल तथा घासनां वस्त्र पहेरशे. कल्कीना भयथी संभ्रांत थयेला लोको पत्रावली विगेरेमां भोजन करशे.

एक वखते कल्की राजमार्गमां फरता साधुओने जोई तेमनी भिक्षामांथी छठ्ठो भाग मागशे, एटले साधुए कायोत्सर्ग करीने बोलावेली शासनदेवी तेने तेम करतां निवारशे. पछी पचासमे वर्षे तेने डाबी जंघामां अने जमणी कुक्षीमां प्रहार थशे. तथापि पाछो कल्की साधुओनी भिक्षानो छठ्ठो भाग लेवा माटे तेमने गायना वाडामां पूरशे. तेमां प्रातिपद नामना आचार्य पण आवी जशे. पछी सर्व संघना स्मरणथी शासन देवी आवी तेने समजावशे. तथापि ते समजशे नहि, एटले आसन कंपथी ते हकीकत जाणी इंद्र वृद्ध ब्राह्मणने रुपे त्यां आवी तेने आ प्रमाणे कहेशे– 'हे राजा! आवा निर्ग्रंथने पीडवा ते तने योग्य नथी.' त्यारे कल्की कहेशे के 'मारा राज्यमां बीजा सर्व भिक्षुको कर आपे छे अने आधुओ कांई पण कर आपता नथी, में तेमने वाडामां रोक्या छे.' पछी इंद्र तेने बेत्रण वार समजावशे; ते छतां ज्यारे ते नहि समजे त्यारे

इंद्र क्रोधथी लपडाक मारी तेने हणी नाखशे. कल्की छाशी वर्षनुं आयुष्य भोगवी मरण पामीने नरके जशे. पछी इंद्र तेना पुत्र दत्तने केटलीक शिखामण दई राज्ये बेसारी गुरुने नमीने स्वर्गे जशे. दत्त पिताने मळेला तेना पापना फळने जाणीने बधी पृथ्वीने जिनचैत्यथी मंडित करशे तथा शत्रुंजयनो उद्धार करशे. त्यार पछी जिनधर्मनो महिमा घणो वृद्धि पामशे.

आवा समयमां पण केटलाएक धर्मना रागी थशे. कह्युं छे के " जेम शृंगी मत्स्य खारा समुद्रमां रह्या सता पण मिष्ट जळ पीवे छे तेम आवा काळमां पण प्राज्ञ पुरुषो धर्मतत्त्वमां तत्पर होय छे. "

ए दुषमा आरामां युगप्रधान सूरिवरो[1] थशे, चतुर्विध संघ धर्ममां वर्तशे, अने राजाओ धर्मकर्ममां तत्पर थशे. *युगप्रधान विगेरेनी संख्या देवेंद्रसूरिकृत कालसित्तरी* प्रकरणमां आ प्रमाणे कहेली छे-

" दुषमा काळमां अगियार लाख अने सोळ हजार राजाओ जिनेश्वरना भक्त थशे अने अगियार क्रोड जैनशासनना प्रभावक थशे. तथा सुधर्मास्वामीथी छेल्ला दुप्पसह सूरि पर्यंत त्रेवीश उदयमां बे हजार ने चार युगप्रधानो थशे अने अगियार लाख ने सोळ हजार आचार्य थशे. " बे हजार ने चार युगप्रधानमां सुधर्मा स्वामी अने जंबू स्वामी ते भवे सिद्धिपदने पामशे अने बाकीना सर्व एकावतारी थशे. ते प्रभावकना आठ गुणने धारण करनार मुनि महाराजा ज्यां विहार करशे त्यां चारे दिशामां अढी अढी योजन पर्यंत दुष्काल, मरकी प्रमुख उपद्रव नाश पामशे. तथा अगियार लाख ने सोळ हजार आचार्यो प्रावचनी धर्मकथी इत्यादि ज्ञान क्रिया गुणवाळा अने युगप्रधान जेवा थशे. दीवाळीकल्पमां त्रण प्रकारना सूरि थशे एम कहेलुं छे. तेमां पंचावन कोटि, पंचावन लाख, पंचावन हजार अने पांचसो सूरि उत्कृष्ट क्रियावाळा उत्तम समजवा. तेत्रीश लाख, चार हजार, चारसो ने एकाणुं सूरि मध्यम क्रियावाळा होवाथी मध्यम समजवा, अने पंचावन कोटि, पंचावन लाख, पंचावन हजार, पांचसो ने पंचावन सूरि प्रमादी अने अनाचारी होवाथी जघन्य समजवा. हवे उपाध्यायनी संख्या कहे छे- पंचावन क्रोड, पंचावन लाख ने पंचावन हजार उत्तम, चोपन क्रोड मध्यम अने चुंमाळीस क्रोड, चुंमाळीश लाख ने चुंमाळीस हजार जघन्य- एटला उपाध्याय पांचमा आरामां थशे एम समजवुं. हवे साधुओनी संख्या कहे छे- सीतेर लाख क्रोड अने नव हजार हजार क्रोड उत्तम, सो क्रोड मध्यम अने एकत्रीश कोटि, एकवीश लाख ने साठ हजार जघन्य एटला साधुओ थशे. हवे साध्वीनी संख्या कहे छे- दश हजार नवसें ने बार क्रोड, छप्पन लाख, छत्रीश

[1] ते समयमा वर्तता सर्व सूत्रना पारगामी ते युगप्रधान जाणवा.

हजार, एक सो ने नवाणुं एटली उत्तम साध्वीओ थशे. हवे श्रावकनी संख्या कहे छे– सोळ लाख त्रण हजार त्रणशें ने सत्तर क्रोड अने चोराशी लाख एटला श्रावको थशे. हवे श्राविकानी संख्या कहे छे– पचवीश लाख बाणुहजार पांचशें ने बत्रीश क्रोड उपर बार एटली श्राविका थशे. आ प्रमाणे दुषमा आरामां चतुर्विध संघनुं प्रमाण कहेलुं छे[1].

अहीं केटलाएक कहे छे के आ प्रमाण जंबूद्वीपना भरतक्षेत्र संबंधी जाणवुं. केटलाएक कहे छे के आ प्रमाण श्रीवीरप्रभुए प्रतिबोध पमाडेला चतुर्विध संघ सहित जाणवुं. वळी केटलाएक कहे छे के ते पांचे भरतक्षेत्र संबंधी एकठुं प्रमाण जाणवुं. तेनो खुलासो दुषम आराना यंत्रपटथी तथा बहुश्रुतना मुखथी जाणी लेवो.

हवे पांचमा आराने अंते उत्पन्न थनारा चतुर्विध संघना नाम कालसित्तरीने अनुसारे लखवामां आवे छे. " स्वर्गथी च्यवीने थयेला दुप्पसहसूरि नामे साधु फल्गुश्री नामे साध्वी, नागिल श्रेष्ठी नामे श्रावक अने सत्यश्री नामे श्राविका ए चरमसंघ जाणवो. " संबोधसत्तरीमां कह्युं छे के " एक साधु, एक साध्वी, एक श्रावक अने एक श्राविका– आज्ञायुक्त होय तो तेने संघ जाणवो अने शेष आज्ञा रहितने अस्थिनो संघ[2] जाणवो. " ते काळे मुनि दशवैकालिक, जितकल्प, आवश्यक, अनुयोगद्वार अने नंदी एटला सूत्रना पाठी थशे. तेमने इंद्र नमस्कार करशे. उत्कृष्ट छठ तपना करनारा थशे. दुप्पसह सूरि बे हाथना देहवाळा, बार वर्ष सुधी गृहस्थपणे रही, चार वर्ष सुधी व्रतधारी थई, चार वर्ष आचार्यपद धारण करी, अंते अष्टम तपवडे काळधर्म पामी सागरोपमना आयुष्यवाळा देवपणाने पामी त्यांथी च्यवी आ भरत क्षेत्रमांज सिद्धिपदने पामशे.

पांचमा आराना अंतसमये पुर्वाह्नकाळे श्रुत, सूरि, संघ ने धर्म विच्छेद पामशे. राजा विमलवाहन, मंत्री सुधर्मा अने न्यायधर्म मध्यान्हे नाश पामशे अने अग्नि सायंकाळे नाश पामशे. श्रीवीरस्वामीथी जेटला काळसुधी पांचमा आरामां श्रीजैनधर्मनी प्रवृत्ति रहेशे ते आ प्रमाणे–वीश हजार ने नवसो वर्ष, त्रण मास, पांच दिवस, पांच पहोर, एक घडी, बे पळ अने अडतालीश अक्षर एटलो काळ जिनधर्मनी प्रवृत्ति रहेशे.

---

१ आमां जणावेली संख्या दीवाळीकल्प साथे बराबर मळती नथी. वळी आ भाषांतर जैना उपरथी थाय छे ते प्रत पण अशुद्ध ने संख्या अस्ताव्यस्त होवाथी आ संख्या उपर आधार राखी शकाय तेम नथी.
२ हाडकानो समूह.

" आ प्रमाणे सोळ स्वप्ना प्रबंधथी अने कल्की¹ राजानी कथाथी काळनुं सर्व स्वरुप जाणीने प्राज्ञ पुरुषो श्रीयुगप्रधान मुनीश्वरोनी तथा श्रीजिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानुं विराधन करता नथी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०८ ॥

व्याख्यान २०९ मुं.

भविष्यमां थनारा श्रीजिनेश्वर भगवंतनुं वर्णन.

भाविनां पद्मनाभादिजिनानां प्राग्भवास्तथा ।
नामानि स्तूयंतेऽस्माभिः प्राप्य पूर्वोक्त शास्त्रतः ॥

भावार्थ.

" भविष्यमां थनारा पद्मनाभ विगेरे तीर्थंकरोना पूर्व भव अने नाम पूर्वोक्त शास्त्रथी जाणीने अहीं स्तववामां आवे छे. " भाविजिनना पूर्वभव विगेरेनुं स्वरुप आ प्रमाणे छे–

उत्सर्पिणीनो बीजो आरो श्रावणवदी एकमे बेसशे. त्यारथी अनुक्रमे सात सात दिवस सुधी पांच जातिना मेघ वरसशे. तेमां प्रथम पुष्करावर्त नामे मेघ पृथ्वीना सर्व तापने दूर करशे. बीजो क्षीरोद मेघ सर्व औषधिना बीजने उपजावशे. त्रीजो घृतोद्मेघ सर्व धान्यादिमां स्नेह-रस उत्पन्न करशे. चोथो शुद्धोदक सर्व औषधिने परिपक्व करशे. पांचमो रसोदकमेघ पृथ्वी उपर इक्षु विगेरेमां रस उपजावशे. एवी रीते पांच मेघ पांत्रीश दिवस सुधी वृष्टि करशे. तेथी वृक्षलता औषधि धान्य विगेरे सर्व पोतानी मेळे उत्पन्न थशे. ते जोईने बिलमां जईने वसेला सर्व जीवो बहार नीकळशे. अनुक्रमे बीजा आराना अंत भागे मध्य देशनी पृथ्वीमां सात कुलकर थशे. तेओमां पहेला कुलकर विमळवाहन जातिस्मरणथी राज्य विगेरेनी स्थितिने स्थापित

1 कल्कीनुं वृतात सवतना संबधमा मेळ खातुं नथी तेथी तेनो खुलासो बहुश्रुतथी जाणी लेवो.

करशे. ते पछी[1] त्रीजा आराना नेवाशी पखवाडिया गया पछी शतद्वार नगरमां सातमा कुलकर सम्मुन्चि नामे राजानी भद्रा राणानी कुक्षिमां श्रेणिक राजानो जीव पहेला नरकमांथी चवी श्रीवीर प्रभुना चववाने दिवसे अने तेज वेळाए अवतरशे अने श्रीवीर प्रभुना जन्मदिवसेज तेनो जन्म थशे. ते श्रीपद्मनाभजिन महावीर जेवा पहेला तीर्थंकर थशे. श्रीवीरप्रभु अने पद्मनाभ प्रभुनो अंतर श्रीप्रवचनसारोद्धारमां आ प्रमाणे कहेल छे " चोराशी हजार वर्ष, सात वर्ष अने पांच मासनुं श्रीवीर तथा पद्मनाभ प्रभुनुं अंतर जाणवुं. " तेमनुं निर्वाण कल्याणक दीवाळीने दिवसे थशे.

बीजा तीर्थंकर सुरदेव नामे थशे. तेमना शरीरनो वर्ण, आयुष्य, लांछन, देहनी ऊंचाई अने पंचकल्याणकना दिवस विगेरे पार्श्वनाथ प्रभुनी प्रमाणे थशे. श्रीवीरस्वामीना काका सुपार्श्व नो जीव बीजा तीर्थंकर थशे.

त्रीजा सुपार्श्व नामे तीर्थंकर शरीरकांति विगेरेथी बावीशमा जिन श्रीनेमिनाथना जेवा थशे. ते पाटली पुत्रना राजा उदायननो जीव जाणवो. ते श्रेणिक राजाना पौत्र अने कोणिक राजाना पुत्र जेनो पौषधगृहमां विनयरत्न नामना अभव्य साधुथी घात थयो हतो तेनो जीव त्रीजा तीर्थंकर थशे.

चोथा स्वयंप्रभ नामे तीर्थंकर एकवीशमा नमि जिनना जेवा थशे. ते पोटिलमुनिनो जीव जणवो. पांचमा सर्वानुभुति नामे तीर्थंकर के जे दृढायु श्रावकनो जीव छे ते वीशमा मुनिसुव्रत प्रभुनी समान थशे. छठ्ठा तीर्थंकर देवसुत नामे थशे, ते कार्तिक शेठनो जीव जाणवो. तेमां विशेष जाणवानुं एटलुं छे के हमणाजे कार्तिक श्रेष्ठीनो जीव बे सागरोपमने आउखे सौधर्मेंद्रपणुं अनुभवे छे तेनो जीव ए नहीं. ए सरखा आंतरामां कोई बीजा कार्तिक शेठ थयेला छे तेनो जीव समजवो. ते देवसुत जिन मल्लिनाथनी जेवा थशे पण स्त्रीवेदयुक्त थशे नहि.

सातमा उदय नामे तीर्थंकर शंखश्रावक नो जीव थशे, पण ते भगवतीमां वर्णवेलो शंख श्रावक नहि, आ कोई बीजो जीव छे. ते तीर्थंकर अढारमा अरनाथ प्रभुनी जेवा थशे. अहीं विशेष एटलुं छे के तेमना चक्रवर्तीपणानो निश्चय जाणवो नहि. आठमा पेढाल नामे तीर्थंकर थशे. ते आनंद नामना श्रावकनो जीव छे. अहीं विशेष एटलुं जाणवानुं छे के सातमा अंगमां कहेल आनंद श्रावक ते आ नहि. ते तो महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामनार छे. एथी कुंथुनाथ प्रभुना जेवा आ तीर्थंकर ते कोई बीजा आनंदनो जीव जाणवो. नवमा तीर्थंकर पोटिल नामे सुनंदा श्राविकानो जीव थशे ते शांतिनाथ प्रभुनी समान थशे. दशमा शतकीर्ति नामे तीर्थंकर थशे. ते शतकश्रावकनो जीव अने धर्मनाथ प्रभुनी समान थशे. आ शतकनो जीव पुष्कली

1 बचे पांच कुलकर सुधर्म, सगम, सुपार्श्व, दत्त अने सुमुख ए नामना थशे.

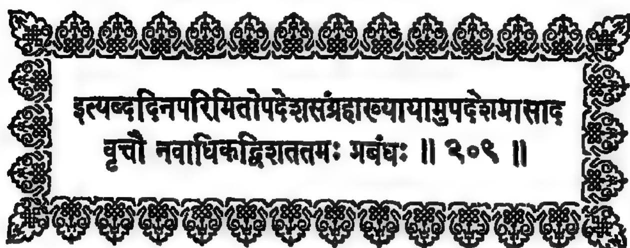
एवा बीजा नामथी भगवतीजीमां कहेल श्रावकनो जीव समजवो. अगियारमा सुव्रत नामे तीर्थंकर दशारसिंह जे कृष्ण तेनी माता देवकीनो जीव थशे. ते अनंतनाथनी तुल्य थशे. बारमा अमम नामे भगवंत नवमा वासुदेव कृष्णनो जीव थशे. ते तेरमा विमलनाथ प्रभुनी समान थशे. समवायांगसूत्रमां कहेलुं छे के कृष्ण भावी चोवीशीमां तेरमा तीर्थंकर थशे तेथी तत्त्व बहुश्रुत जाणे.

तेरमा निष्कषाय नामे तीर्थंकर सत्यकी विद्याधरनो जीव थशे. ते सुज्येष्टा साध्वीना पुत्र अने जे लोकमां रुद्र (सदाशिव) एवा नामथी प्रसिद्ध थयेला छे तेनो जीव जाणवो. समवायांग सूत्रमां ते बारमा जिन थशे एम कहेलुं छे; तत्त्व बहुश्रुत जाणे. ते प्रभु वासुपूज्य स्वामीनी समान थशे. चौदमा तीर्थंकर निष्पुलाक नामे बळदेवनो जीव थशे. पण आ बळदेव कृष्णना बंधु बळभद्र समजवा नहि. कारण के ते बलदेव माटे श्रीहेमचंद्रसूरिए श्रीनेमिचरित्रमां कह्युं छे के बलभद्रनो जीव कृष्णना तीर्थमां सिद्धि पामशे. तेथी आ बळदेव बीजा समजवा. ते तीर्थंकर श्रेयांस प्रभुनी समान थशे. पंदरमा तीर्थंकर निर्मम नामे सुलसा नो जीव थशे. आ सुलसा श्राविका ते समजवा के जेनी प्रत्ये श्रीवीरप्रभुए अंबडने मुखे धर्मलाभ कहेवराव्यो हतो. ते प्रभु शीतलनाथनी समान थशे. सोळमा चित्रगुप्त नामे तीर्थंकर बलभद्रनी माता रोहिणीनो जीव थशे. ते सुविधिनाथजी समान थशे; सत्तरमा समाधि नामे तीर्थंकर थशे. ते रेवती श्राविकानो जीव जाणवो; जे रेवतीए बीजोरा पाक वहोरावीने गोशाले मूकेली तेजोलेश्याथी श्रीवीरप्रभुना देहमां थयेल व्याधिने शमाव्यो हतो. ते तीर्थंकर चंद्रप्रभुनी समान थशे. अढारमा संवर नामे तीर्थंकर शताली श्रावकनो जीव थशे. ते सुपार्श्व प्रभुनी तुल्य थशे. ओगणीशमा यशोधर नामे तीर्थंकर द्वीपायननो जीव थशे. ते पद्मप्रभुनी समान थशे. आ द्वीपायन लोकमां वेदव्यास एवा नामे प्रसिद्ध छे ते समजवा. वीशमा विजय नामे परमेष्ठी कर्णराजानो जीव थशे ते सुमतिनाथनी समान थशे. केटलाएक आ कर्णने पांडव कौरवनो भाई कहे छे, अने केटलाएक तेने चंपानगरीना पति वासुपूज्यना वंशनो कहे छे. तत्त्व केवळी जाणे.

एकवीशमा मल्ल नामे तीर्थंकर नारदनो जीव थशे. ते अभिनंदन प्रभुनी समान थशे. केटलाएक आ नारदने भगवतीसूत्रमां वर्णवेल निर्ग्रंथ कहे छे अने केटलाएक रामलक्ष्मणना समयमां थयेला नारद कहे छे. बावीशमा देव नामे तीर्थंकर अंबडनो जीव थशे. ते संभवनाथनी समान थशे. उपपातिक सूत्रमां जे अंबडने वर्णव्यो छे ते तो महाविदेहमां सिद्धि पामशे एम कहेलुं छे. तेथी आ अंबड सुलसानी परीक्ष

करनार जणातो नथी. तत्त्व केवळी जाणे. त्रेवीशमा अनंतवीर्य नामे तीर्थंकर अमरनो जीव थशे; ते अजीतनाथनी समान थशे. चोवीशमा भद्रंकर नामे तीर्थंकर बुद्धमवानो जीव थशे. ते श्रीऋषभ प्रभुनी समान थशे'

ए सर्व तीर्थंकरोना देहनुं अने आयुष्यनुं प्रमाण, कल्याणक तिथिओ, लांछन, वर्ण अने अंतर विगेरे पश्चानुपूर्वीथी वर्तमान तीर्थंकरोनी समान जाणवुं.



व्याख्यान २१० मुं.

दीपोत्सवी पर्वनुं वर्णन.

विश्वे दीपालिकापर्व विख्यातं केन हेतुना ।
पृष्टः संप्रतिभूपेनार्यसुहस्ती गुरुर्जगौ ॥

भावार्थ.

" संप्रति राजाए आर्यसुहस्ती सूरिने पूछ्युं के लोकमां दीवाळीनुं पर्व क्या हेतुथी प्रचलित थयेलुं छे ? त्यारे गुरुए तेने आ प्रमाणे कह्युं–"

उज्जयिनी नगरीमां संप्रति राजानो दिवाळी संबंधी प्रबंध मोटा संघथी परिवृत थयेला आर्यसुहस्ती गुरुने आवेला जाणी संप्रति राजा तेमनी पासे गया अने गुरुने नमीने पूछ्युं के ' हे पूज्य ! तमे मने ओळखो छो ? ' गुरु बोल्या–' हे संप्रति राजा ! तने कोण न ओळखे ? तुं तो आ देशनो स्वामी छे. ' राजा बोल्यो–' हे स्वामी ! एवा अल्प हेतुथी ओळखवा माटे हुं पूछतो नथी; मने कोई विशेष प्रकारे ओळखो छे ? एम पूछुं छुं. ' पछी दश पूर्वधारी गुरु श्रुतज्ञानना बळथी तेना पूर्वभवनुं स्वरुप जाणी बोल्या–' हे राजा ! तुं पूर्वभवे अमारो शिष्य हतो. मात्र एक दिवसनी दीक्षाना महिमाथी तुं अहीं राजा थयो छे. गुरुनां आवां वचनने सत्य मानी ते

१ आमा पूर्वभवना जीवोना नामो श्रीत्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्रना १० पर्वमा कहेला नामोथी घणा जुदा छे, तेथी तेना खुलासो बहुश्रुतथी जाणी लेवो.

बोल्यो-' हे स्वामी ! तमारा प्रभावथी आ राज्य मने मळ्युं छे. तो हवे आ राज्य तमे ग्रहण करो; अने ते ग्रहण करीने मारी उपर अनुग्रह करी-मने अनृणी करो.' एम कही पगमां पडी वारंवार विज्ञप्ति करवा लाग्यो. एटले गुरु बोल्या-' हे राजा ! संयम रुप साम्राज्यना जेवुं आ राज्य नथी, तेथी अमारे तेनो खप नथी. वळी तें धर्मना योगे आ राज्य प्राप्त कर्युं छे, तो हवे धर्ममां उजमाळ था.' आ प्रमाणे गुरुए कह्युं, एटले राजा धर्ममां सावधान थयो.

अन्यदा तेने संशय उत्पन्न थवाथी तेणे गुरुने पूछ्युं-" हे पूज्य ! जैनआगममां छ अष्टान्हिक पर्व तो कहेला छे तथापि लोकमां तथा जिनमार्गमां दीवाळीनुं पर्व जे विख्यात छे ते शाकारणथी थयुं ? केमके ते दिवसे तो लोको विविध वस्त्र पेहेरे छे अने पशु, घर, हाटनी श्रेणी तथा वृक्ष विगेरे शणगारे छे." गुरु बोल्या-' हे राजा! सांभळ. श्रीवीरप्रभु दशमा देवलोकमांथी चव्या. तेमनुं चवनकल्याणक आषाढ मासनी शुक्ल छठ्ठीए थयुं. चैत्रमासनी शुक्ल त्रयोदशीए मध्यरात्रे तेमनुं जन्मकल्याणक थयुं. त्रीश वर्ष गृहवासे रही छठ्ठनो तप करी मागशरवद दशमीए तेमणे संयम ग्रहण कर्युं. ते समये तेमने मनपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. ते पछी दुस्तप तपस्या करतां वैशाख मासनी शुक्ल दशमीए घातिकर्मनो अभाव थतां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. कांइक न्यून त्रीश वर्ष सुधी केवलज्ञानना पर्याये युक्त रह्या. प्रांते श्रीवीरप्रभुए पोतानुं आयुष्य अल्प जाणी अपापा नगरीमां आवी हस्तीपाळ राजानी सभामां छेल्लुं चातुर्मास्य कर्युं. ते अवसरे अनेक भव्यजीवोना संशयने निवारी भावीभावनुं स्वरूप कही सोळ प्रहर सुधी लोकनी अनुकंपाए तेमणे छेल्ली देशना आपी. पोताना निर्वाणसमये प्रभुए तेमना मुख्य गणधर गौतम स्वामीने देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध आपवा अने पोतानी उपरना प्रेमबंधनो विच्छेद करवा मोकल्या. कार्तिकमासनी अमावास्याने दिवसे[1] छठ्ठ तप करी प्रभु पर्यंकासने बेठा. रात्रिना छेल्ला अर्धा पहोरे स्वातिनक्षत्रनो योग थतां इंद्रे प्रभुने कह्युं-" भगवन्! तमे एक क्षणवार आयुष्य वधारो, अने तमारा जन्मनक्षत्रपर संक्रमण थता भस्मग्रहने जुओ, के जेनी बे हजार वर्षनी सिद्ध स्थिति छे. ते अधुनाज बेसशे, तेथी आपनी पछी तीर्थनी उन्नति थशे नहि. पण जो तमारी दृष्टि तेनी उपर पडशे तो तेना प्रभावथी ते भस्मग्रहनो उदय निष्फळ थशे." प्रभु बोल्या-" हे इंद्र ! आयुष्यकर्मना पुद्गलो जे पूर्वभवे बांधेला होय छे तेमां न्यूनाधिकपणुं करवाने जिनेश्वर पण समर्थ नथी. वळी अभावि काइं पण थतुं नथी अने भावी भावनो नाश थतो नथी." अंतसमये प्रभुए पंचावन अध्ययन शुभ फळविपाकना कह्या अने पंचावन अध्ययन अशुभ फळविपाकना कह्या. तेमज गणधर साधु के श्रावके पूछ्या वगर मात्र

1 आ देशमां कहेवाती आसो वदि अमावास्या.

लोकनी अनुकंपा माटे छत्रीश अध्ययन कह्यां. पछी श्रीवीरप्रभु योगनिरोध करी, शैलेशी करण आचरी सिद्धिसौधने प्राप्त थया. ते समये अतिसूक्ष्म उद्धरी न शकाय तेवा कुंथुवा घणा उत्पन्न थवाथी हवे संयम पाळवुं मुश्केल पडशे एम धारी घणा साधुओए अनशन ग्रहण कर्युं. प्रभुना निर्वाणकाळे सर्व संघ नेत्रमां अश्रुलावी आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्यो-" हे जगद् बंधु ! हे कृपासिंधु ! तमे दयाळु तरीके विख्यात छो, ते छतां अमने महादुःख आपीने तमे महानंदने केम प्राप्त थया ? हे नाथ ! तमे शरीर छोडतां महा अधम एवा नारकीओ पण किंचित् हर्षने पाम्या छे, तो अमने खेद केम करावो छे ? वळी हे त्रण विश्वना आधार ! हे कृपानिधि ! अमारी एक विज्ञप्ति सांभळो. तमने अहींथी जतां श्री संघनो तमारा परनो अत्यंत राग अने विविध प्रकारनो अनुभाव तमने विघ्नकारी केम न थयो ? हे स्वामी ! हवे अमे वीर ! वीर ! एम कहीने कोनी पासे पृच्छा करशुं अने अमारा संशयो टाळशुं के जेथी तमे अमने आश्वासन आपीने मोक्षे चाल्या गया ? हे नाथ ! अधुना आ पृथ्वीपर तमारा जेवो संघनी निःस्पृहपणे सारवार करनारो कोई नथी. हवे भावनेत्रने आपनार अने जीवोना नायक एवा अमोघ तमारा नामने कोण कोण धारण करशे ? हे पूज्य ! तमे अमारा त्राता छो तो लोकोना चित्तनी गतिने जाणतां छतां अमारी उपेक्षा केम करो छो ? हवे मूर्तिमान् ज्ञानवडे संसारनुं स्वरुप अमे केवी रीते जाणीशुं ? "

आ प्रमाणे लोको विलाप करता हता ते अवसरे काशी अने कोशल देशना चेटक राजानी आज्ञामां वर्तनारा अने नवमल्लकी जातिना तथा नवलच्छकी जातिना कुळ अढार राजाओ कोई कार्यप्रसंगे त्यां एकठा थया हता. तेओ अमावास्याने दिवसे पोषध सहित उपवास करी जिनवाणी सांभळता हता. रात्रीने समये श्रीवीर जिननुं निर्वाणकल्याणक थतां ते राजाओए पाछली रात्रिए श्रीवीरप्रभु रुप भाव उद्योत अस्त थई जवाथी व्यापी गयेला बंने प्रकारना अंधकारने सहन न थवाथी द्रव्यउद्योत करनारा दीवा कर्या. तेमज जता आवता देवदेवीओथी ते रात्री ज्योतिर्मय थई गई. ते समये देवताना गण अंधकारने हरनारां प्रकाशित रत्न हाथमां लई त्यां आववा लाग्या अने प्रभु प्रत्ये कहेवा लाग्या के ' हे प्रभु ! अमे आपनी आरति उतारीए छीए. ' एथी सर्व स्थळे मेआराइय (अमारी आरति) एवो शब्द लोकोमां प्रसरी गयो. एटले लोको पण हाथमां दीपावळी लई ' आ अमारी आरती ' एम कहेता त्यां आव्या. आ प्रमाणे परस्पर सर्व स्थळे दीवा थवा लाग्या. सौए द्रव्यउद्योत करनार दीपश्रेणी करवाथी दीपोत्सवी नामनुं पर्व त्यारथी लोकमां प्रवर्त्युं अने निरंकुश एवा मिथ्यात्वी देवताओ अने भस्मग्रह वीर भगवंतना शासन प्रत्ये दुष्टता करे छे,

तेमना करेला दुष्ट फळने हणवाने माटे मेरायां थवा लाग्यां एटले 'श्रीवीरप्रभुना संघनी आर्ति-पीडा दूर थाओ.' एवी धारणाने लईने रुढीथी ए पर्वमां मेरायां करवानुं पण प्रवर्त्युं.

हवे पेला ब्राह्मणने प्रतिबोध आपीने प्रभाते गौतम गणधर श्रीवीरप्रभुने वांदवा तेमनी पासे जवा चाल्या. त्यां मार्गमां निरुत्साही अने निरानंदी एवा घणा देव, मनुष्यो तथा नारीओने जोई गौतम स्वामीए पूछ्युं के 'अत्यारे तमे सौ आम आनंद रहित केम थई गया छो?' त्यारे देवताओए कह्युं—'श्रीवीरप्रभु स्वधाम पधार्या तेथी अमे दिलगीर थयेला छीए.' ते सांभळी जेमनां नेत्र स्तंभित थई गया छे एवा गौतम गणधर मनमां चिंतववा लाग्या—"अहो! जगच्चक्षु श्रीप्रभु चाल्यां गया! हवे मारा जेवा भिक्षुओने इक्षुरस जेवी वाणीथी कोण प्रतिबोध आपशे? हे नाथ! आवे समये तमारावडेज जीवनारा आश्रितने दूर करवो ते योग्य न होतुं. हे स्वामी! तमे मने अंतराळे मूकीने मोक्ष चाल्या गया! मने पासे राख्यो होत तो शुं हुं तमारा वस्त्रनो छेडो पकडीने बाळचेष्टा करत? हे प्रभु! तमे मोहादि महा योद्धाओथी भय पाम्या नहि अने आ अल्प शिशुथी केम भय पाम्या? अथवा शुं, मारा आववाथी मारी अवगाहनावडे मोक्षस्थान सांकडुं थई जात? ते स्थानके तो अनंतगुण पर्यायवाळा स्वस्वधर्मयुक्त अनंतजीवो परस्पर बाधासंघट्ट शिवाय रहेला छे. अने आगामी काळे रहेवाना छे. आवी सिद्धनी स्थितिनुं वर्णन तो तमेज करेलुं छे. हे प्रभु! तमे सहसा वियोग केम कर्यो? हे वीतराग! तमारा दर्शन विना हुं बधी योनिओमां अनंतिवार भम्यो छुं; एम भमतां भमतां महा भाग्ययोगे तमारुं दर्शन प्राप्त थयेलुं छे, तो हवे मारे वियोग थवो न जोईए. हे वीतराग! जे समये तमने वंदना करवानो महोत्सव मने प्राप्त थयो ते दिवस सफळ अने ते क्षण सर्व कामनाने पूरनारी हती. हे स्वामी! आ बाळकने मिष्ट वचनथी लोभावी तमारे चाल्युं जवुं ते योग्य नथी. हवे 'हे गोयम!' एवा मधुर वचनवडे तमारा आगमनुं रहस्य कोण बतावशे? हे जिननाथ! मने दर्शन आपो! हवे विलंब करो छो ते तमने शोभतुं नथी. हे भगवन्! पोतानो आग्रह छोडी द्यो. नहि तो पछी तारक एवी तमारी विख्याति शीरीते घटशे? हे प्रभु! हवे हुं कोना चरणकमळने वांदीश? में तो मारुं जीवित तमारामांज स्थापन करेलुं छे. वळी हे स्वामी! तमे मने युक्तिथी अने विविध प्रकारना निश्चयथी तमारोज करेलो छे; माटे हे देव! मारी रक्षा करो."

आ प्रमाणे प्रशस्त रागथी जेमनुं चित्त रंजित थयेलुं छे अने जे क्षयोपशमभावे रत्नत्रयीने धारण करे छे एवा गौतम गणधर कांईक उपालंभ आप्या पछी वीतराग ए

१ मेआराइयनो अपभ्रंश मेरावा समजवो.

शब्दनो अर्थ चिंतवतां क्षपकश्रेणीमां आरुढ थई केवलज्ञानने प्राप्त थया. पूर्वे केवल ज्ञानमाटे अनेक उपाय कर्या हता पण आवो भाव आव्यो नहोतो. अनंतानंत काळ भमतां तेज क्षेत्रे तेज काळे अने तेज भावे तेवो भाव उत्पन्न थई आव्यो, तेथी केवळज्ञान थयुं.

शक्रइंद्रे प्रथम श्रीवीरप्रभुनो मोक्षमहिमा कर्यो. अने पछी प्रातःकाळे श्रीगौतम गणधरनो केवळज्ञानउत्सव कर्यो. ते समये एक हजार ने आठ पत्रवाळा सुवर्णना कमळ उपर पद्मासने बेसी स्फुरणायमान लब्धिथी विभूषित एवा श्रीगौतमस्वामीए धर्मदेशना आपी. श्रीगौतम स्वामीए कहेला सूरिमंत्रना आराधक सूरिओ अद्यापि पण ए दिवसे श्रीगौतमस्वामीनी भक्ति करे छे.

श्रीवीरप्रभुथी रहित एवी पृथ्वीने जोई मोह रुपी महा चोर सर्व स्थळे धर्म रुपी द्रव्यने लुंटवा लाग्यो; ते जोईने केवलज्ञानने प्राप्त थयेला श्रीगौतम गणधरे ते चोर प्रत्ये कह्युं के " अरे मोह ! तुं एम जाणे छे के श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया एटले हुं धर्मने लुंटी लईश ? पण तेमना स्थापेला धर्मराज्य उपर हुं बेठो छुं ते तुं जाणतो नथी ? अरे पापी ! तुं हमणां मृत्युने वांछतो जणाय छे, हवे क्यां जाय छे ? केटलेक दूर जईश ? हमणाज लोको तने शोधवानुं मिष करी हाथमां दीपक लई पोताना घर-मांथी सुपडावडे तारा जेवा चोरने त्रास आपी घरमांथी काढी मूके छे. " भावार्थ एवो छे के दीवाळीपर्वमां लोको मोह तथा अविरति रुप अळसनेज काढे छे; अने गौतमस्वामीने थयेला ज्ञान रुपी महालक्ष्मीने पोताना मंदिरमां स्थापे छे.

आ दीवाळीपर्वना दिवसोमां एक उपवास करवाथी सहस्रगणुं पुण्य थाय छे, अने जो अठ्ठम तप करे तो कोटिगणुं पुण्य थाय छे. कारणके दीवालीपर्वना दिवसोमां सर्व लोको पंचेंद्रिय सुखना विशेष अभिलाषी थाय छे, मोटां कर्मबंधनां कारणो रचे छे अने भोगोत्सुक थाय छे; तेवा दिवसोमां इंद्रियोना भोगनो त्याग करी परमार्थ जाण-नारने अने सेवनारने महा लाभ थाय ए उघाडी वात छे.

आ पर्वमां चतुर्दशी ने अमावास्या ए बे दिवसनो सोळ पहोरनो पौषध करवो अथवा बे उपवास करी चंदन अक्षत विगेरेथी अने कोटि पुष्पथी श्रीवीर प्रमुख जिनेश्वरोनी तथा पीस्तालीश आगमनी पूजा करवी; अने " श्रीवीरस्वामिसर्वज्ञाय नमः " ए मंत्रनो जाप करवो. अमावास्यानी रात्रे छेल्ले अर्धे पहोरे " श्रीवीरपारंग-ताय नमः " ए मंत्रनो जाप करवो अने पडवेनी सवारे " श्रीगौतमस्वामी केवल ज्ञानाय नमः " ए मंत्रनो जाप करवो; अने एक हजार पांखडीवाळा सुवर्णना कमळ उपर पद्मासने बेठेला, भगवंते दीक्षा दीधेला पचास हजार साधु साध्वी तथा पोते दीक्षा दीधेला संख्याबंध मुनिओनी पर्षदाए युक्त एवा गौतम स्वामीनुं चित्तमां स्मरण

करवुं. तथा प्रभुनी आगळ अने गौतमस्वामी आगळ पचास हजार अखंड अक्षतवडे स्वस्तिक करी, अखंड दीवो प्रगटी गौतमस्वामीनुं ध्यान करवुं; तेथी महाफळ थाय छे.

आ प्रमाणे श्रीसुहस्तिसूरिए संप्रति राजानी आगळ उपदेश आप्यो. ते सांभळी संप्रति राजा पण दीवाळीपर्वना आराधनमां तत्पर थयो.

" जे पर्वमां श्रीवर्द्धमानस्वामी मोक्षने प्राप्त थया, अने श्रीगौतमस्वामी केवलज्ञाननी लक्ष्मीने प्राप्त थया, तथा जे दिवसे राजाओए दीपमाळा रची तेवा दीवाळीपर्व समान बीजुं कोई पर्व आ पृथ्वी उपर नथी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ दशाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २१० ॥

इति चतुर्दशः स्तंभः समाप्तः



